U.P. Series

हिन्दी

पाठ्यपुस्तक का संपूर्ण हल

कक्षा-10

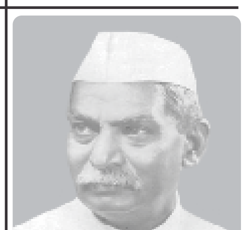

PREMIER PUBLISHING HOUSE
New Delhi Muzaffarnagar

गद्य खंड

अभ्यास

(क)   लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गद्य व पद्य में क्या अंतर है?

उ०– गद्य और पद्य की विषय-वस्तु, भाषा-शैली आदि में पर्याप्त अंतर है। गद्य-साहित्य की विषय-वस्तु प्राय: हमारी बोध-वृत्ति पर आधारित होती है और काव्य की हमारी संवेदनशीलता पर। विषय अधिकांशत: वही होते हैं, जिनके बारे में हम अधिक सोचते हैं। गद्य मस्तिष्क के तर्कप्रधान चिंतन की उपज है। इसके मुख्य विषय हमारे दैनिक कार्य-कलाप, ज्ञान-विज्ञान, कथा, वर्णन, व्याख्या आदि हैं। संक्षेप में, काव्य का संसार बहुत कुछ काल्पनिक है, किंतु गद्य का व्यावहारिक।

2. वर्तमान हिंदी भाषा किस बोली का साहित्यिक रूप है?

उ०– वर्तमान हिंदी भाषा खड़ीबोली का साहित्यिक रूप है।

3. 'हिंदी गद्य साहित्य के विकास' का विभाजन उनके काल के अनुसार कीजिए।

उ०– अध्ययन की दृष्टि से हिंदी गद्य साहित्य के विकास को इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—

(अ)	पूर्व भारतेंदु युग अथवा प्राचीन युग	-	13वीं शताब्दी से सन् 1868 ई. तक
(ब)	भारतेंदु युग	-	सन् 1868 ई. से सन् 1900 ई. तक
(स)	द्विवेदी युग	-	सन् 1900 ई. से सन् 1922 ई. तक
(द)	शुक्ल युग (छायावादी युग)	-	सन् 1919 ई. से सन् 1938 ई. तक
(य)	शुक्लोत्तर युग (छायावादोत्तर युग)	-	सन् 1938 ई. से सन् 1947 ई. तक
(र)	स्वातन्त्र्योत्तर युग	-	सन् 1947 ई. से अब तक

4. हिंदी का पहला ग्रंथ कौन-सा है?

उ०– देवसेन द्वारा रचित श्रावकाचार, हिंदी का पहला ग्रंथ है।

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ कौन-सी कृति से माना है?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने खड़ीबोली गद्य का प्रारंभ अकबर के दरबारी कवि गंग द्वारा लिखित 'चंद-छंद बरनन की महिमा' से माना है।

6. हिंदी गद्य के विकास में समाचार-पत्रों की क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– हिंदी गद्य के विकास में समाचार-पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। समाचार-पत्र हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा के बारे में अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत कर इनका प्रचार करते हैं। सर्वप्रथम दैनिक समाचार-पत्र 'समाचार सुधावर्षण' तथा उत्तर प्रदेश से प्रसारित पहला समाचार-पत्र 'बनारस अखबार' माना गया है। हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' कोलकाता से प्रकाशित हुआ था।

7. भारतेंदु युग की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– भारतेंदु युग में लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा-संबंधी दोषों से बचते हुए हिंदी गद्य का स्वच्छ, संतुलित और शिष्ट रूप सामने रखा। इन्होंने संस्कृत के सरल शब्दों को लेने के साथ-साथ सर्वसाधारण में प्रचलित विदेशी शब्दों को भी ग्रहण किया। तद्भव और देशज शब्द तो इनकी भाषा में थे ही। इनके अतिरिक्त कहावतों और मुहावरों के प्रयोग से भी इन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की।

8. द्विवेदी युग कौन-से साहित्यकार के नाम पर पड़ा? इस युग की समय-सीमा लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग के पश्चात आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के महत्वपूर्ण योगदान के कारण इसका नाम द्विवेदी युग पड़ा। इस युग की समयावधि सन् 1900 ई. से सन् 1922 ई. तक है।

9. शुक्ल युग के किन्हीं पाँच गद्यकारों के नाम लिखिए।

उ०– शुक्ल युग के पाँच गद्यकार हैं— (अ) महादेवी वर्मा, (ब) जयशंकर प्रसाद, (स) वियोगी हरि, (द) रामकृष्णदास, (य) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

10. शुक्लोत्तर युग की भाषा-शैली कैसी थी?

उ०– शुक्लोत्तर युग में शुद्ध, परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया गया। इस युग में लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्‌भव शब्दों का प्रयोग कर भाषा को सरस, सरल एवं व्यावहारिक रूप प्रदान किया गया है। शुक्लोत्तर युग में विवेचनात्मक, वर्णनात्मक और भावात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

11. शुक्लोत्तर युग के कुछ प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।

उ०– शुक्लोत्तर युग के प्रमुख साहित्यकार हैं— आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामधारी सिंह 'दिनकर', उपेंद्रनाथ 'अश्क', भगवतीचरण वर्मा, अमृतलाल नागर, हरिशंकर परसाई, फणीश्वरनाथ 'रेणु', धर्मवीर भारती आदि।

12. शुक्ल युग व शुक्लोत्तर युग की भाषा-शैली में क्या अंतर था?

उ०– शुक्ल युग में कवियों ने अपनी अनोखी प्रतिभा और सृजनशक्ति से उसके लाक्षणिक, अलंकृत, प्रतीकात्मक और वक्रतापूर्ण स्वरूपों को उद्‌घाटित किया। इन्होंने अपने काव्य ग्रंथों की भूमिकाओं व स्वतंत्र लेखों में नए आकर्षक गद्य का स्वरूप सामने रखा। इस युग में भावुकताप्रदान गद्य के दर्शन भी हुए। शुक्लोत्तर युग में हिंदी गद्य काल्पनिक संसार से उतरकर यथार्थ की भूमि पर आ गया। हिंदी गद्य में अनेक विधाओं का प्रादुर्भाव हुआ तथा अनेक शैलियाँ भी प्रकाश में आईं। गद्य साहित्य की अभिव्यंजना शक्ति अत्यंत परिष्कृत हो गई।

13. भारतेंदु युग की पाँच विशेषताएँ लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग की पाँच विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) इस युग में लेखकों ने पूर्ववर्ती लेखकों की एकांगिता और भाषा संबंधी दोषों से बचते हुए हिंदी-गद्य का स्वच्छ, संतुलित और शिष्ट रूप सामने रखा।

(ब) भारतेंदु युग का गद्य अत्यंत सजीव है।

(स) इस युग के लेखकों में अपनी भाषा, अपनी जाति और अपने राष्ट्र के उत्थान के लिए बड़ी अकुलाहट थी।

(द) भारतेंदु युग ने नवयुग की नई लहर को घर-घर पहुँचाने का अथक प्रयास किया था।

(य) कहावतों व मुहावरों के प्रयोग से भी इन्होंने भाषा को सजीवता प्रदान की।

14. 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक का नाम लिखिए।

उ०– 'सरस्वती' पत्रिका के प्रमुख संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं।

15. जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशेषताएँ बताइए।

उ०– नाटकों के क्षेत्र में जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके नाटकों में देश के प्राचीन गौरव के चित्र हैं और उनमें संस्कृति और राष्ट्र-प्रेम की भावनाओं के रंग पर्याप्त गहरे हैं। चरित्र-चित्रण, कथोपकथन व उद्देश्य की दृष्टि से प्रसाद के नाटकों की महत्ता असंदिग्ध है। इनके नाटक अभिनेयता की दृष्टि से कठिन हैं।

16. द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के अतिरिक्त और कौन-कौन सी महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का योगदान रहा?

उ०– द्विवेदी युग में 'सरस्वती' पत्रिका के अतिरिक्त इंदु, माधुरी, मर्यादा, सुधा, जागरण, प्रभा, कर्मवीर, हंस व विशाल भारत आदि पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

17. शुक्लोत्तर युग का दूसरा नाम क्या है?

उ०– शुक्लोत्तर युग का दूसरा नाम छायावादोत्तर युग (प्रगतिवादी युग) है।

18. शुक्लोत्तर युग में कौन-कौन सी विधाओं का विकास हुआ?

उ०– शुक्लोत्तर युग में रिपोर्ताज और इंटरव्यू विधाओं का विकास हुआ।

19. निबंध का क्या अर्थ है?

उ०– निबंध का अर्थ है— अच्छी तरह बँधा हुआ। संक्षेप में निबंध वह गद्य रचना कहलाती है, जिसमें लेखक किसी विषय पर अपने विचारों को सजीव, सीमित, स्वच्छंद और सुव्यवस्थित रूप से व्यक्त करता है।

20. निबंध लेखन की परंपरा का आरंभ कब से माना जाता है?

उ०– निबंध लेखन की परंपरा का आरंभ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है।

21. निबंध के प्रमुख चार भेद कौन-से हैं?

उ०– निबंध के प्रमुख चार भेद हैं—

(अ) विचारात्मक निबंध
(ब) भावात्मक निबंध
(स) वर्णनात्मक निबंध
(द) विवरणात्मक निबंध

22. हिंदी की पहली कहानी किसे माना जाता है?

उ०– किशोरीलाल गोस्वामी द्वारा लिखित 'इंदुमती' को हिंदी की पहली कहानी माना जाता है।

23. प्रेमचंद जी ने कितनी कहानियाँ लिखीं? इनकी प्रथम और अंतिम कहानियाँ कौन-सी हैं?

उ०– प्रेमचंद जी ने लगभग 300 कहानियाँ लिखीं, जिनमें सबसे पहली कहानी 'सौत' तथा अंतिम कहानी 'कफन' है।

24. उपन्यास का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उ०– उपन्यास का शाब्दिक अर्थ है—'उप' अर्थात् निकट या सामने, 'न्यास' अर्थात् रखना; अर्थात् सामने रखना।

25. कुछ प्रमुख हिंदी उपन्यासकारों के नाम लिखिए।

उ०– प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, चतुरसेन शास्त्री, विशम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक', वृंदावनलाल वर्मा, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, देवकीनंदन खत्री, धर्मवीर भारती, उपेंद्रनाथ 'अश्क', शिवानी, शैलेश मटियानी, उषा प्रियम्वदा आदि।

26. देवकीनंदन खत्री के तीन उपन्यासों के नाम लिखिए।

उ०– देवकीनंदन खत्री के तीन उपन्यास हैं— चंद्रकांता, चंद्रकांता संतति और भूतनाथ।

27. 'जहाज का पंछी' व 'नदी के द्वीप' के लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– 'जहाज का पंछी' के लेखक इलाचंद्र जोशी व 'नदी के द्वीप' के लेखक अज्ञेय हैं।

28. 'नाटक' व 'एकांकी' में क्या अंतर है?

उ०– नाटक और एकांकी में निम्नलिखित अंतर हैं—

(अ) नाटक में अनेक अंक होते हैं, जबकि एकांकी में एक ही अंक होता है।

(ब) नाटक में मुख्य कथा तथा अनेक अंत: कथाएँ होती हैं, जबकि एकांकी एक घटना पर ही आधारित होता है।

(स) नाटक में अधिक पात्र और देश काल विस्तृत होता है, जबकि एकांकी में कम पात्र और देशकाल सीमित होता है।

(द) नाटक बड़ा होने के कारण अधिक समय में अभिनीत होता है, जबकि एकांकी संक्षिप्त होने के कारण कम समय में ही अभिनीत हो जाता है।

29. भारतेंदु हरिश्चंद्र व जयशंकर प्रसाद के प्रमुख नाटकों के नाम लिखिए।

उ०– **भारतेंदु हरिश्चंद्र–** वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, अँधेर नगरी, भारत दुर्दशा, नीलदेवी आदि।

जयशंकर प्रसाद– चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु, करुणालय आदि।

30. भारतेंदु युग के किन्हीं पाँच नाटककारों के नाम लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग के पाँच नाटककार हैं— (अ) श्रीनिवासदास, (ब) राधाकृष्णदास, (स) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', (द) सीताराम वर्मा, (य) प्रतापनारायण मिश्र।

31. डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रथम एकांकी संग्रह का नाम लिखिए। यह कब प्रकाशित हुआ?

उ०– डॉ. रामकुमार वर्मा का एकांकी नाटकों का प्रथम संग्रह 'पृथ्वीराज की आँखें' है। यह सन् 1936 ई. में प्रकाशित हुआ।

32. पाँच प्रमुख एकांकीकारों के नाम लिखिए।

उ०– पाँच प्रमुख एकांकीकार हैं— (अ) रामकुमार वर्मा, (ब) सेठ गोविंददास, (स) उदयशंकर भट्ट, (द) उपेंद्रनाथ 'अश्क', (य) विष्णु प्रभाकर।

33. 'आलोचना' विधा की विशेषताएँ बताइए।

उ०– किसी वस्तु का सूक्ष्म अध्ययन करना, जिससे उसके गुण-दोष प्रकट हो जाएँ, आलोचना के क्षेत्र में आता है। अत: जब किसी साहित्यकार की किसी रचना का अध्ययन करके उसके गुण-दोष प्रकट किए जाते हैं, उसे आलोचना कहते हैं।

34. कुछ प्रमुख आलोचना लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल, बाबू श्यामसुंदर दास, पदमसिंह शर्मा, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, रामस्वरूप चतुर्वेदी, डॉ. रामविलास शर्मा, नंद दुलारे वाजपेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी तथा नामवर सिंह आदि हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक हैं।

35. 'आत्मकथा' व 'जीवनी' में क्या अंतर है?

उ०– आत्मकथा लेखक के स्वयं के जीवन पर आधारित होती है, जिसमें लेखक स्वयं अपने जीवन की कथा को पाठकों के समक्ष आत्मीयता के साथ रखता है। किसी महान व्यक्ति के जीवन की जन्म से मृत्यु पर्यंत सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को जब कोई लेखक प्रस्तुत करता है, तब वह विधा जीवनी कहलाती है।

36. 'रेखाचित्र' व 'संस्मरण' में क्या अंतर है?

उ०– रेखाचित्र व संस्मरण में मूल अंतर यह है कि रेखाचित्र में कलात्मक रेखाओं के द्वारा किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना के बाह्य तथा आंतरिक स्वरूप का शब्द-चित्र इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि पाठक के हृदय में उसका सजीव तथा यथार्थ चित्र अंकित हो जाए। इसमें चित्रकला व साहित्य का सुंदर समन्वय दिखाई पड़ता है। संस्मरण उस विधा को कहा जाता है जिसमें लेखक द्वारा अपनी स्मृति के आधार पर किसी व्यक्ति, परिस्थिति अथवा विषय पर कोई लेख लिखा जाता है।

37. दो रेखाचित्र लेखकों व दो संस्मरण लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– रेखाचित्र लेखक— (अ) महादेवी वर्मा (ब) अमृतराय

संस्मरण लेखक— (अ) रामवृक्ष बेनीपुरी (ब) देवेंद्र सत्यार्थी

38. 'डायरी' विधा की विशेषताएँ बताइए।

उ०– यथार्थ चित्रण, तिथिवार क्रमबद्धता, लेखक के निजी दृष्टिकोणों की घटना से संबंधित अभिव्यक्ति आदि डायरी साहित्य की विशेषताएँ हैं। यह लेखक के स्वयं के जीवन से संबंधित होती है।

39. 'रिपोर्ताज' विधा की विशेषताएँ लिखिए।

उ०– रिपोर्ताज लेखक के लिए स्वयं घटना का प्रत्यक्ष निरीक्षण करना आवश्यक है, इसमें कल्पना का कोई स्थान नहीं होता। इसका उपयोग पत्रकारिता के क्षेत्र में अधिक होता है। घटना का यथार्थ चित्रण, कुशल अभिव्यक्ति, प्रभावोत्पादकता आदि रिपोर्ताज की विशेषताएँ हैं।

40. 'लघु कथा' विधा के दो लेखकों के नाम लिखिए।

उ०– 'लघु कथा' के दो लेखक हैं— (अ) विष्णु नागर (ब) चित्रा मुद्गल।

(ख) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. शुक्ल युग की समय-सीमा है–

(अ) 1868 ई.-1900 ई. (ब) **1919 ई.-1938 ई.**

(स) 1938 ई.-1947 ई. (द) 1900 ई.- 1922 ई.

2. 'चंद छंद बरनन की महिमा' के रचनाकार हैं–

(अ) **कवि गंग** (ब) पं. दौलतराम

(स) लल्लूलाल (द) लक्ष्मण सिंह

3. 'योगवाशिष्ठ' के रचनाकार हैं–

(अ) **रामप्रसाद निरंजनी** (ब) कवि गंग

(स) लल्लूलाल (द) देवसेन

4. उत्तर प्रदेश से प्रसारित पहला समाचार पत्र है–

(अ) समाचार सुधावर्षण (ब) हिंदुस्तान टाइम्स

(स) **बनारस अखबार** (द) उदंत मार्तंड

5. हिंदी का सर्वप्रथम साप्ताहिक, समाचार पत्र है–

(अ) **उदंत मार्तंड** (ब) समाचार सुधवर्षण

(स) बनारस अखबार (द) हिंदुस्तान टाइम्स

6. 'आर्य समाज' के संस्थापक थे–

(अ) **स्वामी दयानंद सरस्वती** (ब) राजाराम मोहनराय

(स) लक्ष्मण सिंह (द) इनमें से कोई नहीं

7. 'रानी केतकी की कहानी' के लेखक हैं–

(अ) लल्लूलाल (ब) सदल मिश्र

(स) पं. दौलतराम (द) **इंशा अल्ला खाँ**

8. 'नासिकेतोपाख्यान' के रचनाकार हैं–

(अ) रामप्रसाद निरंजनी (ब) **सदल मिश्र**

(स) लल्लूलाल (द) इनमें से कोई नहीं

9. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' कौन-से युग के साहित्यकार हैं?

(अ) **भारतेंदु युग** (ब) द्विवेदी युग

(स) शुक्ल युग (द) आधुनिक युग

10. वियोगी हरि किस प्रकार के गद्य के लिए प्रसिद्ध हैं?

(अ) असंदिग्ध (ब) हास्य-व्यंग्य प्रधान

(स) **भावुकता प्रधान** (द) इनमें से कोई नहीं

11. भगवतीचरण वर्मा कौन-से युग के लेखक हैं?

(अ) भारतेंदु युग (ब) **शुक्लोत्तर युग**

(स) छायावादी युग (द) द्विवेदी युग

12. 'कफन' कहानी के लेखक हैं–

(अ) **प्रेमचंद** (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) किशोरीलाल गोस्वामी (द) भारतेंदु हरिश्चंद्र

13. 'तारा' कौन-सी विधा की रचना है?

(अ) कहानी (ब) नाटक

(स) **उपन्यास** (द) एकांकी

14. इनमें से इलाचंद्र जोशी का उपन्यास है–

(अ) परख (ब) नदी के द्वीप

(स) गबन (द) **जहाज का पंछी**

15. 'करुणालय' कौन-सी विधा की रचना है?

(अ) **नाटक** (ब) कहानी

(स) निबंध (द) रिपोर्ताज

16. 'सिंदूर की होली' किसकी कृति है?

(अ) हरिशंकर प्रेमी (ब) जयशंकर प्रसाद

(स) **लक्ष्मीनारायण मिश्र** (द) इनमें से कोई नहीं

17. 'पृथ्वीराज की आँखें' एकांकी के लेखक हैं–

(अ) **रामकुमार वर्मा** (ब) जैनेंद्र कुमार

(स) सेठ गोविंददास (द) उदयशंकर भट्ट

18. 'मेरी आत्मकथा' के लेखक हैं–

(अ) नंद दुलारे वाजपेयी (ब) अज्ञेय

(स) **राजेंद्र प्रसाद** (द) इनमें से कोई नहीं

19. निम्न में से 'रेखाचित्र' विधा के प्रसिद्ध लेखक हैं–

(अ) प्रेमचंद (ब) **महादेवी वर्मा**

(स) देवेंद्र सत्यार्थी (द) इंशा अल्ला खाँ

20. **निम्नलिखित में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–**
   (अ) **श्रीनिवासदास भारतेंदु युग के लेखक हैं।** (ब) जैनेंद्र शुक्ल युग के लेखक हैं।
   (स) राधाचरण गोस्वामी शुक्ल युग के लेखक हैं। (द) गुलाबराय भारतेंदु युग के लेखक हैं।
21. **निम्नलिखित कथनों में एक कथन सत्य है, पहचानकर लिखिए–**
   (अ) रामचंद्र शुक्ल प्रसिद्ध नाटककार हैं।
   (ब) **प्रेमचंद कहानीकार और उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं।**
   (स) देवकीनंदन खत्री प्रसिद्ध आलोचनाकार हैं।
   (द) प्रेमचंद प्रसिद्ध कवि हैं।
22. **निम्नलिखित कथनों में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–**
   (अ) **'सरस्वती' के प्रमुख संपादक महावीर प्रसाद द्विवेदी हैं।**
   (ब) 'गोदान' के लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।
   (स) 'एक घूँट' प्रसाद जी की प्रसिद्ध कहानी है।
   (द) 'हंस' प्रतापनारायण मिश्र जी का प्रसिद्ध नाटक है।
23. **निम्नलिखित कथनों में से एक कथन सत्य है, उस सत्य कथन को पहचानकर लिखिए–**
   (अ) 'अँधेर नगरी' नाटक के लेखक प्रेमचंद जी हैं।
   (ब) **डॉ. रामविलास शर्मा हिंदी साहित्य के प्रमुख आलोचक हैं।**
   (स) 'मेरी आत्मकथा' के लेखक भुवनेश्वर प्रसाद जी हैं।
   (द) डॉ. नगेंद्र प्रसिद्ध कवि हैं।
24. **निम्नलिखित में से एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–**
   (अ) **'वे सात और हम' संस्मरण विधा की रचना है।**
   (ब) 'अजातशत्रु' जयशंकर प्रसाद का प्रसिद्ध उपन्यास है।
   (स) 'तितली' प्रेमचंद जी की प्रसिद्ध कहानी है।
   (द) 'सरयूपार की यात्रा' राहुल सांकृत्यायन की प्रसिद्ध रचना है।
25. **निम्नलिखित में से कोई एक कथन सत्य है, उसे पहचानकर लिखिए–**
   (अ) लल्लूलाल लघु कथाएँ लिखते थे।
   (ब) पद्म सिंह शर्मा गद्य-काव्य विधा में रचनाएँ लिखते थे।
   (स) **प्रभाकर माचवे एक अच्छे रिपोर्ताज लेखक हैं।**
   (द) 'रक्षाबंधन' हरिशंकर प्रेमी की प्रसिद्ध कहानी है।

1. मित्रता (आचार्य रामचंद्र शुक्ल)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1884 ई. को बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था।

2. **शुक्ल जी के पिता का नाम व व्यवसाय क्या था?**

उ०– शुक्ल जी के पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था, जो राठ (हमीरपुर) तहसील में कार्यरत थे।

3. **शुक्ल जी को 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से किसने संबद्ध किया?**

उ०– शुक्ल जी को 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से बाबू श्यामसुंदर दास जी ने संबद्ध किया था।

4. **आचार्य रामचंद्र शुक्ल को किन-किन प्रमुख भाषाओं का ज्ञान था?**

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल को बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू व फारसी भाषा का ज्ञान था।

5. आचार्य जी ने मिर्जापुर के किस स्कूल में नौकरी की थी?

उ०– आचार्य जी ने मिर्जापुर के मिशन स्कूल में नौकरी की थी।

6. आचार्य रामचंद्र शुक्ल किस विधा-लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं?

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना-विधा लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं।

7. शुक्ल जी द्वारा रचित दो निबंध संग्रह बताइए।

उ०– 'विचारवीथी' और 'चिंतामणि' शुक्ल जी द्वारा रचित दो निबंध संग्रह हैं।

8. शुक्ल जी के दो आलोचना ग्रंथों के नाम बताइए।

उ०– 'रस मीमांसा' व 'भ्रमरगीत' शुक्ल जी के दो आलोचना ग्रंथ हैं।

9. ''आचार्य रामचंद्र शुक्ल एक सफल युग प्रवर्तक थे।'' सिद्ध कीजिए।

उ०– आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपनी अद्वितीय निबंध रचनाओं से हिंदी साहित्य को एक नवीन एवं उपयोगी दिशा प्रदान की। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों के द्वारा आलोचना के क्षेत्र में युगांतर उपस्थित किया और नवीन आलोचना पद्धति का विकास किया। इनके अभूतपूर्व योगदान के कारण ही इनके तत्कालीन युग को 'शुक्ल युग' के नाम से जाना जाता है।

10. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उ०– शुक्ल जी की गद्य साहित्य की भाषा खड़ीबोली है। किसी बात को संक्षेप में कहकर उसे विस्तार से समझाना, इनकी कृतियों की विशेषता रही है। शुक्ल जी ने शैली के रूप में निगमन शैली, वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया है।

11. शुक्ल जी का निधन कब हुआ था?

उ०– 2 फरवरी सन् 1941 ई. में हृदयगति रुक जाने के कारण शुक्ल जी का देहांत हो गया था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के जीवन परिचय व रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुप्रसिद्ध समालोचक व निबंधकार आचार्य रामचंद्र शुक्ल का हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है। इन्होंने अपनी अद्वितीय निबंध रचनाओं से हिंदी साहित्य को एक नवीन एवं उपयोगी दिशा प्रदान की। इन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आलोचनात्मक कृतियों के द्वारा आलोचना के क्षेत्र में युगांतर उपस्थित किया और नवीन आलोचना पद्धति का विकास किया। हिंदी के विख्यात साहित्यकार बाबू गुलाबराय ने हिंदी साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की प्रशंसा में कहा था, ''यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि गद्य साहित्य की और विशेषत: निबंध साहित्य की प्रतिष्ठा बढ़ाने में शुक्ल जी अद्वितीय हैं। उपन्यास साहित्य में जो स्थान मुंशी प्रेमचंद जी का है, वही स्थान निबंध साहित्य में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का है।'' इनके अभूतपूर्व योगदान के कारण ही इनके तत्कालीन युग को 'शुक्ल युग' के नाम से जाना जाता है।

जीवन परिचय– आचार्य शुक्ल के नाम से विख्यात रामचंद्र शुक्ल जी का जन्म 4 अक्टूबर सन् 1884 ई. को बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम चंद्रबली शुक्ल था, जो राठ (हमीरपुर) तहसील में कार्यरत थे। अपने पिता के पास ही रहकर इन्होंने राठ, हमीरपुर से ही अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। इनकी बचपन से ही हिंदी साहित्य में अत्यधिक रुचि थी। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात ये मिर्जापुर चले गए और वहीं से ही इन्होंने अपनी हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। गणित विषय में रुचि न होने के कारण इन्होंने अपनी इंटरमीडिएट की परीक्षा बीच में ही छोड़ दी। इनके पिता की इच्छा थी कि शुक्ल जी कचहरी में जाकर दफ्तर का काम सीखें, इसलिए इनके पिताजी ने उन्हें वकालत पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजा। पर उनकी रुचि वकालत में न होकर साहित्य में थी। फिर इन्होंने स्वाध्याय से ही बंगला, संस्कृत, अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू व फारसी का ज्ञान अर्जित किया।

अत: परिणाम यह हुआ कि वे वकालत में अनुत्तीर्ण हो गए। शुक्ल जी के पिताजी ने उन्हें नायब तहसीलदार की जगह दिलाने का प्रयास किया, किंतु उनकी स्वाभिमानी प्रकृति के कारण यह संभव न हो सका। इसके बाद कुछ समय तक इन्होंने मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक के रूप में कार्य किया। तत्पश्चात काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यापक के रूप में कार्य किया और फिर 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' से सम्बद्ध होकर 'हिंदी शब्द सागर' के सहायक संपादक का पदभार सँभाला, जो इनसे पूर्व बाबू श्यामसुंदर दास सँभालते थे। शुक्ल जी ने आजीवन हिंदी साहित्य की सेवा की। 2 फरवरी सन् 1941 ई. में हृदय गति रुक जाने के कारण शुक्ल जी का देहांत हो गया।

रचनाएँ– आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं–

(अ) संपादन– नागरी प्रचारिणी पत्रिका, हिंदी शब्द सागर

(ब) कहानी– 'ग्यारह वर्ष का समय' (सन् 1903 में सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित)

(स) काव्य रचना– अभिमन्यु-वध

(द) इतिहास लेखन– हिंदी साहित्य का इतिहास

(य) आलोचना– रस मीमांसा, भ्रमरगीत, जायसी ग्रंथावली, गोस्वामी तुलसीदास, सूरदास

(र) निबंध-लेखन– विचारवीथी, चिंतामणि, मित्रता

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भाषागत विशेषताओं के साथ-साथ उनके साहित्यिक परिचय पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषागत विशेषता–** शुक्ल जी के गद्य साहित्य की भाषा खड़ीबोली है। किसी बात को संक्षेप (सूत्र रूप) में कहकर उसे सविस्तार समझाना, इनकी कृतियों की विशेषता रही है। मुहावरों व लोकोक्तियों का भी इनकी रचनाओं में अत्यधिक प्रयोग देखने को मिलता है। शुक्ल जी की भाषा संक्षेपित व प्रांजल है।

शुक्ल जी ने शैली के रूप में निगमन शैली, वर्णनात्मक शैली, विवेचनात्मक शैली, व्याख्यात्मक शैली आदि शैलियों का प्रयोग किया है, जिसके फलस्वरूप इनकी रचनाएँ अत्यधिक व्यावहारिक हैं। विवेचनात्मक शैली शुक्ल जी की प्रमुखशैली है। इन्होंने अपने अधिकांश निबंधों में इसी शैली का प्रयोग किया है। शुक्ल जी शिक्षक थे, अत: कठिन विषयों को स्पष्ट रूप से समझाने के लिए इन्होंने स्थान-स्थान पर व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। आलोचनात्मक शैली का प्रयोग आचार्य जी ने समीक्षात्मक निबंधों में किया है। 'कविता क्या है', 'तुलसी की भावुकता' आदि निबंध इसके उदाहरण हैं। वस्तुत: हिंदी में आलोचनात्मक शैली के जन्मदाता आचार्य शुक्ल जी ही हैं।

विचारों के बोझ में दबे पाठक को विराम देने के लिए शुक्ल जी बीच-बीच में हास्य-व्यंग्य के छींटे भी डालते चलते हैं। इस प्रकार शुक्ल जी ने विषयानुसार भाषा-शैली का प्रयोग किया है।

साहित्यिक परिचय– शुक्ल जी ने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ एक कवि के रूप में किया किंतु साहित्य व निबंध की ओर अत्यधिक रुचि होने के कारण इन्होंने अधिकांश रचनाएँ साहित्यकार व निबंधकार के रूप में की। इन्होंने सैद्धान्तिक व व्यावहारिक दोनों प्रकार की आलोचनाएँ लिखीं। इनके द्वारा लिखित 'रस मीमांसा' और 'चिंतामणि' (भाग 1 व भाग 2) निबंध संकलन सैद्धान्तिक आलोचनाओं के अंतर्गत आते हैं। इन्होंने व्यावहारिक समीक्षाओं के रूप में तुलसी व जायसी की ग्रंथावलियों व 'भ्रमरगीत सार' की भूमिका लिखी। इनके द्वारा रचित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' हिंदी साहित्य को एक अभूतपूर्व देन है। 'चिंतामणि' में संकलित निबंधों के अतिरिक्त इन्होंने कुछ लघु व महत्वपूर्ण निबंध 'मित्रता', 'अध्ययन' आदि का भी लेखन कार्य किया। 'आनंद-कादम्बिनी' नामक पत्रिका में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

3. मित्रता पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– मित्रता आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित प्रसिद्ध निबंध है, जिसे उन्होंने जीवनोपयोगी विषय पर लिखा है, जिसमें इनकी लेखन-शैली संबंधी अनेक विशेषताओं के दर्शन हो जाते हैं।

शुक्ल जी ने मित्रता के संबंध में बताते हुए कहा है कि जब कोई युवक किशोरावस्था में घर से बाहर जाता है, उसे मित्र चुनने में कठिनाई होती है। यदि उसका व्यवहार मेल-मिलाप वाला होता है, तो उसकी लोगों से जान-पहचान बढ़ जाती है जो बाद में मित्रता का रूप धारण कर लेती है। मित्रों के चुनाव पर उसके जीवन की सफलता निर्भर होती है क्योंकि अच्छे व बुरे मित्रों की संगति ही उसे अच्छा व बुरा बना सकती है। युवा लोग मित्र बनाने से पहले मित्रों के आचरण व प्रकृति का ध्यान नहीं रखते, वे केवल उनकी बाहरी विशेषताओं पर मुग्ध हो जाते हैं, जबकि मनुष्य अगर घोड़ा भी खरीदता है तो उसके गुण-दोषों को परख लेता है। किसी प्राचीन विद्वान ने कहा भी है "विश्वासपात्र मित्र से बड़ी रक्षा रहती है।" जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।

जब व्यक्ति छात्रावास में रहता है तब उस पर मित्र बनाने की धुन सवार रहती है। बचपन की मित्रता भी अद्‌भुत है उसमें जितनी जल्दी दूसरे की बातें मन को लगती हैं, उतनी जल्दी ही रूठना मनाना भी हो जाता है। मित्रता व प्रेम के लिए यह आवश्यक नहीं है कि दो लोगों के आचरण व स्वभाव में समानता हो जैसे राम और लक्ष्मण के स्वभाव एक दूसरे से विपरीत थे, परंतु दोनों में प्रगाढ़ प्रेम था। उसी तरह कर्ण और दुर्योधन के स्वभाव में विपरीतता होने के बाद भी दोनों में

गहरी मित्रता थी। इसी प्रकार चाणक्य व चंद्रगुप्त, अकबर व बीरबल आदि अनेक उदाहरण हैं। मित्र का परम कर्तव्य अपने मित्र की सहायता व उसे विकास के लिए प्रोत्साहित करना है। हमें ऐसे ही मित्रों की खोज करनी चाहिए, जो हमारे शुभचिंतक हों जैसे राम व सुग्रीव। यदि कोई हमारे भले बुरे के बारे में हमें सचेत न कर सके तो हमें उससे दूर ही रहना चाहिए। ऐसे युवक जो आवारागर्दी करते हैं उनसे शोचनीय जीवन किसी और का नहीं है। क्योंकि उन्हें फूल-पत्तियों, झरनों की कल-कल की आवाज आदि में कोई सौंदर्य नजर नहीं आता है। जो दिन-प्रतिदिन विषयवासनाओं में लिप्त रहता है और जिनके हृदय में केवल बुरे विचार ही उठते हैं ऐसे युवकों का भविष्य अंधकारमय होता है, अत: हमें ऐसे लोगों की मित्रता से दूर रहना चाहिए। बुरी संगति बहुत भयानक होती है क्योंकि यह व्यक्ति के सभी सद्‌गुणों का नाश कर देती है और दिन-प्रतिदिन मनुष्य को पतन के गड्ढे में गिरा देती है। इसके विपरीत अच्छी संगति मनुष्य को पतन के गड्ढे से बाहर निकालने वाली बाहु के समान होगी। शुक्ल जी कहते हैं कि इंग्लैंड का एक विद्वान इस बात के लिए हमेशा खुश होता था कि उसे युवावस्था में राजदरबार में स्थान नहीं मिला क्योंकि वहाँ के लोगों की बुरी संगति उसके आध्यात्मिक विकास में बाधक होती। लेखक कहते हैं कि अश्लील व फूहड़ बात करने वालों को तुरंत रोक देना चाहिए। यदि तुम सोचोगे कि तुम्हारे चरित्र के प्रभाव के कारण वह स्वयं चुप हो जाएगा तो ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि एक बार मनुष्य जब बुराई की तरफ बढ़ता है तो वह नहीं देखता कि वह कहाँ जा रहा है और उस बुराई के प्रति धीरे-धीरे तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। अंत में तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। इसलिए मन को स्वच्छ और उज्ज्वल रखने का सर्वोत्तम उपाय बुरी संगति से दूर रहना है क्योंकि काजल की कोठरी में कितना भी चतुर व्यक्ति प्रवेश करे, उसे कालिख लग ही जाती है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. जब कोई युवा .... परिणत हो जाता है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' के आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित 'मित्रता' निबंध से उद्‌धृत है।

प्रसंग– यहाँ लेखक शुक्ल जी ने युवा पुरुष के घर से बाहर निकलने पर मित्र बनाने की स्थिति को बताया है।

व्याख्या– शुक्ल जी कहते हैं कि जब कोई युवा पुरुष (युवक) अपने घर से बाहर निकलता है और बाहरी वातावरण में स्वयं को स्थापित करने का प्रयास करता है, तब वह सबसे अधिक कठिनाई का अनुभव मित्रों का चयन करने में करता है। यदि वह युवक विचित्र प्रकृति का व एकांतप्रिय नहीं होता अर्थात् वह युवक सबसे अलग-थलग रहने वाला नहीं होता तो उसके जान-पहचान में लोगों की संख्या बढ़ती जाती है। वह युवक दूसरे लोगों से हिल-मिल जाता है और कुछ ही दिनों में उसका मेल बहुत से लोगों से हो जाता है। कुछ समय बाद लोगों से यही मेल-मिलाप ही मित्रता का रूप धारण कर लेता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) घर से बाहर निकलकर युवा पुरुषों को किस कठिनाई का सामना करना पड़ता है?

उ०– घर से बाहर निकलकर युवा पुरुषों को मित्रों के चयन की कठिनाई का सामना करना पड़ता है कि वह किसको मित्र चुनें, किसको नहीं।

(स) हेल-मेल बाद में किस रूप में परिणत हो जाता है?

उ०– हेल-मेल बाद में मित्रता में परिणत हो जाता है।

2. हम लोग ऐसे समय .... राक्षस बनावे, चाहे देव।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ आचार्य शुक्ल जी ने किशोरावस्था में युवकों पर अच्छे व बुरे प्रभाव का वर्णन किया है। जब युवक किशोरावस्था में घर से बाहर जाता है तो वह विभिन्न प्रभावों को ग्रहण करता है।

व्याख्या– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है कि किशोरावस्था में जब हम अपने घर की सीमाओं से बाहर निकलकर समाज अथवा संसार की सीमाओं में प्रवेश करते हैं, उस समय हमें समाज और संसार का अनुभव नहीं होता। हम दुनियादारी की बातों में शून्य होते हैं। हमारी अवस्था ऐसी होती है, जैसे कच्ची मिट्टी की मूर्ति होती है जिसे तोड़कर किसी भी प्रकार का रूप दिया जा सकता है। तात्पर्य यह है कि संसार की वास्तविकता का ज्ञान न होने के कारण बालक को कैसा

भी रूप दिया जा सकता है। कोई दुष्ट व्यक्ति अपना बुरा और अपवित्र प्रभाव डालकर हमें राक्षसों की तरह नीच और दुष्ट बना सकता है। इसके विपरीत यदि हमें अच्छी संगति मिल जाए तो देवताओं की भाँति हमारे जीवन में भी अच्छे गुण आ सकते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) 'कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– 'कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान' से लेखक का आशय किशोरावस्था के बच्चों से है।

(स) जब हम समाज में अपना कार्य आरंभ करते हैं तो हमारी चित्त की क्या स्थिति होती है?

उ०– जब हम समाज में अपना कार्य आरंभ करते हैं तो हमारे चित्त की स्थिति कोमल और संस्कारों को ग्रहण करने की होती है।

3. छात्रावास में तो मित्रता .... मानना-मनाना होता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में शुक्ल जी ने छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की मित्र बनाने की ललक की मनोस्थिति का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या– शुक्ल जी कहते हैं कि छात्रावास में रहते हुए विद्यार्थियों के मन में मित्र बनाने की ललक अधिक दिखाई देती है। उनके हृदय में मित्रता की भावना अपने संपूर्ण वेग से बाहर की ओर उमड़ पड़ती है। यद्यपि युवावस्था अथवा वृद्धावस्था में भी लोग एक-दूसरे के स्नेह के बंधन में बँधते हैं, परंतु फिर भी न तो उनके मन में वैसी उमंग उत्पन्न होती है और न ही उस स्नेह-बंधन के शिथिल होने पर उनके मन में किसी प्रकार की अप्रसन्नता अथवा दु:ख का भाव उत्पन्न होता है। वास्तव में बचपन की मित्रता में उस आनंद की अनुभूति होती है, जिसमें हमारा मन सब कुछ भूलकर मित्रता की स्मृतियों में ही तल्लीन हो जाता है। इस अवस्था में जैसी तीव्र ईर्ष्या और मन को गहन दु:ख पहुँचाने वाली अनुभूति होती है, वह अन्य किसी अवस्था में दिखाई नहीं देती। बाल-मित्रों से संबंध अत्यंत मधुरतापूर्ण, आसक्तिपूर्ण और एक-दूसरे के परम विश्वास पर आधारित होते हैं। बाल-मैत्री में हृदय से अनूठे भावों की अभिव्यक्ति होती है। उस समय वर्तमान आनंद में निमग्न करने वाला दिखाई देता है और भविष्य के संबंध में हमारा मन अनेक मनभावन कल्पनाएँ करता है। किसी की कोई बात हमें तत्काल आहत कर देती है और हम उससे रूठ जाते हैं। यही नहीं, हम रूठकर कुछ ही देर में अपने मित्र से पुन: प्रसन्न हो जाते हैं या अपने जिस मित्र को नाराज कर दिया है, उसे मनाने लग जाते हैं। 'सहपाठी की मित्रता' उक्ति यद्यपि देखने में बहुत छोटी है, परंतु इस उक्ति में हृदय में हलचल मचा देने वाले अनेक भाव विद्यमान होते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) छात्रावास में मित्रता की धुन किस प्रकार सवार रहती है?

उ०– छात्रावास में मित्रता की धुन बहुत अधिक सवार रहती है, क्योंकि हृदय में मित्रता की भावना संपूर्ण वेग से उमड़ पड़ती है।

(स) बाल-मैत्री की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं?

उ०– बाल-मैत्री में हृदय में अत्यधिक उमंग और आनंद होता है। इसमें हृदय को बेधने वाली ईर्ष्या और खिन्नता के बजाय मधुरता और अनुरक्ति की भावना होती है। मित्र के प्रति अपार विश्वास और भविष्य की लुभावनी कल्पनाएँ होती हैं।

(द) प्रस्तुत गद्यांश का साहित्यिक-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उ०– **साहित्यिक सौंदर्य– 1.** प्रस्तुत गद्यांश में शुक्ल जी ने छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के मन में मित्र बनाने की ललक का वर्णन किया है। **2. बाल–** मैत्री का सुंदर वर्णन किया गया है। **3. भाषा–** तत्समात्मक परिष्कृत साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** वर्णनात्मक **5. मुहावरे–** बातें लगना का सुंदर प्रयोग किया गया है।

4. इसी प्रकार प्रकृति .... मित्रता खूब निभा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– शुक्ल जी ने प्रस्तुत अवतरण में बताया है कि मित्रता के लिए व्यक्तियों के व्यवहार और स्वभाव का एक समान होना आवश्यक नहीं है। दो विपरीत स्वभाव के व्यक्ति भी गहरे मित्र हो सकते हैं।

व्याख्या– सच्ची मित्रता का दो व्यक्तियों के स्वभाव अथवा आचरण की समानता की दृष्टि से कोई संबंध नहीं है। यदि दो व्यक्तियों में परस्पर सहानुभूति का भाव है तथा वे एक-दूसरे के सुख-दु:ख को अपना सुख-दु:ख मानने का भाव रखते हैं तो विपरीत स्वभाव होने पर भी उनकी मित्रता बनी रह सकती है। इसके विपरीत यदि उनमें यह भाव विद्यमान नहीं है तो उनके स्वभाव अथवा आचरण में पर्याप्त समानता होने पर भी सच्ची मित्रता का निर्वाह हो पाना संभव नहीं है। इस तथ्य को सिद्ध करने के लिए राम-लक्ष्मण और कर्ण-दुर्योधन की प्रीति और मित्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है। राम धैर्यशाली और शांत स्वभाव के थे, जबकि लक्ष्मण के स्वभाव में बहुत अधिक उग्रता और व्यग्रता थी, परंतु फिर भी दोनों भाइयों में परस्पर असीम प्रेमभाव विद्यमान था। इसी प्रकार कर्ण दयालु स्वभाव और उच्च विचारों का धनी व्यक्ति था, जबकि दुर्योधन अत्यंत लोभी प्रकृति का व्यक्ति था, परंतु फिर भी दोनों में अटूट मित्रता थी। इसका प्रमुख कारण दोनोंम ा े एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति का भाव होना और सुख-दु:ख में एक-दूसरे के लिए तैयार रहना ही था।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) किन चीजों की समानता आवश्यक नहीं है?

उ०– व्यक्तियों के व्यवहार और स्वभाव की समानता मित्रता के लिए आवश्यक नहीं है।

(स) राम और लक्ष्मण के स्वभाव में क्या अंतर था?

उ०– राम धीर और शांत स्वभाव के थे, जबकि लक्ष्मण उग्र और उद्‌दंड स्वभाव के थे। दोनों के स्वभाव में यही मूल अंतर था।

(द) गद्यांश में कर्ण और दुर्योधन की प्रवृत्ति कैसी बताई गई है?

उ०– गद्यांश में कर्ण को उदार एवं उच्चाशय प्रवृत्ति का तथा दुर्योधन को लोभी प्रवृत्ति का बताया गया है।

5. मित्र का कर्तव्य .... धोखा न होगा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ शुक्ल जी ने सच्चे मित्र का कर्तव्य अपने मित्र का हित करना बताया है। जैसे राम ने सुग्रीव का हित करके मित्रता का धर्म निभाया था।

व्याख्या– सच्चे मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र को सदैव अच्छे काम करने के लिए प्रोत्साहित करे। संकट और विपत्ति के क्षणों में वह मित्र को उत्साहित करे तथा उसका मनोबल बढ़ाए, जिससे वह संकट का दृढ़तापूर्वक सामना कर सके। तात्पर्य यह है कि एक सच्चा मित्र अपने मित्र की अच्छे एवं महान् कार्यों के करने में इस प्रकार से सहायता करता है कि वह साहस और दृढ़ संकल्प के बल पर अपने सामर्थ्य से भी अधिक कार्य कर जाता है, लेकिन ऐसे सच्चे मित्रआसानी से नहीं मिलते। संकट में अपने मित्र की सहायता वही कर सकता है, जिसका मन शक्तिशाली हो तथा जो स्वभाव से दृढ़निश्चयी हो। शक्तिशाली मन तथा सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति ही संकट आने पर मित्र की सहायता कर सकते हैं। मित्र का चुनाव करते समय हमें ध्यान रखना चाहिए कि हम उसी को अपना मित्र बनाएँ, जो आत्मबल से युक्त हो। आत्मबल से परिपूर्ण व्यक्ति का सहारा हम पूरे विश्वास के साथ ले सकते हैं। भगवान राम की आत्मशक्ति के विषय में विश्वास हो जाने पर ही वानर-राज सुग्रीव ने उनका आश्रय ग्रहण किया था। श्रीराम की शक्ति के बल पर ही वह अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त कर सका। वस्तुत: राम जैसा मित्र पाकर सुग्रीव धन्य हो गया। मित्र का चुनाव करते समय यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मित्र ऐसा हो, जिसका समाज में सम्मान हो या जो सत्य में निष्ठा रखने वाला हो। निष्कपट, सभ्य, परिश्रमी एवं सत्यनिष्ठ मित्र कभी अपने मित्र को धोखा नहीं दे सकता। ऐसे सच्चे मित्र के सहारे हम अपने जीवन का निर्वाह भली-भाँति कर सकते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) सुग्रीव ने राम के साथ मित्रता क्यों की?

उ०– सुग्रीव ने राम के साथ मित्रता इसलिए की क्योंकि उसे भगवान राम की आत्मशक्ति के विषय में ज्ञान हो गया था। वह राम की शक्ति के बल पर ही अपना राज्य और अपनी पत्नी को प्राप्त करना चाहता था।

(स) अवतरण के अनुसार मित्र का क्या कर्तव्य होना चाहिए?

उ०– अवतरण के अनुसार मित्र का कर्तव्य है कि वह अपने मित्र का साहस तथा उत्साहवर्द्धन करके उच्च और महान् कार्यों में उसकी इस प्रकार से सहायता करें कि वह अपनी सामर्थ्य से बाहर जाकर उन कार्यों को पूरा करे।

(द) मित्रता के सही कर्तव्य का निर्वाह किस प्रकार प्रकार का व्यक्ति कर सकता है?

उ०– दृढ़-चित्त और सत्य-संकल्प वाला व्यक्ति ही मित्रता के कर्तव्य का निर्वाह कर सकता है।

(य) मित्र में किस प्रकार की विशेषताएँ होनी चाहिए और क्यों?

उ०– मित्र प्रतिष्ठित, शुद्ध हृदय वाला, विनम्र, पुरुषार्थी, शिष्ट और सत्यनिष्ठ होना चाहिए, जिससे हम उस पर भरोसा और विश्वास कर सकें कि वह हमें किसी प्रकार का धोखा नहीं देगा।

6. कुसंग का ज्वर .... ओर उठाती जाएगी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में शुक्ल जी ने बुरी संगति के प्रभाव का वर्णन किया है कि वह किस प्रकार मनुष्य को समाप्त कर देता है।

व्याख्या– जीवन में संगति के प्रभाव को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हुए आचार्य शुक्ल कहते हैं कि बुरे और द ु ष्ट लोगों की संगति एक भयानक ज्वर की तरह है। जिस प्रकार भयानक ज्वर शरीर की संपूर्ण शक्ति का क्षीण कर देता है, उसी प्रकार दुष्टों की संगति में पड़ा व्यक्ति अपनी बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि को खो बैठता है। बुरी संगति के प्रभाव में पड़कर व्यक्ति अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित का भी ज्ञान खो देता है। वस्तुत: जो लोग युवावस्था में बुरी संगति में पड़ जाते हैं, वे कभी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं हो पाते।

मानव-जीवन में युवावस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है; अत: इस समय बुद्धि और विवेक दोनों से कार्य करना आवश्यक है। बुरी संगति तो पत्थर की चक्की के समान होती है, जो पैरों में बँधने पर व्यक्ति को गतिहीन बना देती है तथा उसकी प्रगति के सभी मार्ग अवरुद्ध कर देती है, जिससे व्यक्ति का पतन होने लगता है और एक दिन वह पतन के गहरे गड्ढे में जा गिरता है। इसके विपरीत अच्छी संगति एक ऐसी बाँह के समान है, जो गिरे हुए को उठाती है तथा गिरते हुएको सहारा देती है, अर्थात् सत्संगति मिल जाने पर बुरी संगति में पड़ा हुआ व्यक्ति भी उन्नति की ओर बढ़ सकता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) लेखक के अनुसार पैरों में बँधी चक्की के समान क्या होगी?

उ०– लेखक के अनुसार बुरी संगति पैरों में बँधी चक्की के समान है, जो व्यक्ति को गतिहीन बना देती है।

(स) किस ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है और क्यों?

उ०– कुसंगति के ज्वर को सबसे भयानक कहा गया है, क्योंकि यह व्यक्ति की बुद्धि, विवेक, सदाचार आदि का नाश कर देता है और व्यक्ति की आत्मा को दुर्बल बना देता है।

(द) अच्छी संगति से होने वाले लाभों को बताइए।

उ०– अच्छी संगति व्यक्ति को सहारा देने वाली भुजा के समान होती है, जो कि व्यक्ति को पतन के गड्ढे में गिरने से बचाती है तथा उसे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करती है।

(य) बुरी संगति से क्या-क्या हानियाँ होती हैं?

उ०– बुरी संगति लगातार व्यक्ति को पतन के गड्ढे में गिराती जाती है, क्योंकि वह उसकी नीति, बुद्धि, सद्वृत्ति, विवेक का नाश करती है।

7. सावधान रहो .... पहचान न रह जाएगी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में लेखक ने बुरे लोगों की बातों को हल्के में न लेने का कहा है। लेखक के अनुसार बुराई पर चलने वाले व्यक्ति को स्वयं में कोई बुराई नजर नहीं आती है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि व्यक्ति को बुरे लोगों के साथ और उनकी फूहड़ तथा अश्लील बातों को हल्के में नहींले ना चाहिए। हमें इसे एक सामान्य बात समझकर इसकी अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि चलो उसने ये बातें केवल हमें हँसाने के लिए ही तो कही हैं। हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि चलो इस बार तो इसने ऐसी बातें की, आगे से वह ऐसा नहीं करेगा। हमें यह भी नहीं सोचना चाहिए कि यदि वह व्यक्ति ऐसी बातें करता भी है तो करे, इसका हम पर क्या फर्कप ड़ता है, हमारा चरित्र तो पवित्र और उज्ज्वल है। जब हम इससे ऐसी बातें नहीं करेंगे तो वह अपने आप ही सुधर जाएगा और हमसे ऐसी बातें करना छोड़ देगा। लेखक कहता है कि यदि तुम ऐसा सोचते हो, तो यह बिल्कुल गलत है; क्योंकि ऐसा कभी भी नहीं होगा। इसका कारण स्पष्ट करता हुआ लेखक आगे कहता है कि जब मनुष्य बुराई की ओर एक कदम बढ़ा देता है और वह उस बुराई को एक बार अपना लेता है तो वह फिर यह सोचना छोड़ देता है कि वह जिस बुराई की ओर बढ़ रहा है, उससे उसके चरित्र पर कितना बड़ा कलंक लग सकता है, इससे उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा और चरित्र का कितना पतन हो सकता है। वह तो यह सोचने लगता है कि इस बुरे काम को एक बार करके भी उतना ही पाप लगा है और मैं इसे हजार बार करूँ, तब भी इतना ही पाप लगेगा। बस, वह यह सोचकर बुराइयों में बुरी तरह लिप्त होता जाता है। जब व्यक्ति धीरे–धीरे उन बुरी बातों का अभ्यस्त हो जाता है, तब उन बातों के प्रति उसकी घृणा भी कम होती जाती है। इस घृणा के कम होते ही फिर हमें उन बातों और उन बुरे व्यक्तियों से किसी प्रकार की कोई चिढ़ नहीं रह जाती। हम सोचने लगते हैं कि इसमें चिढ़ने वाली तो कोई बात ही नहीं है। इस प्रकार हमारी उचित–अनुचित का निर्णय करने वाली विवेक–शक्ति समाप्त होती जाती है और हमें भले–बुरे की कोई पहचान नहीं रह जाती।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** मित्रता **लेखक–** रामचंद्र शुक्ल

(ब) लेखक किस बात के लिए सावधान कर रहा है? स्पष्ट कीजिए।

उ०– लेखक उन लोगों की बातों से सावधान कर रहा है, जो फूहड़ और अश्लील बातें करते हैं और उन बातों से हमें हँसाना चाहते हैं।

(स) चरित्र-बल का क्या अर्थ है?

उ०– चरित्र–बल का अर्थ किसी व्यक्ति के चरित्र की शक्ति व पवित्रता से है। अर्थात् वह व्यक्ति जिसका चरित्र दृढ़ है, जिस पर किसी कुसंगति का प्रभाव नहीं पड़ता।

(द) कीचड़ में पैर डालने से क्या अभिप्राय है?

उ०– कीचड़ में पैर डालने से अभिप्राय बुराई में प्रवेश करने से है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'मित्रता' किस विधा से संबंधित है?

(अ) नाटक (ब) कहानी
(स) संस्मरण (द) **निबंध**

2. 'शुक्ल युग' किनके नाम पर पड़ा?

(अ) चंद्रबली शुक्ल (ब) **रामचंद्र शुक्ल**
(स) श्यामचंद्र शुक्ल (द) रामकुमार शुक्ल

3. 'रसमीमांसा' किस प्रकार की कृति है?

(अ) **आलोचना** (ब) निबंध
(स) इतिहास (द) अन्य

4. निम्न में से शुक्ल जी की कृति है–

(अ) युगांधर (ब) बात
(ग) **रस मीमांसा** (द) पुरस्कार

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित प्रत्ययों से नए शब्दों का निर्माण कीजिए–

ता	=	आवश्यकता, मधुरता।
त्व	=	देवत्व, कवित्व।
ईय	=	राष्ट्रीय, भारतीय।
आवट	=	लिखावट, बनावट।
आई	=	पढ़ाई, जुताई।
हार	=	आहार, निराहार।

2. निम्नलिखित शब्दों से मूल शब्द को अलग कीजिए–

शब्द	**मूल शब्द**
ग्रंथकार	ग्रंथ
सत्यनिष्ठ	सत्य
कलुषित	कलुष
उपयुक्तता	उपयुक्त
सात्विक	सत्व

3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
युवा	वृद्ध
सुसंगति	कुसंगति
साहस	कायरता
मित्रता	शत्रुता
निर्बल	सबल

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

2. ममता (जयशंकर प्रसाद)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 ई. में काशी के सरायगोवर्धन में हुआ था।

2. जयशंकर प्रसाद किस परिवार से थे?

उ०– जयशंकर प्रसाद काशी के सरायगोवर्धन में 'सुँघनी साहू' नामक प्रसिद्ध वैश्य परिवार से थे।

3. जयशंकर प्रसाद के पिता का नाम बताइए।

उ०– जयशंकर प्रसाद के पिता का नाम देवीप्रसाद था।

4. जयशंकर प्रसाद का पालन-पोषण किसने किया?

उ०– जयशंकर प्रसाद का पालन-पोषण उनके बड़े भाई शम्भूरत्न जी ने किया।

5. जयशंकर प्रसाद किस प्रकार की पुस्तकों में रुचि रखते थे?

उ०– जयशंकर प्रसाद साहित्यिक पुस्तकों में रुचि रखते थे।

6. जयशंकर प्रसाद किस प्रकार की शैली का प्रयोग करते थे?

उ०– जयशंकर प्रसाद विचारात्मक, अनुसंधात्मक, इतिवृत्तात्मक, चित्रात्मक और भावात्मक शैली का प्रयोग करते थे।

7. जयशंकर की कुछ कृतियों के नाम बताइए।

उ०– कानन कुसुम, झरना, आँसू, कामायनी, अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, आकाशदीप, इंद्रजाल, कंकाल, तितली, इरावती आदि इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

8. सुमित्रानंदन पंत जयशंकर प्रसाद की कौन-सी कृति को 'हिंदी में ताजमहल' के समान मानते थे?

उ०– सुमित्रानंदन पंत जयशंकर प्रसाद की कृति 'कामायनी' को हिंदी में ताजमहल के समान मानते थे।

9. जयशंकर प्रसाद की मृत्यु कब हुई?

उ०– जयशंकर प्रसाद की मृत्यु सन् 1937 को काशी में हुई।

10. जयशंकर प्रसाद ने अपनी पैतृक संपत्ति क्यों बेच दी थी?

उ०– जयशंकर प्रसाद के पिता के समय से ही इन पर भारी ऋण का बोझ था, उस ऋण को उतारने के लिए इन्होंने अपनी संपूर्ण पैतृक संपत्ति बेच दी।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. जयशंकर प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– जयशंकर प्रसाद हिंदी के छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इन्होंने हिंदी साहित्य को कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास व निबंध आदि के रूप में एक मूल्यवान भेंट प्रदान की है। कवि के रूप में वे निराला, पंत, महादेवी के साथ छायावाद के चौथे स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हुए हैं, नाटक लेखन में भारतेंदु के बाद वे अलग धारा बहाने वाले युग प्रवर्तक नाटककार रहे, जिनके नाटक आज भी पाठकों को अपनी ओर खींचते हैं।

जीवन परिचय– जयशंकर प्रसाद जी का जन्म सन् 1889 ई. में काशी के सरायगोवर्धन में 'सुँघनीसाहू' नामक प्रसिद्ध वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम देवीप्रसाद तथा पितामह का नाम शिवरतन साहू था, जो शिवजी के परम भक्त व अत्यधिक दयालु प्रकृति के व्यक्ति थे। इनके पिता बाबू देवीप्रसाद जी कलाकारों का आदर करने के लिए विख्यात थे। इनका काशी में बड़ा सम्मान था और काशी की जनता काशीनरेश के बाद 'हर हर महादेव' से बाबू देवीप्रसाद का स्वागत करती थी। प्रसाद जी का बाल्यकाल सुख के साथ व्यतीत हुआ। इन्होंने बाल्यावस्था में ही अपनी माता के साथ धाराक्षेत्र, ओंकारेश्वर, पुष्कर, उज्जैन व ब्रज आदि तीर्थों की यात्रा की। यात्रा से लौटने के पश्चात प्रसाद जी के पिता का स्वर्गवास हो गया। किशोरावस्था से पूर्व ही इनकी माता व बड़े भाई का भी देहावसान हो गया। इन सब चीजों के बाद इन्होंने अपने जीवन में अत्यधिक संघर्ष किया।

प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा काशी में क्वींस कॉलेज में हुई, किंतु कॉलेज की पढ़ाई में मन न लगने के कारण इनके भाई शम्भूरत्न जी ने इनकी शिक्षा का प्रबंध घर पर ही करा दिया और घर पर ही इन्होंने संस्कृत, हिंदी, उर्दू तथा फारसी का अध्ययन किया। माता-पिता की मृत्यु के बाद इनके भाई ने ही इनका पालन-पोषण किया। दीनबंधु ब्रह्मचारी जैसे विद्वान इनके संस्कृत के अध्यापक थे। इनके गुरुओं में 'रसमय सिद्ध' की भी चर्चा की जाती है। प्रसाद जी को प्रारंभ से ही साहित्य के प्रति अनुराग था। ये प्राय: साहित्यिक पुस्तकें पढ़ा करते थे और अवसर मिलने पर कविता भी लिखा करते थे। कहा जाता है कि मात्र नौ वर्ष की आयु में ही इन्होंने 'कलाधर' के नाम से ब्रजभाषा में एक सवैया लिखकर 'रसमय सिद्ध' को दिखाया था। इन्होंने वेद, इतिहास, पुराण तथा साहित्य शास्त्र का अत्यंत गंभीर अध्ययन किया था। कुछ समय तक 'नागरी प्रचारिणी सभा' के उपाध्यक्ष भी रहे। इनके पिता के समय से ही इन पर भारी ऋण का बोझ था। उस ऋण को उतारने के लिए ही इन्होंने अपनी संपूर्ण पैतृक संपत्ति बेच दी। इनकी रचना 'कामायनी' पर इन्हें भारत सरकार द्वारा 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' प्रदान किया गया, जो किसी भी लेखक और कवि के लिए एक अत्यधिक गौरव की बात है। यद्यपि ये नियमित व्यायाम करने वाले, सात्विक खानपान व गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे, किंतु किशोरावस्था से ही अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करने के कारण इनका शरीर क्षय रोग से ग्रस्त हो गया और मात्र 48 वर्ष की आयु में सन् 1937 को इनका काशी में देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय– प्रसाद जी में साहित्य सृजन की प्रतिभा जन्मजात विद्यमान थी। मात्र 48 वर्ष की जीवनावधि में इन्होंने जो कुछ भी लिखा है, वह हिंदी साहित्य को एक अमूल्य देन है। प्रसाद जी के जीवनकाल में ऐसे साहित्यकार काशी में विद्यमान थे, जिन्होंने अपनी कृतियों द्वारा हिंदी साहित्य को ऊँचाई के शीर्ष तक पहुँचाया। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध, साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में उन्होंने ऐतिहासिक महत्व की रचनाएँ की तथा खड़ीबोली की

श्रीसंपदा को महान और मौलिक दान से समृद्ध किया। नाटक के क्षेत्र में इनके अभिनव योगदान के फलस्वरूप नाटक विधा में 'प्रसाद युग' का सूत्रपात हुआ।

2. जयशंकर प्रसाद की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषा-शैली–** जिस प्रकार प्रसाद जी के अनेक विषयों से संबंधित काव्य एवं गद्य रचनाएँ की हैं, उसी प्रकार उनकी भाषा ने भी अनेक रूप ग्रहण किए हैं। उनकी भाषा का स्वरूप विषय के अनुसार ही परिवर्तित होता रहा है। प्रसाद जी ने काव्य रचना ब्रजभाषा में आरंभ की और धीरे-धीरे खड़ीबोली को अपनाते हुए इस भाँति अग्रसर हुए कि खड़ीबोली के मूर्धन्य कवियों में उनकी गणना की जाने लगी और वे युग प्रवर्तक कवि के रूप में प्रतिष्ठित हुए। इसी कारण इन्हें 'छायावादी काव्यधारा का जनक' कहा जाता है। काव्यक्षेत्र में प्रसाद की कीर्ति का मूलाधार 'कामायनी' है। खड़ीबोली का यह द्वितीय महाकाव्य मनु और शृद्धा को आधार बनाकर रचित मानवता को विजयिनी बनाने का संदेश देता है। इनकी यह कृति छायावाद और खड़ीबोली का अद्वितीय उदाहरण है। सुमित्रानंदन पंत इसे 'हिंदी में ताजमहल' के समान मानते हैं। शिल्पविधि, भाषा व भावाभिव्यक्ति की दृष्टि से इसकी तुलना खड़ीबोली के किसी भी काव्य से नहीं की जा सकती।

अपनी गद्य रचनाओं में प्रसाद जी ने संस्कृतप्रधान भाषा का प्रयोग किया है, जो कि संस्कृतनिष्ठ, समृद्ध व व्यापक है। इन्होंने विषय के अनुसार ही अपनी सभी रचनाओं में अलग-अलग शैलियों का प्रयोग किया है। जिनमें विचारात्मक शैली, अनुसंधानात्मक शैली, इतिवृतात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, भावात्मक शैली प्रमुख हैं।

3. ममता कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– ममता कहानी जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित छोटी, किंतु अत्यधिक समृद्ध कृति है। नारी पात्र ममता के चरित्र के ताने-बाने से इसका कथानक निर्मित है। प्रसाद जी ने ममता के माध्यम से बाल-विधवा की करुण कथा चित्रित की है, साथ ही भारतीय नारी की गरिमा भी।

ममता एक बाल-विधवा युवती है, जो रोहतास-दुर्ग के महल में बैठी सोन नदी के प्रबल बेग को देख रही थी। बाल-विधवा होने के कारण उसका जीवन दु:खों से भरा था। वह रोहतास दुर्ग के मंत्री चूड़ामणि की पुत्री थी। उसके पास सभी सुख-साधन थे परंतु भारतीय समाज में नारी का विधवा होना उसका सबसे बड़ा अपराध है, इसलिए उसके दु:खों का कोई अंत नहीं था। तभी चूड़ामणि महल में आते हैं, परंतु ममता उनके आगमन को न जान सकी। वह अपने दु:खों में बेसुध थी। चूड़ामणि अपनी पुत्री के दु:ख को देखकर चिंतामग्न होकर वापस लौट जाते हैं। एक पहर के बाद वे पुन: ममता के पास आए उनके साथ सेवक चाँदी के थाल लेकर आए थे। थाल देखकर ममता ने पूछा ''यह क्या है?'' थालों में स्वर्ण देखकर ममता को आभास हो जाता है कि उसके पिता ने मलेच्छ की रिश्वत स्वीकार कर ली है। उसके पिता भविष्य के प्रति उसे आगाह करते हैं परंतु ममता भगवान की इच्छा के विरुद्ध किए गए कृत्य को अपराध मानते हुए अपने पिता को धन को वापस लौटा देने को कहती है।

दूसरे दिन रोहतास-दुर्ग में डोलियों का रेला आने पर चूड़ामणि उसे रोकते हैं। पठान उसे महिलाओं का अपमान बताते हैं। युद्ध होने पर चूड़ामणि मारा जाता है व राजा-रानी और कोष सब पर शेरशाह का आधिपत्य हो जाता है। पर ममता कहीं नहीं मिलती, वह दुर्ग से निकल जाती है।

काशी के उत्तर में धर्मचक्र विहार में जहाँ पंचवर्गीय भिक्षु गौतम का उपदेश ग्रहण करने के लिए मिले थे, उसी स्तूप के खंडहरों में एक झोपड़ी में एक महिला भगवत्गीता का पाठ कर रही है। तभी झोपड़ी के दरवाजे पर एक व्यक्ति आश्रय माँगने आता है, जो कि एक मुगल है, जो चौसा युद्ध में शेरशाह से पराजित होकर आया था। ममता उसे आश्रय देने से मना कर देती है। वह सोचती है कि सभी विधर्मी दया के पात्र नहीं होते। मुगल के वापस लौटने के प्रश्न पूछने पर वह ब्राह्मणी होने के नाते अपने आतिथ्य धर्म का पालन करना अपना कर्तव्य समझती है। वह सैनिक को अपनी झोपड़ी में आश्रय देकर स्वयं टूटे हुए खंडहरों में चली जाती है। प्रभात में ममता बहुत से सैनिकों को उस पथिक को ढूँढ़ते हुए देखती है। पथिक अपने सैनिकों से ममता का ढूँढ़ने को कहता है, पर ममता वहाँ नहीं मिलती। पथिक लौटते हुए ममता का घर बनवाने का आदेश देता है। अब ममता सत्तर वर्ष की वृद्धा हो चुकी थी। चौसा के मुगलों व पठानों के युद्ध को भी काफी समय बीत गया था। ममता बीमार थी, उसकी झोपड़ी में कई महिलाएँ उसकी सेवा कर रही थीं क्योंकि वह भी उनके सुख-दु:ख में उनके काम आती थी। अचानक एक घुड़सवार वहाँ आता है, वह हाथ में एक चित्र लिए होता है। ममता उसे अपने पास बुलाती है और कहती है कि 'मैं नहीं जानती वह कौन था, जिसने मेरी झोपड़ी में विश्राम किया था। उसने मेरा घर बनवाने का आदेश दिया था। आज मैं स्वर्गलोक जाती हूँ, अब तुम यहाँ जो चाहो करो।' ममता के प्राण-पखेरु उड़ जाते हैं। बाद में

अकबर ने वहाँ एक अष्टकोण मंदिर बनवाया और उस पर लिखवाया कि ''सातों देश के नरेश हुमायूँ ने एक दिन यहाँ विश्राम किया था।'' पर उस पर ममता का कहीं जिक्र नहीं किया।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. रोहतास-दुर्ग के .... कहाँ अंत था?

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्यखंड' के जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखित 'ममता' कहानी से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण में जयशंकर प्रसाद ने बाल-विधवा के दु:खों व वैधव्य के कारण भारतीय समाज में महिला की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या– ममता रोहतास दुर्गपति के मंत्री चूड़ामणि की इकलौती पुत्री है। दुर्भाग्य से वह बचपन से ही विधवा हो गई थी। अपने दुर्ग के प्रकोष्ठ में बैठी वह सोन नदी के तेज प्रवाह को देख रही है। जिस प्रकार सोन नदी उफनकर बह रही है, उसी प्रकार ममता का यौवन भी पूरी तरह उफान पर है। उसके यौवन में और सोन नदी के उमड़ते प्रवाह में अद्भुत समानता है। ममता हर प्रकार के भौतिक सुख से संपन्न है, फिर भी विधवा-जीवन के कठोर अभिशाप से उसका मन तरह-तरह के विचारों और भावों की आँधी से भरा हुआ है। उसकी आँखों से दु:ख के आँसू बह रहे हैं। विलासिता का सुख भी उसको काँटों की दु:खपूर्ण शय्या के समान प्रतीत हो रहा है। तात्पर्य यह है कि काँटों की शय्या पर सोने वाला व्यक्ति जिस प्रकार हर पल बेचैन रहता है, उसी प्रकार सभी प्रकार के भौतिक सुखों के रहते हुए भी ममता का जीवन कष्टदायक सिद्ध हो रहा है। ममता के पिता ने उसके लिए प्रत्येक प्रकार के सुख साधन जुटा दिए हैं। उसे किसी भी वस्तु का अभाव नहीं है, किंतु इस धन और संपत्ति को प्राप्त करके भी ममता को मानसिक संतोष नहीं है। इसका कारण यह है कि वह बाल-विधवा है। हिंदू समाज में विधवा को निम्नतम श्रेणी में माना जाता है। उसे अपमान, तिरस्कार तथा उपेक्षा ही मिलती है, विधवा का जीवन स्वयं उसी के लिए भार बन जाता है। ऐसी स्थिति में भौतिक साधन उसे मानसिक शांति प्रदान नहीं कर सकते। ममता भी ऐसी ही नारी है, जो सब प्रकार के साधन होते हुए भी असहाय है। वह वैधव्य के भार को ढो रही है और यह भार भी ऐसा है, जिससे छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ममता **लेखक–** जयशंकर प्रसाद

(ब) चूड़ामणि की कितनी पुत्रियाँ थी?

उ०– चूड़ामणि की केवल एक पुत्री थी, जिसका नाम ममता था।

(स) ममता कहाँ बैठी थी?

उ०– ममता रोहतास-दुर्ग के महल में बैठी थी।

(द) 'हिंदू-विधवा संसार में सबसे तुच्छ निराश्रय प्राणी है' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– इस पंक्ति से लेखक का आशय है कि भारतीय समाज में विधवा स्त्री को तुच्छ समझा जाता है, उसकी स्थिति बहुत दयनीय होती है, उसके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है।

2. ''इस पतनोन्मुख .... अंधा बना रही है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने पिता-पुत्री के बीच के द्वंद्व को प्रदर्शित किया है। ममता के नि:स्वार्थी गुण को यहाँ लेखक ने प्रकट किया है।

व्याख्या– प्रस्तुत अवतरण में चूड़ामणि ममता को सामंत वंश के अंत होने पर, जो कि समीप ही है के बाद की स्थिति से अवगत कराते हैं क्योंकि शेरशाह सूरी कभी भी रोहतास-दुर्ग पर अपना अधिकार कर सकता है। तब चूड़ामणि का मंत्रिपद नहीं रहेगा, तब के लिए उन्हें इस धन की आवश्यकता पड़ेगी। इस पर ममता अपने पिता को दुत्कारते हुए कहती है कि-हे भगवान! आने वाले समय या विपत्ति के लिए इतना घृणित कार्य करना सही नहीं है। ममता आगे कहती है कि हे पिताजी हमें परमपिता की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। घूस लेना पाप है। वह कहती है कि पिताजी, ऐसे अनैतिक कार्य से तो भीख माँगना अच्छा है। क्या इस पृथ्वी पर ब्राह्मण को दो मुट्ठी अन्न देने वाला कोई हिंदू बचा न रह

सकेगा। ऐसा होना असंभव है। पिताजी, इस रिश्वत के धन को वापस लौटा दीजिए। इसकी चमक मेरी आँखों को अंधा बना रही है। अर्थात् यह पाप करके लिया गया धन मुझे स्वीकार्य नहीं है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ममता **लेखक–** जयशंकर प्रसाद

(ब) गद्यांश के अनुसार कौन-से वंश का अंत समीप है?

उ०– गद्यांश के अनुसार सामंत वंश का अंत समीप है।

(स) गद्यांश के अनुसार रोहिताश्व पर कौन अधिकार कर सकता है?

उ०– गद्यांश के अनुसार शेरशाह सूरी रोहिताश्व पर अधिकार कर सकता है।

(द) अपने पिता का कौन-सा कार्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा?

उ०– चूड़ामणि ने ममता के लिए उत्कोच के रूप में स्वीकार किया गया दस थाल सोना भरकर उपहार में प्रदान किया। उनका यही कार्य ममता को परमपिता की इच्छा के विरुद्ध लगा; क्योंकि ममता का मानना है कि कुछ भी होता है, वह ईश्वर की इच्छा से होता है। वह विधवा हुई तो उसमें भी ईश्वर की इच्छा थी। यदि ईश्वर की इच्छा उसे दीन-हीन बनाकर रखने की है तो उसके पिता का कोई भी प्रयास ऐसा होने से नही रोक सकता। यदि वह ऐसा करते हैं, तो निश्चित ही वह ईश्वर की इच्छा के विरूद्ध होगा।

(य) प्रस्तुत गद्यांश के अनुसार ममता की मनोवृत्ति स्पष्ट कीजिए।

उ०– इस गद्यांश से ममता की भाग्यवादी अथवा ईश्वरवादी मनोवृत्ति को स्पष्ट किया गया है।

3. ''काशी के उत्तर .... पर्युपासते–''

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने काशी के उत्तर में स्थित सारनाथ नामक स्थान पर स्थित स्तूपों के खंडहरों व उनकी वास्तुकला का वर्णन किया है।

व्याख्या– काशीनगर के उत्तर में भगवान गौतम बुद्ध ने सारनाथ नामक स्थान पर अपने धर्मचक्र की स्थापना की थी। इसी स्थान पर मौर्य तथा गुप्तवंश के सम्राटों ने अपने यश के प्रसार के लिए अनेक बिहार बनवाए तथा तरह-तरह के स्तूपों का निर्माण करवाया, जो शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय थे। इन बौद्ध विहारों की टूटी-फूटी चोटियाँ व कंगूरे और उनके चारों ओर खिंची हुई वे दीवारें, जो पत्तों और झाड़ियों आदि से ढकी हुई थीं। अब खंडहर के रूप में मौर्यकालीन एवं गुप्तकालीन संस्कृति तथा शिल्पकला के ऐश्वर्य की झलक भर दे रही थी। धर्मचक्र-विहार के इन खंडहरों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्पकला की आत्मा ग्रीष्म ऋतु की चाँदनी से अपने आपको शीतलता प्रदान कर रही हो।

जिस स्थान पर पंचवर्गीय बौद्ध भिक्षुक गौतम बुद्ध का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहली बार मिले थे अर्थात् सारनाथ में टूटे हुए स्तूप के अवशेषों की छाया में स्थित एक झोपड़ी में एक स्त्री दीपक के प्रकाश में श्रीभगवद् गीता की भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कही गई उक्ति– ''जो भक्त अनन्य भाव से मेरा चिंतन करते हैं, उनके अभाव की पूर्ति मैं स्वयं करता हूँ'' का पाठ कर रही थी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ममता **लेखक–** जयशंकर प्रसाद

(ब) पंचवर्गीय भिक्षु गौतम बुद्ध का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले कहाँ मिले थे?

उ०– पंचवर्गीय भिक्षु गौतम बुद्ध का उपदेश ग्रहण करने के लिए पहले सारनाथ में मिले थे।

(स) गद्यांश में किस खंडहर की चर्चा की गई है?

उ०– गद्यांश में मौर्य और गुप्त सम्राटों द्वारा निर्मित बौद्ध-विहारों के खंडहरों का वर्णन किया गया है।

(द) स्त्री पाठ कहाँ कर रही थी?

उ०– स्त्री बौद्ध-विहारों के खंडहरों में स्थित झोपड़ी में पाठ कर रही थी।

(य) स्त्री क्या पाठ कर रही थी? उसका क्या अर्थ है?

उ०– स्त्री ''अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते–'' का पाठ कर रही थी। इसका अर्थ है– जो भक्त अनन्य भाव से मेरा (श्रीकृष्ण का) चिंतन करते हैं,उनके अभाव की पूर्ति मैं स्वयं (श्रीकृष्ण) करता हूँ।

4. चौसा के मुगल .... पर दिखाई पड़ा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने ममता के अंतिम समय और ममता में विद्यमान मानवीय गुणों का वर्णन किया है। जिनके कारण प्रत्येक व्यक्ति उसके प्रति आदर व प्रेम की भावना रखता था।

व्याख्या– मुगलों और पठानों के बीच हुए चौसा युद्ध को बहुत समय बीत चुका था, जिसमें मुगल सम्राट हुमायूँ ने शेरशाह से अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए ममता की झोपड़ी का आश्रय लिया था। जब यह घटना हुई थी, तब ममता युवा थी, आज वह सत्तर वर्ष की बुढ़िया है। बुढ़ापे ने उसका शरीर जर्जर बना दिया है। इसी अवस्था में वह एक दिन अपनी झोपड़ी में पड़ी थी। सर्दियों के उस प्रात:काल में कंकाल मात्र रह गया उसका शरीर खाँसी से हिल उठता था। वह इतनी अशक्त थी कि स्वयं चल-फिर न सकती थी। एक प्रकार से ममता मृत्युशैया पर लेटी थी। उसकी सेवा-सुश्रूषा के लिए गाँव की दो-तीन स्त्रियां उसे चारों ओर से घेर कर बैठी थीं। यद्यपि उसका कोई सगा-संबंधी न था, किंतु उसने जीवनभर लोगों के सुख-दु:ख में उनका साथ निभाया था, इसलिए अंत समय में उसकी सेवा के लिए गाँव की स्त्रियाँ उसके पास उपस्थित थीं। ममता ने पीने के लिए जल माँगा, एक स्त्री ने सीपी में जल लेकर उसे पिलाया। अचानक एक घुड़सवार उस झोपड़ी के द्वार पर दिखाई दिया।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– ममता **लेखक–** जयशंकर प्रसाद

(ब) 'ममता आजीवन सबके सुख-दु:ख की सहभागिनी रही' कथन को स्पष्ट कीजिए।

उ०– इस कथन का आशय है कि ममता ने जीवनभर सभी के सुखों-दु:खों में उनका साथ दिया और नि:स्वार्थ भाव से उनकी सेवा की। वह प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे-बुरे समय में उनका धैर्य बँधाती थी।

(स) गाँव की स्त्रियों ने ममता को क्यों घेर रखा था?

उ०– बुढ़ापे के कारण ममता का शरीर जर्जर हो गया था। वह इतनी अशक्त थी कि चल-फिर भी नहीं सकती थी इसलिए उसकी सेवा करने के लिए गाँव की स्त्रियाँ उसे घेर कर बैठी थीं।

(द) गद्यांश में ममता के चरित्र की किस विशेषता के बारे में बताया गया है?

उ०– गद्यांश में ममता के सहयोगी, मिलनसार, परोपकारी आदि चरित्र की विभिन्न विशेषताओं के बारे में बताया गया है।

5. अश्वारोही पास .... गृह में जाती हूँ।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने ममता के अंतिम समय व उसके अपनी झोपड़ी के प्रति लगाव को प्रदर्शित किया है।

व्याख्या– घुड़सवार बुलाने पर ममता के पास आता है। ममता क्योंकि मृत्युशैया पर लेटी है और ठीक से बोल पाने में भी असमर्थ थी। किसी तरह रुक-रुककर उससे कहा कि हाँ, सैंतालीस साल पहले किसी व्यक्ति ने मेरी इस झोपड़ी में शरण अवश्य ली थी, किंतु मैं यह नहीं जानती कि वह कौन था? वह कोई बादशाह था अथवा एक साधारण मुगल। मगर वह एक दिन के लिए इसी झोपड़ी में रहा था। जाते समय मैंने सुना था कि वह अपने किसी आदमी को मेरा घर बनवाने की आज्ञा दे रहा था। उस दिन से आज तक मुझे यही भय सताता रहा कि पता नहीं कब कोई आकर मेरी इस झोपड़ी को गिरा दे और इस स्थान को खुदवाकर मकान बनवा दे। मुझे अपनी इस झोपड़ी से बड़ा प्यार था, मैं नहीं चाहती थी कि कोई इसे गिराकर इसके स्थान पर मकान बनवा दे; क्योंकि इस झोपड़ी के साथ मेरे जीवन की न जाने कितनी यादें जुड़ी हैं। यही मेरे भयभीत होने का कारण था। शायद भगवान ने मेरी प्रार्थना सुन ली थी, इसीलिए आज तक यहाँ कोई मकान बनवाने नहीं आया। अब मेरा समय पूरा हो गया है। मैं इसे छोड़कर जा रही हूँ; अत: मुझे अब किसी प्रकार का डर भी नहीं है, चाहे तुम इस स्थान पर मकान बनवाओ या कोई विशाल-आलीशन महल। आज मुझे इस झोपड़ी से कोई मोह अथवा लगाव नहीं रह गया है। अब मैं सदैव के लिए अलौकिक विश्राम-गृह में आराम करने के लिए जा रही हूँ। अर्थात् अब मैं इस संसार को छोड़कर स्वर्गलोक को जा रही हूँ।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– ममता **लेखक–** जयशंकर प्रसाद

(ब) 'मैं अपने चिर-विश्राम-गृह में जाती हूँ' कथन से क्या आशय है?

उ०– इस कथन से आशय है कि ममता का अंत समय नजदीक था। अत: उसने कहा कि वह इस संसार को त्याग करके चिर-विश्राम-गृह (स्वर्गलोक) को जा रही है।

(स) अश्वारोही क्या ढूँढ़ रहा था और क्यों?

उ०– अश्वारोही ममता की झोपड़ी ढूँढ़ रहा था क्योंकि उसे उसके स्थान पर मकान बनवाने का आदेश मिला था।

(द) ममता पूरे जीवन क्यों भयभीत रही?

उ०– ममता पूरे जीवन अपनी झोपड़ी को खोने के डर से भयभीत रही। वह अपनी झोपड़ी से बहुत प्यार करती थी और उसमें एक दिन के लिए विश्राम करने वाले मुगल ने उसके स्थान पर मकान बनवाने का आदेश दिया था। यही आदेश उसके भय का कारण था, क्योंकि वह जीते-जी अपनी झोपड़ी छोड़ना नहीं चाहती थी।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रसाद जी के पितामह का क्या नाम था?

(अ) देवी प्रसाद (ब) देवी सिंह

(स) शिवमंगल साहू (द) **शिवरतन साहू**

2. प्रसाद जी के पितामह किसके परमभक्त थे?

(अ) **शिव जी के** (ब) रामचंद्र जी के

(स) हनुमान जी के (द) दुर्गा जी के

3. प्रसाद जी की मृत्यु किस रोग के कारण हुई?

(अ) पेचिश (ब) पीलिया

(स) **क्षय** (द) इनमें से कोई नहीं

4. प्रसाद जी की मृत्यु कितने वर्ष की आयु में हुई?

(अ) 58 वर्ष (ब) 38 वर्ष

(स) 68 वर्ष (द) **48 वर्ष**

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

तत्सम शब्द	**तद्भव रूप**
प्रकोष्ठ	संहन
यौवन	जोबन
निराश्रय	बेसहारा
अनुचर	नौकर
स्वर्ण	सोना
उत्कोच	घूस
निष्ठुर	निठुर
प्रभात	सुबह
विश्राम	आराम

2. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
भग्नावशेष	भग्न + अवशेष
दीपालोक	दीप + आलोक

निराश्रय	नि:	+	आश्रय
अश्वारोही	अश्व	+	आरोही
दुश्चिंता	दु:	+	चिंता
नरेश	नर	+	ईश
पतनोन्मुख	पतन	+	उन्मुख

3. निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह कीजिए-

समस्त पद	**समास-विग्रह**
अष्टकोण	आठ कोणों का समूह
गगनचुंबी	गगन को चूमने वाला
दुर्गपति	दुर्ग का प्रधान
कंटक-शयन	कंटकों पर शयन
तृण-गुल्म	तिनकों का समूह

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. क्या लिखूँ? (पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०- पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई, 1894 को खैरागढ़, छत्तीसगढ़ में हुआ था।

2. पदुमलाल पुन्नालाल किस युग के साहित्यकार थे?

उ०- पदुमलाल पुन्नालाल द्विवेदी युग के साहित्यकार थे।

3. बख्शी जी की प्रथम कहानी किस पत्रिका में प्रकाशित हुई? उसका नाम क्या था?

उ०- बख्शी जी की प्रथम कहानी जबलपुर से निकलने वाली 'हितकारिणी' पत्रिका में प्रकाशित हुई। उसका नाम 'तारिणी' था।

4. बख्शी जी के पिता व पितामह का नाम बताइए।

उ०- बख्शी जी के पिता का नाम उमराव बख्शी व पितामह का नाम पुन्नालाल बख्शी था।

5. 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन बख्शी जी ने किस साहित्यकार के बाद किया?

उ०- 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन बख्शी जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद किया।

6. बख्शी जी के दो काव्य-संग्रहों के नाम बताइए।

उ०- बख्शी जी के दो काव्य-संग्रह अश्रुदल व शतदल हैं।

7. बख्शी जी ने किस प्रकार की रचनाएँ की हैं?

उ०- बख्शी जी ने मुख्य रूप से आलोचनात्मक व निबंधात्मक रचनाएँ की हैं।

8. बख्शी जी की दो अनूदित रचनाओं के नाम बताइए।

उ०- बख्शी जी की दो अनूदित रचनाएँ— तीर्थस्थल और प्रायश्चित हैं।

9. बख्शी जी ने सरस्वती पत्रिका के अतिरिक्त कौन-सी पत्रिका का संपादन किया?

उ०- बख्शी जी ने सरस्वती पत्रिका के अतिरिक्त मासिक पत्रिका 'छाया' का संपादन किया।

10. पदुमलाल पुन्नालाल जी का निधन कब हुआ था?

उ०- पदुमलाल पुन्नालाल जी का निधन सन् 1971 ई. में हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों पर भी प्रकाश डालिए।

उ०- पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, द्विवेदी युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। ये एक कुशल आलोचक, हास्य-व्यंग्यकार तथा गंभीर

विचारक थे। बख्शी जी अपने ललित निबंधों के लिए विशेष रूप से स्मरणीय रहेंगे। ये अंग्रेजी कवि वर्ड्सवर्थ से बहुत प्रभावित थे, जिनसे प्रेरित होकर इन्होंने स्वच्छंदतावादी कविताएँ लिखी। बख्शी जी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार आलोचना और निबंध लेखन है।

जीवन परिचय– पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी का जन्म 27 मई, 1894 को खैरागढ़, छत्तीसगढ़ में हुआ था। इनके पिता उमराव बख्शी व पितामह पुन्नालाल बख्शी 'खैरागढ़' के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। 14 वीं शताब्दी में बख्शी जी के पूर्वज श्री लक्ष्मीनिधि राजा के साथ मंडला से खैरागढ़ में आए थे ओर तब ये यहीं बस गए। बख्शी जी के पूर्वज फतेह सिंह और उनके पुत्र श्रीमान राजा उमराव सिंह दोनों के शासनकाल में श्री उमराव बख्शी राजकवि थे।

पदुमलाल बख्शी की प्राइमरी की शिक्षा खैरागढ़ में ही हुई। 1911 में यह मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में बैठे। हेडमास्टर एन.ए. गुलाम अली के निर्देशन पर उनके नाम के साथ उनके पितामह का नाम पुन्नालाल लिखा गया। तब से यह अपना पूरा नाम पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी लिखने लगे। मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में यह अनुत्तीर्ण हो गए। उसी वर्ष इन्होंने साहित्य जगत में प्रवेश किया। 1912 में उन्होंने मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। उच्च शिक्षा के लिए उन्होंने बनारस के सेंट्रल हिंदू कॉलेज में प्रवेश लिया। सन् 1913 में लक्ष्मी देवी के साथ उनका विवाह हो गया। 1916 में उन्होंने बी.ए. की उपाधि प्राप्त की तथा फिर उनकी नियुक्ति स्टेट हाईस्कूल राजानंदगाँव में संस्कृत अध्यापक के पद पर हुई। सन् 1971 ई. में हिंदी साहित्य के इस महान आधार स्तंभ का निधन हो गया।

रचनाएँ– बख्शी जी की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

(अ) **काव्य–** अश्रुदल, शतदल

(ब) **आलोचना–** विश्व साहित्य, हिंदी कहानी साहित्य, हिंदी साहित्य विमर्श, हिंदी उपन्यास साहित्य

(स) **निबंध-संग्रह–** पंच-पात्र, पद्म वन, प्रबंध-पारिजात, कुछ बिखरे पन्ने, कुछ यात्री

(द) **कहानी संग्रह–** झलमला, अंजलि

(य) **अनूदित–** तीर्थस्थल, प्रायश्चित, उन्मुक्ति का निबंध

2. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की भाषा-शैली को सविस्तार समझाइए।

उ०– **भाषा-शैली–** बख्शी जी की भाषा में जटिलता और रूखापन नहीं है। इनकी भाषा में कहीं-कहीं उर्दू अंग्रेजी के शब्द भी मिलते हैं, जो भाषा को सरल व प्रवाहमय बनाते हैं। इनकी भाषा एक आदर्श भाषा है। बख्शी जी के अनुसार भाषा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें सभी प्रकार के विषयों का विवेचन किया जा सके।

बख्शी जी ने अपने कथात्मक निबंधों में भावात्मक शैली का प्रयोग किया है, जिसमें छोटे-छोटे वाक्य हैं, जिनकी सहायता से भावों की अभिव्यंजना बड़ी कुशलता के साथ हुई है। यह शैली सरल व सरस है तथा इसमें चित्रात्मकता, सजीवता व गतिशीलता भी है। इनके आलोचनात्मक निबंधों में गंभीर विषयों को प्रस्तुत करने के लिए व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है, जो कहीं-कहीं पर क्लिष्ट भी हो गई है। इनके कुछ निबंधों में विचारात्मक शैली के भी दर्शन होते हैं।

3. 'क्या लिखूँ?' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'क्या लिखूँ?' पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का एक ललित निबंध है। जिसके विषय-प्रतिपादन, प्रस्तुतीकरण एवं भाषा-शैली में इनकी सभी विशेषताएँ सन्निविष्ट हैं। इस निबंध की उत्कृष्टता के दर्शन उस समन्वित रचना-कौशल में होते हैं, जिसके अंतर्गत लेखक ने दो विषयों पर निबंध की विषय सामग्री करने आदि का संकेत ही नहीं किया है, वरन् संक्षिप्त रूप में उन्हें प्रस्तुत भी कर दिया है।

बख्शी जी के अनुसार आज उनके लिए लेखन कार्य करना अनिवार्य है। उन्हें अंग्रेजी के प्रसिद्ध निबंधकार ए. जी. गार्डिनर का कथन याद आ गया कि लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है, जब मनुष्य लेखन के लिए उद्धत होता है। उस समय उसे विषय के बारे में ध्यान ही नहीं रहता है। जिस प्रकार हैट को टाँगने के लिए किसी भी खूँटी का प्रयोग किया जा सकता है, उसी प्रकार मन के भावों को किसी भी विषय पर प्रस्तुत किया जा सकता है। गार्डिनर साहब का यह कथन सर्वथा उपयुक्त है, परंतु लेखक बख्शी जी को लेखन कार्य के लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। लेखक को नमिता ने 'दूर के ढोल सुहावने' व अमिता ने 'समाज सुधार' पर निबंध लिखने को दिया, जिस पर आदर्श निबंध लिखकर उन्हें निबंध-रचना का रहस्य समझाना था। इसके लिए लेखक ने निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाएँ देखीं। एक विद्वान का कथन था कि निबंध छोटा होना चाहिए क्योंकि यह बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है। परंतु निबंध के दो अंग सामग्री और

शैली है। इसलिए लेखक को सामग्री एकत्र करने के लिए मनन करना होगा। लेखक के पास 'दूर के ढोल सुहावने' पर निबंध लिखने के लिए पर्याप्त समय नहीं था। विद्वानों के अनुरूप किसी भी विषय पर निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए। जिसमें लेखक कठिनाई का अनुभव करता है। जिस प्रकार ए. जी. गार्डिनर को अपने लेखों का शीर्षक बनाने में कठिनाई होती थी। इसी प्रकार शेक्सपीयर को भी नाटक लिखने में उतनी कठिनाई नहीं होती थी जितनी कि उनके नामकरण से होती थी, इसलिए उन्होंने अपने नाटक का नाम 'जैसा तुम चाहो' रख दिया। लेखक को दूसरा प्रमुख कार्य निबंध की शैली का निश्चय करना था, जिससे अमिता और नमिता यह न समझें कि यह निबंध मोटी अक्ल वालों के लिए लिखा गया है। अंग्रेजी के निबंधकार मानटेन ने जो कुछ स्वयं देखा, सुना, अनुभव किया उसी को अपने निबंधों में लिपिबद्ध कर दिया। जो कि उनके मन की स्वच्छंद रचनाएँ थी। लेखक ने यहाँ अमीर खुसरो की प्रतिभा का उदाहरण दिया है कि एक बार वे एक कुएँ पर गए जहाँ चार औरतें पानी भर रही थी। पानी माँगने पर एक ने खीर, दूसरी ने चर्खे, तीसरी ने कुत्ते व चौथी ने ढोल पर कविता सुनाने की इच्छा प्रकट की। अमीर खुसरो विद्वान थे। उन्होंने एक ही पद्य में चारों की इच्छा पूरी कर दी—

खीर पकाई जतन से, चर्खा दिया चला।
आया कुत्ता खा गया, तू बैठी ढोल बजा।

लेखक कहता है मैं उनके जितना प्रतिभाशाली नहीं हूँ कि एक ही निबंध में दोनों विषयों का समावेश कर दूँ। लेखक कहता है कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं क्योंकि जब ढोल पास में बजता है तो लोगों के कानों को पीड़ा होती है, परंतु जब ढोल की ध्वनि दूर से आती है तो वही मधुर ध्वनि बनकर लोगों के मन को आनंदित करती है और मनुष्य के मन में विभिन्न कल्पनाएँ जन्म लेने लगती हैं। लेखक के अनुसार जिसने अभी तक जीवन-संघर्षों का सामना नहीं किया है उन्हें भविष्य सुंदर लगता है पर जो इससे गुजर चुके हैं उन्हें अतीत की स्मृतियों में ही रहना अच्छा लगता है। दोनों ही अपने वर्तमान से संतुष्ट नहीं होते, युवा, भविष्य को वर्तमान व वृद्ध, अतीत को वर्तमान बनाना चाहते हैं। जिस कारण वर्तमान सदैव सुधारों का काल बना रहता है। मनुष्य के इतिहास में हमेशा सुधारों की आवश्यकता हुई है। कितने ही सुधारक जैसे— बुद्ध, महावीर, शंकराचार्य आदि हुए। अत: न दोषों का अंत होता है और न सुधारों का। जो अतीत में सुधार थे वे भविष्य में दोष बन जाते हैं। हिंदी में भी प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है, परंतु वह भी समय के साथ-साथ अतीत का स्मारक होता जाता है। आज जो युवा हैं वे ही कल वृद्ध होकर अतीत को याद करेंगे और नए युवा वर्ग का जन्म होगा, जो भविष्य की सुखद कल्पना करेगा। दोनों ही सुखद कल्पनाओं में रहते हैं। क्योंकि दूर के ढोल सुहावने होते हैं।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. अंग्रेजी के प्रसिद्ध .... विषय नहीं।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' के 'पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी' द्वारा लिखित 'क्या लिखूँ?' निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक बख्शी जी ने यहाँ लेखन के लिए विशेष स्थिति व दशाओं का वर्णन करते हुए, लेखन के लिए उपयुक्त विषय वस्तु के चयन की आवश्यकता न होने का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखन के लिए आवश्यक मनोभावों का उल्लेख करते हुए अंग्रेजी भाषा के सुप्रसिद्ध निबंधकार ए. जी. गार्डिनर ने यह स्पष्ट किया है कि लेखन के लिए एक विशेष प्रकार की मानसिक स्थिति का होना आवश्यक है। इस मानसिक स्थिति के संदर्भ में वे लिखते हैं कि जब मन उल्लास अथवा आनंद से भर उठे, हृदय में स्फूर्ति अर्थात् ताजगी के भाव का अनुभव होने लगे तथा मस्तिष्क में एक दबाव सा उत्पन्न हो जाए तो लेखक स्वत: ही लिखने के लिए बाध्य हो जाता है। मनोभावों के अतिरेक की इस स्थिति में वह स्वत: ही कुछ न कुछ लिखने को आतुर हो उठता है और उसकी लेखनी मनोभावों को अभिव्यक्त करने लगती है। इस प्रकार की मनोदशा में लेखक के लिए विषय और शैली का कोई महत्व नहीं होता, उसका उद्देश्य तो मात्र अपने मन के विचारों एवं भावों को व्यक्त करना ही होता है। मन के विचारों एवं भावों पर आधारित कोई भी विषय हो, वह उसी विषय पर तब तक लिखता रहता है जब तक उसके हृदय में उत्पन्न भावों का आवेग शांत नहीं हो जाता। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार के लेख लिखने के लिए सर्वप्रथम कुछ विशिष्ट प्रकार के मनोभावों का उत्पन्न होना नितांत आवश्यक होता है। विशिष्ट मनोभावों से पूर्ण मनोदशा के अभाव में कुछ भी लिख पाना सम्भव नहीं होता है।

लेखक यहाँ पर हैट व खूँटी के माध्यम से बताता है कि जैसे हैट को टाँगने के लिए किसी विशेष खूँटी की आवश्यकता नहीं

होती है वह तो किसी भी खूँटी पर टाँग दिया जाता है वैसे ही अपने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए कोई विशेष विषय ही आवश्यक नहीं है, वह तो किसी भी विषय पर व्यक्त किए जा सकते हैं। प्रमुख वस्तु तो हैट है जिसे टाँगना है, खूँटी नहीं। इसी तरह यथार्थ वस्तु तो मन के भाव ही हैं, जिन्हें व्यक्त करना है, विषय नहीं है, जिस पर विचार व्यक्त करने हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) 'लिखने की एक विशेष मानसिक स्थिति होती है' से लेखक का क्या आशय है ?

उ०– यहाँ लेखक का आशय उस मनोस्थिति से है जब लेखक के मन में लेखन के लिए उमंग उठती है, ताजगी आती है, मस्तिष्क में विचारों का आवेग उमड़ जाता है उस स्थिति में लेखक को लेखन कार्य करना ही पड़ता है।

(स) 'हैट' और 'खूँटी' का उदाहरण इस गद्यांश में क्यों दिया गया है?

उ०– 'हैट' और 'खूँटी' के माध्यम से लेखक ने मनोभावों को व्यक्त करने के लिए किसी विशेष विषय की अनावश्यकता पर प्रकाश डाला है। जिस प्रकार हैट को किसी भी खूँटी पर टांग सकते हैं, उसी प्रकार मनोभावों को भी किसी विषय पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

(द) गार्डिनर के अनुसार लेखक को निबंध कब लिखना पड़ता है?

उ०– गार्डिनर के अनुसार एक विशेष मानसिक स्थिति में जब मन में उमंग, हृदय में स्फूर्ति और मस्तिष्क में आवेग उत्पन्न होता है, तब लेखक को निबंध लिखना ही पड़ता है।

2. मुझे तो सोचना .... रहस्य समझाना पड़ेगा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने एक निबंध को लिखने के लिए अपनी स्थिति का वर्णन किया है कि उन्हें इसके लिए कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। जिससे कि वह सार्थक सिद्ध हो सके।

व्याख्या– लेखक बख्शी जी ने यहाँ अपनी मनोस्थिति का वर्णन करते हुए कहा है कि किसी निबंध को लिखने के लिए उन्हें अधिक सोच विचार करना पड़ता है, चिंता करनी पड़ती है तथा कड़ा परिश्रम करना पड़ता है। तब वे एक निबंध के लेखन का कार्य कर पाते हैं और आज उन्हें विशेष रूप से परिश्रम करना पड़ेगा क्योंकि उन्हें कोई साधारण निबंध नहीं लिखना है बल्कि अमिता और नमिता के लिए अलग-अलग विषयों पर निबंध लिखना है।

लेखक को अमिता और नमिता ने निबंध लिखने के लिए विषय दिए हैं। नमिता ने लेखक को 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और अमिता ने 'समाज सुधार' विषय पर निबंध लिखने के लिए दिया है। इन दोनों के द्वारा दिए गए ये विषय परीक्षाओं में भी आ चुके हैं और लेखक उन दोनों विषयों पर आदर्श निबंध लिखकर उन दोनों को निबंध लेखन का रहस्य समझाना चाहता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल

(ब) गद्यांश के अनुसार बताइए कि लेखक को विशेष परिश्रम क्यों करना पड़ेगा?

उ०– गद्यांश के अनुसार लेखक को विशेष परिश्रम इसलिए करना पड़ेगा क्योंकि उसे साधारण निबंध की अपेक्षा एक आदर्श निबंध लिखना होगा।

(स) लेखक को निबंध किसके लिए लिखना था?

उ०– लेखक को नमिता और अमिता के लिए निबंध लिखना था।

(द) दोनों निबंधों के विषय क्या थे?

उ०– दोनों निबंधों के विषय 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' और 'समाज सुधार' थे।

3. एक विद्वान .... मनन करना चाहिए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने निबंध के प्रधान अंगों-सामग्री व शैली पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या– लेखक बख्शी जी ने निबंध लिखने से पहले निबंधशास्त्र के कई आचार्यों की रचनाओं का अध्ययन किया। जिनमें विद्वानों के मत अलग-अलग हैं। एक विद्वान का मत है कि निबंध छोटा होना चाहिए। छोटे निबंध बड़े निबंधों की अपेक्षा अधिक अच्छे होते हैं क्योंकि छोटे निबंधों में रचना की सुंदरता बनी रहती है जो कि बड़े निबंधों में नहीं रह पाती है। इन विद्वान के छोटे निबंध से संबंधित कथन को मानने में ही लेखक अपना लाभ समझता है क्योंकि इसको मानने के कारण लेखक को छोटा निबंध ही लिखना होगा, जिसमें वह कम शब्दों में अपने विचार प्रस्तुत कर सकता है। परंतु लेखक के सामने सबसे बड़ी समस्या निबंध लिखने की है। क्योंकि निबंधशास्त्र के उन्हीं आचार्य ने निबंध के दो प्रधान अंगों की व्याख्या की है—सामग्री और शैली। लेखक को पहले सामग्री एकत्र करनी होगी फिर विचारों के समूह को इकट्ठा करना होगा। जिसके लिए उसे गहन विचार करना पड़ेगा।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) निबंध के दो प्रधान अंग कौन-से हैं?

उ०– निबंध के दो प्रधान अंग— सामग्री और शैली हैं।

(स) विद्वान के कथन के अनुसार छोटा निबंध बड़े की अपेक्षा अधिक अच्छा कैसे होता है?

उ०– विद्वान के अनुसार छोटा निबंध बड़े निबंध की अपेक्षा अधिक अच्छा होता है क्योंकि बड़े निबंध में रचना की सुंदरता नहीं बनी रहती है।

(द) लेखक परेशान क्यों है?

उ०– लेखक इसलिए परेशान हैं, क्योंकि लेखक को निबंध लिखने के लिए सामग्री एकत्र करनी होगी जिसके लिए उसे विचारों के समूह को इकट्ठा करना होगा।

4. विद्वानों का कथन .... तैयार न होगी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने निबंध लेखन के लिए विभिन्न विद्वानों के विचार व्यक्त किए हैं और ए. जी. गार्डिनर और शेक्सपीयर जैसे महान लेखकों के माध्यम से लेखकों की मनोस्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक ने विभिन्न विद्वानों के कथनों के माध्यम से निबंध लेखन के लिए आवश्यक सामग्री व शैली का वर्णन करते हुए कहा है कि विद्वानों के अनुसार निबंध को लिखने से पहले उसका रूपरेखा अवश्य बना लेनी चाहिए। जिससेकि निबंध क्रमबद्ध हो जाए। इसलिए लेखक भी 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' की रूपरेखा तैयार करना चाहता है परंतु वह यह नहीं समझ पाता कि इस विषय की रूपरेखा किस प्रकार की होनी चाहिए। लेखक निबंध लिखने के बाद तो उसका सारांश लिख सकता है परंतु निबंध लिखने से पहले वह कुछ शब्दों में उसका सारांश किस प्रकार लिखे, यह उसे समझ में नहीं आता है। लेखक के मन में यह प्रश्न भी उठता है कि क्या हिंदी के सभी महान् विद्वान लेखक अपने निबंधों को लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना लेते थे? लेखक कहता है कि महान निबंधकार ए. जी. गार्डिनर को भी अपने निबंधों के लेखन के समय उनके उपयुक्त शीर्षक के चुनाव में ही सबसे अधिक परेशानी का सामना करना पड़ता था। उन्होंने लिखा भी है कि मैं तो केवल लेख लिखता हूँ और शीर्षक बनाने का अर्थात् लेख को उचित शीर्षक का दायित्व मैं अपने मित्र पर छोड़ देता हूँ। उन्होंने यह भी बताया है कि शेक्सपीयर को भी नाटकों को लिखने में उतनी कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा जितना कि उनके नामकरण करने में। तभी तो शेक्सपीयर ने घबराकर अपने नाटक का नाम 'जैसा तुम चाहो' रख दिया था, इसलिए लेखक के अनुसार उससे भी इस शीर्षक 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' की रूपरेखा तैयार नहीं हो पाएगी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** क्या लिखूँ **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) शेक्सपीयर के बारे में ए. जी. गार्डिनर ने क्या लिखा है?

उ०– शेक्सपीयर के बारे में ए. जी. गार्डिनर ने लिखा कि शेक्सपीयर को भी उन्हीं की भांति नाटकों के लेखन से अधिक नाटकों के नामकरण में कठिनाई होती थी।

(स) विज्ञों के अनुसार निबंध लिखने से पूर्व क्या करना चाहिए?

उ०– विज्ञों के अनुसार निबंध लिखने से पूर्व उसकी रूपरेखा बना लेनी चाहिए।

(द) ए. जी. गार्डिनर को किस बात में कठिनाई होती है?

उ०– ए. जी. गार्डिनर को लेख लिखने से अधिक उसके शीर्षक को लिखने में कठिनाई होती है।

(य) लेखक ने रूपरेखा तैयार करने में असमर्थता क्यों जताई?

उ०– लेखक ने रूपरेखा तैयार करने में असमर्थता इसलिए जताई क्योंकि लेखक अपने विषय के अनुरूप निबंध लिखने से पहले उसका सार लिखने में असमर्थ था।

5. दूर के ढोल सुहावने .... मधुर बन जाता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने 'दूर के ढोल सुहावने होते हैं' पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं कि क्यों यह कहावत चरितार्थ होती है।

व्याख्या– लेखक ने इन पंक्तियों में एक प्रचलित मुहावरे पर अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है। वह कहता है कि दूर के ढोल सुहावने इसलिए लगते हैं, क्योंकि ढोल की आवाज की कर्कशता दूर तक नहीं पहुँचती। जिस समय यह आवाज पास बैठे लोगों के कानों के परदों को फाड़ती हुई महसूस होती है,उसी समय दूर संध्या के समय किसी नदी के किनारे पर बैठे किसी व्यक्ति को यह अत्यंत मधुर लगती है। इस मधुरता का मनोवैज्ञानिक कारण बताते हुए लेखक कहता है कि वस्तुत: जो व्यक्ति दूर से ढोल की आवाज को सुनता है, उसके मानसपटल पर इस आवाज के कारण किसी विवाहोत्सव का चित्र अंकित हो जाता है और वह कोलाहल से पूर्ण घर में बैठी हुई किसी लज्जाशील नववधू की कल्पना कर लेता है। उस नववधू की कल्पना में उसके प्रेम, उल्लास, संकोच, आशंका आदि के भाव श्रोता के हृदय में मूर्त रूप धारण करने लगते हैं और ढोल की कर्कश आवाज में उसे मधुरता का रस प्राप्त होने लगता है।

लेखक कहता है कि यदि हम उस विवाहोत्सव में सम्मिलित लोगों को देखें तो उस कानों को बेधते ढोलों के पास उपस्थित लोगों का मन भी उल्लासमय दृष्टिगत होता है। वहाँ किसी को भी ढोलों की वह कर्कश ध्वनि अरुचिकर अर्थात् कटु नहीं लगती; क्योंकि ढोल की उस ध्वनि में उस उत्सव के आनंद का शोर, मन की प्रसन्नता और पारस्परिक प्रेम की स्वर-लहरियाँ भी मिली होती हैं। ये सभी चीजें मिलकर ढोल के पास स्थित लोगों को भी ढोल की ध्वनि की कर्कशता का अनुभव नहीं होने देती। वह उनमें उत्साह, उल्लास और आनंद का संचारकर थिरकने पर विवश कर देती है। दूर स्थित लोगों के लिए तो वह चलचित्र की भाँति उनके मानसपटल पर उस उत्सव के आनंद, उत्साह और उल्लास के चित्रों को सजीव कर ही देती है, तब वे भी समीपस्थ लोगों की भाँति ही आनंद और स्फूर्ति से भर उठते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) नदी के तट पर बैठा कोई व्यक्ति दूर बजते ढोल को सुनकर क्या कल्पना कर लेता है?

उ०– नदी के तट पर बैठा कोई व्यक्ति जब दूर बजते ढोल की आवाज सुनता है तो वह किसी विवाहोत्सव की कल्पना कर लेता है। वह शोरगुल से पूर्ण घर में बैठी किसी लज्जाशील नववधू की कल्पना करता है।

(स) दूर के ढोल सुहावने क्यों होते हैं?

उ०– दूर के ढोल सुहावने इसलिए होते हैं क्योंकि दूर स्थित वस्तुओं अथवा व्यक्तियों के दोषों को ज्ञान न होने के कारण वे अच्छे प्रतीत होते हैं।

(द) लोगों के कान के पर्दे क्यों फटते हैं?

उ०– लोगों के कान के पर्दे इसलिए फटते हैं क्योंकि ढोल की कर्कश आवाज लोगों को परेशान करती है।

(य) ढोल की कर्कशता दूरस्थ लोगों को मधुर क्यों लगती है?

उ०– ढोल की कर्कशता दूरस्थ लोगों को इसलिए मधुर लगती है क्योंकि ढोल की आवाज की कर्कशता दूर तक नहीं पहुँच पाती है तथा वह उस ध्वनि को सुनकर अपने हृदय में किसी विवाहोत्सव का चित्र अंकित कर लेता है।

6. हिंदी में प्रगतिशील .... ढोल सुहावने होते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने प्रगतिशील साहित्य के विषय में बताया है कि निर्माता अपने साहित्य को भविष्य का गौरव मानता है परंतु समय के साथ-साथ वह पुराना होता जाता है। आज के तरुण कल वृद्ध होकर अतीत के गौरव का सपना देखते हैं।

व्याख्या– हिंदी साहित्य में आजकल प्रगतिशील साहित्य का सृजन किया जा रहा है। प्रगतिशील साहित्यकार यह समझ रहे हैं कि उनके द्वारा जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है, उसमें भविष्य का गौरव निहित है, किंतु कुछ समय बाद उनके द्वारा रचित प्रगतिशील साहित्य भी अतीत की वस्तु बन जाएगा जैसे छायावादी काव्य वर्तमान में अतीत का विषय बन गया है। आज का साहित्यकार एक तरुण की तरह भविष्य के गौरव को निहारना चाहता है, किंतु जिस प्रकार एक तरुण समय के साथ-साथ वृद्धावस्था में पहुँच जाता है, उसी प्रकार साहित्य भी सदैव आधुनिक नहीं रहता। इसी प्रकार जो तरुण आज भविष्य के गौरव की कल्पना में खोए हुए हैं, वे भी वृद्ध होकर निश्चित रूप से अतीत की स्मृतियों में खो जाएँगे। तरुणों का स्थान भविष्य में नई पीढ़ी के बच्चे ग्रहण करेंगे और तरुण भी बूढ़े होकर अतीत की स्मृतियों में खोए रहेंगे। युवाओं के भविष्य के स्वप्न जब तक साकार होंगे, तब तक वे भी वृद्ध हो जाएँगे। इस प्रकार युवा और वृद्ध दोनों ही केवल सुनहले स्वप्नों को देखकर प्रसन्न होते हैं। इस दृष्टि से यह कहावत कि 'दूर के ढोल सुहावने' होते हैं, उचित ही है। तरुण जब तक वृद्धावस्था को नहीं पहुँचाता, तब तक भविष्य के गौरव की चिंता करता है और जब वह स्वयं वृद्ध हो जाता है, तब वह अतीत के स्वप्नों में खो जाता है। यह समय का चक्र है। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी का स्थान ग्रहण करती रहती है, परंतु दोनों के सोचने के ढंगों में अंतर होते हुए भी कुछ-न-कुछ समानता अवश्य रहती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** क्या लिखूँ? **लेखक–** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

(ब) हिंदी में किसका निर्माण हो रहा है?

उ०– हिंदी में प्रगतिशील साहित्य का निर्माण हो रहा है।

(स) हिंदी के निर्माता क्या समझ रहे हैं?

उ०– हिंदी के प्रगतिशील साहित्य के निर्माता समझ रहे हैं कि उनके द्वारा जिस साहित्य का सृजन किया जा रहा है, उसमें भविष्य का गौरव निहित है।

(द) तरुण वृद्ध होकर किसका स्वप्न देखेंगे?

उ०– तरुण वृद्ध होकर अतीत के स्वप्न देखेंगे।

(य) 'दोनों के ही स्वप्न सुखद होते हैं' से लेखक का क्या आशय है?

उ०– यहाँ लेखक का आशय है कि युवाओं को भविष्य के स्वप्न सुखद लगते हैं तथा वृद्धों को अपने अतीत के स्वप्न सुखद लगते हैं। इस प्रकार दोनों ही अपने सुनहले स्वप्नों को देखकर प्रसन्न होते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पदुमलाल बख्शी जी का जन्म कब हुआ था?

(अ) 1902 ई. (ब) 1878 ई.
(स) **1894 ई.** (द) 1896 ई.

2. बख्शी जी ने किस पत्रिका का संपादन किया था?

(अ) **सरस्वती** (ब) कामायनी
(स) कादंबिनी (द) त्रिवेणी

3. बख्शी जी को हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा किस उपाधि से अलंकृत किया गया?

(अ) **साहित्य वाचस्पति** (ब) मंगलाप्रसाद
(स) साहित्य विशारद (द) इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से बख्शी जी की कृति कौन-सी है?

(अ) **झलमला** (ब) चंद्रगुप्त

(स) आचरण की दिशा (द) गोदान

(ङ) व्याकरण एवं रचना बोध

1. निम्नलिखित शब्दों का समास-विग्रह करते हुए समास का नाम भी लिखिए-

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**समास का नाम**
समाज-सुधार	समाज का सुधार	संबंध तत्पुरुष समास
विवाहोत्सव	विवाह के लिए उत्सव	संप्रदान तत्पुरुष समास
नववधू	नई वधू	कर्मधारय समास
बाल्यावस्था	बचपन की अवस्था	संबंध तत्पुरुष समास

2. 'दुर' व 'अभि' उपसर्गों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए।

उ०- दुर - दुर्गम, दुर्दशा।

अभि - अभिमान, अभिभावक।

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए-

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
विवाहोत्सव	विवाह + उत्सव
पुस्तकालय	पुस्तक + आलय
तरुणावस्था	तरुण + अवस्था
समीपस्थ	समीप + स्थ
दुर्बोध	दु: + बोध

4. 'ता' तथा 'वान' प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दो-दो शब्द बनाइए।

उ०- ता - लघुता, प्रभुता।

वान - गुणवान, धनवान।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

4. भारतीय संस्कृति (डॉ.राजेंद्र प्रसाद)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०- डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के जीरादेई नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था।

2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद के पिता का क्या नाम था?

उ०- डॉ. राजेंद्र प्रसाद के पिता का नाम महादेव सहाय था।

3. डॉ. राजेंद्र प्रसाद साहित्य के अतिरिक्त और अन्य किस क्षेत्र में भी कुशल माने जाते हैं?

उ०- डॉ. राजेंद्र प्रसाद साहित्य के अतिरिक्त राजनीति के क्षेत्र में भी कुशल माने जाते हैं।

4. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की शिक्षा-दीक्षा बताइए।

उ०- डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा इनके गाँव में हुई। इसके पश्चात 'कलकत्ता-विश्वविद्यालय' से 'एम.ए.'की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन्होंने वकालत की पढ़ाई के लिए कलकत्ता प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और सन् 1915 में कानून में मास्टर डिग्री में विशिष्टता पाने के लिए स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इसके बाद इन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की।

5. डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत कब और कहाँ से आरंभ की तथा उन्होंने वकालत कब और क्यों छोड़ दी?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने सन् 1911 ई. में कलकत्ता से वकालत आरंभ की तथा सन् 1920 में गाँधी जी के आदर्शों, सिद्धांतों और आजादी के आंदोलन से प्रभावित होकर वकालत छोड़ दी।

6. डॉ. राजेंद्र प्रसाद को 'भारत रत्न' से कब सम्मानित किया गया?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद को सन् 1962 ई. में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

7. डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पुन: अध्यक्ष किनके त्यागपत्र देने के बाद चुने गए?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद नेताजी सुभाषचंद्र बोस के त्यागपत्र देने के बाद पुन: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गए।

8. डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के राष्ट्रपति कब चुने गए?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद 26 जनवरी, 1950 में भारत के राष्ट्रपति चुने गए।

9. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ कौन-कौन सी हैं?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ हैं— आत्मकथा, बापू के कदमों में, इंडिया डिवाइडेड, सत्याग्रह ऐट चंपारण, गाँधी जी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र, मेरी यूरोप यात्रा, शिक्षा और संस्कृति आदि।

10. डॉ. राजेंद्र प्रसाद किस प्रकार की भाषा के पक्षधर थे?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद हिंदी के सरल व सुबोध भाषा के पक्षधर थे। इनकी भाषा व्यावहारिक है तथा इन्होंने अपनी भाषा में ग्रामीण कहावतों व ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया है।

11. डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी रचनाओं में किस प्रकार की शैली का प्रयोग करते थे?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद अपनी रचनाओं में विवेचनात्मक, भावात्मक, आत्मकथात्मक तथा साहित्यिक एवं भाषण शैली का प्रयोग करते थे।

12. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का निधन कब और कहाँ हुआ था?

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद का निधन 28 फरवरी सन् 1963 ई. में पटना के निकट सदाकत आश्रम में हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जीवन परिचय देते हुए इनके साहित्यिक परिचय पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– डॉ. राजेंद्र प्रसाद एक सफल साहित्यकार, राजनीतिज्ञ एवं महान देशभक्त थे। भारत के स्वाधीनता आंदोलन में इन्होंने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजनीति के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी इनका योगदान सदैव वंदनीय रहेगा। ये एक श्रेष्ठ विचारक व लेखक होने के साथ-साथ महान नेता भी थे। अपने लेखों एवं भाषणों के माध्यम से इन्होंने देश को गौरवान्वित किया। सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक आदि विभिन्न विषयों पर इनके द्वारा लिखे गए लेख हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। देश में अत्यंत लोकप्रिय होने के कारण इन्हें राजेंद्र बाबू अथवा देशरत्न कहकर पुकारा जाता था। डॉ. राजेंद्र प्रसाद हमारे प्रथम राष्ट्रपति भी थे।

जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र– डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म 3 दिसंबर, 1884 को बिहार के जीरादेई नामक एक छोटे से ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम महादेव सहाय था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इनके गाँव में हुई तथा प्रारंभ में इन्होंने फारसी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया। उस समय बाल विवाह जैसी कुरीतियाँ हमारे देश में व्याप्त होने के कारण मात्र 12 वर्ष की आयु में इनका विवाह राजवंशी देवी के साथ संपन्न हुआ। इसके पश्चात इन्होंने 'कलकत्ता-विश्वविद्यालय' से 'एम.ए.' की परीक्षा 'प्रथम श्रेणी' में उत्तीर्ण की। एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्होंने वकालत की पढ़ाई के लिए कलकत्ता प्रेसिडेंसी कॉलेज में प्रवेश ले लिया और सन् 1915 में कानून में मास्टर डिग्री में विशिष्टता पाने के लिए राजेंद्र प्रसाद को स्वर्ण पदक मिला। इसके बाद इन्होंने कानून में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने कुछ समय कलकत्ता (कोलकाता) और पटना उच्च न्यायालय में वकालत का कार्य किया। गाँधी जी के आदर्शों, सिद्धांतों और आजादी के आंदोलन से प्रभावित होकर सन् 1920 ई. में इन्होंने वकालत का कार्य छोड़ दिया तथा पूर्ण रूप से देशसेवा में लग गए। सन् 1934 ई. में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में अध्यक्ष चुने गए। नेताजी सुभाषचंद्र बोस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देने पर कांग्रेस अध्यक्ष का पदभार इन्होंने एक बार पुन: 1939 में सँभाला था। 15 अगस्त 1947 में देश के स्वतंत्र होने के बाद उन्होंने देश के पहले राष्ट्रपति का पदभार ग्रहण किया।

भारतीय संविधान के लागू होने से एक दिन पहले 25 जनवरी, 1950 को इनकी बहन भगवती देवी का निधन हो गया, किंतु ये भारतीय गणराज्य के स्थापना की प्रक्रिया के बाद ही उनके दाह-संस्कार के लिए गए। 12 वर्षों तक राष्ट्रपति के

रूप में कार्य करने के पश्चात उन्होंने 1962 में अपने अवकाश की घोषणा की। इन्हें भारत सरकार द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद आजीवन हिंदी साहित्य-सृजन तथा देशसेवा में संलग्न रहे। इन्होंने अपना अंतिम समय पटना के निकट सदाकत आश्रम में व्यतीत किया तथा यहीं पर 28 फरवरी सन् 1963 ई. में उनकी मृत्यु हो गई।

साहित्यिक परिचय– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने शिक्षा एवं संस्कृति, भारतीय शिक्षा, राजनीति आदि विषयों को आधार मानकर साहित्य-सृजन किया। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

आत्मकथा, बापू के कदमों में, इंडिया डिवाइडेड,सत्याग्रह ऐट चंपारण, गाँधी जी की देन, भारतीय संस्कृति व खादी का अर्थशास्त्र, मेरी यूरोप यात्रा, शिक्षा और संस्कृति।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति में अनेकता में एकता के दर्शन कराए हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा हिंदी साहित्य की पर्याप्त सेवा की है। डॉ.राजेंद्र प्रसाद 'सादा जीवन और उच्च विचार' में विश्वास रखते थे, इसका परिचय इनकी रचनाओं से स्पष्ट होता है। ये हिंदी के एक महान साधक तथा एक महान देशभक्त के रूप में हमेशा भारतवासियों के हृदय में निवास करते रहेंगे। इनकी साहित्यिक सेवाओं के कारण हिंदी साहित्य इनका सदैव ऋणी रहेगा।

2. डॉ.राजेंद्र प्रसाद की भाषागत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उ०– **भाषागत विशेषताएँ–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने अपनी रचनाओं में सरल व सुबोध भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने बिहारी, उर्दू, संस्कृत व अंग्रेजी के शब्दों का भी पर्याप्त मात्रा में प्रयोग किया है। इनकी भाषा व्यावहारिक है तथा इन्होंने आवश्यकतानुसार ग्रामीण कहावतों और ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी शैली के रूप में विवेचनात्मक, भावात्मक, आत्मकथात्मक तथा साहित्यिक एवं भाषण शैली का प्रयोग किया है। इनकी आत्मकथात्मक शैली पर आधारित 'मेरी आत्मकथा' पर इन्हें 'मंगलाप्रसाद' पारितोषिक से सम्मानित किया गया।

3. 'भारतीय संस्कृति' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'भारतीय संस्कृति' डॉ. राजेंद्र प्रसाद के एक भाषण का अंश है। इसमें उन्होंने बताया है कि भारत जैसे विशाल देश में जीवन व रहन-सहन की विविधता में भी एकता के दर्शन होते हैं। विभिन्न भाषा, जाति व धर्म की मणियों को एक सूत्र में पिरोकर रखने वाली हमारी भारतीय संस्कृति विशिष्ट है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि यदि कोई विदेशी व्यक्ति जो भारत की विभिन्नता से पूरी तरह से अनभिज्ञ हो, अगर वह भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करें तो वह इस देश की विभिन्नताओं को देखकर कहेगा कि यह एक देश नहीं है, बल्कि कई देशों का एक समूह है जो बहुत-सी बातों में एक-दूसरे से बिलकुल अलग है। यहाँ प्राकृतिक विभिन्नताएँ भी एक महाद्वीप के समान नजर आती हैं। यहाँ एक ओर उत्तर में बर्फ से ढ़की हुई हिमालय की चोटियाँ हैं तो दूसरी तरफ दक्षिण में बढ़ने पर समतल मैदान व फिर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा आदि की पहाड़ियाँ। पश्चिम से पूर्व में भी विभिन्न विषमताएँ हैं। भारत में एक तरफ हिमालय में कठोर सर्दी वहीं दूसरी ओर समतल मैदानों में जलती हुई लू (गर्म हवाएँ) और कन्याकुमारी का सुहावना मौसम भी है। यहाँ अगर असम में वर्षा तीन सौ इंच है तो जैसलमेर में दो से चार इंच है। भारत में सभी तरह के अन्न का उत्पादन होता है। यहाँ सब प्रकार के फल, सभी प्रकार के खनिज, वृक्ष, जानवर आदि पाए जाते हैं। यहाँ पर रहन-सहन, खान-पान का अंतर वहाँ के लोगों की शारीरिक बनावट में भी देखने को मिलता है। इसी प्रकार यहाँ भिन्न-भिन्न भाषाएँ व बोलियाँ प्रचलित हैं। भारत में प्राय: सभी धर्मों के लोग पाए जाते हैं। अगर भारत की विभिन्नता को देखकर कोई अपरिचित इसे देशों का समूह या जातियों का समूह कहे, तो इसमें कोई अचंभा करने वाली बात नहीं है। परंतु सूक्ष्मता से विचार करने पर इन विभिन्नताओं में भी एकता नजर आती है, जैसे विभिन्न फूलों को पिरोकर सुंदर हार तैयार किया गया हो। भारतीय संस्कृति में व्याप्त विभिन्नताएँ भी ऐसे फूलों व मणियों के समान ही हैं। भारत की बहुरंगी संस्कृति की अनेकता में व्याप्त एकता किसी कवि की कल्पना मात्र नहीं है, बल्कि एक ऐतिहासिक सत्य है, जो हजारों वर्षों से विद्यमान है। भारतीय संस्कृति के विशाल सागर में गिरने वाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही रूप से वही जल बहता है, जो भारत देश के अस्तित्व को कायम रखने में कामयाब हुआ है। डॉ. प्रसाद कहते हैं कि भारत में नीति व अध्यात्म ऐसा स्रोत है जो संपूर्ण भारत में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में बहता रहता है। हमारे देश में उच्च चरित्र वाले तथा आत्मिक चेतना से संपन्न महापुरुषों का जन्म होता रहा है जिनके सत्य और अहिंसा के सिद्धांत मानवता के लिए आवश्यक हैं। भारत में स्थापित प्रजातंत्र से मानव को अपना पूरा विकास करने की स्वतंत्रता प्राप्त हुई है और सामूहिक व सामाजिक एकता के विकास का मार्ग भी अग्रसर हुआ है। भारतीय संस्कृति का मूल आधार अहिंसा है और अहिंसा का दूसरा रूप त्याग है। हिंसा का दूसरा रूप स्वार्थ है जो भोग के रूप में हमारे सामने आता है। परंतु हमारी सभ्यता के अनुसार

भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है व त्याग भोग में ही पाया जाता है। त्याग की भावना का मन में उद्भव होने पर मन में अपार सुख व शांति का अनुभव होता है। भारत में विभिन्न धर्मों और संप्रदायों को विकास करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। भारत ने विभिन्न देशों की संस्कृति को अपने में मिलाया व स्वयं भी उनमें मिश्रित हो गया और देश व विदेशों में एकता, प्रेम व भाईचारे के साथ स्थापित की। भारत ने दूसरों पर कभी अत्याचार नहीं किया बल्कि उनके हृदयों को जीतकर अपना प्रभुत्व कायम किया।

वैज्ञानिक व औद्योगिक विकास के भयंकर परिणामों के प्रति हमें सचेत रहना चाहिए व विपत्तियों के आने पर घबराना नहीं चाहिए। पहले भी प्रकृति द्वारा या मानव द्वारा किए गए अत्याचारों से हम विचलित नहीं हुए। यहाँ साम्राज्य बने और समाप्त हुए' संप्रदायों का उत्थान व पतन हुआ परंतु हमारी संस्कृति निरंतर बनी रही। अपने बुरे दिनों में भी हमारे यहाँ बहुत से विद्वान हुए। अंग्रेजों द्वारा परतंत्र होने पर भी यहाँ गाँधी, रवींद्र, अरविंद, रमन जैसे लोगों का जन्म हुआ, जो सारे संसार के लिए आदर्श न बन गए।

हमारे देश के प्राण व जीवन रेखा देश में व्याप्त सामूहिक चेतना है, जो नगर और ग्राम, प्रदेश और संप्रदाय, वर्ग व जातियों को एक सूत्र में बाँधती है। अब हमें अपने देश भारत में उन अन्यायों व अत्याचारों को नहीं दोहराना है जो समाज में संघर्ष को जन्म देते हैं। हमें अपनी ऐतिहासिक, नैतिक, सांस्कृतिक चेतना के आधार पर अपनी आर्थिक व्यवस्था को मजबूत करना है। हमारे अंदर स्वयं के कल्याण की भावना न होकर जन कल्याण की भावना होनी चाहिए।

आज विज्ञान के विकास के फलस्वरूप व्यक्ति के हाथ में अतुलनीय और अद्भुत शक्ति है, जिसका उपयोग व्यक्ति व समूह के उत्थान व पतन के लिए होता रहता है। इसलिए हमें जन कल्याण की भावना को जाग्रत करना ही होगा। वर्तमान में भारत की प्रत्येक प्रादेशिक भाषा की सुंदर कृतियों के स्वाद को संपूर्ण भारत को चखाने के लिए उसका देवनागरी हिंदी में प्रकाशन साहित्यिक संस्थानों को करवाना चाहिए। दूसरी तरफ एक ऐसी संस्था की स्थापना की आवश्यकता है जो इन सभी भाषाओं के आदान-प्रदान को अनुवाद के माध्यम से कर सके। साहित्य संस्कृति का एक रूप है। इसके अतिरिक्त गान, नृत्य, चित्रकला व मूर्तिकला इसके दूसरे रूप हैं। भारत इन सब कलाओं में एकरूपता के द्वारा अपनी एकता को प्रदर्शित करता रहा है। भारत के विषय में शाहजहाँ ने भी एक भवन पर गुदवाया है ''यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यहाँ ही है, यहाँ ही है, यहाँ ही है।'

यह स्वप्न तभी सत्य होगा तथा पृथ्वी पर स्वर्ग तभी स्थापित होगा जब भूमंडल के सारे मानव अहिंसा, सत्य, सेवा को अपना आदर्श मानने लगेंगे।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. कोई विदेशी, जो .... देखने को मिलेगी।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्य खंड' के डा. राजेंद्र प्रसाद द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति' नामक निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग– यहाँ लेखक डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत की विभिन्नता का बहुत सुंदर वर्णन किया है कि भारत में एक स्थान से दूसरे स्थान पर विभिन्नता को आसानी से देखा जा सकता है।

व्याख्या– डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने भारत की विभिन्नता को यहाँ की सुंदरता बताते हुए कहा है कि कोई भी व्यक्ति जो विदेश से आता है, और जो भारत की विभिन्नताओं के बारे में कुछ भी नहीं जानता है, अगर वह भारत में एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा करे तो उसको यहाँ इतनी विभिन्नताएँ देखने को मिलेंगी, वह भारत को एक देश नहीं बल्कि देशों का समूह (महाद्वीप) कहेगा, जैसे एक देश दूसरे देश से भिन्न होता है उसी प्रकार यहाँ पर एक स्थान व दूसरे स्थान में विभिन्नता आसानी से देखने को मिल जाती है। यहाँ पर प्राकृतिक रूप से पाई जाने वाली विभिन्नताएँ इतनी ज्यादा मात्रा में व उतने ही प्रकार की बहुत गहरी मिलती हैं, जो किसी महाद्वीप के अंदर ही हो सकती हैं। यहाँ उत्तर में हिमालय की बर्फ से ढ़की चोटियाँ स्थित हैं तो दक्षिण की ओर जाने पर, गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियों द्वारा सिंचित समतल और आगे बढ़ने पर विंध्य, अरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरी की पहाड़ियों में स्थित रंग-बिरंगे समतल देखने को मिलते हैं। भारत में पश्चिम दिशा से पूर्व दिशा तक जाने में भी इसी प्रकार की बहुत सारी विभिन्नताएँ देखने को मिलती हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ० – पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) कोई अपरिचित विदेशी अगर भारत की यात्रा करे तो वह क्या कह उठेगा?

उ० – कोई अपरिचित विदेशी अगर भारत की यात्रा करे तो वह भारत को देशों का समूह (महाद्वीप) कह उठेगा।

(स) गद्यांश में किन-किन नदियों व पर्वत शिखरों के विषय में बताया गया है?

उ० – गद्यांश में गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र नदियों व विंध्य, आरावली, सतपुड़ा, सह्याद्रि, नीलगिरी के पर्वत शिखरों के विषय में बताया गया है।

2. असम की पहाड़ियों .... के लोग देते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने भारत की प्राकृतिक विभिन्नता का वर्णन करते हुए विषमताओं को बताया है।

व्याख्या– हमारे देश भारत में इतनी प्राकृतिक विविधताएँ देखने को मिलती है; जिनका किसी अन्य देश में मिलना दुर्लभ है। हाँ, इतनी विविधताएँ किसी महाद्वीप में तो हो सकती हैं। इस दृष्टि से यदि कोई भारत को विभिन्न देशों का समूह कहे तो अतिशयोक्ति न होगी। यहाँ अगर असम की पहाड़ियों में 300 इंच तक की वर्षा वाले क्षेत्र उपस्थित हैं तो राजस्थान के जैसलमेर में दो-चार इंच वर्षा वाले क्षेत्र भी हैं। असम की जलवायु जहाँ अत्यधिक आर्द्रता से युक्त है, वहीं जैसलमेर की जलवायु अत्यधिक गर्म है। लगता है कि जैसे भूमि न होकर आग से तपता हुआ तवा हो। विश्व में पाया जाने वाला कोई अन्न अथवा फल ऐसा नहीं है, जो यहाँ पैदा नहीं होता अथवा जिसे पैदा न किया जा सके; क्योंकि यहाँ विश्व में पाई जाने वाली सभी प्रकार की जलवायु मिलती हैं और मिट्टियाँ भी लगभग सभी प्रकार की पाई जाती हैं। थोड़ी-बहुत मात्रा में विश्व में पाए जाने वाले सभी खनिज यहाँ की मिट्टी में पाए जाते हैं, विश्व का कोई ऐसा जानवर अथवा वृक्ष ऐसा नहीं, जो यहाँ के वनों में प्राप्त नहीं होता है। भारत की प्राकृतिक विविधता का यहाँ के लोगों के रहन-सहन, वेशभूषा, खान-पान, शरीर और मस्तिष्क पर भी खूब प्रभाव पड़ा है। यह वैज्ञानिक सिद्धांत भी है कि किसी स्थान की जलवायु व्यक्ति के रहन-सहन, वेषभूषा, खान-पान और शारीरिक विकास आदि को प्रभावित करती है। विज्ञान के इस सिद्धांत का जीता-जागता प्रमाण अर्थात् व्यावहारिक रूप यहाँ के विभिन्न राज्यों के लोगों में प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिलता है। आशय यही है कि भारत के विभिन्न राज्यों के लोगों की वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान तथा शारीरिक संरचना में जो विविधता देखने को मिलती है, उसका सबसे प्रमुख कारक यहाँ की प्राकृतिक विविधता अथवा जलवायु ही है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) गद्यांश के अनुसार भारत में सबसे अधिक व सबसे कम वर्षा कहाँ होती है?

उ०– गद्यांश के अनुसार भारत में सबसे अधिक वर्षा असम में तथा सबसे कम जैसलमेर में होती है।

(स) भारत की भूमि की विशेषता बताइए।

उ०– भारत भूमि की यह विशेषता है कि यहाँ संसार में पाया जाने वाला प्रत्येक फल, अन्न, खनिज पदार्थ, वृक्ष और जानवर मिलता है।

(द) मानव-जीवन पर प्राकृतिक विविधता का क्या प्रभाव पड़ता है?

उ०– प्राकृतिक विविधता मानव के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करती है। यही कारण है कि प्राकृतिक विविधताओं से परिपूर्ण भारत के विभिन्न प्रांतों के लोगों के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा और रंग-रूप में विविधता देखने को मिलती है।

3. पर विचार .... एक ही हो जाए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने भारत की विभिन्नता में एकता के बारे में बताते हुए इस एकता को भारत की शक्ति बताया है।

व्याख्या– बाहर से देखने पर भारतीय संस्कृति में भाषा, जाति, धर्म आदि के रूप में भिन्नता के दर्शन होते हैं। हमारे देश में अनेक भाषा-भाषी, अनेक जातियाँ तथा अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं, फिर भी उनमें विचारों की एकता है और वे एक ही देश के नागरिक हैं; अत: उनकी संस्कृति भी एक है और वह है, 'भारतीय संस्कृति'। इसकी अनेकता में एकता उसी प्रकार विद्यमान है, जिस प्रकार एक रेशमी धागा विभिन्न प्रकार के पुष्पों अथवा मणियों को एक साथ गूँथ देता है और पुष्पों अथवा मणियों से मिलकर एक सुंदर माला बन जाती है। हमारी विभिन्नताएँ भी तरह-तरह की मणियों या पुष्पों के समान ही हैं, जो एकतारूपी धागे में बँधकर एक सुंदर संस्कृति का निर्माण करती हैं।

मणियाँ अथवा पुष्प; दूसरों से तभी तक अलग-अलग दिखाई देते हैं, जब तक उन्हें एक धागे में पिरोया नहीं जाता है।

एकता के रेशमी धागे में पिरोई हुई इन मणियों में प्रत्येक मणि दूसरी मणि को सुशोभित करती है और उसकी शोभा से स्वयं भी शोभायमान होती है। माला में गुँथे हुए विभिन्न फूलों के साथ भी ऐसा ही होता है। भारतीय संस्कृति में व्याप्त विभिन्नताएँ भी ऐसी मणियों अथवा पुष्पों के समान हैं, जो एकतारूपी रेशमी धागे में गुँथी हुई हैं। इसी एकता के कारण भारतीय संस्कृति जैसी विशाल और आकर्षक माला का निर्माण हुआ है। इसकी भिन्नता में भी सुंदरता है। ये विभिन्नताएँ एक-दूसरे को और अधिक सुंदर बना रही हैं।

विशाल भारत की बहुरंगी संस्कृति की अनेकता में एकता व्याप्त है। यह किसी कवि की कल्पनामात्र नहीं है। लेखक ने किसी भावावेश में भी ऐसा नहीं लिखा है कि भारतीय संस्कृति के मूल में एकता विद्यमान है। यह कविता की उड़ान नहीं, वरन् एक ऐतिहासिक सत्य है। जैसे विभिन्न झरनों और नदियों के उद्गम-स्थल अलग-अलग होने पर भी उनका जल दूर-दूर से आकर सागर की गोद में समा जाता है और उनका संगम 'सागर' कहलाता है। उसी प्रकार भारत में अनेक विचारधाराओं के लोग रहते हैं और विभिन्न धर्मों तथा संप्रदायों के झरने हजारों वर्षों से भारत में आकर मिलते रहे हैं। इन सबके मिलने से एक विस्तृत और गहरे सागर का निर्माण हुआ है। इसी सागर को हम भारतीय संस्कृति कहते हैं।

जिस प्रकार विभिन्न नदियों के उद्गम स्थल और प्रवाह क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति अलग-अलग होती है और उन क्षेत्रों में अलग-अलग प्रकार के अन्न, फल-फूल आदि उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार विभिन्न विचारधाओं ने देश में विभिन्न प्रकार के रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज, आचार-विचार आदि को जन्म दिया है। जिस प्रकार नदियों में प्रवाहित होने वाला जल शीतल, स्वच्छ और कल्याणकारी होता है; उसी प्रकार देश में व्याप्त इन विचारधाराओं में प्रेम, अहिंसा तथा लोक-कल्याणरूपी जल प्रवाहित होता रहता है। यह जल अपने निकलने के स्थान (उद्गम) पर भी एक समान होता है और मिलन-स्थल पर भी एक ही होता है। ठीक इसी प्रकार हमारी सभ्यता और संस्कृति में जो विभिन्नताएँ दिखाई देती हैं, वे सब बाहरी वस्तु हैं, आंतरिक रूप में सब में एक ही भाव बहता है। ऊपर से दिखाई देने वाली ये विभिन्नताएँ अंत में और आरंभ में एक ही हैं। हाँ, अगर भिन्नता है तो वह केवल बाहरी प्रभाव में ही है।

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) भारतीय संस्कृति का नाम किसे दे सकते हैं?

उ०– भारत की अनेकता में जो एकता की भावना विद्यमान है, उसे भारतीय संस्कृति का नाम दे सकते हैं।

(स) गद्यांश में भारत की किन विशेषताओं के बारे में बताया गया है?

उ०– गद्यांश में भारत की भाषा, जाति, धर्म आदि में व्याप्त विभिन्नताओं की विशेषताओं के बारे में बताया गया है।

(द) भारत की अनेकता में एकता को किस उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है?

उ०– भारत की अनेकता में एकता को विभिन्न रंगों की सुंदर मणियों अथवा फूलों को रेशमी धागे में पिरोकर बनाए गए सुंदर हार के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है।

4. आज हम इसी .... दौरे जमाँ हमारा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने भारतीय संस्कृति को एक विशाल सागर के समान बताया है। जिसमें अनेक जाति, धर्म, भाषा के लोग समाहित होते हैं।

व्याख्या– भारतीय संस्कृतिरूपी विशाल सागर में आकर गिरने वाली जाति, धर्म, भाषारूपी आदि नदियों में एक ही भाव से शुद्ध, स्वच्छ, शीतल तथा स्वास्थ्यप्रद भारतीयतारूपी एकता का जल अमृत के समान प्रवाहित होता रहा है। आज यह जल राजनैतिक स्वार्थ, सांप्रदायिकता, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता आदि के द्वारा मलिन हो गया है। हमें आज सदियों पहले प्रवाहित उसी अमृत तत्व की तलाश है, जिस अमृतरूपी जल में एक ही उदात्त भाव का समावेश रहा है, जो भारतीय संस्कृति को अमरता और स्थिरता प्रदान करता है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि विभिन्न विचारधाराओं के रूप में इन नदियों में यह अमृतरूपी जल सदैव प्रवहमान् बना रहे, जिससे सभी लोगों में प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का संचार हो। इस भावना का विस्तृत रूप ही सनातम धर्म है और यही भारतीय संस्कृति की उदात्त परंपरा है। यद्यपि इस देश ने तरह-तरह के संकट झेले हैं, फिर भी भारतीय संस्कृति की विभिन्नता में एकता एक ऐसा तत्व है, जो आज तक मिटाया नहीं जा सका है। न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किए गए और अनगिनत बार यह देश आक्रमणकारियों की धर्मान्धता का शिकार हुआ, किन्तु यहाँ एक ऐसा तत्व सदैव विद्यमान रहा, जिसके कारण भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक बना हुआ है। वस्तुत: यह तत्व ही भारतीय संस्कृति का अमृत-तत्व है। हमारी यही कामना है कि भारतीय

संस्कृति को इस अमृत-तत्व की शक्ति सदैव प्राप्त होती रहे। इस शक्ति के द्वारा ही भारतीय संस्कृति भविष्य में भी जीवित और स्थायी बनी रहेगी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) कवि इकबाल ने क्या कहा है? अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उ०– कवि इकबाल ने कहा है कि ''न जाने कितनी बार इस देश पर बाहरी लोगों द्वारा आक्रमण किए गए और अनगिनत बार यह देश आक्रमणकारियों की धर्मान्धता का शिकार हुआ, किंतु यहाँ एक ऐसा तत्व विद्यमान है, जिसके कारण भारतीय संस्कृति का अस्तित्व आज तक विद्यमान है।

(स) उपर्युक्त गद्यांश में अमर-तत्व का क्या अर्थ है?

उ०– उपर्युक्त गद्यांश में अमर-तत्व से तात्पर्य भारतीय संस्कृति की अनेकता में एकता से है।

5. यह एक नैतिक .... पथ अहिंसा के हों।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने हमारे देश की संस्कृति में निहित अमृत-तत्व के स्त्रोत को नैतिक और आध्यात्मिक बताया है व प्रजातंत्र में मनुष्य के विकास की बात कही है।

व्याख्या– डॉ. राजेंद्र प्रसाद कहते हैं कि भारत की राष्ट्रीय एकता की प्राण-शक्ति इसकी नीति और इसके अध्यात्म में निहित है। वास्तविकता यह है कि भारतीय संस्कृति में पवित्र चरित्र तथा आत्मा संबंधी चिंतन का झरना सदा से ही अबाध गति से बहता रहा है। यह झरना कभी स्पष्ट दिखता हुआ और कभी परोक्ष रूप में बहता रहा है। हमारे सामने समय-समय पर उच्च चरित्र वाले तथा धार्मिक एवं आत्मिक चेतना से संपन्न महापुरुष आते रहे हैं। यह हमारा सौभाग्य ही कहा जाएगा कि आधुनिक युग में इस चरित्र और अध्यात्म की सजीव एवं साकार मूर्ति, महात्मा गाँधी के रूप में हमारा नेतृत्व कर रही थी। नैतिक एवं आध्यात्मिक चेतना के इस मूर्त रूप को अर्थात् महात्मा गाँधी को प्रत्यक्ष रूप से हमने चलते-फिरते तथा हँसते-रोते भी देखा है।

ये भारतीय संस्कृति के उसी सनातम अमृत-तत्व के प्रत्यक्ष मूर्त स्वरूप थे, जिसने इस संस्कृति को अमरता प्रदान कर रखी है। इस महान विभूति ने भारत को उसकी अमरता का फिर से स्मरण कराया। परिणाम यह हुआ कि निर्जीवता की सीमा तक शिथिल पड़े भारत में एक बार फिर से नवप्राणों का संचार हो उठा। ऐसा लगने लगा कि हमारे शरीर की सूखी हड्डियों में नवीन मज्जा भर गई और निराशा से मुरझाए हुए हमारे मन में आशा का संचार हो गया। जिस तत्व ने भारत को नवीन जीवन और स्फूर्ति प्रदान की, वह तत्व है-सत्य और अहिंसा। यह अमर तत्व मिटाने से मिटता नहीं है। समस्त मानव-जाति को इसकी आवश्यकता अनुभव हो रही है; क्योंकि सभी यह बात अच्छी प्रकार समझ गए हैं कि इस अमर तत्व से ही मानवता की रक्षा हो सकती है। लेखक कहते हैं कि अब भारत में प्रजातंत्र व्याप्त है अर्थात यहाँ पर जनता का ही शासन है जिसमें व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता मिलती है, जिससे वह अपना सर्वांगीण विकास करके सामूहिक व सामाजिक एकता को बढ़ाने का प्रयास करता है। कभी-कभी व्यक्ति व समाज के बीच विरोधाभास भी हो सकता है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास का प्रयास करता है, यदि एक व्यक्ति के विकास के परिणामस्वरूप दूसरे व्यक्ति के विकास में अवरोध उत्पन्न होता है तो संघर्ष उत्पन्न हो जाता है, इसलिए यह हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम अपने कार्य को इस प्रकार संपन्न करें, जिससे किसी दूसरे की उन्नति में बाधा न उत्पन्न हो। इस संघर्ष को टालने का एकमात्र उपाय अहिंसा या त्याग-भावना का अनुसरण करना है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत को स्पष्ट कीजिए।

उ०– नैतिक और आध्यात्मिक स्त्रोत राष्ट्रीय एकता की भावना ही है।

(स) संघर्ष कब पैदा होता है और यह कैसे दूर हो सकता है?

उ०– एक-दूसरे के स्वार्थ आपस में टकराने पर संघर्ष पैदा होता है, इसे दूर करने के लिए अहिंसा या त्याग-भावना का अनुसरण करना होगा।

(द) देश में किस प्रकार के प्रजातंत्र की स्थापना हो चुकी है?

उ०– देश में प्रजातंत्र की स्थापना हो चुकी है, जिसमें व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। जिससे वह अपना विकास कर सके और सामूहिक व सामाजिक एकता को भी बढ़ा सके।

6. हमारी सारी ....'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने अहिंसा को भारतीय संस्कृति का मूल आधार बताया है और कहा है कि अहिंसा का ही दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है।

व्याख्या– राजेंद्र प्रसाद जी कहते हैं कि हमारी भारतीय संस्कृति का मुख्य आधार अहिंसा तत्व ही है। इसलिए हमारे ग्रंथों में जहाँ कहीं भी नैतिक सिद्धांतों की बात कही गई है, वहाँ मन, वचन और कर्म से हिंसा न करने का उल्लेख अवश्य किया गया है। लेखक ने अहिंसा को त्याग का नाम दिया है। त्याग करना ही अहिंसा है और दूसरे रूप में अहिंसा ही त्याग है। अहिंसा और त्याग दोनों में कोई अंतर नहीं है। ठीक इसी तरह हिंसा का दूसरा नाम अथवा दूसरा रूप स्वार्थ है। हिंसा ही स्वार्थ है और स्वार्थ का पयार्य हिंसा है। दोनों में उतना ही गहरा संबंध है, जितना अहिंसा और त्याग में। एक मानव दूसरे मानव को स्वार्थ के वशीभूत होकर ही हानि पहुँचाता है। अत: स्वार्थ का दूसरा नाम हिंसा है और हिंसा अथवा स्वार्थ का अर्थ है–भोग। भारतीय दर्शन के अनुसार भोग की उत्पत्ति त्याग से हुई है और त्याग भी भोग में ही पाया जाता है। उनिषद् में कहा गया है कि संसार का भोग, त्याग की भावना से करो। यहाँ त्याग में ही भोग माना गया है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम बताइए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) हिंसा का दूसरा रूप क्या है?

उ०– स्वार्थ हिंसा का दूसरा रूप है।

(स) भारतीय संस्कृति का मूलाधार बताइए।

उ०– भारतीय संस्कृति का मूलाधार अहिंसा है।

(द) अहिंसा का दूसरा नाम बताइए।

उ०– त्याग अहिंसा का दूसरा नाम है।

(य) 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' का क्या अर्थ है?

उ०– 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा:' से तात्पर्य है कि त्याग की भावना से ही भोग करना चाहिए क्योंकि त्याग की भावना से ही सभी आपसी संघर्ष समाप्त हो जाते हैं।

7. वैज्ञानिक और औद्योगिक .... अधिक व्यापक है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बताया है कि किस प्रकार प्रकृतिजन्य व मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति बनी रही।

व्याख्या– लेखक कहता है कि वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों से अपने आप को सुरक्षित रखकर हमें उनका उपयोग किस प्रकार करना है— इस विषय पर हमें अधिक ध्यान देना पड़ेगा। लेखक आगे दो महत्वपूर्ण बातों के विषय में चिंतन करते हुए उनमें से एक के विषय में बताता है कि हमारे ऊपर प्राकृतिक व मानवकृत ढेरों विपदाएँ आईं परंतु हमारी सृजनात्मक शक्ति पर इसका कोई अधिक प्रभाव न पड़ा। हमारे देश में अनेक शासकों का राज्य रहा और उनका पतन भी हुआ। विभिन्न संप्रदाय बनते व मिटते रहे। विदेशियों ने आक्रमण करके हमें बुरी तरह रौंदा, प्रकृति ने भी हम पर कई मुसीबतें ढाईं। परंतु फिर भी हमारी संस्कृति विनष्ट नहीं हुई और हमारी सृजनात्मक शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हमारे बुरे दिनों में भी हमारे देश में बहुत-से महान विद्वान व कर्मयोगी पैदा हुए जो संसार के इतिहास में अन्य युग में उच्च आसन के अधिकारी होते। जब हम गुलाम थे, हमारे देश में गाँधी जैसे कर्मनिष्ठ व धर्मात्मा क्रांतिकारी पैदा हुए, उन्हीं दिनों रवींद्रनाथ टैगोर जैसे महान कवि का जन्म हुआ, जिन्होंने अपनी ओजपूर्ण कविताओं से स्वतंत्रता प्रेमियों में उत्साह का संचार कर दिया। महर्षि अरविंद तथा रमण जैसे महान योगियों का भी जन्म हुआ, जिन्होंने जनमानस में भारतीय संस्कृति का जमकर प्रचार प्रसार किया। उसी समय अनेक महान विद्वानों व वैज्ञानिकों का भी जन्म हुआ, जिन्हें संसार में

आज भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। लेखक आगे कहता है कि जिन हालात में संसार की बहुत-सी सभ्यताएँ नष्ट हो गईं, उन्हीं हालात में भारतीय संस्कृति न कि टिकी रही बल्कि उसने आध्यात्मिक व बौद्धिक विकास भी किया। इसका मुख्य कारण हमारी सामूहिक चेतना व नैतिकता थी, जो पर्वतों से भी अधिक शक्तिशाली, सागर से भी अधिक गहरी व आकाश से भी अधिक ऊंची व विस्तृत थी। सारांशत: हमारी संस्कृति, संसार की अन्य संस्कृतियों से अधिक श्रेष्ठ है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के परिणामों को लेखक ने उद्दंड क्यों कहा है?

उ०– वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के परिणामों को उद्दंड कहने से लेखक का अभिप्राय है कि इनके विकास से मनुष्य को लाभ होने के साथ-साथ हानि भी होती है, जिसके भयंकर परिणाम होते हैं।

(स) गद्यांश में किन दुर्दिनों के विषय में बताया गया है?

उ०– लेखक गद्यांश में उन दुर्दिनों के विषय में बता रहा है जब हम विदेशियों से आक्रांत और पददलित हुए। प्रकृति और मानव दोनों ने हम पर मुसीबतों के पहाड़ ढहाए।

(द) हम अभी तक किन हालातों में जीवित रहे हैं?

उ०– हम अभी तक उन हालातों में जीवित रहे हैं, जिन हालातों के कारण संसार की प्रसिद्ध जातियाँ नष्ट हो गई हैं।

(य) हमारी सामूहिक चेतना किस नैतिक आधार पर टिकी हुई है?

उ०– हमारी सामूहिक चेतना पर्वतों से दृढ़, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक नैतिक आधार पर टिकी हुई है।

8. संस्कृति अथवा सामूहिक .... उनकी सफलता थी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने भारतीय लोगों में विभिन्नता के बाद भी भारत में व्याप्त एकता को ही संस्कृति बताया है।

व्याख्या– किसी समूह की एक जैसी सोच अथवा विचारधारा ही वस्तुत: संस्कृति कहलाती है। हमारे देश की संस्कृति की यही विशेषता है कि उसमें विविधता होते हुए भी किसी एक बिंदु पर जाकर समानता अवश्य दृष्टिगोचर होती है। यही समानता अथवा एकता ही हमारे देश की जीवंतता का मूलतत्व अर्थात् प्राण है। हमारे मन-मस्तिष्क में बसी एकता की यही नैतिक भावना हमें असंख्य नगर, ग्राम, प्रदेश, संप्रदाय, जाति और वर्ग आदि में बँटा होने के बाद भी आपस में एक-दूसरे से जोड़े हुए है और उसी जुड़ाव के कारण हम सब स्वयं को एक ही जाति भारतीयता का अंग मानते हैं। एक जाति और एक भारतमाता की संतान होने के कारण हम आपस में भाई-भाई हैं। एकता का ऐसा उदाहरण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं दृष्टिगत होता। विभिन्न जाति, धर्म और प्रदेश में बँटा होने के कारण हमारी वेशभूषा, खानपान, रहन-सहन और भाषा में विभिन्नता दिखती ही है, फिर भी भारतीयता की भावना हमें एक बनाती है। हमारे भीतर एक-दूसरे से लगाव और अपनत्व की इस भावना का अत्यधिक महत्व है। इसके महत्व को महात्मा गाँधी ने भली-भाँति पहचाना और इसका राष्ट्र तथा जनहित में उपयोग भी किया। महात्मा गाँधी ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए जिस क्रांति का आह्वान किया, उसका मूलाधार जनसाधारण की भावनात्मक एकता ही थी। महात्मा गाँधी ने भावनात्मक एकता के सूत्र में बँधे जनसाधारण का नेतृत्व करने के लिए बुद्धिजीवियों को तैयार किया, जिन्होंने भारतीयता के नाम पर जनसाधारण को एक हो जाने के लिए प्रेरित किया। जब जनसाधारण ने एक स्वर से स्वतंत्रता की माँग की तो विदेशी शासकों ने उसे कुचलने का प्रयास किया, जिसके प्रतिरोध के कारण क्रांति का बिगुल बज उठा और अंतत: हम स्वतंत्र हो गए।

बापू के अहिंसा, सेवा और त्याग के उपदेशों से भारतीय जनता इसलिए आंदोलित हुई क्योंकि उनका जीवन सैकड़ों वर्षों से इन्हीं आदर्शों से प्रेरित रहा था और बापू ने उनके आदर्शों को ही जाग्रत किया। सामान्य जनता के मन में धड़कती हुई इस चेतना को जाग्रत करके क्रांति का हथियार बनाने में बापू ने दूरदर्शिता का कार्य किया। जिसके कारण वे सफल हो सके।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** भारतीय संस्कृति **लेखक–** डॉ. राजेंद्र प्रसाद

(ब) हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में किस प्रकार बँधी हुई हैं?

उ०– हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ सामूहिक एकता की नैतिक चेतना से बँधी हुई हैं।

(स) बापू की सफलता का राज क्या था?

उ०– बापू ने भारतीयों के आदर्श मूल्यों–त्याग, अहिंसा, सेवा को जाग्रत किया, जो भारतीयों में सैकड़ों वर्षों से विद्यमान थे। इन्हीं के बल पर बापू अपने प्रयासों में सफल हो सके।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद का जन्म किस राज्य में हुआ था?

(अ) उत्तर प्रदेश (ब) राजस्थान

(स) **बिहार** (द) गुजरात

2. डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने वकालत का कार्य कब छोड़ा?

(अ) सन् 1850 में (ब) सन् 1902 में

(स) सन् 1907 में (द) **सन् 1920 में**

3. डॉ. राजेंद्र प्रसाद को 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' से किस रचना के लिए सम्मानित किया गया?

(अ) **मेरी आत्मकथा** (ब) भारतीय संस्कृति

(स) मेरी यूरोप यात्रा (द) जड़ और चेतन

4. निम्न में से डॉ. राजेंद्र प्रसाद की कृति कौन–सी नहीं है?

(अ) मेरी यूरोप यात्रा (ब) **लाल कनेर**

(स) शिक्षा और संस्कृति (द) गाँधी जी की देन

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग व शब्द अलग कीजिए–

शब्द	**उपसर्ग**	**शब्द**
विशेष	वि	शेष
अपरिचित	अ	परिचित
अत्याचार	अति	आचार
उपार्जन	उप	अर्जन
प्रत्येक	प्रति	एक

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
विदेशी	स्वदेशी
आसान	कठिन
अपरिचित	परिचित
निर्मल	मलिन
अनिवार्य	ऐच्छिक

3. निम्नलिखित शब्दों के तीन–तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

पहाड़ - शैल, गिरि, पर्वत।

प्रचलित - प्रसिद्ध, लोकप्रिय, चलनसार।

जल - नीर, पानी, तोय।

आनंद - हर्ष, मोद, प्रसन्नता।

अनिवार्य - आवश्यक, जरूरी, अटल।

4. 'हट' तथा 'वट' प्रत्ययों का प्रयोग करते हुए दो–दो शब्द बनाइए।

उ०– हट - मुस्कुराहट, घबराहट।

वट - बनावट, सजावट।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

5. ईर्ष्या, तू न गयी मेरे मन से (रामधारी सिंह 'दिनकर')

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रामधारी सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– रामधारी सिंह का जन्म सन् 1908 ई. में बिहार के मुंगेर जिले के ग्राम सिमरिया में हुआ था।

2. रामधारी जी का उपनाम बताइए।

उ०– रामधारी जी का उपनाम 'दिनकर' था।

3. दिनकर जी किस विद्यालय के कुलपति बने?

उ०– दिनकर जी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने।

4. दिनकर जी ने मैट्रिक में पढ़ते हुए किस कृति का सृजन किया?

उ०– दिनकर जी ने मैट्रिक में पढ़ते हुए 'प्रणभंग' कृति का सृजन किया।

5. दिनकर जी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार उनकी किस कृति के लिए दिया गया?

उ०– दिनकर जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार 'उर्वशी' कृति पर प्राप्त हुआ।

6. दिनकर जी को 'पद्मभूषण' उपाधि से कब सम्मानित किया गया?

उ०– सन् 1959 को दिनकर जी को 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

7. दिनकर जी द्वार रचित किन्हीं तीन निबंधों के नाम बताइए।

उ०– 'ईष्या ,तू न गयी मेरे मन से', 'संस्कृति के चार अध्याय', 'भारतीय संस्कृति की एकता' दिनकर जी द्वारा लिखित तीन निबंध हैं।

8. दिनकर जी की किसी एक काव्य कृति का नाम लिखिए।

उ०– 'रेणुका' दिनकर जी की काव्यकृति है।

9. दिनकर जी की प्रमुख निबंध रचनाओं के नाम बताइए।

उ०– दिनकर जी के प्रमुख निबंध–मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, उजली आग, रेती के फूल आदि हैं।

10. दिनकर जी का निधन कब हुआ था?

उ०– दिनकर जी का निधन सन् 1974 ई. को हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– राष्ट्रकवि रामधारी सिंह का हिंदी के ओजस्वी कवियों में शीर्ष स्थान है। राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत उनकी कविताओं में प्रगतिवादी स्वर भी मुखरित है, जिसमें उन्होंने शोषण का विरोध करते हुए मानवतावादी मूल्यों का समर्थन किया है। वे हिंदी के महान कवि, श्रेष्ठ निबंधकार, विचारक एवं समीक्षक के रूप में जाने जाते हैं।

जीवन परिचय– राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेर जिले के ग्राम सिमरिया में सन् 1908 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह था। इनकी अल्पायु में ही इनके पिता का देहांत हो गया। इन्होंने 'मोकामाघाट' से मैट्रिक (हाईस्कूल) की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. ऑनर्स की परीक्षा उत्तीर्ण की।

बी.ए. ऑनर्स करने के पश्चात् आप एक वर्ष तक मोकामाघाट के प्रधानाचार्य रहे। सन् 1934 ई. में आप सरकारी नौकरी में आए तथा 1943 ई. में ब्रिटिश सरकार के युद्ध–प्रचार–विभाग में उपनिदेशक नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आप मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर नियुक्त हुए। 1952 ई. में आपको भारत के राष्ट्रपति द्वारा राज्य सभा का सदस्य मनोनीत किया गया, जहाँ आप 1962 ई. तक रहे। सन् 1963 ई. में आपको भागलपुर विश्वविद्यालय का कुलपति बनाया गया। आपने भारत सरकार की हिंदी–समिति के सलाहकार और आकाशवाणी के निदेशक के रूप में भी कार्य किया। सन् 1974 ई. में आपका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय–'दिनकर' जी में काव्य–प्रतिभा जन्मजात थी, मैट्रिक में पढ़ते समय ही आपका 'प्रणभंग' नामक काव्य प्रकाशित हो गया था। इसके पश्चात सन् 1928-29 से विधिवत् साहित्य–सृजन के क्षेत्र में पदार्पण किया। राष्ट्र–प्रेम

से ओत-प्रोत आपकी ओजस्वी कविताओं ने सोए हुए जनमानस को झकझोर दिया। मुक्तक, खंडकाव्य और महाकाव्य की रचना कर आपने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया। गद्य के क्षेत्र में निबंधों और ग्रंथों की रचना कर भारतीय दर्शन, संस्कृति, कला एवं साहित्य का गंभीर विवेचन प्रस्तुत कर हिंदी साहित्य के भंडार को परिपूर्ण करने का सतत प्रयास किया। आपकी साहित्य साधना को देखते हुए राष्ट्रपति महोदय ने सन् 1959 मे ंआपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 'उर्वशी' पर आपको भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त साहित्य अकादमी पुरस्कारों से भी आप सम्मानित किए गए।

2. दिनकर जी की भाषागत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– **भाषा-शैली–** दिनकर जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली है, जिसमें संस्कृत शब्दों की बहुलता है। उर्दू एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी उनकी भाषा में उपलब्ध हो जाते हैं। संस्कृतनिष्ठ भाषा के साथ-साथ व्यावहारिक भाषा भी उनकी गद्य रचनाओं में उपलब्ध होती है। कहीं-कहीं देशज शब्दों के साथ-साथ मुहावरों का प्रयोग भी उनकी भाषा में मिल जाता है।

विषय के अनुरूप उनकी शैली के विविध रूप दिखाई पड़ते हैं। गंभीर विषयों के विवेचन में उन्होंने **विवेचनात्मक शैली** का प्रयोग किया है तो कवि हृदय होने से उनकी गद्य रचनाओं में **भावात्मक शैली** भी दिखाई पड़ती है। समीक्षात्मक निबंधों में वे प्राय: **आलोचनात्मक शैली** का प्रयोग करते हैं तो कहीं-कहीं जीवन के शाश्वत सत्यों को व्यक्त करने के लिए वे **सूक्ति शैली** का प्रयोग करते हैं।

3. 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'ईर्ष्या, तू न गई मेने मन से' रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित एक निबंध हैं। इसमें लेखक ने ईर्ष्या की उत्पत्ति का कारण एवं उससे होने वाली हानियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है। साथ ही ईर्ष्या से विमुक्ति का साधन भी प्रस्तुत किया है। लेखक कहता है कि उसके घर के दाहिनी तरफ एक वकील साहब रहते हैं, जिनके पास सभी सुख साधन हैं, परंतु वे फिर भी सुखी नही हैं। उनके अंदर कौन-सी अग्नि जल रही है, वह मैं जानता हूँ। उसका नाम ईर्ष्या है क्योंकि उनके बराबर में रहने वाले बीमा एजेंट अधिक संपन्न हैं, उनके पास मोटर व अच्छी मासिक आय है। वकील साहब अपनी सुविधाओं का आनंद न उठाकर केवल बीमा एजेंट की सुविधाओं को प्राप्त करने की चिंता में जल रहे हैं। ईर्ष्या मनुष्य को यही विचित्र वरदान देती है जिसमें मनुष्य बिना दु:ख के दु:ख भोगता है। जिस व्यक्ति के मन में ईर्ष्या वास करने लगती है, वह उन चीजों का आनंद नहीं ले पाता जो उसके पास होती है वरन् उन वस्तुओं के लिए दु:ख उठाता है जो दूसरे व्यक्तियों के पास होती हैं। वह अपनी तुलना निरंतर दूसरों के साथ करता रहता है। ईष्यालु व्यक्ति असंतोषी प्रवृत्ति के होते हैं। वे भगवान द्वारा दिए गए उपवन अर्थात् सुख सुविधाओं को पाकर उसका धन्यवाद करने व आनंद लेने के विपरीत इस चिंता में मग्न रहते हैं कि मुझे बड़ा उपवन (अधिक सुविधाएं) क्यों प्राप्त नहीं हुआ। इसके लिए वह लगातार विचार करते हुए अपनी उन्नति के प्रयासों को छोड़कर दूसरों को हानि पहुँचाने के प्रयत्न करने लगता है। लेखक ने ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निंदा बताया है। ईर्ष्या के कारण ही व्यक्ति दूसरों की निंदा करता है जिससे वह व्यक्ति दूसरों की नजरों से गिर जाए और स्वयं दूसरों की नजरों में श्रेष्ठ बन जाए। परंतु आज तक ऐसा नहीं हुआ। निंदा के कारण कोई भी व्यक्ति नजरों से नहीं गिरता बल्कि उसके गिरने का कारण उसके गुणों का ह्रास है। ईर्ष्या का काम जलाना है। सबसे पहले यह उसी को जलाती है जिसके हृदय में वास करती है। चिंता को चिता कहा जाता है क्योंकि चिंता में मग्न व्यक्ति का जीवन खराब हो जाता है,परंतु ईर्ष्या तो चिंता से भी बुरी है, क्योंकि इसमें मनुष्य के मौलिक गुण समाप्त हो जाते हैं।

ईर्ष्या किसी मनुष्य का चारित्रिक दोष होने के साथ-साथ उसके जीवन आनंद में भी रुकावट डालती है, उसे जीवन का सुख नजर ही नहीं आता है। जो व्यक्ति अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर हंसता है वह राक्षस के समान होता है और उससे प्राप्त आनंद भी राक्षसों का ही होता है। ईर्ष्या प्रतिद्वंद्विता से संबंधित होती है। प्रतिद्वंद्विता से मनुष्य का विकास होता है, किंतु अगर आप संसार का लाभ चाहते हैं तो रसेल के अनुसार आप स्पर्द्धा नेपोलियन से करेंगे। नेपोलियन भी सीजर से और सीजर भी हरकुलिस से प्रतिस्पर्धा रखता था। अर्थात् सभी प्रतिभाशाली व्यक्ति स्वयं से श्रेष्ठ लोगों से प्रतिस्पर्धा करते हैं।

जो व्यक्ति सादा व सरल होता है, वह यह सोचकर परेशान होता है कि दूसरा व्यक्ति मुझसे ईर्ष्या क्यों करता है। ईश्वरचंद्र विद्यासागर भी कहते हैं कि "तुम्हारी निंदा वही करता है, जिसकी तुमने भलाई की है।" और जब महान् लेखक नीत्से इससे होकर गुजरे तो इसे उन्होंने इसे बाजार में भिनभिनाने वाली मक्खियाँ बताया, जो सामने व्यक्ति की प्रशंसा और पीठ पीछे उसी की निंदा करती है।" ये मक्खियाँ हमारे अंदर व्याप्त गुणों के लिए हमें सजा देती हैं और अवगुणों को माफ कर देती हैं। उन्नत चरित्र वाले ईर्ष्यालु व्यक्तियों की बातों पर नहीं चिढ़ते क्योंकि ईर्ष्यालु व्यक्ति तो स्वयं ही छोटी प्रवृत्ति के होते हैं। मगर छोटी सोच वाले व्यक्ति संपन्न लोगों की निंदा को ही सही मानते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि हम इन लोगों का

जितना भी भला करें ये हमारा बुरा ही करेंगे। ऐसे व्यक्ति निंदा का उत्तर न देने वाले लोगों को उनका अहंकार समझते हैं, अगर हम भी उनके जैसे बन जाते हैं, तो वे खुश हो जाते हैं। नीत्से ने भी कहा है आदमी के गुणों के कारण भी लोग उनसे जलते हैं। इन ईर्ष्यालु लोगों से बचने का उपाय है कि एकांत में रहा जाए । जो लोग संसार में नए मूल्यों का निर्माण करते हैं वे इनसे दूर ही रहते हैं और ईर्ष्या से बचने के लिए ईर्ष्यालु व्यक्ति को सोच-विचार की आदत का त्याग कर देना चाहिए। उसे अपनी सुविधाओं के अभाव को पूरा करने का रचनात्मक उपाय खोजना चाहिए। इस उपाय को खोजने की ललक उसके अंदर ईर्ष्या को समाप्त कर देगी।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. मेरे घर के .... मेरी भी हुई होती।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्यखंड' के रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' नामक निबंध से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने प्रस्तुत गद्यांश में मनुष्य के मन में उठने वाले ईर्ष्या (जलन) के भावों को स्पष्ट किया है कि मनुष्य स्वयं के सुखों का आनंद लेने के बजाय दूसरों के सुख से ईर्ष्या करने से किस प्रकार दु:खी रहता है।

व्याख्या– लेखक ईर्ष्या के कारण दु:खी व्यक्तियों का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि उनके घर के दाहिनी तरफ एक वकील साहब रहते हैं जो खाते-पीते घर के हैं अर्थात् आर्थिक दृष्टि से संपन्न हैं, वे दोस्तों का काफी सत्कार करते हैं। समाज में होने वाली सभाओं और सोसाइटियों में भी भाग लेते हैं। उनका परिवार बाल-बच्चों से पूर्ण है। उनके घर में सभी सुख सुविधाओं के लिए नौकर- चाकर हैं, उनकी पत्नी अत्यंत विनम्र स्वभाव व मधुर वचन बोलने वाली है। एक मनुष्य को सुखी होने के लिए जितनी भी वस्तुओं की आवश्यकता है वह सब उनके पास उपलब्ध हैं। इससे ज्यादा मनुष्य को सुखी होने के लिए और क्या चाहिए?

परंतु वे सुखी नहीं हैं। उनके भीतर कौन-सी अग्नि जल रही है इसे लेखक भली-भाँति जानते हैं। वास्तव में वकील साहब के बराबर में जो बीमा एजेंट रहते हैं, उनके ऐश्वर्य में होने वाली बढ़ोत्तरी से वकील साहब के हृदय में ईर्ष्या के भाव उठते हैं। ईश्वर ने उन्हें जो कुछ दिया है, वे इसे पर्याप्त नहीं समझते हैं। वह रात-दिन इस चिंता में मग्न रहते हैं कि काश, एजेंट साहब को प्राप्त मोटर, मासिक आय और ऐश्वर्यशाली सुख मुझे भी प्राप्त होते।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) लेखक ने क्यों कहा कि 'भला एक सुखी मनुष्य को और क्या चाहिए?'

उ०– लेखक ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वकील साहब प्रत्येक सुख से संपन्न व खुशहाल थे। उनके पास सुखी रहने के लिए सभी साधन उपलब्ध थे। फिर भी वे अपने बगल वाले बीमा एजेंट से ईर्ष्या करते थे।

(स) वकील साहब के बारे में गद्यांश में क्या कहा गया है?

उ०– गद्यांश में वकील साहब के बारे में कहा गया है कि वकील साहब हर प्रकार से संपन्न व खुशहाल थे, परंतु अपने बराबर में रहने वाले बीमा एजेंट के ऐश्वर्य से ईर्ष्या करने के कारण वे अपने सुखों का आनंद लेने के बजाय दु:खी रहते थे।

2. एक उपवन को .... समझने लगता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ दिनकर जी ने मनुष्य की असंतोषी प्रवृत्ति को बताया है कि मनुष्य भगवान द्वारा दी गई सुविधाओं का आनंद लेने के विपरीत उनसे और अधिक सुखों की कामना करने के कारण सदैव दु:खी रहता है।

व्याख्या– दिनकर जी कहते हैं कि जो व्यक्ति असंतोषी प्रवृत्ति के होते हैं, उनमें ईर्ष्या की भावना अधिक पाई जाती है। असंतोषी व्यक्ति इस बात से संतोष नहीं करते कि भगवान ने हमें खुश रहने के लिए जो भी सुख-सुविधाएँ एक उपवन के रूप में उपहारस्वरूप दी हैं, भले ही वह उपवन बहुत छोटा हो अर्थात् सुख-सुविधाएँ अत्यंल्प हैं, हम उनका उपयोग करते हुए आनंद प्राप्त करें और ईश्वर को इसके लिए धन्यवाद दें कि उसने हमें वे सुविधाएँ प्रदान की हैं। इसके विपरीत वे सदैव यही सोच-सोचकर बेचैन रहते हैं कि ईश्वर ने हमें इससे बड़ा उपवन अथवा अधिक सुख-सुविधाएँ क्यों प्रदान नहीं की हैं। यह व्यक्ति का सबसे बड़ा दोष है। इस दोष से युक्त ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र अत्यंत भयावह होता है। ईश्वर-प्रदत्त अभावों

के विषय में सोचते-सोचते वह इतना जड़ (भावशून्य) हो जाता है कि अपनी स्वाभाविक सृजनात्मक क्षमता को भी भूल जाता है। वह यह भी नहीं सोच पाता कि जिन सुख-सुविधाओं का मेरे जीवन में अभाव है, उनको मैं अपने परिश्रम और सृजनात्मक शक्ति द्वारा प्राप्त कर सकता हूँ। वह सृजन की अपनी सकारात्मक क्षमता के विपरीत विनाश की नकारात्मक दिशा की ओर उन्मुख हो जाता है तथा अपनी उन्नति हेतु परिश्रम करना छोड़कर दूसरों को हानि पहुँचाने के उपक्रम में लग जाता है। वह इसे ही अपना श्रेय-प्रेय और पुनीत कर्तव्य मानने लगता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०- **पाठ-** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक-** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) 'उपवन' के उदाहरण से लेखक क्या समझाना चाहता है?

उ०- 'उपवन' के उदाहरण से लेखक समझाना चाहता है कि ईश्वर ने हमें जो सुख सुविधाएँ दी हैं हमें उसमें ही खुश रहना चाहिए और बड़े उपवन अर्थात् अधिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करने की चिंता में मग्न नहीं रहना चाहिए।

(स) ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र भयंकर कैसे हो जाता है?

उ०- ईर्ष्यालु व्यक्ति का चरित्र तब भयंकर हो जाता है,जब वह स्वयं को मिले उपवन का आनंद न लेते हुए इस चिंता में डूबा रहता है कि मुझे इससे बड़ा उपवन क्यों नहीं मिला।

(द) ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को हानि पहुँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य क्यों समझता है?

उ०- ईर्ष्यालु व्यक्ति स्वयं को प्राप्त न होने वाली सुख-सुविधाओं के अभाव के कारण को विचार करते हुए दूसरों को हानि पहँचाने को ही अपना श्रेष्ठ कर्तव्य समझने लगता है।

3. चिंता को लोग .... दूषित करती फिरती है।

संदर्भ- पूर्ववत्

प्रसंग- यहाँ लेखक ने चिंता को चिता के समान समझाते हुए कहा है कि जो व्यक्ति चिंता में पड़ जाता है उसकी जिंदगी खराब हो जाती है परंतु ईर्ष्या को चिंता से भी बुरी वस्तु बताया गया है।

व्याख्या- एक कहावत प्रचलित है कि चिंता चिता से भी बढ़कर होती है। चिंता चिता से अधिक कष्टकारक इसीलिए बताई गई है कि चिंता में व्यक्ति तिल-तिल करके जलता है। जो व्यक्ति चिंताग्रस्त हो जाता है,उसका जीवन लगभग नष्ट-सा ही हो जाता है। उसके जीवन की खुशी समाप्त हो जाती है। वह हर समय चिंता में ही घुलता रहता है। दिनकर जी ने ईर्ष्या को चिंता से भी अधिक बुरी बताया है। उनका मत है कि ईर्ष्या मानव के मूल गुणों को नष्ट कर देती है। मन में ईर्ष्या का भाव पनपते ही व्यक्ति के प्रेम, दया, सहानुभूति, संतोष आदि भाव धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। ऐसा व्यक्ति अपने सद्गुणों को दबाकर विवशता में जीता है।

दिनकर जी का मत है कि जीवन में सद्गुणों को त्यागकर जीवित रहने की अपेक्षा मृत्यु अधिक श्रेष्ठ है। सद्गुणों के अभाव में मनुष्य और पशु में अंतर नहीं रह जाता। ऐसा जीवन जीने से क्या लाभ? दूसरों के वैभवपूर्ण और सुखी जीवन को देखकर ईर्ष्यालु व्यक्ति कुंठित होकर रह जाता है। उसे अन्य लोगों की तुलना में अपना जीवन व्यर्थ लगने लगता है। दूसरी ओर जो व्यक्ति अपने अभावों के कारण चिंताग्रस्त रहता है, समाज के सुखी व्यक्ति उसकी चिंता को समाप्त करने का प्रयास करते हैं, उसके कष्टों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं और किसी सीमा तक उन्हें दूर करने का भी प्रयास किया जाता है। किंतु ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को फलता-फूलता एवं सुखी जीवन व्यतीत करते देखकर अंदर ही अंदर जलता रहता है, इसीलिए वह व्यक्ति विष की पोटली के समान होता है। ऐसी विष-भरी पोटली जहाँ कहीं भी रखी जाती है, वहीं के वायुमंडल को दूषित कर देती है। ईर्ष्यालु व्यक्ति वातावरण में ईर्ष्या का दाहक विष मिला देता है। वह जहाँ भी जाता है, अपनी ईर्ष्यालु भावनाओं से वहाँ का वातावरण विषाक्त बना देता है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०- **पाठ-** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक-** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) चिंता और ईर्ष्या में लेखक ने क्या अंतर बताया है?

उ०- चिंता के कारण व्यक्ति का जीवन खराब हो जाता है, परंतु ईर्ष्या के कारण तो व्यक्ति के मौलिक गुणों का ही ह्रास हो जाता है।

(स) चिंता का दूसरा नाम क्या बताया गया है?

उ०– चिंता का दूसरा नाम चिता बताया गया है।

(द) ईर्ष्या से जला-भुना आदमी किसके समान है?

उ०– ईर्ष्या से जला-भुना आदमी जहर की चलती फिरती गठरी के समान होता है।

4. ईर्ष्या मनुष्य का .... दैत्यों का आनंद होता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने ईर्ष्या जैसे अवगुण को मनुष्य के चरित्र में एक गंभीर दोष माना है, जो ईर्ष्यालु व्यक्ति दूसरों को दु:खी देखकर हसँता है, वह राक्षस के समान होता है।

व्याख्या– ईर्ष्या मनुष्य के चरित्र का गंभीर दोष है। यह भाव व्यक्ति के चरित्र का हनन तो करता ही है, उसके आनंद में भी व्यवधान उपस्थित करता है। जिस मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न हो जाए, उसे अपन सुख ही हल्का प्रतीत होने लगता है। वह सुखद स्थिति में होते हुए, अथवा सुख की संभावनाएँ निहित होने पर भी सुख से वंचित हो जाता है। सुख के साधन समक्ष होने पर भी उसे सुख की अनुभूति नहीं हो पाती। ईर्ष्या के कारण उसकी विवेकशक्ति नष्ट हो जाती है। वह दूसरों के सुख को देखकर ही दु:खी होने लगता है। यहाँ तक कि वह प्राकृतिक सौंदर्य से भी ईर्ष्या करने लगता है और वह उसके लिए व्यर्थ की वस्तु बन जाता है। पक्षियों के कलरव अथवा उनके मधुर स्वर में उसे कोई आकर्षण नजर नहीं आता। उसे सुंदर, खिले हुए पुष्पों से भी ईर्ष्या होने लगती है और उसे उनमें भी किसी प्रकार के सौंदर्य के दर्शन नहीं हो पाते।

ईर्ष्यालु व्यक्ति अपने निंदारूपी बाण से अपने प्रतिद्वंद्वियों को बेधकर जब हँसता है तो उसकी हँसी को देखकर कोई व्यक्ति यह कल्पना कर सकता है कि वह आनंदित है। इस आनंद को वह व्यक्ति उस ईर्ष्यालु व्यक्ति की ईर्ष्या का पुरस्कार भी समझ सकता है, किंतु यदि उस हँसी पर ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि उस समय भी वह उस नैसर्गिक आनंद के सुख से वंचित होता है। उसकी हँसी राक्षसी होती है और उसका राक्षसीपन उस हँसी की विकृति में झलकता रहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह ईर्ष्यालु व्यक्ति जिस आनंद की अनुभूति करता है, उस दानवीय अनुभूति से भी उसे किसी नैसर्गिक आनंद की प्राप्ति नहीं हो सकती।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) जब मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या का उदय होता है तो क्या होता है?

उ०– मनुष्य के हृदय में ईर्ष्या के उदय होने का दुष्परिणाम यह होता है कि उसे अपने सामने का सुख भी मद्धिम (धूमिल)-सा प्रतीत होने लगता है।

(स) ईर्ष्यालु व्यक्ति की हँसी को किसके समान बताया गया है?

उ०– ईर्ष्यालु व्यक्ति की हँसी को राक्षसों की हँसी के समान बताया गया है।

(द) ईर्ष्यालु व्यक्तियों का आनंद कैसा होता है?

उ०– ईर्ष्यालु व्यक्तियों का आनंद दैत्यों के आनंद के समान होता है।

5. ईर्ष्या का संबंध .... सिंकदर हरकुलिस से।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने ईर्ष्या करने का मनोवैज्ञानिक कारण बताया है कि प्रतिद्वंद्विता के कारण ईर्ष्या जन्म लेती है।

व्याख्या– लेखक के अनुसार ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्विता से होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है। कोई अत्यधिक धनी व्यक्ति किसी कंगाल की ईर्ष्या का पात्र नहीं बनता। ईर्ष्या का मनोवैज्ञानिक कारण प्रतिद्वंद्विता है और प्रतिद्वंद्विता समकक्षों में ही उत्पन्न होती है। लेखक ने यहाँ यह भी स्पष्ट किया है कि यह बात ईर्ष्या के पक्ष में जाती है; क्योंकि प्रतिद्वंद्विता या स्पर्द्धा से ही मनुष्य का विकास होता है। जो व्यक्ति संसार-व्यापी व्यक्तित्व चाहता है, रसेल के अनुसार वह शायद नेपोलियन से स्पर्द्धा करेगा, किंतु नेपोलियन भी सीजर से स्पर्द्धा करता था और सीजर हरकुलिस से अर्थात् जिस व्यक्तित्व को मनुष्य स्वयं से ज्यादा प्रतिभावान्, शक्तिवान् या धनवान् समझता है; वह उससे प्रतिस्पर्द्धा करता है और इस स्पर्द्धा से ही उसका विकास होता है। इस प्रकार स्पर्द्धा अथवा प्रतिद्वंद्विता ईर्ष्या का ही एक रूप है और यह रूप निश्चय ही उपयोगी है।

लेखक का भाव यह है कि स्पर्द्धा की वह भावना, जो रचनात्मक प्रेरणा प्रदान करती है, मनुष्य के विकास में सहायक होती है इसलिए प्रशंसनीय है, किंतु जो स्पर्द्धा हृदय में किसी के प्रति जलन उत्पन्न करके उसकी निंदा की प्रेरणा देती है, वह उचित नहीं है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) 'ईर्ष्या का संबंध प्रतिद्वंद्विता से होता है' कथन का क्या आशय है?

उ०– इस कथन का आशय है कि प्रतिद्वंद्विता ही ईर्ष्या को जन्म देती है। व्यक्ति उसी व्यक्ति से ईर्ष्या करता है जिससे प्रतिद्वंद्विता करता है।

(स) गद्यांश के अनुसार मनुष्य का विकास किसके द्वारा होता है?

उ०– गद्यांश के अनुसार मनुष्य का विकास प्रतिद्वंद्विता के द्वारा होता है।

(द) सीजर किससे व सीजर से कौन स्पर्द्धा करता था?

उ०– सीजर सिकंदर से तथा नेपोलियन सीजर से प्रतिस्पर्द्धा करता था।

6. आपने यही देखा .... चुप कर सकता हूँ।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने सज्जन लोगों की बुरे लोगों द्वारा की जाने वाली निंदा के परिणामस्वरूप सज्जन लोगों की मनोस्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि हम अधिकांशत: देखते हैं कि जो लोग सज्जन होते हैं वे यह सोच-सोचकर परेशान होते रहते हैं कि दूसरा व्यक्ति ईर्ष्या क्यों करता हैं, मैंने तो उसका कुछ भी बुरा नहीं किया, फिर भी वह व्यक्ति हर समय चारों तरफ मेरे प्रति निंदा युक्त शब्द बोलता रहता है। वास्तव में मैंने तो हमेशा उसका भला ही चाहा है और उसकी भलाई के कार्य किए हैं।

वह सोचता है कि मेरा मन तो पवित्र है, मेरे मन में तो किसी भी व्यक्ति के लिए बुरी भावना नहीं है, मैं तो अपने दुश्मनों या विरोधियों की भी भलाई चाहता हूँ, फिर भी ये लोग जिनका मैंने भला किया वे मेरी निंदा क्यों करते रहते हैं? मेरे अंदर ऐसी कौन सी बुराई है, जिसको स्वयं से दूर करके मैं इन अपने प्रिय मित्रों को शांत कर सकता हूँ अर्थात् अपने किस दुर्गण को त्यागकर मैं अपने मित्रों द्वारा की जाने वाली निंदा से बच सकता हूँ।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) शरीफ लोग अपना सिर क्यों खुजलाते हैं?

उ०– शरीफ लोग अपना सिर यह सोच-सोचकर खुजलाते हैं कि हम जिसका अच्छा चाहते हैं वही हमारी निंदा क्यों करता है।

(स) पाक-साफ होने से क्या अभिप्राय है?

उ०– पाक-साफ होने से अभिप्राय मन के पवित्र होने से है अर्थात् मन में किसी के प्रति कोई दुर्भावना न होना।

7. ये मक्खियाँ हमें .... अपकार ही मिलेगा।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने महान लेखक नीत्से के विचार प्रकट किए हैं कि ईर्ष्यालु व्यक्ति मक्खियों के समान होते हैं जो हमारे चारों तरफ घूमते रहते हैं।

व्याख्या– लेखक दिनकर जी ने प्रस्तुत गद्यांश में महान लेखक नीत्से के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा है कि नीत्से के अनुसार ईर्ष्यालु व्यक्ति मक्खियों के समान होते हैं, जो हमारे अंदर विद्यमान सद्‌गुणों के कारण निंदा करके हमें दंड देते हैं अर्थात् वे हमारे अंदर की बुराइयों की तरफ न देखकर हमारे सद्‌गुणों के कारण हमारी निंदा करते हैं। ये व्यक्ति हमारी बुराइयों को तो क्षमा कर देते हैं क्योंकि संपन्न लोगों के अंदर विद्यमान बुराइयों को क्षमा करने में वे गर्व महसूस करते हैं और इसी गर्व की अनुभूति के लिए ये लोग लालायित रहते हैं।

परंतु जिन व्यक्तियों का चरित्र व गुण महान् तथा पवित्र और बड़ा होता है वे लोग इन लोगों की बातों पर ध्यान नहीं देते हैं और कहते हैं कि जो लोग दूसरों की निंदा करते हैं, वे स्वयं में इतने हीन होते हैं कि इनकी बातों पर गुस्सा (चिढ़) नहीं आना चाहिए।

परंतु इसके विपरीत जो व्यक्ति संकुचित हृदय व सोच वाले होते हैं, वे यह सोचते हैं कि समाज में जितने भी संपन्न लोग हैं उनकी निंदा करना ही उचित मार्ग है क्योंकि हम उनका कितना भी अच्छा करें, उनसे कितना भी प्रेम करें और उनके प्रति कितने ही उदार क्यों न हो जाएँ, तब भी वे यही समझते रहते हैं कि हम उनसे नफरत करते हैं। हम चाहे इन व्यक्तियों का कितना ही भला सोच लें और भला कर लें, उसके बदले में ये संपन्न लोग हमारा बुरा ही करेंगे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) गद्यांश में लेखक ने 'मक्खियाँ' किन्हें बताया है?

उ०– लेखक ने गद्यांश में ईर्ष्यालु व्यक्तियों को मक्खियाँ बताया है।

(स) उन्नत चरित्र वाले क्या कहते हैं?

उ०– उन्नत चरित्र वाले लोग कहते हैं कि जो लोग छोटे (हीन सोच वाले) होते हैं, वे ही ऐसी बातें (निंदा) करते हैं। इनकी बातों पर गुस्सा नहीं करना चाहिए।

(द) छोटे दिल वाले लोग क्या मानते हैं?

उ०– छोटे दिल वाले लोग मानते हैं कि हम बड़े लोगों का कितना भी उपकार, भलाई व प्रेम कर लें वे हमारा बुरा ही करेंगे।

8. सारे अनुभवों को .... भिनकती, वहाँ एकांत है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने नीत्से के विचार प्रस्तुत करते हुए कहा है कि व्यक्तियों के महान समझे जाने वाले गुणों के कारण ही लोग उनसे जलते हैं।

व्याख्या– लेखक कहते है कि महान् लेखक नीत्से ने अपने सारे अनुभवों को संगठित करके कहा है कि मनुष्य में विद्यमान जो गुण महान् समझे जाते हैं, उन्हीं गुणों के कारण लोग उनसे ईर्ष्या भी करते हैं अर्थात् गुणवान व्यक्ति भी अपने गुणों के कारण लोगों के द्वारा निंदित किए जाते हैं। समाज में लोग प्राय: दूसरों के धन, वैभव, यश आदि को देखकर जलते हैं। नीत्से ने ऐसे लोगों को मक्खियों की संज्ञा दी है और कहा है कि हमें ऐसे लोगों से दूर ही रहना चाहिए। ऐसे ईर्ष्यालु व्यक्तियों से बचने का एकमात्र उपाय यही है कि उनका साथ छोड़कर दूर एकांत में चले जाना चाहिए। जो व्यक्ति जीवन में कुछ करना चाहते हैं, उन्हें बाजार की मक्खियों के समान भिनभिनाने वाले व्यक्तियों से दूर रहना आवश्यक है। इन बाजारू मक्खियों के साथ रहकर कोई भी चिंतन-मनन का कार्य नहीं हो सकता। कोई भी महान् अथवा अमर कार्य बाजार में रहकर नहीं किया जा सकता। ऐसे बाजार के बीच यश और प्रसिद्धि के लालच में किया जाने वाला कार्य कभी महान् नहीं हो सकता।

जो लोग समाज के निर्माण और उत्थान के लिए नए-नए मूल्यों का निर्माण करते हैं, नए-नए सिद्धांतों की रचना करते हैं और मानव-जीवन को नवीन दिशा और चेतना प्रदान करते हैं, वे लोग भीड़-भरे बाजार में रहकर नहीं, बाजार से दूर एकांत में अपना कार्य करते हैं। उनके मन में मानव-कल्याण की भावना होती है, यश की कामना या लोभ नहीं। अंत में लेखक का मत है कि एकांत वहीं है, जहाँ बाजारू मक्खियाँ नहीं भिनभिनाती हैं। तात्पर्य यह है कि जहाँ पर किसी के यश और वैभव को देखकर जलने वाले और निंदा करने वाले लोग नहीं रहते, वहीं एकांत है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से **लेखक–** रामधारी सिंह 'दिनकर'

(ब) नीत्से ने दूसरे सूत्र में क्या कहा है?

उ०– नीत्से ने दूसरे सूत्र में कहा है कि व्यक्ति में विद्यमान जो गुण महान्, समझे जाते हैं, उन्हीं गुणों के कारण लोग उनसे ईर्ष्या भी करते हैं।

(स) ईर्ष्यालु लोगों से बचने का नीत्से ने क्या उपाय बताया है?

उ०– नीत्से ने ईर्ष्यालु लोगों से बचने का एकमात्र उपाय उनसे दूर रहना बताया है, अर्थात् व्यक्तियों को ऐसे स्थान में रहना चाहिए जहाँ ईर्ष्यालु लोग न पहुंच सकें।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रामधारी सिंह का जन्म बिहार में कहाँ हुआ था?

(अ) भागलपुर (ब) **मुंगेर**
(स) मोकामाघाट (द) इनमें से कोई नहीं

2. दिनकर जी का निधन हुआ–

(अ) 1962 में (ब) 1933 में
(स) **1974 में** (द) 1975 में

3. निम्न में से दिनकर जी की कृति है–

(अ) **रेती के फूल** (ब) पवित्रता
(स) कन्यादान (द) विचार-विमर्श

4. 'नीम के पत्ते' कृति के रचनाकार हैं–

(अ) रामवृक्ष बेनीपुरी (ब) **रामधारी सिंह 'दिनकर'**
(स) अज्ञेय (द) जयप्रकाश भारती

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए–

शब्द	**मूल शब्द**	**प्रत्यय**
मौलिक	मूल	इक
रचनात्मक	रचना	आत्मक
लाभदायक	लाभ	दायक
ईर्ष्यालु	ईर्ष्या	लु

2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्य प्रयोग करके अर्थ स्पष्ट कीजिए–

निंदा-निंदक – **निंदक** व्यक्ति दूसरे लोगों की **निंदा** इसलिए करते हैं, जिससे वह दूसरे लोगों की नजरों में गिर जाएं।

उद्यम-उद्यमी – **उद्यमी** व्यक्ति अपने **उद्यम** के द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति कर लेते हैं।

मूर्ति-मूर्त – मूर्तिकार अपनी कल्पना को अपनी **मूर्ति** में **मूर्त** रूप प्रदान करता है।

जिज्ञासा-जिज्ञास – अपनी **जिज्ञासा** को शांत करने के लिए **जिज्ञासु** इधर-उधर भटकता रहता है।

ईर्ष्या-ईर्ष्यालु – **ईर्ष्यालु** व्यक्ति **ईर्ष्या** के कारण ही लोगों की निंदा करते हैं।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

6. अजंता (डॉ.भगवतशरण उपाध्याय)

<u>अभ्यास</u>

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भगवतशरण उपाध्याय का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई. में बलिया जिले के उजियारपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. भगवतशरण ने एम.ए. कहाँ से किया?

उ०– भगवतशरण ने एम.ए. काशी हिंदू विश्वविद्यालय से किया।

3. भगवतशरण ने प्राध्यापक पद पर कार्य कहाँ किया था?

उ०– भगवतशरण ने प्राध्यापक पद पर कार्य 'बिड़ला महाविद्यालय' पिलानी में किया।

4. भगवतशरण ने साहित्य पर व्याख्यान कहाँ-कहाँ दिए?

उ०– भगवतशरण ने यूरोप, अमेरिका, चीन आदि देशों में साहित्य पर व्याख्यान दिए।

5. भगवतशरण के आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम बताइए।

उ०– भगवतशरण के आलोचनात्मक ग्रंथ— विश्व-साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, इतिहास के पन्नों पर, विश्व को एशिया की देन, मंदिर और भवन आदि हैं।

6. उपाध्याय जी की भाषा-शैली की विवेचना कीजिए।

उ०– उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध, परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया था। इन्होंने प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ आधुनिक यूरोपीय भाषाओं का भी गहन अध्ययन किया था। इन्होंने अपनी रचनाओं में लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग किया। उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में विषय के अनुसार शैलियों का प्रयोग किया। जिनमें विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, भावात्मक शैली प्रमुख थी।

7. उपाध्याय जी की ऐसी दो रचनाओं के नाम बताइए, जिनमें भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया हो।

उ०– उपाध्याय जी की 'मंदिर और भवन', 'ठूँठा आम' ऐसी दो रचनाएँ हैं जिनमें भावात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

8. भगवतशरण जी की मृत्यु कब हुई थी?

उ०– भगवतशरण जी की मृत्यु सन् 1982 ई. में देहरादून में हुई थी।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ. भगवतशरण उपाध्याय का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– डॉ. भगवतशरण उपाध्याय पुरातत्व कला के पंडित, भारतीय संस्कृति और इतिहास के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं प्रचारक तथा लेखक थे। उपाध्याय जी को अनेक भाषाओं का ज्ञान था। संस्कृत और हिंदी भाषा के साथ-साथ उपाध्याय जी का अंग्रेजी भाषा पर भी पूर्ण अधिकार था। इसी कारण हिंदी और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में इन्होंने सौ से भी अधिक कृतियों की रचना की है। अंग्रेजी में लिखी हुई इनकी पुस्तकें विदेशों में बड़ी रुचि के साथ पढ़ी जाती हैं।

जीवन परिचय व कार्यक्षेत्र– भगवतशरण उपाध्याय जी का जन्म सन् 1910 ई. में बलिया जिले के उजियापुर नामक ग्राम में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की। संस्कृत विषय में इनकी बचपन से ही अत्यधिक रुचि थी। प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात उपाध्याय जी काशी आ गए और यहीं पर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर प्राचीन इतिहास विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके पश्चात ये 'बिड़ला महाविद्यालय' पिलानी में प्राध्यापक पद पर कार्यरत रहे। उपाध्याय जी पुरातत्व विभाग, लखनऊ संग्रहालय तथा प्रयाग संग्रहालय में भी अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे। इसके उपरांत ये 'प्राचीन इतिहास विभाग' उज्जैन में अध्यक्ष व प्रोफेसर रहे। उपाध्याय जी ने अनेक बार यूरोप, अमेरिका, चीन आदि देशों की यात्राएँ की और वहाँ पर भारतीय संस्कृति और साहित्य पर महत्वपूर्ण भाषण दिए। इन्हें भारतीय संस्कृति से अत्यधिक प्रेम था किंतु ये रूढ़िवादिता एवं परंपरावादिता में विश्वास नहीं रखते थे। उपाध्याय जी मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त पद पर भी कार्यरत रहे और वहाँ से अवकाश ग्रहण कर ये देहरादून आकर वहीं निवास करने लगे तथा देहरादून में ही अगस्त 1982 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।

कृतियाँ– डॉ० भगवतशरण उपाध्याय जी ने मौलिक एवं स्वतंत्र विचारक के रूप में सम्मान प्राप्त किया तथा साहित्य, कला, संस्कृति आदि विभिन्न विषयों पर सौ से भी अधिक पुस्तकों की रचना की। पुरातत्व, आलोचना, संस्मरण एवं रेखाचित्र तथा यात्रा-साहित्य आदि विषयों पर उपाध्याय जी ने प्रचुर साहित्य की रचना की है। विवेचना एवं तुलना करने की विलक्षण योग्यता के आधार पर इन्होंने भारतीय साहित्य, कला एवं संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं को संपूर्ण विश्व के सामने स्पष्ट कर दिया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) आलोचनात्मक ग्रंथ– विश्व-साहित्य की रूपरेखा, साहित्य और कला, इतिहास के पन्नों पर, विश्व को एशिया की देन, मंदिर और भवन

(ब) यात्रा-साहित्य– कलकत्ता से पीकिंग

(स) अन्य ग्रंथ– ठूँठा आम, सागर की लहरों पर, कुछ फीचर, कुछ एकांकी, इतिहास साक्षी है, इंडिया इन कालिदास

2. उपाध्याय जी की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– **भाषा-शैली–** पुरातत्व एवं प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ उपाध्याय जी ने आधुनिक यूरोपीय भाषाओं का भी गहन

अध्ययन किया। इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध,परिष्कृत और परिमार्जित साहित्यिक भाषा का प्रयोग किया है।

इनकी रचनाओं में प्रत्येक स्थान पर भाषा में प्रवाह और बोधगम्यता के साथ-साथ गंभीर चिंतन और विवेचना की गहराई भी प्रमाणित होती है। अपनी रचनाओं में कई स्थानों पर लोकोक्तियों, मुहावरों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग कर उन्होंने भाषा को सरस, सरल एवं व्यावहारिक रूप प्रदान किया है।

उपाध्याय जी ने अपनी रचनाओं में विषय के अनुसार भिन्न-भिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। ये एक सशक्त शैलीकार, समर्थ आलोचक और पुरातत्व के आचार्य के रूप में विख्यात हैं। इनकी रचनाओं में मुख्यत: निम्नलिखित शैलियों के दर्शन होते हैं—

विवेचनात्मक शैली– उपाध्याय जी ने अपने ग्रंथों एवं निबंधों में विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'साहित्य और कला', 'विश्व-साहित्य की रूपरेखा' आदि ग्रंथों में विवेचनात्मक शैली का मुख्य रूप से प्रयोग किया गया है। इस शैली में उपाध्याय जी की सूक्ष्म विवेचनात्मक प्रतिभा के दर्शन होते हैं।

वर्णनात्मक शैली– उपाध्याय जी ने यात्राओं पर आधारित साहित्य का सजीव वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। विभिन्न स्थलों एवं गतिमान दृश्यों के वर्णन में इस शैली की प्रधानता प्रकट होती है। इनकी वर्णनात्मक शैली की उत्कृष्ट सजीवता का कारण इसका वर्णनात्मक होने के साथ-साथ भावात्मक होना भी है। अपने यात्रा-संस्मरणों का सजीव चित्रण इन्होंने इसी शैली के माध्यम से किया है।

भावात्मक शैली– उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति को अपनी सभी रचनाओं में सर्वोच्च कोटि की संस्कृति के रूप में दर्शाया है और इसके लिए उन्होंने भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। 'मंदिर और भवन', 'ठूँठा आम', 'सागर की लहरों पर' आदि रचनाओं में भावात्मक शैली को प्रधानता दी गई है।

3. 'अजंता' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'अजंता' भगवतशरण उपाध्याय जी का पुरातत्व संबंधी लेख है, जिसमें लेखक ने अजंता की गुफाओं की चित्रकारी और शिल्प के इतिहास एवं सौंदर्य का ही वर्णन नहीं किया है, वरन् दर्शक के मन पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को भी अपनी मनोरम शैली में साकार कर दिया है।

अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से मुक्त करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। अपनी खूबियों को भावी पीढ़ी को बताने के लिए उसने अनेक उपाय सोचे और उन्हें मूर्त रूप प्रदान किया। मनुष्य ने चट्टानों और पर्वतों पर ऐसे उपाय छोड़े जो आज हमारी अमानत-विरासत बन गए हैं। मनुष्य ने इनमें से एक उपाय पर्वतों को काटकर मंदिरों के निर्माण का किया और उनकी दीवारों पर चित्र बनाए।

भारत में लगभग सवा दो हजार साल पहले पहाड़ काटकर मंदिर बनाने की प्रथा चल पड़ी थी। अजंता की गुफाएँ भी उसी का एक प्रारूप है। जैसे-एलोरा व एलीफेंटा की गुफाएँ। अजंता की गुफाएँ सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। चीन और लंका में भी यहाँ के चित्रों की नकल की गई है। वाघ और सित्तनवसल की गुफाओं में भी अजंता की गुफाओं की भाँति दीवारों पर प्रेम व दया की दुनिया ही बसा दी गई है।

अजंता की गुफाओं को देखकर ऐसी अनुभूति होती है कि पत्थरों को काटकर मूर्ति बनाने वाले कलाकारों ने इन गुफाओं में चारों तरफ सौंदर्य की वर्षा कर दी हो। बंबई प्रांत में बंबई (आधुनिक मुंबई) और हैदराबाद के बीच विंध्याचल की श्रेणियाँ पूर्व से पश्चिम में फैली हैं। यहीं नीचे से पर्वतों की श्रृंखला उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई है, जिसे सह्याद्रि की पहाड़ियाँ कहते हैं, यहीं पर अजंता की गुफाएँ स्थित हैं। अजंता गाँव से थोड़ी दूर पर ही बाधुर नदी बहती है जो पहाड़ों के पैरों में साँप के समान प्रतीत होती है। इस स्थान पर पर्वत सीधी रेखा छोड़कर अर्द्धचंद्राकार से हो गए हैं। यहाँ की अद्भुत सौंदर्य हमारे पूर्वजों को इतना प्रिय लगा कि उन्होंने इसे खोदकर यहाँ महल व भवनों को बना दिया। उन्होंने पहाड़ काटकर उसे खोखला किया और सुंदर भवन बनाए, जहाँ के खंभों पर उकेरी गई मूर्तियाँ हँस उठी हैं। उन्होंने दीवारों व छतों पर चित्रों की एक दुनिया ही बसा दी। इनकी दीवारों पर मानो साक्षात् जीवन बरस गया है, जैसे किसी ने अजायबघर के भंडार को खोल दिया हो। यहाँ बंदरों, हाथियों, हिरनों की कहानी, दया व क्रूरता की कहानी, उकेरी गई हैं। जहाँ एक तरफ पाप को दर्शाया गया है वहीं दूसरी तरफ प्रेम का स्रोत भी प्रवाहित है। राजा और भिखारी, भोगी और योगी, नर-नारी आदि सभी कलाकारों के द्वारा चित्रित किए गए हैं। यहाँ बुद्ध के जन्म से लेकर उनके निर्वाण तक की घटनाएँ ऐसी चित्रित की गई हैं कि आँखें उन्हीं पर अटक जाती हैं।

एक तरफ हाथ में कमल लिए बुद्ध हैं, तो दूसरी तरफ कमलनाल लिए यशोधरा त्रिभंग अवस्था में खड़ी हैं। दूसरा दृश्य बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का है जब बुद्ध यशोधरा व राहुल को सोते हुए छोड़कर चले गए थे। एक दृश्य में यशोधरा बालक राहुल के साथ है, बुद्ध भिक्षुक के रूप में आते हैं और भिक्षापात्र देहली पर रख देते हैं और यशोधरा अपने एकमात्र लाल राहुल को बुद्ध को दे डालती है।

एक तरफ बंदरों का चित्र है। दूसरी तरफ सरोवर में क्रीड़ा करता हुआ हाथी कमलदंड तोड़कर हथिनियों को दे रहा है। एक तरफ राजा व मंत्री मदिरापान करते हुए चित्रित हैं तो दूसरी ओर क्षुब्ध रानी आत्महत्या करके अपने प्राण त्यागते हुए चित्रित है। अजंता में बुद्ध के इस जन्म के अतिरिक्त पिछले जन्मों की कथाएँ भी चित्रित हैं, जिन्हें जातक कहते हैं। इनकी संख्या 555 है। जो बौद्धों में बहुत लोकप्रिय है।

इन गुफाओं का निर्माण ईसा से करीब दो हजार साल पहले शुरु हुआ और ये सातवीं सदी तक तैयार हुईं। कुछ गुफाओं में यहाँ पर दो हजार साल पुराने चित्र सुरक्षित हैं। परंतु अधिकतर चित्र गुप्तकाल व चालुक्य काल के मध्य निर्मित हुए। अजंता के चित्रों का संसार की चित्रकलाओं में विशेष स्थान है। यहाँ के चित्रों ने देश-विदेशों की चित्रकला को प्रभावित किया, जिसका प्रभाव पूर्व के देशों पर तो पड़ा ही मध्य-पश्चिमी एशिया भी इससे लाभान्वित हुआ।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. जिंदगी को मौत के .... विरासत बन गई है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्यखंड' के 'भगवतशरण उपाध्याय' द्वारा रचित 'अजंता' नामक पुरातत्व लेख से उद्धृत है।

प्रसंग– लेखक उपाध्याय जी ने अजंता की गुफाओं के निर्माण का कारण बताते हुए कहा है कि मनुष्य अपने जीवन को भयमुक्त करके उसे अमर बना देने का प्रयास करता रहा है। जिससे वह अपनी भावी पीढ़ियों को अपनी विशेषता की कहानी बता सकें।

व्याख्या– अपने जीवन को मृत्यु के चंगुल से स्वतंत्र करके उसे अमर बना देने की कामना मनुष्य अनादिकाल से करता चला आ रहा है। वह केवल कामना ही करता नहीं आ रहा है, वरन् इसके लिए निरंतर अथक प्रयास भी करता रहा है। वह अपने शरीर को तो अमर न बना सका, किंतु अपने जीवन के अविस्मरणीय पलों को अमर बनाने में अवश्य सफल रहा है। इसके लिए उसने पर्वत की गुफाओं को काटकर अपने जीवन के उन पलों को उनमें उकेरकर उन्हें सदैव के लिए अमर कर दिया। इसके अतिरिक्त भी मनुष्य ने अपनी विशेषताओं की कहानी से सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों का परिचय कराने के लिए अनेक उपाय सोचे और उनको मूर्त रूप भी प्रदान किया। इन्हीं उपायों के रूप में उसने बड़ी-बड़ी कठोर चट्टानों पर अपने संदेश खोदे, ताड़ों के समान ऊँचे और धातुओं के जैसे चिकने पत्थरों के खंभे उसने यहाँ-वहाँ खड़े किए, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अत्यधिक सुंदर अक्षरों में अपने उपदेश और संदेश लिखकर उन्हें अनेक स्थानों पर स्थापित किया। इस प्रकार इन उपायों के माध्यम से मानव के जीवन-मरण की कहानी अनादिकाल से आज सदियों बाद भी उसी रूप में हमारे सामने प्रकट होती चली आ रही है। मानव की यह कहानी और उसके उद्घाटन के ये सभी उपकरण अथवा साधन आज हमारी अमूल्य धरोहर बन गए हैं। हमें इस पर गर्व भी है और अपने गौरव का अभिमान भी।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक क नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) आदमी ने पहाड़ क्यों काटा है?

उ०– आदमी ने जिंदगी को मौत के पंजे से मुक्त कर उसे अमर बनाने के लिए पहाड़ काटा।

(स) आज हमारी विरासत कौन-सी वस्तु बन गई है?

उ०– सदियों पहले आदमी द्वारा चट्टानों पर खोदे गए संदेश, ताड़ों से ऊंचे और धातुओं से चिकने खड़े किए गए चिकने पत्थर के खंभे, ताँबे और पीतल के पत्तरों पर अक्षरों के बिखेरे गए मोती आज हमारी विरासत बन गए हैं।

(द) अजंता की गुफाओं के निर्माण का क्या उद्देश्य रहा है?

उ०– मनुष्य की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण बनाकर उसका ज्ञान सदियों बाद आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से अजंता की गुफाओं का निर्माण किया गया।

2. वाघ और सित्तनवसल .... जंजीर को सनाथ करते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– लेखक ने यहाँ वाघ और सित्तनवसल की गुफाओं का वर्णन करके उन्हें अजंता की गुफाओं के समकक्ष बताया है और इन गुफाओं की सुंदरता का अनुपम वर्णन किया हैं।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ भी अजंता की गुफाओं के समकक्ष की परंपरा की हैं, जिनमें कलाकारों ने प्रेम व दया के सभी रंग भर दिए हैं। अजंता की गुफाओं को देखकर ऐसा लगता है जैसे पत्थर को सजीव बनाने वाले कलाकारों ने यहाँ सौन्दर्य की वर्षा कर दी हो। पत्थर को तराशने वाले कलाकारों ने अपनी छेनी और हथौड़ी से पत्थर में प्राण फूँक दिए हैं, पत्थरों को सजीव बना दिया है। चित्रकारों ने अपनी तूलिका के रंगों से सारी पीड़ा और दया के भाव को साकार करने वाले चित्र अंकित कर दिए हैं। मानव की कला यहाँ सजीव हो उठी है। इस सजीव कला में प्रकृति ने अपना भरपूर योग दिया है, जिससे अजंता के दृश्य बहुत ही मनोरम प्रतीत होते हैं। यहाँ ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति उल्लसित हो नृत्य कर रही हो। बंबई और हैदराबाद के मध्य विंध्याचल की श्रेणियाँ पूर्व से पश्चिम की ओर फैली हुई हैं। यहीं नीचे से पर्वतों की एक श्रृंखला उत्तर से दक्षिण की ओर भी फैली हुई है, जो सह्याद्रि की पहाड़ियों के नाम से जानी जाती है। सह्याद्रि की श्रृंखला में ही अजंता की गुफाएँ स्थित हैं। इन्हीं गुफाओं में विश्वविख्यात अजंता के सुंदर मंदिर हैं। पर्वत की सूनी-सूनी श्रेणियों के मध्य अजंता की ये गुफाएँ इतनी सुंदर प्रतीत होती हैं, मानो यह पर्वत-शृंखला इन गुफाओं में मंदिरों को पाकर सनाथ हो गई हैं। इन गुफाओं का यह सौभाग्य है कि यहाँ इतने सुंदर सुंदर मंदिर बने हैं, जो अपने सौंदर्य से सबका मन मोह लेते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपयुर्क्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) कौन-सी गुफाएँ अजंता की परंपरा में हैं, जिनकी दीवारों पर प्रेम और दया की दुनिया सिरज गई है?

उ०– वाघ और सित्तनवसल की गुफाएँ अजंता की परंपरा में हैं, जिनकी दीवारों पर प्रेम और दया की दुनिया सिरज गई है।

(स) अजंता की मूर्तिकला की विशेषता गद्यांश के आधार पर बताइए।

उ०– अजंता की मूर्तिकला अत्यंत जीवंत है। मूर्तिकारों ने उन मूर्तियों में एक-एक रेखा को इस प्रकार उकेरा है, उनमें इस प्रकार रंगों का प्रयोग किया गया है कि दु:ख, दर्द और दया के भाव उनमे ंउजागर हो गए हैं। मूर्तियों के आकार और उभार भी अत्यधिक सुंदर हैं।

(द) सह्याद्रि किसे कहते हैं?

उ०– बंबई प्रदेश में बंबई और हैदराबाद के मध्य में विंध्याचल की पूर्व-पश्चिम की ओर जाती हुई पर्वत श्रेणियों के नीचे से एक श्रृंखला उत्तर से दक्षिण की ओर जाती है। इस पर्वत श्रृंखला को ही सह्याद्रि कहते हैं।

(य) अजंता की गुफाएँ कहाँ स्थित है?

उ०– अजंता की गुफाएँ बंबई और हैदराबाद के बीच स्थित सह्याद्रि पर्वत श्रृंखला में स्थित है।

3. पहले पहाड़ काटकर .... पहाड़ पुलकित हो उठे।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– उपाध्याय जी ने यहाँ पर अजंता की गुफाओं के निर्माण के विषय में बताया है कि कलाकारों ने उन्हें कैसे मूर्त रूप दिया।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि अजंता की गुफाओं के निर्माण के लिए पहले पहाड़ों को काटा गया फिर उन्हें खोखला किया गया, फिर उनमें इतने सुंदर भवनों का निर्माण किया गया कि उन भवनों के खंभों पर जो मूर्ति बनाई गई थी, वह भी हँसती हुई प्रतीत होती हैं। भवनों के अंदर की सारी दीवारों और छतों को रगड़-रगड़कर अत्यधिक चिकना बना दिया गया। तत्पश्चात् उस चिकनी पृष्ठभूमि पर चित्रकारों के द्वारा अनेकानेक चित्र बना दिए गए, जिनको देखकर ऐसा लगता है कि चित्रों की एक नई दुनिया ही निर्मित कर दी गई हो। लेखक कहते हैं कि गुफा की भीतरी दीवारों व छतों पर चित्रकारों के द्वारा पलस्तर लगाकर विभिन्न चित्रों को बाहरी रेखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया गया और उसके बाद उनके शिष्यों ने उन चित्रों को रँगकर ऐसा बना दिया कि वे सजीव लगने लगे। इन सजीव चित्रों के द्वारा दीवारें उल्लसित हो गईं और पहाड़ गद्गद् हो उठे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) पहाड़ के अंदर चित्र कैसे बनाए गए हैं?

उ०– पहाड़ों को काटकर व खोखला करके उनमें भवन बनाकर उनकी दीवारों पर चित्र बनाए गए हैं।

(स) सुंदर भवन का निर्माण किस प्रकार किया गया है?

उ०– पहाड़ों को काटकर व खोखला करके उनमें सुंदर भवनों का निर्माण किया गया है।

(द) भवन की भीतर की दीवारों पर क्या किया गया?

उ०– भवन की भीतर की दीवारों को रगड़-रगड़कर चिकना करके उन पर चित्रों की एक नई दुनिया निर्मित कर दी गई।

4. यह हाथ में कमल .... बुद्ध को दे डालती है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अजंता की गुफाओं में कलाकारों द्वारा चित्रित किए गए गौतम बुद्ध के जीवन से संबंधित चित्रों का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि हाथ में कमल लिए बुद्ध खड़े हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे उनका रूप सौंदर्य छलककर सर्वत्र बिखर रहा हो और उनके उभरे हुए आकर्षक नेत्रों से चारों ओर प्रकाश विस्तीर्ण हो रहा हो। यशोधरा भी वैसे ही कमल-नाल को लिए त्रिभंग मे ंखड़ी है। यह चित्र अत्यंत संजीव प्रतीत होता है। लेखक ने एक अन्य चित्र की कलात्मकता का वर्णन करते हुए कहा है कि बुद्ध महाभिनिष्क्रमण पर जाते हुए दिखाई दे रहे हैं। यशोधरा एवं राहुल निद्रा में निमग्न हैं। बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण का यह चित्र ऐसा सजीव है, मानो बुद्ध पत्नी एवं पुत्र को त्यागकर जाते समय अपने हृदय की भावनाओं पर नियंत्रण प्राप्त कर रहे हैं।

लेखक भगवान बुद्ध के गृह त्याग के पश्चात, भिक्षा माँगने के एक चित्र का वर्णन करते हुए कहते हैं कि एक चित्र में गौतम बुद्ध के साथ उनका भाई नंद है, जिसे उसकी पत्नी सुंदरी ने गौतम बुद्ध के पास भिक्षा के लिए वापस लौटा लाने के लिए भेजा था। सुंदरी ने भिक्षा माँगने आए बुद्ध को बिना भिक्षा दिए द्वार से ही वापस लौटा दिया था। लेकिन नंद बुद्ध को वापस तो नहीं लौटा पाता वरन् उनके उपदेशों से प्रभावित होकर स्वयं भिक्षु बन जाता है। जहाँ से वह भागने की भी कोशिश करता है परंतु बार-बार पकड़कर संघ में लौटा लिया जाता है। लेखक ने दूसरे दृश्य का भी वर्णन किया है, जिसमें यशोधरा अपने पुत्र राहुल के साथ है। जहाँ बुद्ध यशोधरा के पास आए हैं, परंतु पति के रुप में नहीं भिक्षुक के रूप में और अपना भिक्षा का पात्र दरवाजे की देहली पर रख देते हैं। तब यशोधरा की विचित्र मनोस्थिति का वर्णन किया गया है कि उसका पति भिखारी के रूप मे ंउसके पास आया है, पर वह सोचती है कि वह उसे क्या दे, उसके पास तो बुद्ध को देने के लिए कुछ भी नहीं है। उसके जीवन का सौंदर्य व उसके जीवन का बहुमूल्य रत्न सिद्धार्थ तो खो ही गया है। संसार की सभी बहुमूल्य वस्तु तो उस संसार के कल्याणकर्ता के लिए मिट्टी के समान हैं। परंतु अचानक वह अपने जीवन की एकमात्र आशा अपने लाल (पुत्र) राहुल को बुद्ध को भिक्षा के रूप में दे देती है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) अजंता की गुफा में बनाए गए बुद्ध व यशोधरा के चित्रों की स्थिति को बताइए।

उ०– बुद्ध कमल को हाथ में लिए खड़े हैं तथा यशोधरा कमल-नाल धारण किए त्रिभंग अवस्था में खड़ी है।

(स) महाभिनिष्क्रमण का क्या अर्थ है?

उ०– संसार से वैराग्य होने पर शांति की खोज जैसे महान उद्देश्य के लिए गौतम बुद्ध द्वारा अपनी पत्नी, पुत्र, परिवार और राज्य को त्यागकर निष्क्रमण कर जाने की क्रिया को महाभिनिष्क्रमण कहते हैं।

(द) यशोधरा बुद्ध को कुछ भी देने में संकोच क्यों कर रही थी?

उ०– यशोधरा इसलिए संकोच कर रही थी क्योंकि उसके पास बुद्ध को देने के लिए कुछ भी नहीं है और संसार की बहुमूल्य वस्तुएं तो बुद्ध के लिए मिट्टी के समान हैं।

(य) प्रस्तुत गद्यांश का सारांश लिखिए।

उ०– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने बुद्ध के विभिन्न दृश्यों का वर्णन किया है जो अजंता की गुफाओं की दीवारों पर अलंकृत है, जिनमें बुद्ध को कमल व यशोधरा को कमल-नाल पकड़े दर्शाया गया है। दूसरे दृश्य में बुद्ध को अपने भाई के साथ दिखाया गया है जो बुद्ध को वापस लौटाने के लिए जाता है परंतु स्वयं भी वापस नहीं लौटता। एक अन्य दृश्य में यशोधरा को राहुल के साथ दिखाया गया है जब बुद्ध यशोधरा के पास भिक्षुक बनकर भिक्षा लेने आती है तथा यशोधरा अपने पुत्र राहुल को उन्हें भिक्षा के रूप में दे देती है।

5. और उधर वह बंदरों .... बौद्धों में बड़ा मान है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने अजंता की गुफाओं पर चित्रकारों द्वारा उकेरे गए विभिन्न चित्रों का वर्णन किया हैं जिनमें बुद्ध के पिछले जन्मों की कथाएँ भी सम्मिलित हैं।

व्याख्या– अजंता की गुफा में उसकी दीवारों पर लयबद्ध चित्रकारी की गई हैं, उन चित्रों में विविधता, सजीवता और गतिशीलता सर्वत्र दिखाई देती है। उसमें यदि एक ओर बंदरों के चित्र हैं तो लगता है कि वे चित्र नहीं हैं, बल्कि जीवित बंदर ही वहाँ बैठे हैं। उनमें स्वाभाविकता और गतिशीलता इतनी है कि मानो वे अभी उछल पड़ेंगे। उधर जलाशय में जल क्रीड़ा करता हाथी कमल-नाल से कमल को तोड़कर अपने आस-पास की हथिनियों को दे रहा है। यह चित्र भी इतना स्वाभाविक और गतिमान है कि वह दृश्य आँखों के सामने साकार हो जाता है। वहीं गुफा के एक चित्र में राजमहल में राजा और मंत्रिगण मदिरापान कर रहे हैं तो उसी चित्र में दूसरी ओर रानी उस मदिरापान से क्षुब्ध होकर आत्महत्या करके अपना जीवन समाप्त कर रही है। बस, उसके प्राण निकलने ही वाले हैं। इस प्रकार हमारे आम जीवन में खाना-खिलाने, कहीं बसने अथवा किसी को बसाने, नाचने-गाने आदि मनोरंजन, कहने-सुनने के साधारण से आपसी विवाद, वन-नगर ऊँच नीच के भेदभाव और धनी-निर्धन के जीवन से संबंधित जितने दृश्य हो सकते हैं, उन सभी का स्वाभाविक तथा सजीव चित्रण अंजता के गुफा-चित्रों में हुआ है। आज कोई भी व्यक्ति उन चित्रों को जाकर देख सकता है। अजंता की गुफाओं में गौतम बुद्ध के वर्तमान जीवन की घटनाएँ तो चित्रित हैं ही वहाँ उनके पूर्व के जन्मों की कथाएँ भी चित्रित हैं, पिछले जन्मों की इन कथाओं को 'जातक' के नाम से पुकारा जाता है, जिनकी संख्या 555 है और इनका संग्रह भी 'जातक' के नाम से प्रसिद्ध है जिसे बौद्ध धर्म के अनुयायी सम्मान की दुष्टि से देखते हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) किसके चित्र को सजीव व गतिमान बताया गया है?

उ०– बंदरों के चित्र को सजीव व गतिमान बताया गया है।

(स) 'महलों में प्यालों के दौर चल रहे हैं, उधर वह रानी अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर रही है।' कथन का आशय लिखिए।

उ०– इस कथन का तात्पर्य है कि अजंता की दीवारों पर अलंकृत दृश्यों में एक ओर राजा व मंत्रीगण मदिरापान कर रहे हैं तथा दूसरी ओर मदिरापान से दु:खी रानी आत्महत्या करके अपनी जीवन की यात्रा को समाप्त कर रही है।

(द) जातक कथा किसे कहते हैं? इनकी संख्या भी बताइए।

उ०– गौतम बुद्ध पूर्व (पहले) के जन्मों की कथाओं को जातक कथा कहते हैं। ये संख्या में 555 हैं।

6. इन पिछले जन्मों में .... संभालने लग जाते हैं।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस गद्यांश में लेखक ने बुद्ध के पिछले जन्मों की योनियों का उल्लेख किया है और पशुओं के व्यवहार के बारे में बताया है।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि बुद्ध के अनेक योनियों में जन्म लेने की कथा 'जातक' नामक ग्रंथ में वर्णित है। इन जन्मों में बुद्ध ने हाथी, बंदर, हिरन आदि पशुओं के रूप में विभिन्न योनियों में पृथ्वी पर जन्म लिया और संसार के कल्याण हेतु दया व त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया। जिसमें वे स्वयं बलिदान हो गए थे। उस समय विद्यमान अन्य जानवरों ने भी ऐसा

व्यवहार किया था, जो कि मनुष्य के लिए उचित हो। उन सभी ने किस प्रकार औचित्य अथवा उपयुक्तता का निर्वाह किया था यह सब कुछ अजंता के चित्रों में भली-भाँति चित्रित किया गया है। इन दृश्यों के चित्रांकन के समय कलाकारों ने अपने ज्ञान को विस्तार से प्रकट कर दिया है। जिसके कारण गाँव व नगरों, महलों व झोपड़ियों, समुद्रों व पनघटों का एक संसार ही अजंता के पहाड़ों के जंगल में बस गया है। यहाँ की चित्रकारी इतनी अद्भुत सुंदरता के साथ बनाई गई है कि देखते ही बनता है। हाथियों के समूह के रूप में, घोड़े आदि दूसरे जानवर भी ऐसे लगते हैं जैसे किसी जादूगर द्वारा अपना काम समझाने के बाद वे सभी पशु अपने कार्य का निर्वाह कर रहे हैं।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** अजंता **लेखक–** भगवतशरण उपाध्याय

(ब) पिछले जन्म में बुद्ध ने किन-किन योनियों में जन्म लिया था?

उ०– पिछले जन्म में बुद्ध ने हाथी, बंदर, हिरन आदि के रूप में विविध योनियों में जन्म लिया था।

(स) चितेरों ने अपनी जानकारी की गाँठ किस प्रकार खोल दी है?

उ०– चितेरों ने दृश्यों को असाधारण खूबी से दर्शाने के लिए अपनी जानकारी की गाँठ खोल दी है।

(द) अजंता के पहाड़ी जंगल में किनका संसार उतर पड़ा है?

उ०– अजंता के पहाड़ी जंगल में नगरों और गाँवों, महलों और झोपड़ियों, समुद्रों और पनघटों का संसार उतर पड़ा है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. उपाध्याय जी ने निम्न में से कौन-से विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया?

(अ) सिंचाई विभाग (ब) बिजली विभाग
(स) शिक्षा विभाग (द) **पुरातत्व विभाग**

2. निम्न में से भगवतशरण उपाध्याय की रचना कौन-सी है?

(अ) उर्वशी (ब) कामायनी
(स) **सागर की लहरों पर** (द) सरोज-स्मृति

3. भगवतशरण की शिक्षा कहाँ तक हुई?

(अ) इंटरमीडिएट (ब) बी.ए.
(स) **एम.ए.** (द) बी.एड.

4. 'अजंता' पाठ किससे संबंधित लेख है?

(अ) **पुरातत्व संबंधी** (ब) प्रागैतिहासिक
(स) ऐतिहासिक (द) राजनैतिक

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

तत्सम	**तद्भव**
प्राचीन	पुराना
अभिराम	खूबसूरत
प्रेम	प्यार
कलावंत	कलाबाज
गुहा	गुफा
अर्द्धचंद्राकार	आधे चाँद वाला
विहँस	खुश
भिक्षु	भिखारी
निर्वाण	छुटकारा, मौन
अद्वितीय	अनोखा

2. **निम्नलिखित शब्दों से प्रत्यय अलग कीजिए–**

शब्द	**प्रत्यय**
अमानत	त
अभिराम	आम
विरासत	त
पहाड़ी	ई
इंसानियत	इयत
विलासी	ई
बलिदान	दान

3. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए–**

शब्द	**उपसर्ग**
विदेश	वि
अभिराम	अभि
अद्वितीय	अ
सनाथ	स
विहँस	वि
बेरहमी	बे

4. **निम्नलिखित सामासिक पदों में विग्रह करते हुए समास का नाम बताइए–**

समस्त पदस	**मास-विग्रह**	**समास का नाम**
जीवन-मरण	जीवन और मरण	द्वंद्व समास
कमलनाल	कमल की नाल	संबंध तत्पुरुष समास
भिक्षापात्र	भिक्षा का पात्र	संबंध तत्पुरुष समास
जगत्राता	जग को तारने वाला	बहुब्रीहि समास
जीवन-यात्रा	जीवन की यात्रा	संबंध तत्पुरुष समास
नर-नारी	नर और नारी	द्वंद्व समास

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

7. पानी में चंदा और चाँद पर आदमी (जयप्रकाश भारती)

अभ्यास

(क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जयप्रकाश भारती का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– जयप्रकाश भारती का जन्म 2 जनवरी, सन् 1936 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जनपद में हुआ था।

2. जयप्रकाश भारती के पिता का नाम व व्यवसाय बताइए।

उ०– जयप्रकाश भारती के पिता श्री रघुनाथ सहाय थे, वे मेरठ के प्रसिद्ध एडवोकेट थे।

3. भारती जी ने बी.एससी. कहाँ से उत्तीर्ण की?

उ०– भारती जी ने बी.एससी. मेरठ शहर से उत्तीर्ण की।

4. भारती जी ने लेखन का प्रशिक्षण कहाँ से प्राप्त किया?

उ०– भारती जी ने साक्षरता निकेतन (लखनऊ) में नवसाक्षर साहित्य लेखन का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

5. भारती जी की भाषा-शैली किस प्रकार की है?

उ०– भारती जी ने अपनी सभी रचनाओं में सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने सरल साहित्यिक हिंदी को महत्व

दिया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में विषय के अनुरूप अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। इनकी प्रमुख शैलियाँ निम्नलिखित हैं—

(अ) वर्णनात्मक शैली (ब) चित्रात्मक शैली (स) भावात्मक शैली

6. भारती जी की प्रमुख कृतियों के नाम बताइए।

उ०– भारती जी की प्रमुख रचनाएँ हैं— हिमालय की पुकार, अनंत आकाश, अथाह सागर, विज्ञान की विभूतियाँ, देश हमारा-देश हमारा, चले चाँद पर चले, सरदार भगत सिंह, बर्फ की गुड़िया, भारत का संविधान, दुनिया रंग बिरंगी आदि।

7. भारती जी का निधन कब और कहाँ पर हुआ था?

उ०– भारती जी का निधन 5 फरवरी, सन् 2005 में मेरठ में हुआ था।

(ख) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. जयप्रकाश भारती का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– लेखन एवं पत्रकारिता दोनों ही क्षेत्रों में जयप्रकाश भारती जी ने अत्यधिक ख्याति अर्जित की है। इनके द्वारा संपादित पत्रिका 'नंदन' बाल-वर्ग में वर्तमान समय में भी अत्यधिक लोकप्रिय है। बाल-साहित्य एवं साहित्यिक भाषा में वैज्ञानिक विषयों पर लेखन-कार्य करने में ये निपुण रहे हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में अत्यधिक सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग करके अत्यधिक गंभीर विषय को भी पाठकों के अनुरूप व रुचिप्रद बना दिया है। जिस कारण ये अपनी रचनाओं के माध्यम से आज भी पाठकों के हृदय में निवास करते हैं।

जीवन परिचय– लोकप्रिय लेखक एवं संपादक जयप्रकाश भारती का जन्म 2 जनवरी, सन् 1936 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ जनपद में हुआ था। इनके पिता श्री रघुनाथ सहाय मेरठ के एक प्रसिद्ध एडवोकेट थे। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा मेरठ से ही प्राप्त की। छात्र जीवन में ही इन्होंने अपने पिता को अनेक सामाजिक-कार्य करते हुए देखा। जिस कारण इन पर अपने पिता का अत्यधिक प्रभाव पड़ा, परिणामस्वरूप भारती जी ने समाजसेवी संस्थाओं में प्रमुख रूप से भाग लेना प्रारंभ कर दिया। इसके साथ ही इन्होंने बी.एससी. की परीक्षा मेरठ शहर से ही उत्तीर्ण की। इन्होंने अनेक सामाजिक कार्य; जैसे- साक्षरता का प्रसार आदि में भी उल्लेखनीय योगदान दिया तथा अनेक वर्षों तक मेरठ में 'नि:शुल्क प्रौढ़ रात्रि पाठशाला' का संचालन किया। हिंदी-साहित्य की सेवा करते हुए 5 फरवरी, सन् 2005 में मेरठ में इनका देहावसान हो गया। जयप्रकाश भारती जी को उनकी अधिकांश रचिनाओं के लिए यूनेस्को और भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

साहित्यिक परिचय– जयप्रकाश भारती जी ने साहित्य के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया है। संपादन के क्षेत्र में इन्हें 'संपादन-कला-विशारद' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इसके पश्चात् इन्होंने मेरठ से प्रकाशित 'दैनिक प्रभात' तथा दिल्ली से प्रकाशित 'नवभारत टाइम्स' में पत्रकारिता का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। पत्रकारिता का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ये कई वर्षों तक दिल्ली से प्रकाशित 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के सह-संपादक के पद पर कार्यरत रहे। इसके पश्चात इन्होंने 31 वर्षों तक सुप्रसिद्ध बाल-पत्रिका 'नंदन' (हिंदुस्तान टाइम्स समूह द्वारा संचालित) का भी संपादन कार्य किया। यहाँ से अवकाश प्राप्त करने के बाद भी अपनी नवीन रचनाओं के माध्यम से ये हिंदी साहित्य की सेवा में लगे रहे। एक सफल पत्रकार एवं सशक्त लेखक के रूप में हिंदी साहित्य को समृद्ध करने की दृष्टि से भारती जी का उल्लेखनीय योगदान रहा है। भारती जी ने लेख, कहानियाँ एवं रिपोर्ताज आदि अन्य रचनाओं के माध्यम से हिंदी साहित्य की सेवा की है। वैज्ञानिक विषयों को सरल, रोचक, उपयोगी और चित्रात्मक बनाकर इन्होंने हिंदी साहित्य को संपन्न कर दिया।

2. भारती जी की भाषागत विशेषताओं के साथ-साथ उनकी कृतियों का भी वर्णन कीजिए।

उ०– भाषा-शैली– भारती जी ने अपनी सभी रचनाओं में सरल एवं सरस भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ पत्रकारिता से किया। अत्यंत सरल व रुचियुक्त रूप में किसी भी लेख को प्रकाशित करना इनकी पत्रकारिता का मूलभूत उद्देश्य रहा है। ये अपनी भाषा के माध्यम से अत्यधिक नीरस एवं गंभीर विषय में भी पाठक की रुचि उत्पन्न करने में सक्षम थे। इन्होंने अपनी रचनाओं में नैतिक, सामाजिक एवं वैज्ञानिक विषयों को मुख्य रूप से सम्मिलित किया। विज्ञान की जानकारी को बाल एवं किशोर वर्ग तक पहुँचाने के लिए ये वर्णन को रोचक और नाटकीय बना देते थे। इन्होंने विषय के अनुरूप तद्भव शब्दों, लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग भी किया है।

इन्होंने अपनी रचनाओं में विषय के अनुरूप अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। इनके द्वारा प्रयोग की गई प्रमुख शैलियाँ निम्नलिखित हैं—

वर्णनात्मक शैली– इन्होंने किसी भी विषय का विस्तार में वर्णन करने के लिए वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्यत: इसी शैली का प्रयोग किया है।

चित्रात्मक शैली– भारती जी ने किसी भी विषय का सजीव वर्णन करने के लिए चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। सरल शब्दों एवं वाक्य-रचनाओं के द्वारा दृश्यों एवं घटनाओं का सजीव चित्रांकन इनकी शैली की विशिष्टता है।

भावात्मक शैली– जयप्रकाश भारती जी ने कई स्थानों पर अत्यधिक भाव प्रकट करने के लिए भावात्मक शैली का प्रयोग किया है।

कृतियाँ–भारती जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

हिमालय की पुकार, अनंत आकाश, अथाह सागर, विज्ञान की विभूतियाँ, देश हमारा-देश हमारा, चलें चाँद पर चलें, सरदार भगतसिंह, हमारे गौरव के प्रतीक, उनका बचपन यूँ बीता, ऐसे थे हमारे बापू, लोकमान्य तिलक, बर्फ की गुड़िया, अस्त्र-शस्त्र आदिम, युग से अणु युग तक, भारत का संविधान, संयुक्त राष्ट्र संघ, दुनिया रंग-बिरंगी।

3. प्रस्तुत वैज्ञानिक लेख 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– प्रस्तुत वैज्ञानिक लेख जयप्रकाश भारती जी द्वारा लिखित है, जिसमें विचार सामग्री, विवरण और इतिहास के साथ एक रोमांचकारी कथा का आनंद प्राप्त होता है। लेखक ने पृथ्वी और चंद्रमा की दूरी, चंद्रयान और उसको ले जाने वाले अंतरिक्ष यान तथा चंद्र-तल के वातावरण का सजीव परिचय प्रस्तुत किया है तथा अंतरिक्ष यात्रा का संक्षिप्त इतिहास भी दिया है। लेखक 21 जुलाई सन् 1969 के दिन का वर्णन करते हुए कहता है कि जिस दिन मनुष्य को अपना पहला कदम चंद्रमा की सतह पर रखना था, उस समय सारी दुनिया के लगभग सभी भागों में सभी स्त्री-पुरुष व बच्चे रेडियों से संपूर्ण घटना को सुन रहे थे जिनके पास टी०वी० था वे आँखें गड़ाए इसे देख रहे थे और इस रोमांचकारी घटना के क्षण-क्षण के गवाह बन रहे थे।

सोमवार 21 जुलाई 1969 को भारतीय समयानुसार सुबह एक बजकर सैंतालीस मिनट पर ईगल नामक चंद्रयान नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन को लेकर चंद्रमा के जलविहीन शांति सागर में उतरा। पृथ्वी से चार लाख किलोमीटर दूर चंद्रमा पर पहुँचने में मानव को 102 घंटे 45 मिनट और 42 सेकेंड का समय लगा। अपोला-11 ने बुधवार 16 जुलाई 1969 को केप केनेडी से अपनी यात्रा शुरु की जिसमें तीन यात्री नील आर्मस्ट्रांग, एडविन एल्ड्रिन और माइकल कांलिस थे। चंद्रमा की कक्षा में पहुँचकर चंद्रयान मूलयान कोलम्बिया से अलग होकर चंद्रतल पर उतर गया और मूलयान 96 किलोमीटर की ऊंचाई पर परिक्रमा करने लगा जिसमें माइकल कालिंस था।

नील आर्मस्ट्रांग ने चंद्रतल से पृथ्वी की सुंदरता का वर्णन करते हुए इसे बड़ी, चमकीली और सुंदर बताया। दोनों यात्रियों ने चंद्रयान का निरीक्षण करके व कुछ देर आराम करके चंद्रतल पर उतरने का निर्णय लिया। पहले सीढ़ियों से धीरे-धीरे नील आर्मस्ट्रांग नीचे उतरे और अपना बायाँ पैर चंद्रतल पर रखा। इस बीच आर्मस्ट्रांग दोनों हाथों से चंद्रयान को पकड़े रहे। आश्वस्त होने के बाद वह यान के आसपास ही कुछ कदम चले। चंद्रयान के अंदर बैठे एल्ड्रिन ने मूवी कैमरे से आर्मस्ट्रांग के चित्र लेने शुरू कर दिए। बीस मिनट बाद वह भी चंद्रयान से बाहर निकल गए। तब तक आर्मस्ट्रांग ने चंद्रधूल का नमूना जेब में रख लिया था व टेलीविजन कैमरे को त्रिपाद पर जमा दिया था। मानव चंद्रतल पर अरबों डॉलर खर्च करने के बाद पहुँचा था इसलिए सीमित समय के एक-एक क्षण का उपयोग करके दोनों यात्रियों को चंद्रमा की चट्टानों व मिट्टी के नमूने लेने थे तथा चंद्रतल पर कई तरह के वैज्ञानिक उपकरण स्थापित करने थे। इन यात्रियों ने वहाँ पर भूकंपमापी यंत्र व लेसर परावर्त्तक रखा। इन्होंने वहाँ तीनों चंद्र यात्रियों और अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के हस्ताक्षरयुक्त धातु फलक रखा और अमेरिकी ध्वज फहराया। विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के संदेशों की माइक्रो फिल्म भी वहाँ पर छोड़ी और विभिन्न अंतरिक्ष यात्रियों को दिए गए पदकों की अनुकृतियाँ वहाँ रखी।

मानव का चंद्रमा पर उतरने का यह प्रयास प्रथम होते हुए भी सफल रहा। जिस चंद्रमा को कवियों ने सलोना तथा सुंदर कहा था उसे वैज्ञानिकों ने बदसूरत व जीवनहीन करार दे दिया। चंद्रमा के बारे में संसार की हर जाति ने कहानी बनाई और उसे रजनीपति व रात्रि की देवी माना। श्रीराम व कृष्ण भी उस खिलौने को पाने का हठ करते थे तब बालक को बहलाने का उपाय था— चंद्रमा की छवि को पानी में उतारना। मानव की प्रगति की यात्रा को महादेवी वर्मा ने एक सूत्र में बाँधते हुए कहा— ''पहले पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।''

अंतरिक्ष युग का सूत्रपात 4 अक्टूबर 1957 को हुआ था जब सोवियत रूस के स्पुतनिक यान में यूरी गागरिन प्रथम

अंतरिक्ष यात्री बना। इसके ठीक 11 वर्ष 9 मास 17 दिन बाद मानव चंद्रमा पर पहुंचा। दिसंबर 1968 में अपोलो-8 के तीनों यात्री चंद्रमा के पड़ोस तक पहुँचे। अपोला-10 के द्वारा इस नाटक का पूर्वाभिनय किया गया। जिसमें एक यात्री यान को चंद्रमा की कक्षा में घुमाता रहा और अन्य दो यात्री चंद्रयान को चंद्रमा से केवल 9 मील की दूरी तक ले गए थे। अपोलो-यान-सैटन-5 रॉकेट से प्रक्षेपित किया जाता है। यह विश्व का शक्तिशाली वाहन है। जिसके तीन भाग होते हैं- कमांड माड्यूल, सर्विस माड्यूल और ईगल। जिसके दो भाग-अवरोह व आरोह थे। नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन ने चंद्रतल पर 21 घंटे 36 मिनट बिताए। उन्होंने लाखों डालर का सामान भी वहाँ छोड़ा।

दोनों चंद्र-विजेताओं ने ऊपर उड़ान भरते हुए चंद्रकक्ष में परिक्रमा करते हुए मूलयान से अपने यान को जोड़ा ओर अपने साथी माइकल कालिंस से मिल गए। उन्होंने चंद्रयान को अलग करके उसे चंद्रकक्ष में छोड़ दिया और इंजन दागकर वापसी के लिए बढ़ चले। वे प्रशांत महासागर में उतरे। जहाँ से उन्हें चंद्र प्रयोगशाला ले जाया गया, उनके अनुभव रिकार्ड किए गए व उनकी जाँच भी की गई कि ये यात्री मानव जाति के लिए हानिकारक कीटाणु तो साथ नहीं लाए हैं। चंद्रतल की मिट्टी व चट्टानों के नमूनों को विभिन्न देशों के विशेषज्ञों को अनुसंधान के लिए दिया गया।

अपोलो-11 के बाद अपोलो-12 को भी चंद्रतल की खोज के लिए भेजा गया व अपोलो-13 की यात्रा दुर्घटनावश बीच में रोकनी पड़ी।

अभी चंद्रमा के लिए बहुत-सी यात्राएँ होगी। अंतरिक्ष में परिक्रमा करने वाला स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से प्रयास हो रहे हैं। मानव हमेशा से जिज्ञासु रहा है। अज्ञात की खोज में वह कहाँ पहुँचेगा, यह नहीं कहा सकता है।

(ग) अवतरणों पर आधारित प्रश्न

1. दुनिया के सभी .... कृत-संकल्प थे।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'गद्यखंड' के 'जयप्रकाश भारती' द्वारा रचित 'पानी में चंदा और चाँद पर आदमी' नामक वैज्ञानिक लेख से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने दुनिया के सभी व्यक्तियों की चंद्रयान द्वारा चांद पर मानव के पहुँचने की उत्सुकता का वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक भारती जी ने चंद्रमा पर मानव के पहुँचने की उत्सुकता का वर्णन करते हुए कहा है कि उस समय जब मानव चंद्रमा पर पहुँचने वाला था, तब संसार के सभी भागों में सभी स्त्री-पुरुष व बच्चे रेडियो से कान लगाए हुए इसका सीधा वर्णन सुन रहे थे, जिन लोगों के पास टेलीविजन थे, उनकी आँखें पर्दे पर गड़ीं थी। यह घटना संपूर्ण मानवता के इतिहास की एक अनोखी घटना थी, जब प्रथम बार मानव चाँद पर कदम रखने वाला था और सभी लोग इस घटना के एक-एक क्षण के साक्षी बन रहे थे। वे इतने उत्सुक थे कि वे स्वयं को ही भूल गए थे। युगों-युगों से किसी भी जाति व देश ने चंद्रमा पर पहुँचने की कल्पना भी नहीं की थी, परंतु आज इस पृथ्वी के दो मनुष्य उन सपनों व कल्पनाओं को साकार रूप देने के लिए दृढ़ निश्चय कर चुके थे।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** पानी में चंदा और चाँद पर आदमी **लेखक–** जयप्रकाश भारती

(ब) स्त्री-पुरुष और बच्चे किससे कान सटाए बैठे थे?

उ०– स्त्री-पुरुष और बच्चे रेडियो से कान सटाए बैठे थे।

(स) सभी लोग किस क्षण के भागीदार बन रहे थे?

उ०– सभी लोग संपूर्ण इतिहास की रोमांचक घटना मानव का चंद्रमा पर कदम के भागीदार बन रहे थे।

2. नील आर्मस्ट्रांग .... एकांत स्थान है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक ने चंद्रतल पर पहुँचने के बाद नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन की प्रतिक्रियाओं का सुंदर वर्णन किया है।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि चंद्रतल पर पहुँचने के बाद नील आर्मस्ट्रांग ने वहाँ से पृथ्वी की ओर देखते हुए इसकी सुंदरता का वर्णन करते हुए इसे बहुत बड़ी, चमकीली और सुंदर बताया। एडविन एल्ड्रिन ने भी भावविभोर होकर वर्णन

किया कि यह दृश्य बहुत सुंदर है, यहाँ सब कुछ सुंदर है। उन्होंने कहा कि जिस स्थान पर वे चंद्रतल पर उतरे हैं, उससे कुछ दूरी पर ही उन्होंने बैंगनी रंग की चट्टान देखी है। चंद्रमा पर पाई जाने वाली मिट्टी व चट्टानें सूर्य के प्रकाश के कारण चमक रही हैं। चंद्रतल एक बहुत बड़ा एकांत स्थान है, जहाँ किसी प्रकार का शोरगुल नहीं है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** पानी में चंदा और चाँद पर आदमी **लेखक–** जयप्रकाश भारती

(ब) चाँद पर उतरने वाले दोनों मानवों के क्या नाम थे?

उ०– चाँद पर उतरने वाले दोनों मानवों के नाम नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन थे।

(स) चंद्रतल पर नील आर्मस्ट्रांग ने पृथ्वी के बारे में क्या कहा?

उ०– चंद्रतल पर नील आर्मस्ट्रांग ने पृथ्वी का वर्णन करते हुए इसे बहुत बड़ी, चमकीली और सुंदर (बिग, ब्राइट एंड ब्यूटीफुल) बताया।

(द) चंद्रतल पर एल्ड्रिन ने भाव-विभोर होकर क्या कहा?

उ०– चंद्रतल पर एल्ड्रिन ने भावविभोर होकर कहा— सुंदर दृश्य है, सब कुछ सुंदर है।

3. हमारे देश में .... मानव पहुँच गया है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– यहाँ लेखक भारती जी ने कहा है कि संसार की सभी जातियाँ चाँद को सुंदर व सलोना मानती हैं, परंतु वैज्ञानिकों ने उसे बदसूरत व जीवनविहीन नाम दे दिया है।

व्याख्या– चंद्रमा से संबंधित अंधविश्वास और कल्पनाएँ केवल हमारे देश में ही प्रचलित नहीं रहे हैं, बल्कि संसार की प्रत्येक देश-जाति ने उससे संबंधित विभिन्न प्रकार की कहानियों की रचना की है। कवियों द्वारा उपमा देने के लिए वह सर्वाधिक उपयुक्त वस्तु रहा है। इसलिए प्रकृति के उपादानों में चंद्रमा ही अकेला ऐसा उपादान है, जिसका कविता में सर्वाधिक वर्णन किया गया है। यह वर्णन संसार की सभी भाषाओं में एकसमान रूप से मिलता है। किसी कवि ने उसे रात्रि का अधिपति माना है तो किसी ने उसको निशादेवी के रूप में भी प्रतिस्थापित किया है। प्रेमी के वियोग में दु:खी नायिका ने उसे दूत बनाकर अपने दु:ख को अपने प्रियतम तक पहुँचाने का असफल प्रयास किया है। किसी को इसका पीलापन अच्छा न लगा तो उसने इससे असंतुष्ट होकर उसे एक पीले, बीमार व दुर्बल कायावाले बूढ़े के रूप में चित्रित कर दिया। राम और कृष्ण जैसे श्रेष्ठ पुरुषों को भी अपने बाल्यकाल में इस चंद्रमा ने अपनी ओर आकर्षित किया तो उन्होंने इसको खिलौने के रूप में लेने की हठ कर ली। अब बेचारी कौशल्या और यशोदा क्या करतीं।

उनके सामने बालक राम अथवा कृष्ण को शांत करने का एक ही उपाय था कि चंद्रमा के प्रतिबिंब को पानी में दिखा दिया जाए। उस समय उन्हें यह ज्ञात नहीं था कि एक दिन वास्तव में किसी को चंद्रमा दिया जाना अर्थात् उसके पास पहुँचना संभव हो सकेगा। राम और कृष्ण के समय से लेकर आज तक मानव ने इतनी प्रगति कर ली है कि उसने उस समय के असंभव को संभव करके दिखा दिया है। मानव-विकास की इस यात्रा को महादेवी वर्मा ने इस एक वाक्य में स्पष्ट कर दिया है कि प्राचीनकाल में जल में चंद्रमा का प्रतिबिंब बनाकर उसे पृथ्वी पर उतारा जाता था, जैसा कि माता कौशल्या और यशोदा ने किया; किन्तु आज स्वयं मानव चंद्रमा पर उतर रहा है। अर्थात् जिस चंद्रमा को प्राप्त करना कभी कल्पनालोक में भी संभव नहीं था, आज मनुष्य उस तक पहुँचकर उसे पददलित कर रहा है।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** पानी में चंदा और चाँद पर आदमी **लेखक–** जयप्रकाश भारती

(ब) चंद्रमा के बारे में कवियों ने अपनी कविताओं में क्या-क्या लिखा है?

उ०– चंद्रमा के बारे में कवियों ने अपनी कविताओं में वर्णन करते हुए इसे किसी कवि ने रात्रि का पति माना है तो किसी ने उसको निशादेवी के रूप में परिभाषित किया है। किसी ने उसे प्रेम के वियोग में दु:खी नायिका का दूत बनाकर भेजा है तो किसी ने इसके पीलेपन से असंतुष्ट होकर उसे एक पीले, बीमार व दुर्बल कायावाले बूढ़े के रूप में चित्रित कर दिया।

(स) मानव की प्रगति का चक्र कितना घूम गया है?

उ०– मानव की प्रगति का चक्र इतना घूम गया है कि पहले चाँद की छवि को पानी में उतारा जाता था परंतु आज मनुष्य चाँद पर ही पहुँच गया है।

(द) चंद्रयात्रा के बारे में महादेवी वर्मा ने क्या कहा है?

उ०– चंद्रयात्रा के बारे में महादेवी वर्मा ने कहा– ''पहले पानी में चंदा को उतारा जाता था और आज चाँद पर मानव पहुँच गया है।''

4. दिसंबर, 1968 में .... पृथ्वी पर लौट आए।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने चंद्र अभियान से पहले वैज्ञानिकों द्वारा की गई तैयारियों व प्रक्षेपण का वर्णन किया है, जब मानव ने चंद्रविजय को सफल बनाने के लिए अनेक चमत्कारी कार्य किए थे।

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि दिसंबर 1968 में पहली बार अपोलो-8 में बैठकर तीनों अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा के समीप तक पहुँचे थे। बीच की इस अवधि में रूस और अमेरिका ने अनेक अंतरिक्ष यान छोड़े। इनमें से कुछ यानों में मानव थे तथा कुछ यान मानव से रहित थे। इसे हम मानव की हिम्मत कहें या उद्दंडता कि उसने अंतरिक्ष में पहुँचकर अंतरिक्ष यानों से बाहर निकलकर असीम और अनंत अंतरिक्ष में घूमना फिरना शुरू कर दिया था। मानव ने अंतरिक्ष में परिक्रमा करते हुए दो यानों को जोड़कर तथा एक यान से दूसरे यान में यात्रियों के चले जाने वाले आश्चर्यजनक कार्य किए। अपोलो-11 की चंद्रविजय से पहले अपोलो-10 अंतरिक्ष यान द्वारा इस चंद्रविजय का पूर्व अभिनय किया गया। जिसे तीन अंतरिक्ष यात्री यान को लेकर चंद्रमा की कक्षा में पहुँचे। एक यात्री मूलयान को चंद्रमा की कक्षा में घुमाता रहा और अन्य दो यात्री इसे लेकर चंद्रमा से नौ मील की दूरी तक गए। इन्होंने ही अपोलो-11 में जाने वाले चंद्रयात्रियों के यान को उतारने की संभावित जगह का चयन किया और उसके अनेक चित्र खीचें। फिर वे चंद्रमा की कक्षा में गए और मूलयान से यान को जोड़कर पृथ्वी पर कुशलतापूर्वक आ गए।

प्रश्नोत्तर

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– पाठ– पानी में चंदा और चाँद पर आदमी **लेखक–** जयप्रकाश भारती

(ब) अपोलो-8 के तीनों यात्री चंद्रमा के पास कब पहुँचे?

उ०– दिसंबर 1968 में अपोलो-8 के तीनों यात्री चंद्रमा के पास पहुँचे।

(स) प्रस्तुत गद्यांश का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने चंद्रविजय से पहले वैज्ञानिकों द्वारा की जाने वाली तैयारियों व प्रयासों का वर्णन किया है कि दिसंबर 1968 में अपोलो-8 में तीन अंतरिक्ष यात्री सर्वप्रथम चंद्रमा के समीप तक गए। रूस व अमेरिका ने इस बीच बहुत से समानव व मानव रहित यान अंतरिक्ष में भेजे। मानव ने अपनी हिम्मत या उद्दंडता के कारण अंतरिक्ष में पहुँचकर वहाँ घूमना आरंभ किया और वैज्ञानिकों ने अंतरिक्ष में बहुत से अद्भुत कार्य किए। अपोलो-10 अंतरिक्ष यान अपोलो-11 अंतरिक्ष यान का पूर्व अभिनय था। जिसमें अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा की कक्षा तक पहुंच गया और चंद्रमा से केवल नौ मील की दूरी तक गया। चंद्रयात्री मूलयान से अपने यान को जोड़कर सकुशल वापस पृथ्वी पर आ गए।

(द) रूस व अमेरिका देशों ने अंतरिक्ष यान कब छोड़े?

उ०– दिसंबर 1968 और 21 जुलाई 1969 के बीच रूस व अमेरिका ने अंतरिक्ष यान छोड़े।

5. मानव को चंद्रतल .... पर उतर सकता है।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने मानव को चंद्रतल पर पहुँचाने वाले अंतरिक्ष यान के विषय में वर्णन किया है तथा इसके भाग कमांड माड्यूल का भी विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।

व्याख्या– यहाँ लेखक भारती जी ने मानव को चंद्रतल पर ले जाने वाले अंतरिक्ष यान अपोलो-11 के बारे में बताया है। अपोलो यान को सैटर्न-5 राकेट के द्वारा प्रक्षेपित किया जाता है जो विश्व का सबसे अधिक शक्तिशाली वाहन है। अंतरिक्ष यान के तीन भाग होते हैं, जिन्हें माड्यूल भी कहा जाता है।

प्रथम भाग कमांड माड्यूल का निर्माण करते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि जब यान अंतरिक्ष से पृथ्वी पर लौटेगा तो वह यान पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय इसके तीव्रताप और दबाव को सहन कर सके। इस माड्यूल में नियंत्रण कक्ष, शयनकक्ष, भोजनकक्ष और प्रयोगशाला होती है। यदि यान के प्रक्षेपण के समय कोई दुर्घटना हो जाती हैं तो यात्री अपनी रक्षा के लिए इसे शेष यान से अलग कर सकते हैं। पृथ्वी पर वापसी के लिए बने इस माड्यूल का वजन 5500 किलोग्राम था, जिसमें साढ़े पाँच घन मीटर खाली स्थान था जहाँ तीनों अंतरिक्ष यात्री अपने सभी सामान्य कार्य संपन्न कर सकें। कमांड माड्यूल के इस स्थान को हम एक सामान्य कार के समान मान सकते हैं। इस कमांड कैप्सूल को तैयार करते समय इसमें पाँच विद्युत बैटरियाँ लगाई जाती हैं तथा इसमें 12 राकेट इंजन जुड़े रहते हैं। इस कमांड में तीन मनुष्यों के लिए चौदह दिन की भोजन सामग्री तथा पानी के भंडार की व्यवस्था रहती है तथा यात्रियों के मल निष्कासन की व्यवस्था भी रहती है। इस माड्यूल में यात्रियों के लिए पैराशूट की व्यवस्था भी रहती है। यह माड्यूल यात्रियों को कड़ी व कठोर जमीन पर बिना किसी नुकसान के उतार सकता है।

(अ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

उ०– **पाठ–** पानी में चंदा और चाँद पर आदमी **लेखक–** जयप्रकाश भारती

(ब) माड्यूल क्या होता है?

उ०– अंतरिक्ष यान के भागों को माड्यूल कहा जाता है।

(स) गद्यांश के अनुसार विश्व का सबसे शक्तिशाली वाहन कौन-सा है?

उ०– गद्यांश के अनुसार विश्व का सबसे शक्तिशाली वाहन सैटर्न-5 राकेट है।

(द) कमांड माड्यूल का निर्माण किस दृष्टि से किया जाता है?

उ०– कमांड माड्यूल का निर्माण इस दृष्टि से किया जाता है कि अंतरिक्ष यान वापसी के समय पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय तीव्र ताप और दबावों को सहन कर सके।

(य) पैराशूट का क्या कार्य है?

उ०– पैराशूट का कार्य आपातकालीन स्थिति में अंतरिक्ष यात्रियों की रक्षा करना है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'अथाह सागर' के लेखक हैं–

(अ) धर्मवीर भारती (ब) **जयप्रकाश भारती**
(स) जयशंकर प्रसाद (द) रामकुमार वर्मा

2. 'नंदन' पत्रिका के संपादक हैं–

(अ) बाबू गुलाबराय (ब) महादेवी वर्मा
(स) **जयप्रकाश भारती** (द) इनमें से कोई नहीं

3. जयप्रकाश भारती का जन्म हुआ था–

(अ) **मेरठ में** (ब) देहरादून में
(स) लखनऊ में (द) बलिया में

4. इनमें से भारती जी की रचना है–

(अ) ठूँठा आम (ब) ठेले पर हिमायल
(स) **बर्फ की गुड़िया** (द) ममता

(ङ) व्याकरण एवं रचनाबोध

1. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए–

शब्द	**नया शब्द**
मानव	मानवता
विश्वास	विश्वसनीय
सुंदर	सुंदरता
सफल	सफलता
प्रक्षेपण	प्रक्षेपणीय
संपूर्ण	संपूर्णता

2. **निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–**

संधि शब्द	संधि-विच्छेद
सर्वाधिक	सर्व + अधिक
मरणोपरांत	मरण + उपरांत
दुस्साहस	दु: + साहस
पूर्वाभिनय	पूर्व + अभिनय
शयनागर	शन + आगार
प्राणोदक	प्राण + उदक

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

काव्य खंड

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **कविता में मुख्यत: किसकी प्रधानता होती है?**

उ०– कविता में मुख्यत: भावनाओं की प्रधानता होती है।

2. **शब्द-शक्ति किसे कहते हैं?**

उ०– शब्द के आंतरिक अर्थ को स्पष्ट करने वाली शक्ति शब्द शक्ति कहलाती है। इसके तीन भेद हैं—

(अ) अभिधा (ब) लक्षणा (स) व्यञ्जना

3. **काव्य के दो भेद कौन-से हैं?**

उ०– काव्य के दो भेद हैं—

(अ) श्रव्य काव्य (ब) दृश्य काव्य

4. **प्रबंध काव्य पर आधारित किसी एक रचना का नाम लिखिए।**

उ०– प्रबंध काव्य पर आधारित रचना तुलसीदास जी की 'रामचरितमानस' है।

5. **मुक्तक काव्य पर आधारित किसी एक रचना का नाम लिखिए।**

उ०– मुक्तक काव्य पर आधारित रचना बिहारी जी की 'बिहारी-सतसई' है।

6. **खंडकाव्य पर आधारित किसी एक रचना का नाम लिखिए।**

उ०– खंडकाव्य पर आधारित रचना रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की 'रश्मिरथी' है।

7. **गीतिकाव्य व गीतिनाट्य पर आधारित एक-एक रचना का नाम लिखिए।**

उ०– गीतिकाव्य पर आधारित रचना जयशंकर प्रसाद जी की 'झरना' व गीतिनाट्य पर आधारित रचना जयशंकर प्रसाद जी की करुणालय' है।

8. **आदिकाल को कौन-कौन से नाम दिए गए हैं?**

उ०– आदिकाल को वीरगाथाकाल, चारणकाल आदि नाम भी दिए गए हैं।

9. **आदिकाल की समय सीमा लिखिए।**

उ०– आदिकाल का समय सन् 743 ई. से 1343 ई. तक माना जाता है।

10. **आदिकाल के दो कवियों के नाम उनकी रचना सहित लिखिए।**

उ०– आदिकाल के दो कवि और उनकी रचनाएँ हैं—

(अ) चंदबरदाई - पृथ्वीरास रासो

(ब) दलपति विजय - खुमाण रासो

11. **'परमाल रासो' किसकी रचना है? इसका अन्य नाम क्या है?**

उ०– 'परमाल रासो' जगनिक की रचना है। इसका दूसरा नाम आल्हाखंड है।

12. भक्तिकाल की समय-सीमा क्या है?

उ०– भक्तिकाल का समय सन् 1343 ई. से 1643 ई. तक माना जाता है।

13. भक्तिकाल की निर्गुण शाखा के किसी एक कवि का नाम उसकी रचना सहित लिखिए।

उ०– भक्तिकाल की निर्गुण शाखा के प्रसिद्ध कवि कबीरदास हैं, उनकी प्रमुख रचना बीजक है।

14. भक्तिकाल की सगुण शाखा को कौन-सी दो उपशाखाओं में बाँटा गया है?

उ०– भक्तिकाल की सगुण शाखा को दो उपशाखाओं में विभाजित किया गया है—

(अ) रामाश्रयी शाखा (ब) कृष्णाश्रयी शाखा

15. कबीर की रचनाओं की प्रमुख भाषा कौन-सी है?

उ०– कबीर की रचनाओं की प्रमुख भाषा 'सधुक्कड़ी' व 'पंचमेल खिचड़ी' है।

16. तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' का मूल स्रोत क्या है?

उ०– तुलसीदास कृत 'श्रीरामचरितमानस' का मूल स्रोत आदि कवि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत भाषा में रचित 'रामायण' महाकाव्य है।

17. सूरदास जी की प्रमुख रचना कौन-सी है?

उ०– सूरदास जी की प्रमुख रचना सूरसागर है।

18. 'रामचंद्रिका' किसकी रचना है?

उ०– 'रामचंद्रिका' रीतिकालीन कवि केशव की रचना है।

19. 'सुजान सागर' के कवि का नाम बताइए।

उ०– 'सुजान सागर' के कवि घनानंद जी हैं।

20. भारतेंदु युग के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उ०– भारतेंदु युग के दो प्रमुख कवि हैं- भारतेंदु हरिश्चंद्र और प्रेमघन।

21. 'प्रियप्रवास' किसकी रचना है?

उ०– 'प्रियप्रवास' अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की रचना है।

22. 'चिदंबरा' किसकी रचना है?

उ०– 'चिदंबरा' सुमित्रानंदन पंत की रचना है।

23. महादेव वर्मा की किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– 'नीरजा' और 'नीहार' महादेवी वर्मा की दो रचनाएँ हैं।

24. छायावादी युग के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

उ०– छायावादी युग के दो प्रमुख कवि हैं— सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और जयशंकर प्रसाद।

25. शिवमंगल सिंह 'सुमन' व भगवतीचरण वर्मा किस युग के कवि हैं?

उ०– शिवमंगल सिंह 'सुमन' व भगवतीचरण वर्मा प्रगतिवादी युग के कवि हैं।

27. प्रगतिवादी युग की समय-सीमा लिखिए।

उ०– प्रगतिवादी युग का समय सन् 1938 ई. से 1943 ई. तक माना गया है।

27. प्रयोगवाद का प्रवर्त्तक किन्हें माना जाता है?

उ०– अज्ञेय जी को प्रयोगवाद का प्रवर्त्तक माना जाता है।

28. 'तार सप्तक' का क्या अर्थ है?

उ०– 'तार सप्तक' से तात्पर्य सात कवियों की कविताओं के संग्रह से है।

29. 'प्रथम तार सप्तक' के किन्हीं दो कवियों के नाम लिखिए।

उ०– 'प्रथम तार सप्तक' के दो कवि हैं- अज्ञेय और नेमिचंद्र।

30. 'दूसरा तार सप्तक' कब प्रकाश में आया?

उ०– 'दूसरा तार सप्तक' सन् 1951 में प्रकाश में आया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कविता क्या है?

उ०– वह छंदबद्ध साहित्यिक रचना जो लय से युक्त हो, अर्थात् गेयात्मक हो तथा पाठक व श्रोता जिसे पढ़ते या सुनते समय आनंदमय जगत में विचरण करने लगें, कविता कहलाती है। कविता का सीधा संबंध भाव जगत से होता है। कविता का उद्देश्य सुंदरता की अनुभूति कराते हुए आनंद प्रदान करना होता है।

2. शब्द शक्ति के कितने भेद होते हैं? उनका वर्णन कीजिए।

उ०– शब्द शक्ति के तीन भेद होते हैं—

(अ) अभिधा– शब्द के सामान्य अर्थ का बोध कराने वाली शक्ति (अभिधा) शब्द-शक्ति कहलाती है; जैसे-नीर का अर्थ जल तथा नयन का अर्थ नेत्र।

(ब) लक्षणा– जब शब्द के सामान्य अर्थ से वक्ता का कथन स्पष्ट नहीं हो पाता है, तब जिस शब्द-शक्ति के आधार पर मिलते-जुलते अर्थ से वक्ता का आशय स्पष्ट हो जाता है, वह लक्षणा शब्द-शक्ति कहलाती है; जैसे— किसी मोटे व्यक्ति को 'हाथी' कहना, अब वह चार पैर वाला पशु तो है नहीं, इसलिए यहाँ 'हाथी' शब्द से तात्पर्य है— मोटा।

(स) व्यञ्जना– जब अभिधा व लक्षणा दोनों ही शब्द-शक्तियाँ अर्थ स्पष्ट करने में असमर्थ होती हैं तब जिस शब्द-शक्ति के आधार पर वक्ता का आशय स्पष्ट होता है, वह व्यञ्जना शब्द शक्ति कहलाती है; जैसे— ऑफिस में बैठा कोई व्यक्ति घड़ी देखकर कहे-'पाँच बज गए', अब इसका अर्थ पाँच बजे के समय से नहीं, बल्कि अलग ही अर्थ स्पष्ट होता है—'काम बंद करके घर चलने का समय हो गया है।

3. भक्तिकाल व रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

उ०– भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—(अ) भक्तिभावना (ब) गुरु की महिमा का वर्णन (स) सुधारवादी दृष्टिकोण एवं समन्वय की भावना (द) रहस्य की भावना (य) अहंकार का त्याग और लोकमंगल की भावना (र) काव्य का उत्कर्ष (ल) जीवन की नश्वरता और ईश्वर के नाम स्मरण की महत्ता।

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नवत् हैं—(अ) रीति या लाक्षणिक ग्रंथों की रचना (ब) श्रृंगार रस की प्रधानता (स) काव्य में कलापक्ष की प्रधानता (द) मुक्तक काव्य की प्रमुखता (य) आश्रयदाताओं की प्रशंसा (र) ब्रजभाषा का चरमोत्कर्ष (ल) प्रकृति का उद्‌दीपन रूप में चित्रण (व) नीतिपरक सूक्तियों की रचना (च) दोहा, सवैया, कवित्त की प्रचुरता।

4. 'अष्टछाप' किसे कहते हैं? इसके सभी कवियों के नाम लिखिए।

उ०– सूरदास सहित आठ कवियों के समूह को अष्टछाप कहा जाता है। 'अष्टछाप' के कवि हैं— सूरदास, नंददास, कृष्णदास, परमानंद दास, कुंभनदास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी एवं गोविंद स्वामी।

5. भारतेंदु युग के काव्य की क्या विशेषताएँ हैं?

उ०– भारतेंदु युग के काव्य की विशेषताएँ निम्नवत् हैं— (अ) कविता में स्वदेश प्रेम का स्वर, (ब) देश-प्रेम, भाषा-प्रेम, समाज सुधार आदि विषयों पर काव्य रचना (स) जनवादी प्रवृत्तियों को अपनाकर काव्य और जीवन की धारा का समन्वय (द) ब्रजभाषा और खड़ीबोली में काव्य-रचना (य) प्रबंध काव्य की अपेक्षा मुक्तक काव्य की अधिक रचना (र) कविता में हास्य और व्यंग्य के पुट का समावेश (ल) विषय, भाव, छंद और शैली की दृष्टि से नवीन एवं प्राचीन दोनों रूपों के प्रयोग (व) मुक्त प्रकृति-चित्रण

6. छायावादी युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

उ०– छायावादी युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नवत् हैं— (अ) प्रेम सौंदर्य का चित्रण (ब) प्रकृति का मानवीकरण (स) रहस्यवादी भावना व निराशा की भावना (द) आत्मपरक रचनाएँ (य) करुणा एवं नैराश्य की प्रधानता (र) नए अलंकारों का प्रयोग (ल) लाक्षणिक, प्रतीकात्मक शैली तथा चित्रमयी कल्पना।

7. सुमितानन्दनपंत की किन्ही पाँच रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– सुमित्रानन्दन पंत की पाँच रचनाएँ हैं- लोकायतन, वीणा, चिदंबरा, युगवाणी और पल्लव।

8. प्रगतिवादी युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ क्या हैं?

उ०– प्रगतिवादी युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं— यथार्थवादी चित्रण, शोषक वर्ग के प्रति घृणा तथा शोषित वर्ग के प्रति सहानुभूति

की भावना, प्राचीन रूढ़ियों व मान्यताओं का विरोध, विद्रोह एवं क्रांति की भावना, नारी के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण तथा मानवतावादी प्रवृत्ति।

9. पहला तार सप्तक के सातों कवियों के नाम लिखिए।

उ०– पहले तार सप्तक के सात कवि हैं– अज्ञेय, नेमिचंद्र, भारतभूषण, रामविलास शर्मा, गजानन माधव मुक्ति बोध, गिरिजा कुमार माथुर, प्रभाकर माचवे।

10. दूसरा तार सप्तक के सातों कवियों के नाम लिखिए।

उ०– दूसरे तार सप्तक के सात कवि हैं– शकुंतला माथुर, हरिनारायण व्यास, भवानी प्रसाद मिश्र, शमशेर बहादुर, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता तथा रघुवीर सहाय।

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'लहर' के रचनाकार हैं–

(अ) दिनकर जी (ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) **जयशंकर प्रसाद** (द) महादेवी वर्मा

2. 'खुमाण रासो' के कवि हैं–

(अ) **दलपति विजय** (ब) चंदबरदाई
(स) नरपति नाल्ह (द) मधुकर

3. 'आश्रयदाताओं की प्रशंसा' निम्न में से किस काल की प्रमुख प्रवृत्ति है?

(अ) **आदिकाल** (ब) भक्तिकाल
(स) रीतिकाल (द) इनमें से कोई नहीं

4. 'हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग' कहा जाता है–

(अ) वीरगाथाकाल को (ब) **भक्तिकाल को**
(स) रीतिकाल को (द) इनमें से कोई नहीं

5. निम्न में से निर्गुण शाखा के कवि हैं–

(अ) **मलूकदास** (ब) तुलसीदास
(स) सूरदास (द) मीराबाई

6. रीतिकाल के कवियों के काव्य का प्रमुख आधार था–

(अ) वीर रस (ब) **श्रृंगार**
(स) आश्रयदाताओं का बखान (द) करुण

7. निम्न में से रीतिकाल के कवि हैं–

(अ) **सेनापति** (ब) कबीर
(स) सूरदास (द) इनमें से कोई नहीं

8. 'गंगा लहरी' के कवि हैं–

(अ) मतिराम (ब) केशव
(स) चिंतामणि (द) **पद्माकर**

9. भारतेंदु युग के काव्य में किस भाषा की प्रधानता रही?

(अ) खड़ीबोली (ब) **ब्रजभाषा**
(स) संस्कृतनिष्ठ (द) प्राकृत भाषा

10. रामनरेश त्रिपाठी किस युग के कवि हैं?

(अ) **द्विवेदी युग** (ब) छायावादी युग
(स) प्रगतिवादी युग (द) प्रयोगवादी युग

11. 'पल्लव' के रचनाकार हैं–

(अ) निराला (ब) प्रसाद
(स) **पंत** (द) हरिऔध

12. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस युग के कवि हैं?

(अ) भारतेंदु युग (ब) प्रयोगवादी युग

(स) **प्रगतिवादी युग** (द) इनमें से कोई नहीं

13. पहले तार सप्तक के सात कवियों में से एक कवि हैं–

(अ) **रामविलास शर्मा** (ब) शकुंतला माथुर

(स) रघुवीर सहाय (द) धर्मवीर भारती

14. 'ठंडा लोहा' के कवि हैं–

(अ) अज्ञेय (ब) नेमिचंद्र

(स) **धर्मवीर भारती** (द) जयशंकर प्रसाद

15. 'सुनहले शैवाल' के रचनाकार हैं–

(अ) भवानी प्रसाद मिश्र (ब) **अज्ञेय**

(स) नेमिचंद्र (द) शकुंतला माथुर

16. प्रयोगवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्ति है–

(अ) साम्यवाद (ब) यथार्थवादी चित्रण

(स) शोषक वर्ग के प्रति घृणा (द) **घोर वैयक्तिकता**

17. निम्न में से भवानी प्रसाद मिश्र की रचना है–

(अ) कनुप्रिया (ब) **खुशबू के शिलालेख**

(स) सुनहले शैवाल (द) रस विलास

18. नई कविता की प्रमुख विशेषता है–

(अ) प्रबंधकाव्य (ब) मुक्तक काव्य

(स) **छंदमुक्त काव्य** (द) नवीन बिम्ब योजना

1. पद (सूरदास)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

उ०– कुछ विद्वानों के अनुसार सूरदास जी का जन्म आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित रुनकता नामक गाँव में सन् 1478 ई. (वैशाख शुक्ल पंचमी, मंगलवार, संवत् 1535 वि.) में हुआ था।

2. सूरदास जी किस काल व किस शाखा के कवि थे?

उ०– सूरदास जी भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी शाखा के कवि थे।

3. सूरदास जी के गुरु का क्या नाम था?

उ०– सूरदास जी के गुरु का नाम बल्लभाचार्य था।

4. 'अष्टछाप' से आप क्या समझते हैं?

उ०– आठ कृष्णभक्त कवियों के संगठन को अष्टछाप कहते हैं।

5. 'अष्टछाप' का संगठन किसने किया तथा इसे प्रमुख कवि कौन थे?

उ०– गुरु बल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने अष्टछाप का संगठन किया। इसके प्रमुख कवि सूरदास जी थे।

6. सूरदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– सूरदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाएँ– 'सूरसागर', 'सूरसारावली' तथा 'साहित्य लहरी' हैं।

7. सूरदास जी ने अपनी कृतियों में किस भाषा का प्रयोग किया है?

उ०– सूरदार जी ने अपनी कृतियों में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

8. सूरदास जी द्वारा रचित कृतियों के आधार पर भक्तिकाल की दो प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उ०– (अ) अवतार-भावना (ब) वात्सल्य रस की प्रधानता

9. सूरदास जी की मृत्यु कब व कहाँ हुई?

उ०– सूरदास जी की मृत्यु सन् 1583 ई. में गोवर्द्धन की तलहटी में पारसोली नामक ग्राम में हुई थी।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदार जी बार-बार भगवान के चरणों की वंदना क्यों करना चाहते हैं?

उ०– सूरदास जी बार-बार भगवान के चरणों की वंदना इसलिए करना चाहते हैं क्योंकि इनकी कृपा हो जाने पर लँगड़ा व्यक्ति पर्वतों को लाँघ जाता है, अंधा व्यक्ति सबकुछ देखने लगता है, बहरा व्यक्ति को सुनने लग जाता है तथा भिखारी व्यक्ति मुकुटधारी बन जाता है।

2. सूरदास जी द्वारा लिखित पद के आधार पर उन्होंने सगुण भक्ति मार्ग क्यों अपनाया?

उ०– सूरदास जी द्वारा लिखित पद के आधार पर उन्होंने सगुण भक्ति मार्ग इसलिए अपनाया है क्योंकि निर्गुण ब्रह्म का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। उसकी स्थिति का वर्णन नहीं किया जा सकता। निर्गुण ब्रह्म की उपासना का आनंद किसी भक्त के लिए उसी प्रकार है जैसे गूँगे व्यक्ति के लिए मीठे फल का स्वाद, जिसे वह हृदय में अनुभव तो कर सकता है परंतु वाणी द्वारा उस आनंद का वर्णन नहीं कर सकता। इसी प्रकार निर्गुण ब्रह्म की भक्ति के आनंद को भी अनुभव किया जा सकता है, उसे वाणी द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। अत: उन्होंने सगुण श्रीकृष्ण की लीला के पद गाना उचित समझा।

3. यशोदा देवकी के पास क्या संदेश भेजती है?

उ०– यशोदा देवकी के पास संदेश भेजती है कि मैं (यशोदा) श्रीकृष्ण की धाय हूँ। अत: आप मुझ पर कृपा करती रहना। यद्यपि आप श्रीकृष्ण को भली-भाँति जानती हैं, फिर भी मैं कुछ कहना चाहती हूँ। मेरे लाल को सुबह होते ही माखन-रोटी प्रिय लगती है। तेल, उबटन और गर्म पानी देखकर वह दूर भाग जाता था। वह उस समय जो मांगता, वही मैं उसे देती थी, तब वह स्नान करता था।

4. श्रीकृष्ण गाय चराने क्यों जाना चाहते हैं?

उ०– श्रीकृष्ण गाय चराने इसलिए जाना चाहते हैं क्योंकि उन्हें वन में ग्वालों और गायों के साथ जरा भी डर नहीं लगता है। उन्हें यह बात भी अच्छी नहीं लगती है कि अन्य सभी ग्वाले गाय चराने के लिए जंगल में आएँ और वह घर में बैठे रहें।

5. गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली क्यों चुराना चाहती हैं?

उ०– गोपियाँ श्रीकृष्ण की मुरली इसलिए चुराना चाहती हैं क्योंकि वह इसे अपनी बैरी सौतन समझती हैं। इस मुरली ने अन्य सभी के प्रेम संबंधों को भुलाकर श्रीकृष्ण को अपने वश में कर लिया है। यह मुरली श्रीकृष्ण को इतनी प्रिय है कि वे दिन-रात्रि में एक क्षण के लिए भी इसे नहीं छोड़ते हैं। गोपियाँ समझती हैं कि इस मुरली ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बांधा हुआ है इसलिए वह इसे चुराकर श्रीकृष्ण से दूर करना चाहती हैं।

6. श्रीकृष्ण से ब्रज क्यों नहीं भूला जा रहा है?

उ०– श्रीकृष्ण से ब्रज इसलिए नहीं भूला जा रहा है क्योंकि उन्हें वृंदावन और गोकुल के वन, उपवन तथा कुंजों की छाँव अति प्रिय थी। नंदबाबा व यशोदा माता को देखकर जो सुख उन्हें मिलता था, उन्हें उसका बार-बार स्मरण आता है। यशोदा माता द्वारा प्रेम से माखन, रोटी व दही खिलाना वे नहीं भूल पाते हैं। उन्हें गोकुलवासियों के साथ विभिन्न प्रकार की क्रीड़ाएँ करने में परमसुख प्राप्त होता था, जिसे वह बार-बार स्मरण करते हैं।

7. यदि गोपियों के दस-बीस मन होते तो क्या होता?

उ०– यदि गोपियों के पास दस-बीस मन होते, तो वे उद्धव के द्वारा बताए गए निर्गुण ब्रह्म की उपासना के मार्ग पर चलती परंतु उनके पास तो एक ही मन है जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है और उन्हीं के साथ मथुरा चला गया है।

8. उद्धव गोपियों को क्या समझाने गोकुल गए थे? गोपियों ने उद्धव को क्या उत्तर दिया?

उ०– उद्धव गोकुल में गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना का मार्ग समझाने गए थे क्योंकि कृष्ण के प्रेम में लीन गोपियों की दशा खराब थी, वह दिन-रात केवल श्रीकृष्ण का ही मार्ग देखती थीं। परंतु गोपियों ने उद्धव को उत्तर दिया कि उनके पास दस-बीस मन नहीं हैं जो वे निर्गुण बह्म की उपासना कर सके। उनके पास तो केवल एक ही मन है जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन उन्हीं के साथ चला गया है। श्रीकृष्ण के लौटने की आशा में ही उनकी श्वास चल रही है और इस आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं।

9. सूरदास जी के पदों के आधार पर उद्धव-गोपी संवाद का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– यह संवाद 'भ्रमरगीत' प्रसंग का एक सरस अंग है। श्रीकृष्ण के मथुरा जाने के बाद गोपियां अति व्याकुल हैं। उद्धव जी श्रीकृष्ण का संदेश लेकर ब्रज आते हैं और गोपियों को योग की शिक्षा देते हैं जिस पर असमर्थता जताते हुए गोपी कहती हैं— उद्धव हमारे दस-बीस मन नहीं हैं जो हम निर्गुण ब्रह्म की उपासना करें, हमारा तो एक ही मन है, जो श्रीकृष्ण के प्रेम में लीन है और उन्हीं के साथ मथुरा चला गया है। उनके जाने के बाद हमारा शरीर उसी प्रकार शक्तिहीन व निर्बल है जिस प्रकार बिना सिर वाला धड़। श्रीकृष्ण के मथुरा से वापस लौटने की आशा में ही हमारे शरीर में श्वास चल रही है और इस आशा में हम करोड़ों वर्षों तक जीवित रह सकती हैं। तुम तो श्रीकृष्ण के परममित्र व सभी प्रकार के योग के स्वामी हो, आप ही श्रीकृष्ण से हमारा मिलन करा दो। उद्धव से गोपियाँ कहती हैं कि श्रीकृष्ण के अलावा हमारा कोई भी आराध्य नहीं है।

गोपियाँ उद्धव से परिहास करती हुई कहती हैं कि उद्धव हमें लगता है कि श्रीकृष्ण ने तुम्हें नहीं भेजा है, तुम तो कहीं से भटकते हुए आ गए हो। तुम्हें ब्रज की नारियों से योग की बात करते हुए लज्जा नहीं आती है। वैसे तो तुम बड़े सयाने बनते हो परंतु तुम विवेक की बात नहीं करते हो। तुमने हमसे जो कुछ भी कहा वह हमने सहन कर लिया परंतु क्या तुमने योग की अवस्था का विचार किया है? इसलिए अब तुम चुप रहो। गोपियाँ उद्धव से शपथ देकर उद्धव को गोकुल भेजते समय श्रीकृष्ण की प्रतिक्रिया के बारे में पूछती हैं।

गोपियाँ उद्धव की निर्गुण ब्रह्म की उपासना के उपदेश से परेशान होकर उससे पूछती हैं कि हे उद्धव! निर्गुण ब्रह्म किस देश का वासी है, उसके माता-पिता कौन हैं? स्त्री और दासी कौन हैं? उसका रंग व वेश कैसा है? उन्हें किस रंग से लगाव है? तुम हमें ठीक से बताओ, यदि तुम कपट करोगे, तो इसका फल अवश्य पाओगे। गोपियों के ऐसे तर्कपूर्ण प्रश्न सुनकर उद्धव ठगे से रह गए और उनका सारा ज्ञान का गर्व समाप्त हो गया।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. सूरदास जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– सूरदास जी को भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवि व वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है। इन्होंने अपने पदों में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं और प्रेमलीलाओं का बहुत मनमोहक चित्रण किया है। हिंदी कविता कामिनी के इस कमनीय कांत ने हिंदी भाषा को समृद्ध करने में जो योगदान दिया है, वह अद्वितीय है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इनके विषय में लिखा भी है, ''वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक वर्णन सूर ने अपनी बंद आँखों से किया, उतना संसार के किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का वे कोना-कोना झाँक आए।''

जीवन परिचय– सूरदास जी के जन्म व जन्म-स्थान के संबंध में विद्वानों में मतभेद हैं। साहित्यलहरी सूरदास जी की रचना है। इसमें साहित्यलहरी के रचना-काल के संबंध में निम्न पद मिलता है—

मुनि पुनि के रस लेख।
दसन गौरीनंद को लिखि सुवल संवत् पेख॥

इसका अर्थ विद्वानों ने संवत् 1607 वि. माना है, इसलिए 'साहित्यलहरी' का रचना-काल संवत् 1607 वि. माना जाता है। सूरदास जी का जन्म सं. 1537 वि. के लगभग मानते हैं क्योंकि बल्लभ संप्रदाय में ऐसी मान्यता है कि बल्लभाचार्य सूरदास से दस दिन बड़े थे और बल्लभाचार्य का जन्म उक्त संवत् की वैशाख कृष्ण एकादशी को हुआ था। इसलिए सूरदास की जन्म-तिथि वैशाख शुक्ल पंचमी, संवत् 1535 वि. मानते हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार सूरदास जी का जन्म आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क पर स्थित रुनकता नामक गाँव में सन् 1478 ई. (वैशाख शुक्ल पंचमी, मंगलवार, संवत् 1535 वि.) में हुआ था। कुछ विद्वान् इनका जन्म दिल्ली के निकट सीही ग्राम में मानते हैं। इनके पिता पं. रामदास थे, जो एक सारस्वत ब्राह्मण थे। सूरदास जन्मान्ध थे या नहीं, इस संबंध में भी अनेक मत हैं। श्यामसुंदर दास ने इनके बारे में लिखा है—''सूर वास्तव में जन्मान्ध नहीं थे, क्योंकि शृंगार व रंग-रूपादि का जो वर्णन उन्होंने किया है वैसा कोई जन्मान्ध नहीं कर सकता।'' अत: ऐसा माना जाता है कि ये जन्म के बाद अंधे हुए होंगे। सूरदास जी द्वारा लिखित निम्न पंक्ति से इस बात का पता चलता है—'**श्री गुरु बल्लभ तत्व सुनायो, लीला भेद बतायो।**' सूरदास जी पहले दीनता के पद गाया करते थे, किंतु बल्लभाचार्य के संपर्क में आने के बाद ये कृष्ण लीला का गान करने लगे। सूरदास से प्रभावित होकर ही तुलसीदास ने 'श्रीकृष्णगीतावली' की रचना की थी।

बल्लभाचार्य के पुत्र बिट्ठलनाथ ने 'अष्टछाप' के नाम से आठ कृष्णभक्त कवियों का संगठन किया था। सूरदास अष्टछाप के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। बिट्ठलनाथ ने इन्हें 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा है। इनका देहावसान सन् 1583 ई. में गोसाई

बिट्ठलनाथ के सामने गोवर्द्धन की तलहटी में पारसोली नामक ग्राम में हुआ था। निम्नलिखित गुरु वंदना संबंधी पद का गान करते हुए इन्होंने अपने शरीर को त्यागा–

भरोसो दृढ़ इन चरनन केरो।
श्रीबल्लभ नख-छंद-छटा बिनु सब जग माँझ अँधेरो।।

साहित्यिक परिचय– सूरदार ने प्रेम और विरह के द्वारा सगुण मार्ग से कृष्ण को साध्य माना था। उनके कृष्ण सखा रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर थे। सूरदास ने कृष्ण की बाल-लीलाओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है।

बाल-जीवन का कोई पक्ष ऐसा नहीं, जिस पर इनकी दृष्टि न पड़ी हो। इसलिए इनका बाल-वर्णन विश्व-साहित्य की अमर-निधि बन गया है। 'सूरदास' का एक प्रसंग 'भ्रमरगीत' कहलाता है। इस प्रसंग में गोपियों के प्रेमावेश ने ज्ञानी उद्धव को भी प्रेमी व भक्त बना दिया। इनके विरह-वर्णन में गोपियों के साथ-साथ ब्रज की प्रकृति भी विषादमग्न दिखाई देती है।

2. सूरदास जी की कृतियों व भाषागत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– **रचनाएँ–** सूरदास जी द्वारा लिखित ग्रंथ निम्नलिखित हैं–

(अ) सूरसागर– यह सूरदास जी की प्रसिद्ध रचना है। जिसमें इन्होंने सवा लाख पद संग्रहित किए थे। परंतु अब सात-आठ हजार पद ही मिलते हैं।

(ब) सूरसारावली– यह ग्रंथ अभी तक विवादास्पद स्थिति में है परंतु कथावस्तु, भाव, भाषा-शैली और रचना की दृष्टि से नि:संदेह सूरदास जी की प्रामाणिक रचना है। इनमें 1,107 छंद हैं।

(स) साहित्यलहरी–'साहित्यलहरी' में सूरदास के 118 दृष्टकूट पदों का संग्रह है। 'साहित्यलहरी' में किसी एक विषय की विवेचना नहीं की गई है। इसमें मुख्य रूप से नायिकाओं एवं अलंकारों की विवेचना की गई है। कहीं-कहीं पर श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन भी किया गया है तथा एक-दो स्थानों पर 'महाभारत' की कथा के अंशों की भी झलक है।

भाषागत विशेषताएँ– गहन दार्शनिक भावों को कोमल एवं सुकुमार भावनाओं के माध्यम से व्यक्त करना इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। इनकी कविताओं में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों समान रूप से प्रभावपूर्ण हैं। सभी पद गेय हैं, अत: उनमें माधुर्य गुण की प्रधानता है। इनके काव्यों में भाव-साम्य पर आधारित उपमाओं, उत्प्रेक्षाओं और रूपकों का प्रभाव देखने को मिलता है। इनकी कविताएँ ब्रजभाषा में हैं। माधुर्य की प्रधानता के कारण भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गई है। सूरदास जी ने सरल एवं प्रभावपूर्ण शैली का प्रयोग किया है। इनका काव्य मुक्तक शैली पर आधारित है। कुछ रचनाओं में सूरदास ने कथा-वर्णन शैली का प्रयोग भी किया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) चरन-कमल बंदौं .... बंदौं तिहिं पाइ।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्य हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' में 'सूरदास' द्वारा रचित 'सूरसागर' ग्रंथ से 'पद' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य में भक्त कवि सूरदास जी ने श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन करते हुए उनके चरणों की वंदना की है।

व्याख्या– सूरदास जी श्रीकृष्ण के कमलरूपी चरणों की वंदना करते हुए कहते हैं कि इन चरणों का प्रभाव बहुत व्यापक है। इनकी कृपा हो जाने पर लँगड़ा व्यक्ति भी पर्वतों को लाँघ लेता है और अंधे को सब कुछ दिखाई देने लगता है। इन चरणों के अनोखे प्रभाव के कारण बहरा व्यक्ति सुनने लगता है और गूँगा पुन: बोलने लगता है। किसी दरिद्र व्यक्ति पर श्रीकृष्ण के चरणों की कृपा हो जाने पर वह राजा बनकर अपने सिर पर राज-छत्र धारण कर लेता है। सूरदास जी कहते हैं कि ऐसे दयालु प्रभु श्रीकृष्ण के चरणों की मैं बार-बार वंदना करता हूँ।

काव्यगत सौंदर्य– 1. ईश्वर के चरणों की महिमा का वर्णन करते हुए उनके प्रति भक्ति भाव की शक्ति का महत्व बताया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश और अनुप्रास **7. छंद–** गेय पद।

(ब) मैं अपनी सब गाइ .... प्रात जान में दैहौं।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में बालक श्रीकृष्ण की माता यशोदा से किए जा रहे स्वाभाविक बाल-हठ का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– श्रीकृष्ण अपनी माता यशोदा से हठ करते हुए कहते हैं कि हे माता! मैं अपनी सब गायों को चराने के लिए वन में जाऊँगा। प्रात: होते ही मैं अपने बड़े भाई बलराम के साथ गाएँ चराने चला जाऊँगा और तुम्हारे रोकने पर भी न रुकूँगा। मुझे ग्वाल-बालों और गायों के बीच में रहते हुए जरा भी भय नहीं लगता। मैं नंद बाबा की कसम खाकर कहता हूँ कि आज रात्रि में मैं जागता रहूँगा, सोऊँगा नहीं। कहीं ऐसा न हो कि सवेरा होने पर मेरी आँखें ही न खुलें और मैं गायें चराने न जा सकूँ। हे माता! ऐसा नहीं हो सकता कि सब ग्वाले तो गायें चराने चले जाएँ और मैं अकेला घर पर बैठा रहूँ। सूरदास जी कहते हैं कि बालक श्रीकृष्ण की बात सुनकर माता यशोदा उनसे कहती हैं कि मेरे लाल! अब तुम निश्चित होकर सो जाओ। प्रात:काल मैं तुम्हें गायें चराने के लिए अवश्य जाने दूँगी।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इस पद में सूरदास के बाल-चित्रण की अद्‌भुत प्रतिभा का दर्शन होता है। **2.** श्रीकृष्ण द्वारा गाय चराने की बाल हठ की स्वाभाविक एवं सजीव अभिव्यक्ति की गई है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वात्सल्य **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** गेय पद।

(स) सखी री, मुरली .... राग की डोरि॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में सूरदास जी ने वंशी के प्रति गोपियों के ईर्ष्या-भाव को व्यक्त किया है।

व्याख्या– गोपियाँ श्रीकृष्ण की वंशी को अपनी वैरी सौतन समझती हैं। एक गोपी दूसरी गोपी से कहती है कि हे सखी! अब हमें श्रीकृष्ण की यह मुरली चुरानी होगी; क्योंकि इस मुरली ने गोपाल को अपनी ओर आकर्षित कर अपने वश में कर लिया है और श्रीकृष्ण ने भी मुरली के वशीभूत होकर हम सभी को भुला दिया है। कृष्ण घर के भीतर हों या बाहर, कभी क्षणभर को भी मुरली नहीं छोड़ते। कभी हाथ में रखते हैं तो कभी होंठों पर और कभी कमर में खोंस लेते हैं। इस तरह से श्रीकृष्ण उसे कभी भी अपने से दूर नहीं होने देते। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है कि वंशी ने कौन-सा मोहिनी मंत्र श्रीकृष्ण पर चला दिया है, जिससे श्रीकृष्ण पूरी तरह से उसके वश में हो गए हैं। सूरदास जी कहते हैं कि गोपी कह रही है कि हे सजनी! इस वंशी ने श्रीकृष्ण का मन प्रेम की डोरी से बाँधकर कैद कर लिया है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने मुरली के प्रति गोपियों के मन में उठने वाले ईर्ष्या के भाव का सजीव और स्वाभाविक वर्णन किया है। **2.** गोपियाँ मुरली को अपनी सौत समझती हैं क्योंकि वह कृष्ण को अति प्रिय है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक और गीताम्क **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास और रूपक **8. छंद–** गेय पद, **9. शब्द-शक्ति–** लक्षणा।

(द) ऊधौ मोहिं ब्रज .... हित जदु-तात॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद में उद्धव ने मथुरा पहुँचकर श्रीकृष्ण को वहाँ की सारी स्थिति बताई, जिसे सुनकर श्रीकृष्ण भाव-विभोर हो गए। इस पर वे उद्धव से अपनी मनोदशा व्यक्त करते हैं।

व्याख्या– उद्धव द्वारा ब्रजवासियों की दीन-दशा के बारे में सुनकर श्रीकृष्ण जी भाव-विभोर हो जाते हैं और उनके ध्यान में खो जाते हैं। वे उद्धव से कहते हैं कि मैं ब्रज को भूल नहीं पाता हूँ। वृंदावन और गोकुल के वन-उपवन सभी मुझे याद आते रहते हैं। वहाँ के घने कुंजों की छाया को भी मैं भूल नहीं पाता। नंदबाबा और यशोदा मैया को देखकर मुझे जो सुख मिलता था, वह मुझे रह-रहकर याद आता है। वे मुझे मक्खन, रोटी और भली प्रकार जमाया हुआ दही कितने प्रेम से खिलाते थे? ब्रज की गोपियों और ग्वाल-वालों के साथ खेलते हुए मेरे सभी दिन हँसते हुए बीता करते थे। ये सभी बातें मुझे बहुत याद आती हैं। सूरदास जी ब्रजवासियों को धन्य मानते हैं और उनके भाग्य की सराहना करते हैं; क्योंकि श्रीकृष्ण को उनके हित की चिंता है और श्रीकृष्ण इन ब्रजवासियों का प्रति क्षण ध्यान करते हैं।

काव्यगत सौंदर्य- 1. इस पद में श्रीकृष्ण के भावुक हृदय के सात्विक भावों की व्यंजना हुई है। **2.** अपने ब्रज-प्रवास के विभिन्न कार्यों की याद श्रीकृष्ण को व्याकुल कर देती है। सूरदास भी ऐसे स्थानों पर द्रवित हो जाते हैं। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास और विरोधाभास **8. छंद–** गेय पद।

(य) ऊधौ जाहु तुमहिं .... तब नैकहुँ मुसकाने॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में गोपियाँ उद्धव के साथ परिहास करती हैं और कहती हैं कि श्रीकृष्ण ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है, वरन् तुम अपना मार्ग भूलकर यहाँ आ गए हो या श्रीकृष्ण ने तुम्हें यहाँ भेजकर तुम्हारे साथ मजाक किया है।

व्याख्या– गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि तुम यहाँ से वापस चले जाओ। हम तुम्हें समझ गई हैं। श्याम ने तुम्हें यहाँ नहीं भेजा है। तुम स्वयं बीच से रास्ता भूलकर यहाँ आ गए हो। ब्रज की नारियों से योग की बात करते हुए तुम्हे लज्जा नहीं आ रही है। तुम बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे,परंतु हमें ऐसा लगता है कि तुममें विवेक नहीं है, नहीं तो तुम ऐसी अज्ञानतापूर्ण बातें हमसें क्यों करते? तुम अच्छी प्रकार मन में विचार लो कि हमसे ऐसा कह दिया तो कह दिया, अब ब्रज में किसी अन्य से ऐसी बात न कहना। हमने तो सहन भी कर लिया, कोई दूसरी गोपी इसे सहन नहीं करेगी। कहाँ तो हम अबला नारियाँ और कहाँ योग की नग्न अवस्था, अब तुम चुप हो जाओ और सोच-समझकर बात कहो। हम तुमसे एक अंतिम सवाल पूछती हैं, सच-सच बताना, तुम्हें अपनी कसम है, जो तुम सच न बोले। सूरदास जी कहते है कि गोपियाँ उद्धव से पूछ रही हैं कि जब श्रीकृष्ण ने उनको यहाँ भेजा था, उस समय वे थोड़ा-सा मुस्कराए या नहीं? वे अवश्य मुस्कराए होंगे, तभी तो उन्होंने तुम्हारे साथ उपहास करने के लिए तुम्हें यहाँ भेजा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. शपथ देकर पूछने से गोपियों के मन में छिपी प्रेम-भावना व्यक्त हुई है। गोपियाँ मानती हैं कि चतुर श्रीकृष्ण ने उद्धव को प्रेम की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ही ब्रज में भेजा है। **2.** यहाँ गोपियों के आक्रोश और तर्कशीलता का स्वाभाविक चित्रण हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** गेय पद।

(र) निरगुन कौन देस .... सबै मति-नासी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद में सूरदास ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण ब्रह्म की उपासना का खंडन तथा सगुण कृष्ण की भक्ति का मंडन किया है।

व्याख्या– गोपियाँ 'भ्रमर' की अन्योक्ति से उद्धव को संबोधित करती हुई पूछती हैं कि हे उद्धव! तुम यह बताओ तुम्हारा वह निर्गुण ब्रह्म किस देश का रहने वाला है? हम तुमको शपथ दिलाकर सच-सच पूछ रही हैं, कोई हँसी (मजाक) नहीं कर रही हैं। तुम यह बताओ कि उस निर्गुण का पिता कौन है? उसकी माता का क्या नाम है? उसकी पत्नी और दासियाँ कौन-कौन हैं? उस निर्गुण ब्रह्म का रंग कैसा है, उसकी वेश-भूषा कैसी है और उसकी किस रस में रुचि है? गोपियाँ उद्धव को चेतावनी देती हुई कहती हैं कि हमें सभी बातों का ठीक-ठीक उत्तर देना। यदि सही बात बताने में जरा भी छल-कपट करोगे तो अपने किए का फल अवश्य पाओगे। सूरदास जी कहते हैं कि गोपियों के ऐसे प्रश्नों को सुनकर ज्ञानी उद्धव ठगे से रह गए और उनका सारा ज्ञान-गर्व अनपढ़ गोपियों के सामने नष्ट हो गया।

काव्यगत सौंदर्य– 1. ज्ञानियों का विवेक भी अज्ञानियों के तर्क के सामने शून्य होकर रह जाता है। सूरदास ने निर्गुण ब्रह्म के प्रति अज्ञानता से भरी गोपियों के अद्‌भुत तर्क से हुई उद्धव की विचित्र मनोदशा का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। **2.** गोपियों के प्रश्न सीधे-सादे होकर भी व्यंग्यपूर्ण हैं। यहाँ कवि की कल्पना शक्ति और स्त्रियों की अन्योक्ति में व्यंग्य करने की स्वभावगत प्रवृत्ति का बड़ा ही मनोरम वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वियोग शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण और अन्योक्ति **8. छंद–** गेय पद।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) चरन-कमल बंदौ हरि राइ।

भाव-स्पष्टीकरण– यहाँ कवि सूरदास के भाव तीनों लोकों के नाथ श्रीकृष्ण के चरणों की बार-बार वंदना करने से है क्योंकि इनकी कृपा दृष्टि होने पर लँगड़ा व्यक्ति पर्वत लाँघ सकता है, अंधा देख सकता है, बहरा सुन सकता है और दरिद्र व्यक्ति मुकुटधारी राजा बन सकता है अर्थात् केवल इनकी कृपा दृष्टि से ही असंभव काम भी संभव बन सकते हैं।

(ब) रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति- बिनु निरालंब कित धावै।

भाव-स्पष्टीकरण– सूरदास जी निर्गुण बह्म की अपेक्षा सगुण श्रीकृष्ण के उपासक थे। वे कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्म का न तो कोई रूप है, न ही आकृति है, न ही उसकी कोई विशेषता है, न ही जाति और न ही उसे प्राप्त करने की कोई युक्ति है। ऐसी स्थिति में बिना किसी आधार के भक्त कहाँ-कहाँ दौड़ते रहें। अत: इससे तो सगुण ब्रह्म की लीलाओं का वर्णन करना ही ठीक है।

(स) कौ है जनक, कौन है जननी, कौन नारि, को दासी?

भाव-स्पष्टीकरण– यहाँ सूरदास जी ने गोपियों के माध्यम से निर्गुण बह्म के प्रति संदेहता व्यक्त करते हुए कहा है कि निर्गुण ब्रह्म कौन है, उनके माता-पिता कौन हैं, उनकी पत्नी व दासी कौन है अर्थात् सूरदास जी निर्गुण ब्रह्म के बारे में सारी बातें जानना चाहते हैं। जिससे उन्हें उन पर विश्वास हो जाए।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सूरदार जी किस भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) ज्ञानाश्रयी (ब) प्रेमाश्रयी

(स) रामाश्रयी (द) **कृष्णाश्रयी**

2. निम्न में से कौन-सी कृति सूरदास जी की है?

(अ) **सूरसागर** (ब) प्रेमवाटिका

(स) नीहार (द) सांध्यगीत

3. अष्टछाप कितने कवियों का संगठन है?

(अ) **आठ** (ब) तीन

(स) पाँच (द) चार

4. सगुणमार्गी कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं–

(अ) घनानंद (ब) तुलसीदास

(स) कबीरदास (द) **सूरदास**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार, रस व उसके स्थायी भाव की विवेचना कीजिए–

(अ) चरन कमल बंदौ हरि राइ।

उ०– अलंकार – रूपक

रस – भक्ति

स्थायीभाव – देव विषयक रति

(ब) रूप-रेख-गुन-जाति- जुगति बिनु निरालंब कित धावै।
सब विधि आगम बिचारहिं तातैं सूर सगुन-पद गावै।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास

रस – भक्ति

स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(स) कनक-भूमि पर कर-पग छाया, यह उपमा इक राजति।

उ०– अलंकार – उपमा और अनुप्रास

रस – वात्सल्य

स्थायी भाव – संतान-विषयक रति

(द) जोइ-जोइ माँगत सोइ-सोइ देती, क्रम-क्रम करि कै न्हाते।।

उ०– अलंकार – पुरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास

रस – वात्सल्य

स्थायी भाव – संतान-विषयक रति

(य) निरगुन कौन देश कौ बासी?

उ०– अलंकार – मानवीकरण

रस – हास्य

स्थायी भाव – हास

2. निम्नलिखित शब्दों में से तत्सम, तद्भव और देशज शब्द छाँटकर अलग-अलग लिखिए–

उ०– तत्सम – ग्वाल, गृह, बिम्ब, पंगु, करि, सघन, सखा

देशज – छोटा, टेव, अलक, लड़ैतो, कान्ह

तद्भव – चरन, जोग, इंद्री, पानि, नैन

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

2. धनुष भंग, वन पथ पर (गोस्वामी तुलसीदास)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– तुलसीदास जी का जन्म सन् 1532 ई. में बाँदा जिले के राजापुर ग्राम में हुआ था।

2. तुलसीदास जी के माता-पिता तथा पत्नी का नाम लिखिए।

उ०– तुलसीदास जी की माता का नाम हुलसी व पिता का नाम आत्माराम दुबे था। इनकी पत्नी का नाम रत्नावली था।

3. 'श्रीरामचरितमानस' के लेखक का नाम बताइए।

उ०– 'श्रीरामचरितमानस' के लेखक गोस्वामी तुलसीदास जी हैं।

4. 'श्रीरामचरितमानस' की रचना कब और कहाँ हुई? यह कितने समय से पूर्ण हुई?

उ०– 'श्रीरामचरितमानस' की रचना संवत् 1631 के प्रारंभ में रामनवमी के दिन अयोध्या में प्रारंभ हुई। यह दो वर्ष, सात माह, छब्बीस दिन में पूर्ण हुई।

5. तुलसीदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– तुलसीदास जी की तीन प्रसिद्ध रचनाएँ है– श्रीरामचरितमानस, विनय–पत्रिका और कवितावली।

6. तुलसीदास जी द्वारा रचित 'कवितावली', 'गीतावली', तथा 'श्रीरामचरितमानस' में मुख्यतः किस भाषा का प्रयोग किया गया है?

उ०– तुलसीदास जी द्वारा रचित कवितावली, गीतावली में ब्रज भाषा तथा श्रीरामचरितमानस में मुख्यत: अवधी भाषा का प्रयोग किया गया है।

7. श्रीराम को मार्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित करने वाले प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम लिखिए।

उ०– श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रतिष्ठित करने वाला प्रसिद्ध ग्रंथ 'श्रीरामचरितमानस' है।

8. तुलसीदास जी किस भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं?

उ०– तुलसीदास जी रामाश्रयी भक्तिशाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

9. तुलसीदास जी ने 'विनय पत्रिका' में कौन–सी शैली का प्रयोग किया है?

उ०– तुलसीदास जी ने 'विनय पत्रिका' में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है।

10. तुलसीदास जी की मृत्यु कब व कहाँ हुई?

उ०– तुलसीदास जी की मृत्यु संवत् 1680 वि. (1623 ई.) में श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन काशी के असी घाट पर हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. राम के मंच पर विराजमान् होने का वहाँ उपस्थित राजाओं पर क्या प्रभाव पड़ा? उस समय मुनियों और देवताओं की क्या स्थिति हुई?

उ०– राम के मंच पर विराजमान होते ही सभा में उपस्थित अन्य राजाओं की सीता से विवाह की आशा समाप्त हो गई और उनके वचनरूपी तारों का समूह बंद हो गया अर्थात् वे मौन हो गए। अभिमानी राजारूपी कुमुद राम को देखकर मुरझा गए और कपटी राजारूपी उल्लू छिप गए। उस समय सभा में उपस्थित मुनि व देवता शोक से रहित होकर प्रसन्न हो गए।

2. राम को देखकर सीता जी की माता के बिलखने पर सखी ने उन्हें किस प्रकार समझाया?

उ०– सीता जी की माता राम को देखकर और उन्हें अत्यंत सुंदर और सुकोमल जानकर वात्सल्य (प्रेम) पूर्वक विलाप करने लगती है। जिस पर उनकी सखी उन्हें समझाती हुई कहती है कि हे रानी! तेजवान व्यक्तियों को छोटा होने पर भी छोटा नहीं समझना चाहिए। जिस प्रकार घड़े से उत्पन्न होने वाले छोटे–से मुनि अगस्त्य ने विशाल समुद्र को सोख लिया था। जिनका यश सारे संसार में व्याप्त है। इसी प्रकार सूर्य देखने में छोटा लगता है, किंतु इसके उदय से तीनों लोकों का अंधकार भाग जाता है। ओऽम् का मंत्र अत्यंत छोटा है परंतु उसके वश में सभी देवतागण हैं। इसलिए हे रानी! तुम राम के बालपन पर न जाओ। ये निश्चय ही धनुष–भंग करेंगे।

3. सीता जी का हृदय क्यों व्याकुल हो गया था?

उ०– सीता जी का हृदय श्रीराम को देखकर अर्थात् उनके सुकोमल तथा बाल व्यक्तित्व का अवलोकन करके व्याकुल हो गया था। वे व्याकुल होकर मन-ही-मन में प्रार्थना करती है कि हे भगवान शंकर! हे माता पार्वती! मुझ पर प्रसन्न होकर मेरी सेवा आराधना का फल मुझे प्रदान करते हुए धनुष की गुरुता अर्थात् भारीपन को बहुत ही कम कर दीजिए।

4. पंडितों की सभा में क्या अनुचित हो रहा था?

उ०– सीता जी की माता राम की कोमलता को देखकर विलाप करती हुई अपनी सखी से कहती है कि इस सभा में इतने ज्ञानी व पंडित विद्वान विराजमान हैं और स्वयं राजा जनक बहुत समझदार हैं। परंतु कोई भी श्रीराम के गुरु (विश्वामित्र) को समझाकर यह नहीं कहता कि श्रीराम बालक हैं और इनके लिए शिव-धनुष तोड़ने का हठ करना उचित नहीं है। जिसकी इनके गुरु ने इन्हें आज्ञा दे दी है। इस धनुष को तो रावण जैसे असुरों ने भी नहीं छुआ है और यहाँ उपस्थित सभी राजा घमंड करके पराजित हो चुके हैं। वहीं इस सुकुमार बालक के हाथ में धनुष तोड़ने के लिए देना इस बालक के लिए अनुचित है।

5. धनुष के समीप पहुँचकर राम ने लोगों को किस रूप में देखा?

उ०– धनुष के समीप पहुँचकर श्रीराम जी ने सभा में उपस्थित सभी लोगों को देखा। ये सभी लोग उन्हें चित्र में लिखे हुए के समान अर्थात् मूर्तिवत दिखाई पड़े। इसके बाद श्रीराम जी ने सीता जी की ओर देखा और उनको सबसे अधिक वे ही व्याकुल दिखाई दीं। जिनका एक-एक क्षण एक-एक कल्प (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष) के समान बीत रहा था।

6. राम द्वारा धनुष तोड़ने का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उ०– गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीराम जी ने सीता जी को बहुत ही व्याकुल देखा। जिनका एक-एक क्षण एक-एक कल्प के समान बीत रहा था। यदि प्यासा व्यक्ति पानी न मिलने पर अपने प्राणों का त्याग कर दे तो उसके चले जाने के बाद अमृत के तालाब का क्या प्रयोजन, सारी खेती के सूख जाने पर वर्षा किस काम की, समय के बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ ऐसा विचार कर श्रीराम ने सीता जी की ओर देखा और अपने प्रति विशेष प्रेम देखकर वे हर्ष से विह्वल हो उठे। उन्होंने मन-ही-मन गुरु विश्वामित्र को प्रणाम किया और कौशलपूर्वक तेजी से धनुष उठा लिया। जैसे ही उन्होंने धनुष को हाथ में उठाया, वह उनके हाथ में बिजली की तरह चमका और आकाश में मण्डलाकार हो गया। सभा में उपस्थित लोगों में से किसी ने भी राम को धनुष उठाते, चढ़ाते और जोर से खींचते नहीं देखा अर्थात् ये कार्य इतने शीघ्र हुए कि किसी को पता ही नहीं चला। सभी ने केवल राम को खड़े देखा और उसी क्षण उन्होंने धनुष को बीच से तोड़ दिया। धनुष के टूटने की भयंकर ध्वनि तीनों लोक में फैल गई।

7. 'धनुष-भंग' का अपने शब्दों में सारांश लिखिए।

उ०– 'धनुष-भंग' प्रसंग तुलसीदास जी कृत 'श्रीरामचरितमानस' के बालकांड से लिया गया है। इसमें कवि ने सीता जी के स्वयंवर सभा का अनुपम वर्णन किया है।

कवि कहते हैं कि जब श्रीराम स्वयंवर सभा में विशाल मंच पर विराजमान् हुए तो सभी सज्जन पुरुष अत्यंत प्रसन्न हो गए और सभी राजाओं की सीता से विवाह की आशा समाप्त हो गई। सभी मौन हो गए। अभिमानी राजारूपी फूल मुरझा गए व कपट राजारूपी उल्लू छिप गए। मुनि व देवता प्रसन्न हो गए और फूलों की वर्षा करने लगे। इसके बाद राम ने धनुष भंग के लिए अपने गुरु व अन्य मुनियों से आज्ञा ली।

राम को देखकर सीता जी की माता वात्सल्य के कारण विलाप करने लगती है तो उनकी सखी उन्हें समझाती है कि छोटा होने पर भी तेज से युक्त मनुष्य को छोटा नहीं मानना चाहिए। क्योंकि छोटे-से घड़े से उत्पन्न मुनि अगस्त्य ने विशाल समुद्र को सोखकर अपने यश को संसार में फैला दिया था और छोटे से सूर्य के उदय से ही तीनों लोकों का अंधकार समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार आप भी अपने संदेह को त्याग दें। श्रीराम धनुष को अवश्य भंग करेंगे। सखी के मुख से सांत्वनादायक वचनों को सुनकर जनक-पत्नी को राम के ऊपर विश्वास हो गया। इसी समय श्रीराम को देखकर सीता जी बहुत व्याकुल हो गईं और उन्हें जो भी देवता ध्यान में आए, उनसे राम जी की सहायता की विनती करने लगी। सीता जी शिव व पार्वती से धनुष के भारीपन को हल्का करने की बार-बार विनती करने लगी। सीता जी बार-बार राम को देखती और धैर्य धारण कर देवताओं से मनोवांछित वर के लिए विनती करती। उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू थे तथा उनका शरीर रोमांचित हो रहा था। श्रीराम को देखकर सीता का मन अपने पिता के प्रण को याद करके दु:खी हो जाता है और वह स्वयं से कहती है कि धनुष

तो वज्र से भी कठोर है और श्रीराम बहुत सुकोमल हैं। वह बार-बार ब्रह्मा जी से तथा अंत में शिव धनुष से अनुनय विनय करती है। श्रीराम को देखकर सीता जी ने प्रेम का निश्चय कर लिया था। उनके इन भावों को श्रीराम जी जान गए। लक्ष्मण ने जब श्रीराम को शिव जी के धनुष के पास देखा तो वे संपूर्ण ब्रह्मांड को अपने पैरों में दबाकर बोले हे कच्छप! हे शेषनाग! हे वाराह इस पृथ्वी को धैर्य के साथ पकड़े रखो, जिससे यह न हिल पाए। श्रीराम जी शिव-धनुष को तोड़ना चाहते हैं अत: आप सभी मेरी आज्ञा सुनकर सावधान हो जाएँ।

श्रीराम ने सभा में बैठे लोगों की ओर देखा जो मूर्ति के समान बैठे थे, इसके बाद उन्होंने व्याकुल सीता जी की ओर देखा और मन में अपने गुरु को प्रणाम कर अत्यधिक स्फूर्ति के साथ धनुष उठाकर उसकी डोरी खींच दी। जिसके टूटने की आवाज इतनी भयंकर हुई कि वह तीनों लोकों में व्याप्त हो गई। जिसके कारण सूर्य देव के घोड़े भी अपना मार्ग छोड़कर चलने लगे, दिशाओं की रक्षा करने वाले हाथी चिंघाड़ने लगे, संपूर्ण पृथ्वी डोलने लगी, शेषनाग, कछुआ व वाराह भी व्याकुल हो गए। देवता, राक्षस और मुनि ने अपने कानों पर हाथ रख लिए। अंत में यह जानकर कि श्रीराम ने शिव जी के धनुष को तोड़ दिया है, सब श्रीराम की जय-जयकार करने लगे।

8. वनवास के लिए जाते समय अयोध्या से कुछ ही दूर पहुँचने पर सीता जी ने श्रीराम से क्या कहा? विस्तार में बताइए।

उ०– वनवास के लिए जाते समय अयोध्या से कुछ दूर पहुँचने पर सीता जी श्रीराम से पूछती है कि हमें अभी कितना और चलना है? कितनी दूरी पर आप पर्णकुटी बनाएँगे। आगे वे कहती हैं कि लक्ष्मण जल लेने के लिए गए हुए हैं, अत: घड़ी भर के लिए किसी पेड़ की छाया में खड़े होकर हमें उनकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। इतने समय में मैं आपका पसीना पोंछकर हवा कर दूँगी और गर्म बालू पर चलने के कारण आपके पैर जल गए होंगे, उन्हें मैं धो दूँगी।

9. राम, लक्ष्मण तथा सीता जी को वन में जाते देखकर ग्राम की स्त्री अपनी सखी से क्या कहती है?

उ०– राम, लक्ष्मण तथा सीता जी को वन में जाते देखकर ग्राम की स्त्री अपनी सखी से कहती है कि रानी कैकयी कितनी अज्ञानी व कठोर हृदय वाली नारी हैं, जिन्हें ऐसे सुकुमार राजकुमारों को वनवास देते समय जरा भी दया नहीं आई। राजा दशरथ भी विवेकहीन हैं जिन्होंने पत्नी के कहने पर इन्हें वनवास दे दिया। उन्हें उचित-अनुचित का ज्ञान ही नहीं है। वह कहती है कि इन सुंदर मूर्तियों के समान राजकुमारों से बिछड़कर इनके प्रियजन कैसे जीवित रह सकेंगे। ये लोग तो आँखों में बसाने योग्य हैं, तब इन्हें वनवास किस कारण दिया गया है।

10. गाँव की स्त्री की बात सुनकर अन्य स्त्रियों की स्थिति क्या हुई?

उ०– गाँव की स्त्री की बात सुनकर अन्य स्त्रियाँ भी रानी कैकेयी को कठोर हृदय और राजा दशरथ को विवेकहीन मानती हैं। वे स्त्रियाँ श्रीराम के रूप को अपने नैनों में बसाते हुए सीता जी से राम के साथ उनका संबंध पूछती है।

11. गाँव की स्त्रियों ने सीता जी से क्या प्रश्न किया तथा सीता जी ने उस प्रश्न का किस प्रकार उत्तर दिया?

उ०– गाँव की स्त्रियाँ सीता जी से प्रश्न पूछते हुए कहती हैं कि जिनके सिर पर जटाएँ हैं, जिनकी भुजाएँ और वक्षस्थल विशाल हैं, नेत्र लाल है, भौहें तिरछी हैं, जिन्होंने तरकश, बाण और धनुष धारण किए हुए हैं, जो वन के मार्ग में सुशोभित हो रहे हैं और बार-बार आदर व चाव से तुम्हारी तरफ देखते हुए हमारे मन को मोहित कर रहे हैं। हे सखी! ये बताओ, वे साँवले से तुम्हारे कौन हैं? सीता जी ने मर्यादा का पालन करते हुए संकेतों के द्वारा उन्हें बता दिया। अपने नेत्र तिरछे करके, इशारा करते हुए मुस्कुराकर, सीता जी ने उन्हें बता दिया कि श्रीराम उनके पति हैं।

12. 'वन-पथ पर' कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– कवि तुलसीदास ने इस कविता में सीता जी की मनोस्थिति व राम का सीता के प्रति प्रेम के भाव को प्रदर्शित किया है कि सीता जी अयोध्या से कुछ दूर जाने पर थक जाती हैं, उनके माथे पर पसीना आ जाता है और होंठ सूख जाते हैं और राम से दूरी के विषय में पूछती हैं। सीता की अधीरता व थकावट को जानकर प्रेमपूर्वक राम की आँखों में अश्रु प्रवाहित हो जाते हैं। यहाँ कवि ने सीता की संकोचपूर्ण मनोस्थिति को भी व्यक्त किया है, जब वे थक जाती हैं परंतु संकोच के कारण आराम के लिए नहीं कहती हैं तथा दृढ़ता के साथ अपने पतिव्रत धर्म का पालन करती हैं। इस कविता में कवि ने सीता के रूप में नारी के लिए आदर्श उपस्थित कर समाज को अपने कर्तव्य के पालन का संदेश दिया है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. तुलसीदास जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– प्राचीनकाल से ही कलम एक आम आदमी को भी संतों की श्रेणी में सम्मिलित करने का कार्य करती है। भक्ति, भाव और

कलम के मिलन ने भारत को अनेक संत, विद्वान और कवि दिए हैं, जिन्होंने समय-समय पर हिंदी-साहित्य को अपनी रचनाओं के माध्यम से अलंकृत किया है। ऐसे ही एक महान संत और कवि थे— रामभक्त तुलसीदास। 'श्रीरामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास एक महान कवि होने के साथ-साथ पूजनीय भी हैं। तुलसीदास जी रामाश्रयी शाखा के सगुणोपासक कवि थे। इनके द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' मानव संस्कृति का अमर काव्य है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने तुलसीदास जी के संबंध में लिखा है—

कविता करके तुलसी न लसे, कविता लसी या तुलसी की कला।

जीवन परिचय– लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन-चरित्र से संबंधित प्रामाणिक सामग्री अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है। बेणीमाधवप्रणीत 'मूल गोसाईंचरित' तथा महात्मा रघुवरदास- रचित 'तुलसीचरित' में तुलसीदास जी का जन्म संवत् 1554 वि. (सन् 1497 ई.) दिया गया है। बेनीमाधव दास की रचना में गोस्वामी जी की जन्म-तिथि श्रावण शुक्ला सप्तमी बताई गई है। इस संबंध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है—

पंद्रह सौ चौवन बिसै, कालिंदी के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी धर्यौ शरीर॥

'शिवसिंह सरोज' में इनका जन्म संवत् 1583 वि. (सन् 1526 ई.) बताया गया है। पं० रामगुलाम द्विवेदी ने इनका जन्म संवत् 1589 वि. (सन् 1532 ई.) बताया है। इन सभी साक्ष्यों के आधार पर इनका जन्म संवत् 1583 वि. (सन् 1532 ई.) युक्तियुक्त माना जाता है। कुछ विद्वान इनका जन्म स्थान बाँदा जिले के 'राजापुर' ग्राम को मानते हैं। कुछ विद्वान् इनका जन्म स्थान 'सोरो' (एटा) मानते हैं तथा कुछ विद्वान 'सूकरक्षेत्र' या 'सूकरखेत' (गोंडा) मानते हैं। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। प्रचलित जनश्रुति के अनुसार ये अपने जन्म से ही अत्यधिक हृष्ट-पुष्ट थे और इनके दाँत भी दिखाई दे रहे थे। जन्म लेने के बाद प्राय: सभी शिशु रोया करते हैं, किंतु इन्होंने पहला शब्द राम बोला था। अतएव इनका घर का नाम ही 'रामबोला' रख दिया गया । इनकी माँ इन्हें जन्म देने के बाद दूसरे दिन ही चल बसी, इसी कारण इनके पिता ने इन्हें अशुभ मानकर 'चुनियाँ' नामक एक दासी को सौंप दिया। जब रामबोला साढ़े पाँच वर्ष के हुए तो चुनियाँ का भी देहांत हो गया।

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, गुरुवार, संवत्, 1583 वि. को 29 वर्ष की आयु में राजापुर से थोड़ी ही दूर यमुना के पास स्थित किसी ग्राम की भारद्वाज गोत्र की सुंदर कन्या रत्नावली के साथ इनका विवाह हुआ। एक बार रत्नावली के अपने मायके जाने पर तुलसीदास जी अत्यधिक व्याकुल हो गए। अत: ये भयंकर अँधेरी रात में यमुना नदी को तैरकर सीधे अपनी पत्नी के शयनकक्ष में पहुँच गए। रत्नावली इन्हें ऐसी दशा में देखकर क्रोधित हो गई ओर तुलसीदास जी को कहा—

''लाज न आई आपको दौरे आयेहु नाथ,
धिक-धिक ऐसे प्रेम को कहा करु मैं नाथ।
अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति।
नेकु जो होती राम से, काहे न होत भव-भीति?''

इस प्रकार पत्नी से लज्जित हो यह अपने ग्राम राजापुर लौट गए। राजापुर में अपने घर जाकर जब उन्हें यह पता चला कि उनकी अनुपस्थिति में उनके पिता भी नहीं रहे और पूरा घर नष्ट हो चुका है तो उन्हें और भी कष्ट हुआ। फिर तुलसीदास जी गाँव में ही रहकर लोगों को भगवान राम की कथा सुनाने लगे। कहते हैं कि संवत् 1607 की मौनी अमावस्या को बुधवार के दिन श्रीराम ने इन्हें बालक रूप में दर्शन दिए और तुलसीदास जी ने कहा-''बाबा! हमें चंदन चाहिए, क्या आप हमें चंदन दे सकते हैं?''

तभी तोते का रूप धारण कर हनुमान जी ने इनसे एक दोहा कहा—

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुबीर॥

इनकी मृत्यु संवत् 1680 वि. (1623 ई.) में श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन काशी के असी घाट पर हुई। इनकी मृत्यु के संबंध में निम्नलिखित दोहा प्रसिद्ध है—

संवत् सौलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर॥

साहित्यिक परिचय- तुलसीदास हिंदी काव्य-जगत की अमूल्य धरोहर हैं, उन्होंने 'श्रीरामचरितमानस' महाकाव्य में श्रीराम के मर्यादा पुरुषोत्तम चरित्र के अंकन के साथ-साथ श्रीराम को शिव जी का तथा शिव जी को श्रीराम का भक्त प्रदर्शित करके समन्वय की जो भावना स्थापित की, वह अद्वितीय है। निश्चय ही तुलसी हिंदी-साहित्य के अमर कवि हैं।

संवत् 1631 के प्रारंभ में प्रथम रामनवमी के दिन प्रात:काल तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' की रचना प्रारंभ की। दो वर्ष, सात माह, छब्बीस दिन में यह महान ग्रंथ संपन्न हुआ।

2. तुलसीदास जी की कृतियों तथा भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०- **रचनाएँ-**'श्रीरामचरितमानस' तुलसीदास जी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ है। अपने इस ग्रंथ में मानव-जीवन के सभी उच्चादर्शों को समावेश करके इन्होंने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया है। इन्होंने अपनी रचनाओं के संबंध में कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है, इसीलिए प्रामाणिक रचनाओं के संबंध में अंत: साक्ष्य का अभाव दिखाई देता है। इनकी कुछ रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

श्रीरामचरितमानस, रामललानहछू, वैराग्य-संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल, रामाज्ञा-प्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण-गीतावली, विनय-पत्रिका आदि।

भाषागत विशेषताएँ- अपने समय में प्रचलित दोहा, चौपाई, कविता, सवैया, पद आदि काव्य-शैलियों में तुलसीदास जी ने पूर्ण सफलता के साथ काव्य-रचना की है। इन्होंने 'श्रीरामचरितमानस' में प्रबंध शैली, 'विनय पत्रिका' में मुक्तक शैली, 'दोहावली' में साखी शैली का प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त और भी कई शैलियों का प्रयोग इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। स्वाभाविक रूप से सभी प्रकार के अलंकारों का प्रयोग करके तुलसी ने अपनी रचनाओं को प्रभावोत्पादक बना दिया है। इनका ब्रजभाषा तथा अवधी भाषा पर समान अधिकार था। 'कवितावली', 'गीतावली', 'विनय पत्रिका' आदि रचनाएँ ब्रजभाषा में हैं और 'श्रीरामचरितमानस' अवधी भाषा में। अवधी को साहित्यिक रूप प्रदान करने के लिए इन्होंने संस्कृत के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनके काव्य में कलापक्ष की पूर्णता को देखकर यह स्पष्ट हो जाता है कि तुलसीदास संस्कृत भाषा के साथ-साथ काव्य-शास्त्र के भी पंडित थे।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों को ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए-

(अ) उदित उदयगिरि .... रामु गनेस गोसाई॥

संदर्भ-प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्य खंड' के 'गोस्वामी तुलसीदास जी' द्वारा रचित 'श्रीरामचरितमानस' के बालकांड 'धनुष-भंग' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग- प्रस्तुत पद्य में धनुष-भंग के लिए बने हुए मंच पर रामचन्द्र जी के चढ़ने का तथा सभा में उपस्थित कतिपय राजाओं की स्थिति, राम की विनम्रता तथा संपूर्ण नगरवासियों की मनोवृत्ति का वर्णन किया गया है।

व्याख्या- श्री तुलसीदास जी कहते हैं कि उदयाचल पर्वत के समान बने हुए विशाल मंच पर श्रीरामचंद्र जी के रूप में बाल सूर्य के उदित होते ही सभी संत रूपी कमल खिल उठे और नेत्ररूपी भँवरे हर्षित हो उठे। आशय यह है कि श्रीराम के मंच पर चढ़ते ही सभा में उपस्थित सभी सज्जन पुरुष अत्यधिक प्रसन्न हो गए तथा सभा में उपस्थित अन्य राजाओं की आशारूपी रात्रि नष्ट हो गई और उनके वचनरूपी तारों के समूह का चमकना बंद हो गया, अर्थात् वे मौन हो गए। अभिमानी राजारूपी कुमुद संकुचित हो गए और कपटी राजारूपी उल्लू छिप गए। मुनि और देवतारूपी चकवे शोकरहित अर्थात् प्रसन्न हो गए। वे फूलों की वर्षा करके अपनी सेवा-अनुग्रह प्रकट करने लगे। इसके पश्चात श्रीरामचंद्र जी ने अत्यधिक स्नेह के साथ अपने गुरु विश्वामित्र के चरणों की वंदना करने के बाद वहाँ उपस्थित अन्य मुनियों से भी आज्ञा माँगी।

पुन: गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि समस्त चराचर जगत के स्वामी श्रीरामचन्द्र जी सुंदर, मतवाले और श्रेष्ठ हाथी की चाल से चले जो कि उनकी स्वाभाविक चाल थी। श्रीरामचंद्र जी के चलते ही सभा में उपस्थित नगर के सभी स्त्री-पुरुष प्रसन्न हो गए और उनके शरीर रोमांच से पुलकित हो गए। समस्त स्त्री-पुरुषों ने अपने पूर्वजों की वंदना की और अपने पुण्य कर्मों का स्मरण करते हुए कहा कि हे गणेश जी! यदि हमारे किए हुए पुण्य कर्मों का किंचित् भी फल मिलता हो तो श्रीरामचन्द्र जी शिव जी के इस प्रचण्ड धनुष को कमल की नाल (दण्ड) के समान तोड़ डालें। आशय यह है कि सभा में उपस्थित कुटिल और अभिमानी राजाओं के अतिरिक्त सभी व्यक्ति यह चाहते थे कि श्रीराम इस धनुष को तोड़ दें।

काव्यगत सौंदर्य- 1. स्वयंवर सभा में मंच पर विराजमान् श्रीराम की शोभा का अत्यंत मनोहारी वर्णन यहाँ रूपक के माध्यम से किया गया है। **2.** श्रीराम को सूर्य के रूप में उपस्थित कर कवि ने प्रात:कालीन प्राकृतिक छटा का मनोहर चित्रण

किया है, जो उनकी विलक्षण कवि प्रतिभा का प्रतीक है। **3.** धनुष भंग के लिए पहले गुरुओं व मुनियों से आज्ञा प्राप्त करने के उदाहरण से श्रीराम की विनयशीलता को प्रकट किया है। **4. भाषा–** अवधी **5. शैली–** प्रबंध, वर्णनात्मक **6. रस–** शृंगार **7. गुण–** प्रसाद **8. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक और उपमा **9. छंद–** चौपाई एवं दोहा।

(ब) मंत्र परम लघु .... प्रसन्न महेश भवानी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद्य में मन्त्र और अंकुश के द्वारा सभी देवताओं और हाथी को नियंत्रित किए जाने तथा सीता जी की माता जी का राम की क्षमता के संबंध में विश्वास और सीता द्वारा विभिन्न देवताओं की प्रार्थना किए जाने का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि धनुष-भंग के समय जब सीता जी की माता श्रीराम को छोटा समझकर, धनुष तोड़ने में असमर्थ मानकर अपनी सखी से शंका प्रकट करती हैं, तब उनकी सखी विभिन्न उदाहरणों के द्वारा उनको समझाती हुई कहती हैं कि, ''जिस मंत्र के वश में सभी देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि भी रहने को विवश होते हैं, वह मन्त्र भी अत्यधिक छोटा ही होता है।'' अत्यधिक विशाल और मदमत्त गजराज को भी महावत छोटे से अंकुश के द्वारा अपने वश में कर लेता है।

पुन: सीता जी की माता जी की सहेली उनको समझाती हुई कहती है कि कामदेव ने फूलों का ही धनुष-बाण लेकर समस्त लोकों को अपने वशीभूत कर रखा है। हे देवी! इस बात को अच्छी तरह से समझकर आप अपने सन्देह का त्याग कर दीजिए। हे रानी! आप सुनिए, श्रीरामचंद्र जी धनुष को अवश्य ही तोड़ देंगे। सखी के मुख से इस प्रकार के सान्त्वनादायक वचनों को सुनकर जनक-भामिनी को श्रीरामचंद्र जी की सामर्थ्य के संबंध में विश्वास हो गया, उनकी उदासी समाप्त हो गई और श्रीराम के प्रति उनके मन में स्नेह और भी अधिक बढ़ गया। इसी समय श्रीराम जी को देखकर; अर्थात् उनके सुकोमल बाह्य व्यक्तित्व का अवलोकन कर; सीता जी को जो भी देवता उनके ध्यान में आया, उससे राम जी की सहायता हेतु विनती करने लगीं।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि जनकनंदिनी सीता जी व्याकुलचित होकर मन-ही-मन में प्रार्थना कर रही हैं कि ''हे भगवान् शंकर! हे माता पार्वती! मुझ पर प्रसन्न हो जाइए।

काव्यगत विशेषताएँ– 1. सीता जी की माता की सखी के द्वारा राम की महानता का वर्णन किया गया है **2.** सीता जी की राम के प्रति अनुरक्ति और उनको प्राप्त करने हेतु देवताओं की स्तुति करके उन्हें मनाने के प्रयत्न में सीता जी के सात्विक प्रेम के दर्शन होते हैं। **3. भाषा–** अवधी **4. शैली–** प्रबंध और वर्णनात्मक **5. रस–** भक्ति एवं शृंगार **6. गुण–** प्रसाद एवं माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, दृष्टांत **8. छंद–** दोहा एवं चौपाई।

(स) देखि देखि रघुबीर .... जुग सयम जाहीं।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग–प्रस्तुत पद में सीता जी की श्रीराम के प्रति प्रेमानुरक्ति का वर्णन हुआ है।

व्याख्या– गोस्वामी तुलसीदासजी कहते हैं कि सीता जी बार-बार श्रीरामचंद्र जी की ओर देख रही हैं और धैर्य धारण करके देवताओं को मनोवांछित वर प्रदान करने के लिए मनाती जा रही हैं; अर्थात् अनुनय-विनय कर रही हैं। उनके नेत्रों में प्रेम के आँसू भरे हुए हैं और शरीर में रोमांच हो रहा है।

व्याख्या–श्रीरामचंद्र जी की शोभा-सौंदर्य को जी भरकर देख लेने के पश्चात और पिताश्री के प्रण का स्मरण करके सीता जी का मन दु:खी हो जाता है। वे मन-ही-मन विचार करने लगती हैं; अर्थात् स्वयं से ही कहने लगती हैं कि ''ओह! पिता जी ने बहुत ही कठोर हठ ठान ली है और वे इसका कुछ भी लाभ-हानि समझ नहीं पा रहे हैं। भयभीत होने के कारण (राजपद से) कोई भी मंत्री उन्हें उचित सलाह नहीं दे रहा है। वस्तुत: विद्वानों की सभा में यह बड़ा ही अनुचित कार्य हो रहा है। यह धनुष जो वज्र से भी अधिक कठोर है, जिसके समक्ष ये कोमल शरीर वाले श्याम वर्ण किशोर की क्या तुलना; अर्थात् कोई समानता ही नहीं है।''

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि जनकनंदिनी सीता जी ब्रह्मा से कहती हैं कि ''भाग्य को लिखने वाले हे विधाता! मैं अपने हृदय में किस तरह से धैर्य धारण करूँ, अर्थात् मैं धैर्य भी धारण नहीं कर सकती, क्योंकि सारी सभा की बुद्धि ही फिर गयी है। वे यह भी नहीं समझ पा रहे हैं कि कहीं शिरीष के फूल के कण से हीरे को छेदा जा सकता है।'' अत: सब ओर से निराश होकर हे शिव जी के धनुष! अब मुझे केवल तुम्हारा ही सहारा है। अब तुम अपनी कठोरता लोगों पर डाल दो और श्रीरामचंद्र जी के सुकुमार शरीर को देखकर उतने ही हल्के हो जाओ। इस प्रकार विचार करते-करते सीता जी के

मन में इतना संताप हो रहा है कि पलक झपकने में लगने वाले समय (निमेष) का एक अंश भी सौ युगों (समय-मापन का अत्यधिक दीर्घ परिमाण) के समान व्यतीत हो रहा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. सीता जी के मन में श्रीराम के प्रति अत्यधिक स्नेह के कारण उनकी सामर्थ्य के प्रति शंका उत्पन्न हो रही है। **2.** श्रीराम के शरीर की कोमलता का अनुभव कर ईश्वर से उन पर अनुग्रह करने की प्रार्थना की गई है। **3. भाषा–** अवधी **4. शैली–** प्रबंध **5. रस–** शृंगार, भक्ति **6. गुण–** माधुर्य, प्रसाद **7. अलंकार–** अनुप्रास, पुनरुक्तिप्रकाश, रूपक एवं उपमा **8. छंद–** दोहा एवं चौपाई।

(द) राम बिलोके लोग .... जयति वचन उचारहीं।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पद में समस्त सभा के साथ-साथ सीता जी की स्थिति तथा सीता जी का राम के प्रति प्रेम और शिव-धनुष के टूटने का वर्णन किया गया है। इस पद में तुलसीदास जी ने धनुष टूटने के बाद उत्पन्न हुई स्थिति का अत्यधिक आलंकारिक वर्णन किया है।

व्याख्या– गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि श्रीरामचंद्र जी ने सभा में उपस्थित सभी लोगों की ओर देखा। ये सभी लोग उन्हें चित्र में लिखे हुए के समान अर्थात् मूर्तिवत दिखाई पड़े। इसके पश्चात कृपानिधान श्रीरामचंद्र जी ने सीता जी की ओर देखा और उनको इन सबसे अधिक अर्थात् विशेष रूप से व्याकुल अनुभव किया। उनका एक-एक क्षण एक-एक कल्प (चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष : 4,32,00,00,000) के समान व्यतीत हो रहा था। यदि प्यासा व्यक्ति पानी न मिलने पर अपना शरीर छोड़ दे, तो उसके चले जाने पर अमृत का तालाब भी क्या करेगा, सारी खेती के सूख जाने पर वर्षा किस काम की, समय के बीत जाने पर फिर पछताने से क्या लाभ। आशय यह है कि समय के व्यतीत होने पर सब कुछ व्यर्थ हो जाता है। अपने हृदय में ऐसा विचार करके श्रीरामचंद्र जी ने सीता जी की ओर देखा और उनका अपने प्रति विशेष प्रेम देखकर वे हर्ष से विह्वल हो उठे। मन-ही-मन उन्होंने गुरु विश्वामित्र को प्रणाम किया और अत्यधिक स्फूर्ति के साथ धनुष को उठा लिया। जैसे ही उन्होंने धनुष को अपने हाथ में उठाया, वह उनके हाथ में बिजली की तरह चमका और आकाश में मंडलाकार हो गया। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि सभा में उपस्थित लोगों में से किसी ने भी श्रीरामचंद्र जी को धनुष उठाते, चढ़ाते और जोर से खींचते हुए नहीं देखा; अर्थात् ये तीनों ही काम इतनी शीघ्रता से हुए कि इसका किसी को पता ही नहीं लगा। सभी ने श्रीरामचंद्र जी को मात्र खड़े देखा और उसी क्षण उन्होंने धनुष को बीच में तोड़ डाला। धनुष के टूटने की ध्वनि इतनी भयंकर हुई कि वह तीनों लोकों में व्याप्त हो गयी।

गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि धनुष टूटने का घोर-कठोर शब्द त्रैलोक्य में व्याप्त हो गया जिससे सूर्य के घोड़े अपना नियत मार्ग छोड़कर चलने लगे; आठों दिशाओं में स्थित आठ दिग्गज अर्थात् दिशाओं की रक्षा करने वाले आठ हाथी चिंघाड़ने लगे, संपूर्ण पृथ्वी डोलने लगी; शेषनाग, वाराह और कछुआ भी बेचैन हो उठे; देवता, राक्षसगण और मुनिजन कानों पर हाथ रखकर (जिससे ध्वनि सुनाई न पड़े) व्याकुल होकर विचार करने लगे कि यह क्या हो रहा है। अंतत: जब सभी को इस बात का निश्चय हो गया कि श्रीरामचंद्र जी ने शंकर जी के धनुष को तोड़ दिया है तब सब उनकी जय-जयकार करने लगे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रत्येक कार्य का एक उचित और सर्वश्रेष्ठ समय होता है, उसी समय पर किया गया कार्य सब प्रकार से सुखकारी होता है। समय बीत जाने पर जो लोग किसी कार्य को करते हैं, उन्हें पश्चाताप के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।, इस शाश्वत सत्य का उद्घाटन गोस्वामी तुलसीदास ने मुहावरों और सूक्तियों के माध्यम से किया है। **2.** धनुष टूटने के बाद की स्थिति का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। **3. भाषा–** अवधी **4. शैली–** प्रबंध व चित्रात्मक **5. रस–** शांत, शृंगार, अद्‌भुत **6. गुण–** प्रसाद, माधुर्य, ओज **7. अलंकार–** उपमा, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति **8. छंद–** दोहा, चौपाई।

(य) रानी मैं जानी .... कै बनवास दियो है?।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'गोस्वामी तुलसीदास' द्वारा रचित 'कवितावली के अयोध्याकांड' से 'वन पथ पर' शीर्षक से उद्‌धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने ग्रामीण स्त्रियों के द्वारा कैकेयी और राजा दशरथ की निष्ठुरता पर व्यक्त प्रतिक्रिया को चित्रित किया है।

व्याख्या– वन-गमन के समय रास्ते में स्थित एक गाँव की स्त्रियाँ राम, लक्ष्मण और सीता के सौंदर्य तथा कोमलता को देखकर रानी कैकेयी को अज्ञानी और वज्र तथा पत्थर से भी कठोर हृदय वाली नारी बताती हैं; क्योंकि उसे सुकुमार राजकुमारों को वनवास देते समय तनिक भी दया न आई। वे राजा दशरथ को भी विवेकहीन समझकर पत्नी के कहे अनुसार कार्य करने वाला ही समझती हैं और राजा में उचित-अनुचित के ज्ञान की कमी मानती हैं। उन्हें आश्चर्य है कि इन सुंदर मूर्तियों से बिछुड़कर इनके प्रियजन कैसे जीवित रहेंगे? हे सखी! ये तीनों तो आँखों में बसाने योग्य हैं, तब इन्हें किस कारण वनवास दिया गया है?

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ पर ग्रामीण बालाओं की सहृदयता और दयालुता द्रष्टव्य है। **2.** 'कान भरना' व 'आँखों में रखना' जैसे मुहावरों का प्रयोग किया गया है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शृंगार और करुण **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, यमक **8. छंद–** सवैया।

(र) सुनि सुंदर बैन .... मंजुल कंज कली।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में ग्रामवधुओं के प्रश्न का उत्तर देती हुई सीता जी अपने हाव-भावों से ही राम के विषय में सब कुछ बता देती हैं।

व्याख्या–ग्राम वधुओं ने राम के विषय में सीता जी से पूछा कि 'ये साँवले और सुंदर रूप वाले तुम्हारे क्या लगते हैं? ग्राम वधुओं के अमृत जैसे मधुर वचनों को सुनकर चतुर सीता जी उनके मनोभाव को समझ गई। सीता जी ने उनके प्रश्न का उत्तर अपनी मुस्कराहट तथा संकेत भरी दृष्टि से ही दे दिया, उन्हें मुख से कुछ बोलने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। उन्होंने स्त्रियोचित लज्जा के कारण केवल संकेत से ही राम के विषय में यह समझा दिया कि ये मेरे पति हैं। तुलसीदास जी कहते हैं कि सीता जी के संकेत को समझकर सभी सखियाँ राम के सौंदर्य को एकटक देखती हुई अपने नेत्रों का लाभ प्राप्त करने लगी। उस समय ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो प्रेम के सरोवर में रामरूपी सूर्य का उदय हो गया हो और ग्रामवधुओं के नेत्ररूपी कमल की सुंदर कलियाँ खिल गई हों।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ पर सीता जी का संकेत्त द्वारा उत्तर देना भारतीय नारी की मर्यादा तथा 'लब्ध नेत्र निर्वाण: की भावना के अनुरूप है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास **7. छंद–** सवैया।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) रबि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा।।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने स्पष्ट किया है कि देखने में छोटा होने पर भी तेज से युक्त व्यक्ति को छोटा नहीं मानना चाहिए। जिस प्रकार सूर्यमंडल भी देखने में तो छोटा लगता है, लेकिन उसके उदय होते ही तीनों लोकों का अंधकार भाग जाता है, उसी प्रकार छोटा व्यक्ति भी असंभव कार्य कर सकता है।

(ब) खेलत मनसिज मीन जुग जनु, बिधु मंडल डोल।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने सीता जी के लज्जाशील रूप का वर्णन किया है। कवि स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि सीता जी बार-बार श्रीराम को देखती हैं और तत्पश्चात् लज्जा के कारण पृथ्वी को देखने लगती है, जिससे सीता जी के चंचल नेत्र इस प्रकार सुशोभित हो रहे हैं, मानों चंद्रमंडलरूपी डोल में कामदेव की दो मछलियाँ खेल रही हैं।

(स) पूछति ग्राम बधू सिय सों 'कहौ साँवरे से, सखि रावरे को हैं?'

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने ग्रामीण बालाओं के मन में उठते हुए प्रश्न को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ग्राम की वधुएँ सीता जी से पूछती हैं कि हे सखी! हमें बताओ कि ये साँवले रूप वाले तुम्हारे कौन हैं अर्थात् वे सीता जी से श्रीराम का परिचय जानना चाहती हैं।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. तुलसीदास जी का बचपन का नाम था–

(अ) राजबोला (ब) **रामबोला**

(स) श्यामबोला (द) हरबोला

2. तुलसीदास जी के पिता का क्या नाम था?

(अ) **आत्माराम दुबे** (ब) विद्याधर पंडित

(स) पं० रामदास (द) इनमें से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से कौन-सी तुलसीदास जी की कृति नहीं है?

(अ) श्रीरामचरितमानस (ब) दोहावली

(स) बरवै-रामायण (द) **साहित्यलहरी**

4. तुलसीदास जी किसके भक्त थे?

(अ) कृष्ण के (ब) **राम के**

(स) गुरु के (द) इनमें से कोई नहीं

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार, रस व उसके स्थायी भाव की विवेचना कीजिए–

(अ) उदित उदयगिरि मंच पर, रघुबर बालपंतग।
बिकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग।।

उ०– **अलंकार** – अनुप्रास, रूपक एवं उपमा।
रस – शृंगार।
स्थायी भाव – रति।

(ब) मंत्र परम लघु जासु बस, विधि हरि हर सुर सर्ब।
महामत्त गजराज कहुँ, बस कर अंकुस खर्ब।।

उ०– **अलंकार** – अनुप्रास
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

(स) लखन लखेउ रघुबंसमनि, ताकेउ हर कोदंडु।
पुलकि गात बोले वचन, चरन चापि ब्रह्मांडु।।

उ०– **अलंकार** – अनुप्रास एवं अतिशयोक्ति
रस – वीर
स्थायीभाव – उत्साह

(द) राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि।
चितई सीय कृपातयन जानी बिकल बिसेषि।।

उ०– **अलंकार** – उपमा एवं अनुप्रास
रस – शांत एवं शृंगार
स्थायीभाव – निर्वेद एवं रति

(य) ''जल को गए लक्खन हैं लरिका, परिखौ, पिय! छाँह धरीक ह्वै ठाढ़े
पोंछि पसेउ बयारि करौं, अरु पायँ पखारिहौं भूभुरि डाढे''।।

उ०– **अलंकार** – अनुप्रास
रस – शृंगार
स्थायीभाव – रति

2. तुलसी ने 'धनुष-भंग' प्रसंग में कौन-से छंदों का प्रयोग किया है?

उ०– तुलसी ने 'धनुष-भंग' प्रसंग में दोहे एवं चौपाई छंदों का प्रयोग किया है।

3. 'वन-पथ पर' कविता में प्रयुक्त रस का नाम व लक्षण लिखिए।

उ०– 'वन-पथ पर' कविता में शृंगार रस का प्रयोग किया गया है।
लक्षण– स्त्री-पुरुष के पारस्परिक प्रेम (मिलन या विरह) के वर्णन से हृदय में उत्पन्न होने वाले आनंद को **शृंगार रस** कहते हैं। इसका स्थायी भाव **रति** है।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

3. सवैये, कवित्त (रसखान)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रसखान जी का जन्म कब व कहाँ हुआ था?

उ०– रसखान जी का जन्म सन् 1548 ई. में दिल्ली के आसपास हुआ था।

2. रसखान जी किस काव्यधारा एवं किस भक्ति शाखा के कवि थे?

उ०– रसखान सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा के कवि थे।

3. रसखान हिंदी साहित्य के किस काल से संबंधित कवि हैं?

उ०– रसखान हिंदी साहित्य के रीति काल से संबंधित कवि हैं।

4. रसखान कवि का मूल नाम क्या था?

उ०– रसखान कवि का मूल नाम सैयद इब्राहिम था।

5. रसखान के गुरु का क्या नाम था?

उ०– रसखान के गुरु का नाम गोसाई विट्ठलनाथ था।

6. कवि रसखान की दो प्रसिद्ध रचनाओं के नाम बताइए।

उ०– कवि रसखान की दो प्रसिद्ध रचनाएँ हैं— (अ) सुजान रसखान (ब) प्रेम वाटिका।

7. कवि रसखान की सभी कृतियों का संकलन किस रचना में किया गया है?

उ०– कवि रसखान की सभी कृतियों का संकलन 'रसखान रचनावली' रचना में किया गया है।

8. रसखान जी ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग किया है?

उ०– रसखान जी ने अपनी रचनाओं में सरस, सुबोध एवं सहज ब्रजभाषा तथा सरल और परिमार्जित शैली का प्रयोग किया है।

9. रसखान जी ने अपनी कविता में किस प्रकार के छंदों को अपनाया है?

उ०– रसखान जी ने अपनी कविता में कवित्त, सवैया और दोहों छंदों को अपनाया है।

10. रसखान की मृत्यु कब हुई?

उ०– रसखान की मृत्यु सन् 1628 ई. में हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवि रसखान मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा पर्वत के रूप में जन्म लेने की कामना क्यों कर रहे हैं?

उ०– कवि रसखान मनुष्य, पशु, पक्षी अथवा पर्वत के रूप में जन्म लेने की कामना इसलिए कर रहे हैं क्योंकि वे किसी भी रूप में जन्म लेकर श्रीकृष्ण की समीपता प्राप्त करना चाहते हैं। वे मनुष्य के रूप में जन्म लेकर गोकुल के ग्वालों के बीच रहना चाहते हैं, पशु के रूप में रसखान जी नंदजी की गायों के बीच रहना चाहते हैं, पक्षी के रूप में जन्म लेकर वे यमुना के किनारे पर स्थित पेड़ों पर तथा पर्वत रूप में जन्म लेकर गोवर्धन पर्वत पर पत्थर के रूप में रहना चाहते हैं, जिससे वे किसी भी प्रकार से श्रीकृष्ण के समीप रह सके।

2. सभी गोपियाँ यशोदा माता के किस सुख का वर्णन करने में असमर्थ हैं?

उ०– सभी गोपियाँ यशोदा माता के उस सुख का वर्णन करने में असमर्थ हैं, जो उन्हें श्रीकृष्ण को पुत्र रूप में पाकर प्राप्त हुआ है। जब गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेमवश प्रात:काल के समय नंदजी के घर जाती हैं तो वे देखती हैं कि यशोदा माता श्रीकृष्ण के शरीर में तेल लगाकर आँखों में काजल लगा रही थी। वे उनकी सुंदर भौंहे सँवारकर बुरी नजर से बचाने के लिए माथे पर टीका लगा रही थी और उनके गले में सोने का हार डालकर एकाग्रता से उनके रूप को निहारकर अपने जीवन को न्यौछावर करके प्रेमवश अपने पुत्र को बार-बार पुचकार रही थी। जिसमें यशोदा को असीम सुख प्राप्त हो रहा है जिसका वर्णन करना असंभव है।

3. कवि रसखान श्रीकृष्ण के किस रूप को देखना चाहते हैं?

उ०– कवि रसखान श्रीकृष्ण के बाल रूप को देखना चाहते हैं, जिसमें श्रीकृष्ण बालक रूप में सिर पर चोटी बनाए, अपने घर के आँगन में खाते हुए घूमते हों। उनके पैरों में पायल बजती हो तथा उन्होंने पीले रंग की छोटी-सी धोती पहनी हो।

4. कृष्ण के हाथ में रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौआ कवि को भाग्यशाली क्यों लगा?

उ०– कवि को कृष्ण के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जाने वाला कौआ इसलिए भाग्यशाली लगा क्योंकि अपने भाग्य के कारण ही उस कौवे को श्रीकृष्ण की जूठी माखन रोटी खाने का अवसर प्राप्त हुआ और उसे श्रीकृष्ण का सामीप्य प्राप्त हुआ।

5. जब श्रीकृष्ण वन में गाय चराने जाते थे, तो उस समय ब्रज वासियों की मनोदशा कैसी हो जाती थी?

उ०– जब श्रीकृष्ण वन में गाय चराने जाते थे, तो उस समय ब्रजवासियों की मनोदशा ऐसी हो जाती थी, जैसे किसी ने उन पर जादू कर दिया हो और कोई उनके हृदयों में समा गया हो। जिसके कारण सभी ब्रजवासी बिना किसी लिहाज या शर्म के श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को प्रकट करने लगते हैं।

6. गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपनी सौतन क्यों समझती हैं?

उ०– गोपियाँ कृष्ण की बाँसुरी को अपनी सौतन इसलिए समझती हैं क्योंकि श्रीकृष्ण बाँसुरी को दिन-रात अपने साथ रखते थे। गोपियाँ समझती थी कि श्रीकृष्ण अब बाँसुरी के वश में हो गए हैं इसलिए वे अब उनसे प्रेम नहीं करेंगे, वे तो सिर्फ बाँसुरी से ही प्रेम करते हैं।

7. गोपियाँ ब्रज को क्यों छोड़ देना चाहती हैं?

उ०– गोपियाँ बाँसुरी से ईर्ष्या के कारण ब्रज को छोड़कर चली जाना चाहती हैं क्योंकि बाँसुरी ने कृष्ण को अपने प्रेम में मोहित कर लिया है और वह हमेशा गोपियों को जलाती रहती है। इसलिए वह ब्रज से भाग जाना चाहती है, क्योंकि ब्रज में श्रीकृष्ण के प्रेम से वंचित होकर उनका ब्रज में रहना कठिन था।

8. सखी के कहने पर गोपियाँ कौन-कौन से रूप बनाने को तैयार हैं?

उ०– सखी के कहने पर गोपियाँ अपने सिरों पर मोर पंख धारण करने, गुंजाओं की माला गले में पहनने, पीले वस्त्र पहनने व हाथ में लाठी लेकर ग्वालों के साथ-साथ गाय चराते हुए वनों में घूमने को तैयार हैं। वे कृष्ण के सभी वेश को धारण करने को पूर्णरूप से तैयार हैं।

9. कृष्ण की कौन-सी छवि गोपियों की आँखों को शांति प्रदान करती है?

उ०– कृष्ण की वनों से वापस लौटने की छवि अर्थात् गाय चराने के बाद जब सांयकाल में गाय के पैरों की धूल श्रीकृष्ण के माथे पर, उनके गले में वन की पुष्पों की माला होती है और जब गाय उनके आगे-आगे तथा ग्वाले उनके पीछे मधुर स्वर में गाते हुए चलते हैं, तब श्रीकृष्ण की मनमोहक छवि गोपियों की आँखों को शांति प्रदान करती है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. रसखान जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– रसखान सगुण काव्यधारा की कृष्णाश्रयी शाखा के मुस्लिम कवि थे। हिंदी-साहित्य में रीतिकालीन रीतिमुक्त कवियों में रसखान का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में ईश्वर के निर्गुण व सगुण दोनों ही रूपों का वर्णन अत्यधिक सुंदर रूप से किया है। डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी के शब्दों में, '' रसखान भक्तिकाल के सुप्रसिद्ध लोकप्रिय एवं सरस कवि थे। उनके सवैये हिंदी-साहित्य में बेजोड़ हैं।''

जीवन-परिचय– कृष्णभक्त कवि रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहिम था तथा वे शाही खानदान से संबंधित थे। उनका जन्म 1548 ई. (अनुमानित) में माना जाता है। ये दिल्ली के आसपास के रहने वाले थे। बाद में वे ब्रज में चले आए और फिर जीवन पर्यंत यहीं रहे। मूलत: मुसलमान होते हुए भी वे कृष्ण भक्त थे। श्रीरामचरितमानस का पाठ सुनकर इनके मन में काव्य-रचना की प्रेरणा हुई। इनकी भगवद् भक्ति को देखकर बल्लभाचार्य के सुपुत्र गोसाई बिट्ठलनाथ ने इन्हें अपना शिष्य बना लिया। कवि रसखान कृष्ण की भक्ति में अत्यधिक तल्लीन हो गए थे। उन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में भी कहा है कि वे अगले जन्मों में भी ब्रजभूमि को त्यागना नहीं चाहते भले ही पशु, पक्षी, पत्थर आदि के रूप में ही क्यों न जन्म मिले। इनका निधन 1628 ई. (अनुमानित) में हुआ।

साहित्यिक परिचय– रसखान की कविता का मूलभाव कृष्ण भक्ति है। कृष्ण प्रेम में आकृष्ट होकर वे ब्रजभूमि में बस गए थे। उनकी कविता में प्रेम, भक्ति, शृंगार व सौंदर्य का अनुपम मेल हुआ है। कृष्ण के रूप लावण्य की जो झाँकी उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रस्तुत की, वह अत्यंत मनोहर बन पड़ी है। मुसलमान होते हुए भी रसखान कृष्ण भक्ति में सराबोर ऐसे भक्त कवि थे, जिनके लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है—

इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिंदू वारिए।

रसखान ने अपनी कविता कवित्त, सवैया और दोहों में लिखी है। इन तीनों छंदों पर उनका पूरा अधिकार था। उनके सवैये जनता में विशेष लोकप्रिय हुए। अपनी रसपूर्ण कविता के कारण वे अपने नाम को सार्थक करते हुए वास्तव में रस की खान थे।

2. रसखान जी की रचनाओं एवं भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– रचनाएँ– रसखान की रचनाएँ कृष्ण प्रेम से सराबोर हैं। अब तक इनकी चार कृतियाँ उपलब्ध हुई हैं—

(अ) प्रेम–वाटिका (ब) सुजान रसखान

(स) बाल लीला (द) अष्टयाम

इन रचनाओं का संकलन 'रसखान रचनावली' के नाम से भी किया गया है। कुछ विद्वानों का मत है कि रसखान की केवल दो रचनाएँ ही प्रामाणिक हैं—सुजान रसखान और प्रेम–वाटिका।

भाषागत विशेषताएँ– रसखान ब्रजभाषा के कवि हैं। उनकी भाषा सरल, सुबोध व सहज है। उसमें आडंबर–विहीनता है। अलंकारों का सहज प्रयोग उनके काव्य में हुआ है। शब्दों के माध्यम से ऐसे गतिशील चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, जिससे भाषा में चित्रोपमता का गुण आ गया है। रसखान ने अपनी रचनाओं में कवित्त, सवैया तथा दोहों छंदों का प्रयोग किया है। इनकी कविताओं में प्रेम, भक्ति, शृंगार व सौंदर्य का अनुपम मेल हुआ है। कृष्ण के रूप लावण्य की इन्होंने गोपी रूप में भक्ति की है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मानुष हौं तौ वही .... कदंब की डारन।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'रसखान' द्वारा रचित 'रसखानि ग्रंथावली' से 'सवैये' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य मे ंरसखान ने पुनर्जन्म में विश्वास व्यक्त किया है और अगले जन्म में श्रीकृष्ण की जन्म–भूमि (ब्रज) में जन्म लेने एवं उनके समीप ही रहने की कामना की है।

व्याख्या– रसखान कवि कहते हैं कि हे भगवान! मैं मृत्यु के बाद अगले जन्म में यदि मनुष्य के रूप में जन्म प्राप्त करूँ तो मेरी इच्छा है कि मैं ब्रजभूमि में गोकुल के ग्वालों के मध्य निवास करूँ। यदि मैं पशु योनि में जन्म ग्रहण करूँ, जिसमें मेरा कोई वश नहीं है, फिर भी मेरी इच्छा है कि मैं नन्द जी की गायों के बीच विचरण करता रहूँ। यदि में अगले जन्म में पत्थर ही बना तो भी मेरी इच्छा है कि मैं उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे आपने इंद्र का घमंड चूर करने के लिए और जलमग्न होने से गोकुल ग्राम की रक्षा करने के लिए अपनी अँगुली पर छाते के समान उठा लिया था। यदि मुझे पक्षी योनि में भी जन्म लेना पड़ा तो भी मेरी इच्छा है कि मैं यमुना नदी के किनारे स्थित कदंब वृक्ष की शाखाओं पर ही निवास करूँ।

काव्यगत सौंदर्य– 1. रसखान ने यहाँ श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम की अद्‌भुत अभिव्यक्ति की है। वे पुर्नजन्म लेने पर कृष्ण की प्रिय वस्तुओं एवं गोकुल की निर्जीव वस्तुओं के रूप को प्राप्त करने की कामना करते हैं। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत एवं भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** सवैया।

(ब) धूरि भरे अति .... गयौ माखन-रोटी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस पद्य में कवि ने बालक कृष्ण के मोहक रूप का चित्रण किया है। श्रीकृष्ण के सौंदर्य को देखकर एक गोपी अपनी सखी से उनके सौंदर्य का वर्णन करती है।

व्याख्या– हे सखी! श्यामवर्ण के कृष्ण धूल से धूसरित हैं और अत्यधिक शोभायमान हो रहे हैं। वैसे ही उनके सिर पर सुंदर चोटी सुशोभित हो रही है। वे खेलते और खाते हुए अपने घर के आँगन में विचरण कर रहे हैं। उनके पैरों में पायल बज रही है और वे पीले रंग की छोटी–सी धोती पहने हुए हैं। रसखान कवि कहते हैं कि उनके उस सौंदर्य को देखकर कामदेव भी उन पर अपनी कोटि–कोटि कलाओं को न्योछावर करता है। हे सखी! उस कौवे के भाग्य का क्या कहना, जो कृष्ण के हाथ से मक्खन और रोटी छीनकर ले गया। भाव यह है कि कृष्ण की जूठी मक्खन–रोटी खाने का अवसर जिसको प्राप्त हो गया, वह धन्य है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में रसखान ने श्रीकृष्ण के बाल रूप का अत्यधिक मोहक चित्र प्रस्तुत किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** चित्रात्मक एवं मुक्तक **4. रस–** शृंगार एवं भक्ति **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास

7. छंद– सवैया।

(स) मोर-पखा सिर.................................... अधरा न धरौंगी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत सवैये में कृष्ण के वियोग में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का मोहक वर्णन किया गया है। कृष्ण-प्रेम में मग्न गोपियाँ कृष्ण का वेश धारणकर अपने हृदय को सांत्वना देती हैं।

व्याख्या– एक गोपी अपनी दूसरी सखी से कहती है कि हे सखी! मैं तुम्हारे कहने से अपने सिर पर मोर के पंखों से बना मुकुट धारण करूँगी, अपने गले में गुंजा की माला पहन लूँगी, कृष्ण की तरह पीले वस्त्र पहनकर और हाथ में लाठी लिए हुए ग्वालों के साथ गायों को चराती हुई वन-वन घूमती रहूँगी। ये सभी कार्य मुझे अच्छे लगते हैं और तेरे कहने से मैं कृष्ण के सभी वेश भी धारण कर लूँगी, परंतु उनके होठों पर रखी हुई बाँसुरी का अपने होठों से स्पर्श नहीं करूँगी। तात्पर्य यह है कि कृष्ण गोपियों के प्रेम की परवाह न करके दिनभर बाँसुरी को साथ रखते हैं और उसे अपने होंठों से लगाए रहते हैं; अत: गोपियाँ उसे सौत मानकर उसका स्पर्श भी नहीं करना चाहती हैं; क्योंकि वह श्रीकृष्ण के ज्यादा ही मुँह लगी हुई है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में रसखान ने कृष्ण-प्रेम में व्याकुल गोपियों की मनोदशा का अत्यंत हृदयग्राही और मार्मिक चित्रण किया है। वे कृष्ण की अनुपस्थिति में उनका रूप धरकर अपने मन को संतोष देती हैं, किंतु ईर्ष्या के कारण बाँसुरी को होठों से नहीं लगाती हैं। वे कृष्ण के हर समय बाँसुरी को होठों से लगाए रखने के कारण उससे ईर्ष्या करती हैं। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास, यमक एवं श्लेष **7. छंद–** सवैया।

(द) गोरज बिराजै .... आवै रसखानि री।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'रसखान' द्वारा रचित 'रसखानि ग्रंथावली' से 'कवित्त' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में सांय के समय वन से गायों के साथ लौटते हुए कृष्ण की अनुपम शोभा का वर्णन एक गोपी अपनी सखी से कर रही है।

व्याख्या– गोपी कहती है कि हे सखी! वन से गायों के साथ लौटते हुए कृष्ण के मस्तक पर गायों के चलने से उड़ी धूल सुशोभित हो रही है। उनके गले में वन के पुष्पों की माला पड़ी हुई है। कृष्ण के आगे-आगे गायें चल रही है और पीछे मधुर स्वर में गाते हुए ग्वाल-बाल चल रहे हैं। जितनी मधुर और बाँकी श्रीकृष्ण की चितवन है, उतनी ही बाँकी उनकी धीमी-धीमी मुस्कान है। उनकी इस मधुर छवि के अनुरूप ही उनकी वंशी की मधुर-मधुर तान है। हे सखी! कदंब वृक्ष के पास यमुना नदी के किनारे खड़े कृष्ण के पीले वस्त्रों का फहराना, जरा अटारी पर चढ़कर तो देख लो। रस की खान वह श्रीकृष्ण चारों ओर सौंदर्य और प्रेम-रस की वर्षा करते हुए शरीर और मन की जलन को शांत कर रहे हैं। उनका सौंदर्य नेत्रों की प्यास को बुझा रहा है और प्राणों को अपनी ओर खींचकर रिझा रहा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इस छंद में रसखान ने गोचारण से लौटते हुए कृष्ण के मनोहारी रूप का सजीव चित्रण किया है। **2.** कृष्ण के रूप पर मुग्ध गोपियों की दशा का भी सजीव अंकन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास एवं श्लेष **8. छंद–** कवित्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) पाहन हौं तो वही गिरी को , जो धर्‍यौ कर छत्र पुरंदर-धारन।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रसखान अगले जन्म में श्रीकृष्ण की जन्म-भूमि व्रज में जन्म लेकर उनके समीप रहने की कामना करते हुए कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में पत्थर बनूँ, तो मैं उसी पर्वत गोवर्धन का पत्थर बनने की कामना करता हूँ जिसे श्रीकृष्ण ने इंद्र का घमंड चूर करने के लिए छत्र की तरह उठा लिया था अर्थात् मैं किसी भी रूप में श्रीकृष्ण के समीप रहना चाहता हूँ।

(ब) काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सों लै गया माखन-रोटी।

भाव स्पष्टीकरण– भाव यह है कि रसखान जी कहते हैं कि वह कौआ बड़ा भाग्यशाली है जो बालक श्रीकृष्ण के हाथ से मक्खन रोटी लेकर उड़ गया है, जिससे उसे श्रीकृष्ण की जूठी मक्खन-रोटी खाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है अर्थात् वह कौआ श्रीकृष्ण की समीपता को प्राप्त कर सका है।

(स) गोरज बिराजै भाल लहलही बनमाल, आगे गैयाँ पाछें ग्वाल मृदु बानि री।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रसखान अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि गोचारण से लौटते हुए श्रीकृष्ण के मस्तक पर गायों के चलने से उड़ी धूल सुशोभित हो रही है और गले में वनों के पुष्पों से बनी माला पड़ी हुई है। श्रीकृष्ण के आगे- आगे गाय व पीछे-पीछे मीठे स्वर में गाते हुए ग्वाले चल रहे हैं। यह दृश्य बहुत ही मधुर व मनोरम है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रसखान किस काल से संबंधित हैं–

(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) **रीतिकाल** (द) आधुनिक काल

2. रसखान की रचनाएँ किस काव्यधारा के अंतर्गत आती हैं?

(अ) रामाश्रयी काव्यधारा (ब) **कृष्णाश्रयी काव्यधारा**

(स) प्रेमाश्रयी काव्यधारा (द) ज्ञानाश्रयी काव्यधारा

3. निम्नलिखित रचनाओं में से कौन-सी रचना कवि रसखान द्वारा रचित नहीं है?

(अ) प्रेम-वाटिका (ब) सुजान रसखान

(स) **दीपशिखा** (द) इनमें से कोई नहीं

4. कवि रसखान ने किस भाषा में काव्य-रचना की है?

(अ) फारसी में (ब) अवधी में

(स) अरबी में (द) **ब्रजभाषा में**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार, रस व उसके स्थायी भाव की विवेचना कीजिए–

(अ) मानुष हौं तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जौ पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।।

उ०– **अलंकार** - अनुप्रास
रस - भक्ति
स्थायी भाव - देव-विषयक रति

(ब) तेल लगाइ लगाइ कै अंजन, भौंहैं बनाइ बनाइ डिठौनहिं।

अलंकार - पुनरुक्तिप्रकाश
रस - वात्सल्य
स्थायी भाव - संतान-विषयक रति

(स) काग के भाग बड़े सजनी हरि-हाथ सौं लै गयौ माखन-रोटी।।

उ०– **अलकंार** - अनुप्रास
रस - भक्ति
स्थायी भाव - देव-विषयक रति

(द) मोहिनीताननि गोधन गावत, बेनु बजाई रिझाइ गयौ है।

उ०– **अलंकार** - अनुप्रास
रस - श्रृंगार
स्थायी भाव - रति

(य) या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरी अधरा न धरौंगी।।

अलंकार - अनुप्रास एवं यमक
रस - श्रृंगार
स्थायी भाव - रति

2. निम्नलिखित पद्यांश में काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) आजु गई हुती भोर ही हौं, रसखानि रई वहि नंद के भौनहिं।
वाकौ जियौ जुग लाख करोर, जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत पद्यांश में गोपी के श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का वर्णन किया गया है। **2.** यहाँ यशोदा माता के श्रीकृष्ण को पुत्र रूप में पाने के सुख का अद्‌भुत वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** वात्सल्य **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** सवैया।

(ब) जिन मोहि लियौ मनमोहन कौं, रसखानि सदा हमकौं दहिहै।
मिलि आओ सबै सखी, भागि चलैं अब ब्रज मैं बँसुरी रहिहै।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत छंद में गोपियों की मुरली के प्रति स्वाभाविक ईर्ष्या का सजीव वर्णन किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** चित्रात्मक मुक्तक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण **7. छंद–** सवैया।

(स) जा दिन तें वह बंद को छोहरा, या बन धेनु चराइ गयौ है।
मोहनिताननि गोधन गावत, बेनु बजाइ रिझाइ गयौ है।।
वा दिन सो कुछ टोना सो कै, रसखानि हियै मैं समाई गयौ है।
कोऊ न काहू की कानि करै, सिगरो ब्रज बीर, विकाइ गयौ है।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने गोपियों की कृष्ण–भक्ति की अभिव्यक्ति अत्यंत कलात्मक रूप से की है। **2.** गोपियों के कृष्ण प्रेम का सजीव वर्णन हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** चित्रात्मक मुक्तक **5. रस–** शृंगार **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, अतिशयोक्ति **8. छंद–** सवैया।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

4. भक्ति, नीति (बिहारीलाल)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारीलाल जी का जन्म कब व कहाँ हुआ था?

उ०– बिहारीलाल जी का जन्म ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर ग्राम में सन् 1603 ई. में हुआ था।

2. बिहारी जी किस काल के प्रमुख कवि थे?

उ०– बिहारी जी रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि थे।

3. बिहारी जी के पिता का क्या नाम था?

उ०– बिहारी जी के पिता का नाम केशवराय चौबे था।

4. बिहारी जी किस राजा के आश्रित कवि थे? बिहारी जी ने किस प्रकार राजा को उनके राजकार्यों के प्रति पुनः सचेत किया?

उ०– बिहारी जी जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के आश्रित कवि थे। बिहारी जी ने एक दोहा लिखकर राजा के पास भेजा, जिसने उन्हें राजकार्यों के प्रति पुन: सचेत किया–

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अलि कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।।

5. बिहारी जी की रचना का नाम बताइए तथा इसमें कितने दोहे संकलित हैं?

उ०– बिहारी जी की रचना 'बिहारी सतसई' है तथा इसमें सात सौ उन्नीस दोहे संकलित हैं।

6. बिहारी जी ने अपनी रचनाओं में किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग किया गया है?

उ०– बिहारी जी ने अपने रचनाओं में साहित्यिक ब्रजभाषा तथा मुक्तक काव्य शैली का प्रयोग किया है।

7. बिहारी जी के काव्य के कौन-कौन से विषय हैं? इन्होंने किन विषयों को अपनी रचना में प्रधानता दी है?

उ०– बिहारी जी के काव्य के विषय श्रृंगार नायिका भेद, भक्ति, नीति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं इतिहास आदि हैं। इन्होंने अपने दोहों में श्रृंगार, नीति एवं भक्ति विषयों को प्रधानता दी है।

8. बिहारी जी द्वारा प्रस्तुत दोहा छंद की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– बिहारी जी ने श्रृंगार संबंधी दोहों में रूप, स्वभाव, मनोविज्ञान, भंगिमा का वर्णन इतना चित्रवत किया है कि पाठक पूर्ण रूप से मंत्रमुग्ध हो जाता है। इन्होंने नीति के दोहों में अनेक कटु अनुभवों तथा भक्ति के दोहों में ईश्वर भक्ति का सरस व सरल वर्णन किया है।

9. बिहारी जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– सन् 1663 ई. में बिहारी जी की मृत्यु हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्रीकृष्ण की हरे बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष के रंगवाली किस प्रकार हो गई?

उ०– श्रीकृष्ण के अपने लाल होठों पर बाँसुरी को धारण करते ही उस पर होठों की लाल, दृष्टि की श्वेत, वस्त्रों की पीली व शरीर को श्याम रंग की ज्योति पड़ते ही हरे बाँस की बाँसुरी इंद्रधनुष के रंगवाली हो गई।

2. श्याम वर्ण में डूबने पर हृदय किस प्रकार उज्ज्वल हो जाता है? विस्तारपूर्वक समझाइए।

उ०– श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मन की दशा अत्यंत विचित्र होती है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है। प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है, श्रीकृष्ण भी श्यामवर्ण के ही हैं, किंतु कृष्ण के प्रेम में मग्न हृदय जैसे-जैसे श्याम रंग (कृष्ण के प्रेम, भक्ति, ध्यान आदि) में मग्न होता है वैसे-वैसे हृदय उज्ज्वल (पवित्र) होता जाता है।

3. 'खुटैं न कपट-कपाट' से बिहारी जी का क्या आशय है?

उ०– 'खुटैं न कपट-कपाट' से बिहारी जी का आशय है कि जब तक मनरूपी घर में दृढ़ता से बंद किए हुए कपटरूपी किवाड़ पूरी तरह से नहीं खुल जाते तब तक ईश्वर मन में प्रवेश नहीं कर सकते हैं। हृदय से कपट निकाल देने पर ही ईश्वर का हृदय में प्रवेश व निवास संभव है।

4. प्रजा के लिए दो राजाओं का राज्य किस प्रकार दु:खदायी होता है?

उ०– एक ही देश में दो राजाओं का राज्य होने से प्रजा के दु:ख व संघर्ष बढ़ जाते हैं। इसलिए प्रजा के लिए दो राजाओं का राज्य दु:खदायी होता है।

5. भगवान मनरूपी मंदिर में किस प्रकार प्रवेश कर सकते हैं?

उ०– भगवान मनरूपी मंदिर में तब प्रवेश कर सकते हैं, जब मनरूपी मंदिर के कपटरूपी किवाड़ सदा-सदा के लिए पूरी तरह से खुल जाते हैं। अर्थात् हृदय से कपट निकल जाने पर ही ईश्वर मन में प्रवेश करते हैं।

6. मनुष्य भगवान को कब तक व क्यों नहीं जान सकता है?

उ०– जब तक मनुष्य का मन ईश्वर की भक्ति में कच्चा है तथा मनुष्य का मन निर्मल नहीं है, तब तक वह ईश्वर को नहीं जान सकता है।

7. बुरे व्यक्ति के बुराई त्याग देने पर अन्य व्यक्ति शंकित क्यों हो जाते हैं?

उ०– बुरे व्यक्ति के बुराई त्याग देने पर अन्य व्यक्ति इसलिए शंकित हो जाते हैं क्योंकि अचानक बुरे व्यक्ति के अपनी बुराई छोड़कर अच्छा व्यवहार करने से दूसरे व्यक्ति को चित्त अधिक भयभीत हो जाता है और उसे किसी अनिष्ट की आशंका उत्पन्न हो जाती है।

8. बिहारी जी के अनुसार मनुष्य एवं पानी के नल की दशा समान क्यों है?

उ०– बिहारी जी के अनुसार मनुष्य एवं पानी के नल की दशा इसलिए समान होती है क्योंकि जल व मनुष्य जितना नीचे होकर चलते हैं, उतना ही ऊँचे उठते हैं अर्थात् वे जितना नम्रता का व्यवहार करते हैं, उतनी ही उन्नति करते हैं।

9. जिनके मन में बुराई वास करती है, सभी मनुष्य उसी को सम्मान देते हैं। क्यों?

उ०– जिनके मन में बुराई वास करती है, सभी मनुष्य उसी का सम्मान इसलिए करते हैं क्योंकि भले व्यक्ति को हानि न पहुँचाने वाला समझकर अर्थात् भला कहकर सब छोड़ देते हैं अर्थात् उसकी उपेक्षा करते हैं, इसके विपरीत बुरे व्यक्तियों से बचने व उसे शांत करने के लिए सब उनका सम्मान करते हैं।

10. बिहारी जी की भक्ति भावना को संक्षिप्त रूप में समझाइए।

उ०– बिहारी जी रीतिकाल के प्रमुख रीतिमुक्त कवि थे। जो कृष्णाश्रयी शाखा के प्रमुख कवियों में से थे। बिहारी कृष्ण को प्रसन्न करने के लिए राधा जी से प्रार्थना करते हैं। वे श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य की भक्तिवश स्तुति करते हुए श्रीकृष्ण के मोर मुकुट की चंद्रिकाओं की तुलना भगवान शिव के सिर पर विराजमान चंद्रमा से करते हैं। बिहारी जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण के श्याम शरीर पर पीले वस्त्र इस प्रकार शोभा पा रहे हैं, मानो नीलमणि पर्वत पर प्रात: काल की पीली पीली धूप पड़ रही हो। बिहारी जी श्रीकृष्ण की बाँसुरी को सात रंगों वाले इंद्रधनुष के रंगों के समान वाली बताते हैं। बिहारी जी कहते हैं कि श्रीकृष्ण की भक्ति के श्याम रंग में मन जितना मग्न हो जाएगा, यह उतना ही निर्मल हो जाएगा। श्रीकृष्ण मन में तभी प्रवेश करेंगे, जब मन से कपट दूर हो जाएगा। कवि कहते हैं कि जिस ईश्वर ने तुम्हें संसार का ज्ञान कराया है तुम उसे तब तक नहीं जान सकते जब तक सच्चे मन से अर्थात् पक्के मन से उसकी शरण में नहीं जाते। इस प्रकार बिहारी जी ने भक्ति भाव के साथ श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य तथा उनके स्वरूप का वर्णन किया है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारीलाल जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– बिहारीलाल जी को रीतिकाल के रीतिमुक्त कवि एवं 'गागर में सागर' भरने वाले अर्थात् कम शब्दों में अधिक भाव प्रकट करने वाले कवि के रूप में जाना जाता है। बिहारीलाल ऐसे कवि थे, जो केवल एकमात्र रचना के द्वारा ही हिंदी साहित्य के विद्वान बन गए। पं. पद्मसिंह शर्मा ने बिहारी के काव्य की प्रशंसा में लिखा भी है—''बिहारी के दोहों का अर्थ गंगा की विशाल जलधारा के समान है, जो शिव की जटाओं में समा तो गई थी, परंतु उससे बाहर निकलते ही वह इतनी असीम और विस्तृत हो गई कि लंबी-चौड़ी धरती में भी सीमित न रह सकी। बिहारी के दोहे रस के सागर हैं, कल्पना के इंद्रधनुष हैं, भाषा के मेघ हैं। उनमें सौंदर्य के मादक चित्र अंकित है।''

जीवन परिचय– रससिद्ध कवि बिहारीलाल का जन्म ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर ग्राम में सन् 1603 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय चौबे था, जो मथुरा के चौबे ब्राह्मण थे। ये बचपन में ही अपने पिता के साथ ग्वालियर से ओरछा नगर आकर रहने लगे। यहीं पर इन्होंने आचार्य केशवदास से काव्यशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। काव्यशास्त्र में अधिक रुचि होने के कारण ये कुछ ही समय में काव्य शास्त्र में पारंगत हो गए। फिर विवाह के पश्चात् इनका अधिकांश समय अपनी ससुराल मथुरा में व्यतीत हुआ।

बिहारी, जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबारी कवि थे। कहा जाता है कि एक बार राजा जय सिंह अपनी नई रानी के प्रेम में इतना मग्न हो गए कि राजकार्यों से उनका मन विरक्त हो गया। तब कवि बिहारी ने एक दोहा लिखकर उनके पास भेजा—

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अलि कली ही सौं बिंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

इस दोहे को पढ़कर राजा जयसिंह अत्यधिक प्रभावित हुए तथा उन्होंने पुन: राजकार्यों में रुचि लेना प्रारंभ कर दिया। राजा जयसिंह कवि बिहारी का अत्यधिक सम्मान करते थे तथा उन्हें प्रत्येक दोहे के परिणामस्वरूप एक स्वर्ण मुद्रा उपहार स्वरूप दिया करते थे। राजा जयसिंह की प्रेरणा से ही बिहारी जी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की। इनकी रचना में सात सौ उन्नीस दोहे है तथा यह सन् 1662 ई. में समाप्त हुई।

कविवर बिहारी ने अपने छोटे-से जीवन में अनेक कष्टों का अनुभव किया। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद ये संसार से विरक्त हो गए तथा आगरा आकर रहने लगे जहाँ इनकी भेंट कवि रहीमदास से हुई, जिसके बाद ये पूर्णरूप से भगवान कृष्ण की भक्ति में मग्न हो गए। सन् 1663 ई. में बिहारीलाल का देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय– मात्र एक ग्रंथ की रचना से ही बिहारी जी हिंदी साहित्य के देदीप्यमान सूर्य बन गए। इनकी रचना 'बिहारी सतसई' वर्तमान में भी पाठकों के हृदय में विराजमान है। इनकी रचना इतनी लोकप्रिय है कि उसकी अनेक टीकाएँ भी लिखी गई हैं। कई कवियों ने इनके दोहों पर आधारित अन्य छंदों की रचना भी की है।

बिहारी जी ने अपनी उत्कृष्ट रचना से हिंदी साहित्य को जो गरिमा प्रदान की है, वह अतुलनीय है। पं. पद्मसिंह शर्मा ने इनके संबंध में लिखा है, ''यदि सूर सूर्य और तुलसी शशि हैं तो बिहारी पियुषवर्ती मेघ हैं, जिनके आते ही सबकी ज्योति मंद पड़ जाती है।''

2. बिहारी जी की भाषागत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ०– **भाषागत विशेषताएँ–** बिहारी जी की एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। यह एक मुक्तक काव्य-रचना है, जिसमें मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ समाहित हैं। बिहारी जी ने अपनी रचना में छोटे छंदों का प्रयोग कर विस्तृत अर्थ की सफल अभिव्यंजना की है। इनके द्वारा रचित कुछ दोहों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए काव्य-साहित्य के समस्त ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिहारी जी के दोहे विभिन्न विषयों, जैसे- शृंगार नायिका-भेद, भक्ति, नीति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद एवं इतिहास आदि पर आधारित हैं किंतु इन्होंने अपने दोहों में शृंगार, नीति एवं भक्ति को प्रधानता दी है। शृंगार संबंधी दोहों में रूप, स्वभाव, मनोविज्ञान, भंगिमा का वर्णन इतना चित्रवत् है कि पाठक इसमें पूर्णरूप से मंत्रमुग्ध हो जाता है। इन्होंने नीति के दोहों में अनेक कटु अनुभवों का वर्णन किया है तथा भक्ति के दोहों में ईश्वर भक्ति का सरल व सरस वर्णन किया है।

इनके सभी दोहों के गहन भाव से युक्त होने के संबंध में कहा भी गया है—

सतसैया के दोहरे, ज्यौं नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर॥

बिहारी जी ने अपनी रचना में साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। किंतु इन्होंने विषय के अनुसार उर्दू, फारसी, पूर्वी हिंदी आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग किया है। इनकी रचना में शब्द-योजना तथा वाक्य-रचना बड़ी व्यवस्थित है। इन्होंने अपनी रचना में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी यथासंभव प्रयोग किया है। इनके काव्य में रूपक, उपमा, श्लेष, अतिशयोक्ति, अनुप्रास तथा अन्योक्ति आदि अलंकारों का मुख्यत: प्रयोग हुआ है। भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों ही दृष्टि से इनका काव्य हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। बिहारी जी ने अपनी रचना में मुक्तक काव्य-शैली का प्रयोग किया है। कई स्थानों पर मुक्तक काव्य-शैली के साथ-साथ समास शैली का भी प्रयोग किया गया है। इस शैली के प्रयोग से ही इन्होंने अपने काव्य में 'गागर में सागर' भर दिया था।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मेरी भव-बाधा .... हरित-दुति होइ॥

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'बिहारीलाल' द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से 'भक्ति' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– कवि ने अपने ग्रंथ के प्रारंभ में राधा जी की वंदना की है।

व्याख्या– 1. वह चतुर राधिका जी मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके पीली आभा वाले (गोरे) शरीर की झाँई (प्रतिबिम्ब) पड़ने से श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण हरित वर्ण की द्युति वाले; अर्थात् हरे रंग के हो जाते हैं।

2. वे चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके शरीर की झलक पड़ने से भगवान कृष्ण भी प्रसन्नमुख (हरित-कांति) हो जाते हैं।

3. हे चतुर राधिका जी! आप मेरे सांसारिक कष्टों को दूर करें, जिनके ज्ञानमय (गौर) शरीर की झलकमात्र से मन की श्यामलता (पाप) नष्ट हो जाते हैं।

4. वह चतुर राधिका जी मेरी सांसारिक बाधाओं को दूर करें, जिनके गौरवर्ण शरीर की चमक पड़ने से श्रीकृष्ण भी फीकी कान्ति वाले हो जाते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. प्रस्तुत दोहे की रचना मंगलाचरण के रूप में हुई है। 'बिहारी सतसई' शृंगार रसप्रधान रचना है, अत: इसमें शृंगार की देवी राधिकाजी की वंदना की गई है। **2.** नील और पीत वर्ण मिलकर हरा रंग हो जाता है। यहाँ बिहारी का चित्रकला-ज्ञान प्रकट हुआ है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शृंगार एवं भक्ति **6. गुण–** माधुर्य एवं प्रसाद **7. अलंकार–** अनुप्रास, श्लेष **8. छंद–** दोहा।

(ब) सोहत ओढ़ैं पीतु .... आतपु पर्‌यौ प्रभात॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में पीला वस्त्र ओढ़े हुए श्रीकृष्ण के सौंदर्य का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– श्रीकृष्ण का श्याम शरीर अत्यंत सुंदर है। वे अपने शरीर पर पीले वस्त्र पहने इस प्रकार शोभा पा रहे हैं, मानो

नीलमणि के पर्वत पर प्रात:काल की पीली-पीली धूप पड़ रही हो। यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम वर्ण के उज्ज्वल मुख में नीलमणि शैल की और उनके पीले वस्त्रों में प्रात:कालीन धूप की संभावना की गई है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ श्रीकृष्ण के श्याम शरीर में नीलमणियों के पर्वत को तथा उनके पीले वस्त्रों में प्रात:काल की धूप को आरोपित किया गया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शृंगार एवं भक्ति **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** अनुप्रास एवं उत्प्रेक्षा **7. छंद–** दोहा।

(स) या अनुरागी चित्त .... उज्जलु होइ।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कवि ने बताया है कि श्रीकृष्ण के प्रेम से मन की म्लानता एवं कलुषता दूर हो जाती है।

व्याख्या– कवि का कहना है कि श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मेरे मन की दशा अत्यन्त विचित्र है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है; क्योंकि प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है। श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के हैं, किन्तु कृष्ण के प्रेम में मग्न यह मेरा मन जैसे-जैसे श्याम रंग (कृष्ण की भक्ति,ध्यान आदि) में मग्न होता है, वैसे-वैसे श्वेत (पवित्र) होता जाता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कृष्ण के भक्ति के महत्व को बताने के लिए कवि ने अद्‌भुत काव्य समायोजन किया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत, **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** पुरुक्तिप्रकाश, श्लेष एवं विरोधाभास **7. छंद–** दोहा।

(द) तौ लगु या .... न कपट-कपाट।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने ईश्वर को हृदय में बसाने के लिए कपट का त्याग करना आवश्यक बताया है।

व्याख्या– कविवर बिहारी का कहना है कि इस मनरूपी घर में तब तक ईश्वर किस मार्ग से प्रवेश कर सकता है, जब तक मनरूपी घर में दृढ़ता से बंद किए हुए कपटरूपी किवाड़ पूरी तरह से नहीं खुल जाते; अर्थात् हृदय से कपट निकाल देने पर ही हृदय में ईश्वर का प्रवेश व निवास संभव है।

काव्यगत सौंदय– 1. ईश्वर की प्राप्ति निर्मल व पवित्र मन से ही संभव है। इस भावना की कवि ने यहाँ उचित अभिव्यक्ति की है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** भक्ति **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** दोहा।

(य) दुसह दुराज .... मावस रबि-चंदु।।

संदर्भ– प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्यपुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'बिहारीलाल' द्वारा रचित'बिहारी सतसई' से 'नीति' शीर्षक से उद्‌धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में दो राजाओं के शासन से उत्पन्न कष्टों का वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि एक ही देश में दो राजाओं के शासन से प्रजा के दु:ख और संघर्ष अत्यधिक बढ़ जाते हैं। दुहरे शासन में प्रजा उसी प्रकार दु:खी हो जाती है, जिस प्रकार अमावस्या की रात्रि में सूर्य और चंद्रमा एक ही राशि में मिलकर संसार को गहन अंधकार से पूर्ण कर देते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यह बिहारी का नीति संबंधी दोहा है। उनका राजनैतिक ज्ञान भी इससे प्रकट होता है। **2.** अमावस्या की रात में सूर्य और चंद्रमा (दो राजा) एक ही राशि में आ जाते हैं। ऐसा सूर्यग्रहण के समय में होता है। यह कवि के ज्योतिष ज्ञान का भी परिचायक है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** दृष्टांत, श्लेष एवं अनुप्रास **8. छंद–** दोहा।

(र) बढ़त-बढ़त .... बरु समूल कुम्हिलाइ।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत दोहे में कवि ने धन के बढ़ने पर मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि धनरूपी जल के बढ़ जाने के साथ-साथ मनरूपी कमल भी बढ़ता चला जाता है, किंतु धनरूपी जल के घटने के साथ -साथ मनरूपी कमल नहीं घटना, अपितु समूल नष्ट हो जाता है अर्थात् धन के बढ़ जाने पर मन की इच्छाएँ भी बढ़ जाती हैं, परंतु धन के घट जाने पर मन की इच्छाएँ नहीं घटती हैं। तब परिणाम यह होता है कि मनुष्य यह सह नहीं पाता और दु:ख से मरे हुए के समान हो जाता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कमल से मनुष्य के मन की उपमा देकर कवि ने यह स्पष्ट किया है कि धन के बढ़ने पर मन को नियंत्रित रखना चाहिए अन्यथा धन न रहने पर बहुत कष्ट होता है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** पुनरुक्ति प्रकाश, रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** दोहा।

(ल) जौ चाहत चटक .... नेह-चीकने चित्त।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने मित्रता के मध्य धन और वैभव को न आने देने का परामर्श दिया है।

व्याख्या– कवि का कथन है कि यदि आप चाहते हैं कि मित्रता की चटक अर्थात् चमक समाप्त न हो तथा मित्रता स्थायी बनी रहे और उसमें दोष उत्पन्न न हों, तो धन-वैभव का इससे संबंध न होने दें। धन अथवा किसी अन्य वस्तु का लोभ मित्रता को मलिन कर देता है। मित्र के स्नेह से चिकना मन धनरूपी धूल के स्पर्श से मैला हो जाता है; अत: स्नेह में धन का स्पर्श न होने दें। जिस प्रकार तेल से चिकनी वस्तु धूल के स्पर्श से मैली हो जाती है और उसकी चमक घट जाती है, उसी प्रकार प्रेम से कोमल चित्त; धनरूपी धूल के स्पर्श से दोषयुक्त हो जाता है और मित्रता में कमी आ जाती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने चित्त की निर्मलता बनाए रखने के लिए रजोगुण से बचने हेतु प्रेमरूपी तेल व धूल के संयोग की जो प्रवृतिमूलक उपमा दी है, उसने कवि के कथन को कलात्मक एवं प्रभावोत्पादक रूप दिया है। **2. भाषा–** ब्रज **3. शैली–** मुक्तक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं श्लेष **7. छंद–** दोहा।

(व) स्वारथु सुकृतु, न .... पच्छीनु न मारि।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इस दोहे में कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से अपने आश्रयदाता राजा जयसिंह को समय पर चेतावनी दी है। इस दोहे में उसे हिंदू राजाओं पर आक्रमण न करने के लिए अन्योक्ति द्वारा सचेत किया गया है।

व्याख्या– (1) हे बाज! तू अपने मन मे ंअच्छी तरह सोच-विचार कर देख ले कि तू शिकारी के हाथ में पड़कर अपनी जाति के पक्षियों को मारता है। इसमें न तो तेरा स्वार्थ है न यह अच्छा कार्य ही है, तेरा श्रम भी व्यर्थ ही जाता है; क्योंकि तेरे परिश्रम का फल तुझे न मिलकर तेरे मालिक को प्राप्त होता है। तू दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर अपनी जाति के पक्षियों का वध कर रहा है। अब तू मेरी सलाह मानकर अपनी जाति के पक्षियों का वध मत कर।

(2) हे राजा जयसिंह! तू विचार कर देख ले कि तू बाज पक्षी की तरह अपने शासक औरंगजेब के हाथ की कठपुतली बनकर अपने साथी इन हिंदू राजाओं पर आक्रमण कर रहा है। इस कार्य को करने से तेरे स्वार्थ की पूर्ति नहीं होती है, जीता हुआ राज्य तुझे नहीं मिलता। युद्ध मे ंराजाओं का वध करना कोई पुण्य का कार्य भी नहीं है। तुम्हारे श्रम का फल तुम्हें न मिलने से तुम्हारा श्रम व्यर्थ हो जाता है। इसलिए तू औरंगजेब के कहने से अपने पक्ष के हिंदू राजाओं पर आक्रमण करके उनका वध मत कर।

काव्यगत सौंदर्य– 1. औरंगजेब के कहने पर हिंदू नरेशों का विरोध करने वाले राजा जयसिंह के लिए कवि ने इस अन्योक्ति का प्रयोग किया था। उन दोनों में यह तय हुआ था कि विजित राज्य औरंगजेब को तथा विजित राज्य की लूट में मिला धन जयसिंह को मिलेगा। अत: राजा जयसिंह को चेतावनी देना उसके आश्रित कवि बिहारी का कर्तव्य है। **2.** यहाँ बाज पक्षी-जय सिंह का, शिकारी-औरंगजेब का तथा पक्षी अपने पक्ष के हिंदू राजाओं का प्रतीक है। यह दोहा इतिहास की प्रसिद्ध घटना पर आधारित होने के कारण विशेष महत्व रखता है। **3. भाषा–** ब्रज **4. शैली–** मुक्तक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** अन्योक्ति एवं श्लेष **8. छंद–** दोहा।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रँग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होई।

भाव स्पष्टीकरण– कवि बिहारीलाल जी यहाँ कहते हैं कि जैसे-जैसे ही मनुष्य का मन श्याम रंग अर्थात् कृष्ण के प्रेम, भक्ति व ध्यान आदि में मग्न या लीन होता जाता है, वैसे-वैसे ही उस मनुष्य का मन पवित्र व निर्मल होता जाता है।

(ब) जप, माला, छापा, तिलक, सरै न एकौ कामु।

भाव स्पष्टीकरण– कवि बिहारीलाल जी यहाँ अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि भक्ति के मार्ग में बाह्य आडंबरों जैसे लोक दिखावे के लिए जप करना, लोगों को दिखाने के लिए गले में माला पहनने, माला फेरने, चंदन का तिलक लगाने आदि क्रियाओं से कोई भी काम पूरा नहीं होता है क्योंकि ईश्वर तो केवल सच्चे मन की भक्ति से ही प्रसन्न होते हैं।

(स) बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।

भाव स्पष्टीकरण– बिहारी लाल जी ने अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि अचानक दुष्ट व्यक्ति के बुराई का त्याग कर देने से उसके प्रति लोगों के मन में शंका अर्थात् चित में अधिक डर बना रहता है क्योंकि जैसे चंद्रमा का दागरहित होना अमंगलकारी होता है वैसे ही दुष्ट व्यक्ति का तुरंत बुराई को त्यागना असंभव है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. बिहारी जी ने काव्यशास्त्र की शिक्षा किससे प्राप्त की?

(अ) केशवराय चौबे से (ब) **केशवदास से**

(स) रहीम से (द) सूरदास से

2. राजा जयसिंह को उनके राजकार्यों की ओर प्रेरित करने के लिए बिहारी जी ने क्या लिखा?

(अ) **दोहा** (ब) छंद

(स) बिहारी सतसई (द) इनमें से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से बिहारी जी की रचना कौन-सी है?

(अ) **बिहारी सतसई** (ब) गीतावली

(स) साहित्य-लहरी (द) विनय पत्रिका

4. 'बिहारी सतसई' किस काल से संबंधित है?

(अ) **रीतिकाल** (ब) भक्तिकाल

(स) आधुनिक काल (द) इनमें से कोई नहीं

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण बोध

1. निम्नलिखित दोहों में अलंकार, रस एवं स्थायीभाव की विवेचना कीजिए–

(अ) मोर-मुकुट की चंद्रिकनु, यौं राजत नँदनंद।
मनु ससि शेखर की अकस, किय सेखर सत चंद।।

उ०– अलंकार – उत्प्रेक्षा, अनुप्रास एवं श्लेष
रस – श्रृंगार
स्थायी भाव – रति

(ब) अधर धरत हरि कैं परत, ओठ-डीठि-पट-जोति।
हरित बाँस की बाँसुरी, इंद्रधनुष-रँग होति।।

उ०– अलंकार – यमक, अनुप्रास एवं उपमा
रस – भक्ति
स्थायी भाव – देव-विषयक रति

(स) जप, माला, छापा, तिलक सरै न एकौ कामु।
मन-काँचै नाचै वृथा, साँचे राँचे रामु।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

(द) नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोइ।
जैसो नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

उ०– अलंकार – उपमा, विरोधाभास, दीपक एवं श्लेष
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

(य) बुरौ बुराई जौ तजै, तौ चितु खरौ डरातु।
ज्यों निकलंकु मंयकु लखि, गनैं लोग उतपातु।।

उ०– अलंकार – अनुप्रास एवं दृष्टांत
रस – शांत
स्थायी भाव – निर्वेद

2. श्लेष अलंकार की परिभाषा एवं दो उदाहरण दीजिए।

उ०– श्लेष अलंकार की परिभाषा– जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त होकर अनेक अर्थ प्रकट करे, वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण– 1. मेरी भव–बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परै, स्यामु हरित–दुति होइ।।
2. नर की अरु नल–नीर की, गति एकै करि जोइ।
जैतौ नीचो ह्वै चलै, तेतौ ऊँचौ होइ।।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता
विद्यार्थी स्वयं करें।

5. चींटी, चंद्रलोक में प्रथम बार (सुमित्रानंदन पंत)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुमित्रानंदन पंत का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 ई. को अल्मोड़ा के समीप कौसानी नामक ग्राम में हुआ था।

2. सुमित्रानंदन पंत का पालन–पोषण किसने किया?

उ०– सुमित्रानंदन पंत का पालन–पोषण उनकी दादी और पिता ने किया था।

3. सुमित्रानंदन पंत के बचपन का क्या नाम था?

उ०– सुमित्रानंदन पंत के बचपन के नाम गुसाईं दत्त था।

4. सुमित्रानंदन पंत ने काव्य रचना कितने वर्ष की आयु में प्रारंभ की?

उ०– सुमित्रानंदन पंत ने काव्य रचना सात वर्ष की अल्पायु में प्रारंभ की।

5. पंत जी ने शिक्षा कहाँ से प्राप्त की?

उ०– पंत जी ने उच्च शिक्षा का प्रथम चरण अल्मोड़ा में पूर्ण किया। इसके बाद इन्होंने काशी के क्वींस कॉलेज से शिक्षा ग्रहण की।

6. सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ किस पत्रिका में प्रकाशित होती थीं?

उ०– सुमित्रानंदन पंत की कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होती थीं।

7. पंत जी ने आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के रूप में कब तक कार्य किया?

उ०– पंत जी ने आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के रूप में 1950 से 1957 तक कार्य किया।

8. 'लोकायतन', 'चिदंबरा', 'कला और बूढ़ा चाँद', कृतियों पर पंत जी को कौन–कौन से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया?

उ०– पंत जी को 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, 'चिदंबरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार तथा 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

9. पंत जी की प्रमुख काव्य–कृतियों के नाम लिखिए।

उ०– पंत जी की प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं– लोकायतन, पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, युगांत, ग्राम्या एवं युगवाणी आदि हैं।

10.पंत जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– पंत जी की मृत्यु 28 दिसंबर, सन् 1977 ई. को हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1.पंत जी ने चींटी को किसका प्रतीक माना है?

उ०– पंत जी ने चींटी को क्रियाशील श्रमिक का प्रतीक माना है, जो निरंतर अपने कार्य में लगे रहते हैं।

2.कवि 'पिपीलिका पाँति' के रूप में जीवन के किस आदर्श की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं?

उ०– कवि चींटी की पंक्ति के रूप में पाठकों का ध्यान इस आदर्श की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि चींटियाँ अनुशासन में रहकर कार्य करती हैं और अपने कार्य में निरंतर लगी रहती हैं। मनुष्यों को भी चींटी के इन आदर्शों को अपनाना चाहिए।

3.कवि ने चींटी को सुनागरिक क्यों बताया है?

उ०– कवि ने चींटी को इसलिए सुनागरिक बताया है क्योंकि उसका भी अपना समाज होता है, जिसके नियमों का पालन करना उसके लिए आवश्यक होता है। वह अपने समाज में हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान होते हैं।

4.चींटी कविता से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

उ०– चींटी कविता से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें भी चींटी की भाँति अनुशासन में रहकर निरंतर कार्य में संलग्न रहना चाहिए। जिस तरह चींटी कठोर परिश्रम के द्वारा अपनी भोजन सामग्री एकत्र करती है उसी प्रकार हमें भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठोर श्रम करना चाहिए तथा अपने समाज में रहते हुए उसके नियमों का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए तथा एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए।

5.चींटी कविता का सारांश लिखिए।

उ०– चींटी कविता सुमित्रानंदन पंत द्वार रचित ग्रंथ 'युगवाणी' से ली गई है जिसमें कवि ने चींटी की क्रियाशीलता को प्रदर्शित किया है। कवि कहते हैं कि क्या तुमने ध्यानपूर्वक कभी चींटी को देखा है। चींटियों की पंक्ति एक सीधी काली रेखा के समान दिखाई पड़ती है। जब चींटियाँ चलती हैं तो ऐसा लगता है जैसे काला धागा हिल-डुल रहा हो। वे अपने छोटे-छोटे पैरों से मिलती जुलती हुई चलती हैं। कवि चींटी की कार्यक्षमता पर प्रकाश डालते हुए कहता है कि चींटी निरंतर अपने कार्य में लगी रहती है। उसका भी अपना घर समाज होता है, वह गाय चराती है। (प्राणिशास्त्रियों के अनुसार चीटियों में गायें भी होती हैं।) उन्हें धूप खिलाती हैं, बच्चों की देखभाल व शत्रुओं से न डरकर अपनी सेना को संगठित करती हैं तथा अपना घर, आँगन साफ करती है। चींटी समाज में रहने वाला प्राणी है जो कठिन परिश्रमी एवं एक अच्छी नागरिक है। चींटी का शरीर भूरे बालों की कतरन के समान छोटा एवं पतला है। उसके आकार का छोटापन विश्वविख्यात है, परंतु उसका हृदय असीम साहस से भरा होता है। वह संपूर्ण पृथ्वी पर निडर होकर विचरण करती है तथा पूरी लगन से अपने कार्य में लगी रहती है। वह जीवन की अक्षय चिंगारी के समान है। वह तिल के समान छोटी होते हुए भी, प्राणों की झिलमिलाहट से पूर्ण है। वह दिनभर में मीलों लंबा सफर तय करती है तथा बिना परिश्रम व थकान से घबराते हुए अपने कार्य में लगी रहती है।

6. कवि ने क्यों व किस कार्य को ऐतिहासिक क्षण कहा?

उ०– कवि ने मनुष्य के प्रथम बार चंद्रलोक पर कदम रखने को ऐतिहासिक क्षण कहा क्योंकि इस घटना के साथ ही देश और काल से जुड़ी बाधाओं के न जीते जा सकने वाले सारे बंधन छिन्न भिन्न होकर बिखर गए हैं और मनु के पुत्रों अर्थात् मानव ने दिग्विजय प्राप्त कर ली है।

7. मानव का कौन-सा स्वप्न पूर्ण हुआ है तथा क्यों?

उ०– मानव युगों-युगों से चंद्रमा को लेकर विभिन्न सुनहरे स्वप्न देखा करता था। मनुष्य के चंद्रमा के पहुँचने के कारण ये सुनहरे सपने साकार हो गए हैं तथा पृथ्वी का चंद्रमा से संबंध जुड़ गया है।

8.पंत जी ने किन पंक्तियों में लोकमंगल की कामना की है?

उ०– पंत जी ने निम्नलिखित पंक्तियों में लोकमंगल की कामना की है–

दिग्-विजयी मनु-सुत, निश्चय,
यह महत् ऐतिहासिक क्षण
भू-विरोध हो शांत।
निकट आएँ सब देशों के जन।

फहराए ग्रह उपग्रह में
धरती का श्यामल अंचल,
सुख संपद् संपन्न जगत् में
बरसे जीवन-मंगल।
धरा चंद्र की प्रीति परस्पर
जगत प्रसिद्ध पुरातन,
हृदय-सिंधु में उठता
स्वर्गिक ज्वार देख चन्द्रानन!

9.'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता का सारांश लिखिए।

उ०– 'चंद्रलोक में प्रथम बार' कविता सुमित्रानंदन पंत जी के काव्य ग्रंथ 'ऋता' से ली गई है। जिसमें कवि ने प्रथम बार मानव के चाँद पर पहुँचने की ऐतिहासिक घटना का वर्णन किया है।

जब मनुष्य प्रथम बार चाँद पर पहुँचा तो उस समय इस घटना के साथ देश और काल के उन सारे बंधनों, जिन पर विजय पाना कठिन समझा जाता था छिन्न-भिन्न हो गए। यह निश्चय ही मनु के पुत्रों मानव की दिग्विजय थी। कवि कामना करता है इस ऐतिहासिक क्षण में पृथ्वी पर दिखाई देने वाले विरोध शांत हो जाएँ और सभी देशों के लोग एक-दूसरे के निकट आए जाएँ।

मनुष्य का पुराने समय से ही चंद्रमा के साथ घनिष्ठ संबंध रहा है। मानव द्वारा चंद्र विजय कर लेने से मानव का चाँद को लेकर देखे जाने वाला पुराना सपना साकार हो गया है और एक नए चंद्र युग का आरंभ हुआ है। अब धरती का हरा-भरा अंचल ग्रहों और उपग्रहों सब जगह पर फहराया जाए और समस्त संसार में सुख व संपत्ति की प्रचुरता हो तथा सब जगह मंगल ही मंगल हो। अमेरिका और सोवियत संघ रूस जैसे विशाल देश नई दिशाओं का निर्माण करें क्योंकि अंतरिक्ष विज्ञान में यही देश सर्वाधिक प्रगति कर रहे हैं। संसार में जीवन पद्धतियों का भेद समाप्त होकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की स्थापना हो जाए। विज्ञान का संपूर्ण विकास मानव के कल्याण के लिए ही होना चाहिए। परमाणु शक्ति मानव जीवन के संहार का साधन न होकर पृथ्वी पर स्वर्ण निर्माण का साधन बननी चाहिए। विश्व में मानवता ही सर्वोपरि हो जिसके सामने पृथ्वी के सभी राष्ट्रों को नतमस्तक होना चाहिए। पृथ्वी व चंद्रमा का प्रेम जगत में विख्यात है और बहुत पुराना है। चंद्रमा पृथ्वी का ही एक अंग है। आज भी पूर्णिमा के दिन चंद्रमा को देखकर पृथ्वी के सागररूपी मन में ज्वार उठता है जो पृथ्वी और चंद्रमा के पुराने प्रेम व संबंधों का परिचायक है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1.सुमित्रानंदन पंत का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुमित्रानंदन पंत छायावादी युग के महान कवियों में से एक थे। इनका काव्य अधिकांशतः प्रकृति चित्रण पर आधारित है। इसलिए इन्हें 'प्रकृति के सुकुमार कवि' भी कहा जाता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने पंत के विषय में लिखा है-''पंत केवल शब्द-शिल्पी ही नहीं, महान् भाव-शिल्पी भी हैं और सौंदर्य के निरंतर निखरते सूक्ष्म रूप को वाणी देने वाले, एक संपूर्ण युग को प्रेरणा देने वाले प्रभाव-शिल्पी भी।''

जीवन परिचय–कविवर सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, 1900 ई. को अल्मोड़ा के समीप कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। इनके जन्म के 6 घंटे बाद ही माता का देहांत हो गया, जिसके कारण इनकी दादी और पिता ने इनका लालन-पालन किया। इनके पिता का नाम गंगादत्त पंत था। ये जन्मजात कवि थे, इन्होंने सात वर्ष की अल्पवय में ही काव्य-रचना प्रारंभ कर दी थी।

पंत जी ने उच्चशिक्षा का प्रथम चरण अल्मोड़ा में पूर्ण किया। वहीं पर इन्होंने अपना नाम गुसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया।

सन् 1919 ई. में पंत जी अपने मँझले भाई के साथ काशी चले गए। वहाँ आपने क्वींस कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की। यहीं आप कवि कर्म की ओर विशेष रूप से उन्मुख हुए। आप की कविताएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगीं। काशी में पंत जी का परिचय रवींद्रनाथ ठाकुर और सरोजिनी नायडू के काव्य के साथ-साथ अंग्रेजी की रोमांटिक कविता से हुआ। अब आपकी कविता सहृदय काव्य-मर्मज्ञों के हृदय में धाक जमाने लगी थी।

इसके बाद सन् 1950 ई. में आपको आल इंडिया रेडियो के परामर्शदाता के पद पर नियुक्ति मिली। इस पद पर आप 1957 ई. तक कार्य करते रहे।

आपको 'लोकायतन' पर सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार और 'चिदंबरा' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से भी पुरस्कृत हुए। भारत सरकार ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। 28 दिसंबर सन् 1977 ई. को सरस्वती का यह उपासक लौकिक जगत् को त्यागकर गोलोकवासी हो गया।

साहित्यिक परिचय– पंत जी जहाँ सौंदर्य एवं प्रकृति के सुकुमार कवि हैं, वहीं उनकी मानवतावादी दृष्टि भी किसी से छिपी नहीं है। काव्य सृजन का जो वास्तविक उद्देश्य है, उसकी पूर्ति सर्वत्र की गई है। इस दृष्टि से हिंदी साहित्य में कवि पंत का स्थान बहुत ऊँचा है। पंत जी का काव्य युग के साथ बदलता रहता है। प्रारंभ में वे छायावादी रहे बाद में प्रगतिवादी चेतना से युक्त हो गए। कालांतर में उनकी कविता अरविंद दर्शन से प्रभावित हुई तथा तत्पश्चात् वे नवमानववादी रचनाएँ लिखने लगे। पंत जी अपनी कोमल कल्पना के कारण सुविख्यात रहे हैं।

2.सुमित्रानंदन पंत की कृतियों का वर्णन करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर भी प्रकाश डालिए।

उ०– **कृतियाँ–** आपने दीर्घकालिक काव्य-जीवन में हिंदी काव्य-जगत् को अनेक कृतियाँ प्रदान की, जो निम्नलिखित हैं—

(अ) लोकायतन– इस महाकाव्य में कवि की सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा अभिव्यक्त हुई है। इसमें ग्राम्य-जीवन और जन-भावना को स्वर प्रदान किया गया है।

(ब) पल्लव– इस काव्य-संग्रह ने कवि को छायावादी कवि के रूप में स्थापित किया। इसमें प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य पर आधारित व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गए हैं।

(स) वीणा– इस काव्य-संग्रह में कवि के प्रारंभिक गीत संकलित हैं, जो प्रकृति के अपूर्व सौंदर्य को चित्रित करते हैं।

(द) ग्रंथि– इस काव्य-संग्रह में कवि की वियोग-व्यथा को व्यक्त करने वाली रचनाएँ हैं। प्रकृति यहाँ भी सहचरी बनकर कवि को संबल प्रदान करती हुई चलती है।

(य) गुंजन– इसमें कवि की गंभीर और प्रौढ़ रचनाएँ संकलित हैं, जो कि प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य से संबंधित हैं।

(र) युगांत, ग्राम्या एवं युगवाणी– इन संग्रहों की रचनाओं पर प्रगतिवाद और समाजवाद का प्रभाव है। कवि का मानव हृदय दलित पीड़ित के प्रति द्रवित हो उठा है।

(ल) अन्य– स्वर्णधूलि, उत्तरा, अतिमा, स्वर्णकिरण आदि रचनाओं में पंत जी महर्षि अरविंद के अंतश्चेतनावाद को भाव एवं शब्द प्रदान करते नजर आते हैं।

उपर्युक्त कृतियों के अतिरिक्त 'चिदंबरा', 'कला और बूढ़ा चाँद', 'शिल्पी' आदि पंत जी की अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं।

भाषागत विशेषताएँ– कवि की भाषा प्रांजल और साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग शैली को सरस और सरल बनाता है। इनकी शैली में मधुरता, सरलता, चित्रात्मकता एवं संगीतात्मकता सर्वत्र विद्यामन है। भाषा में कोमलता, सुकुमारता के साथ-साथ लाक्षणिकता भी देखी जा सकती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) चींटी को देखा? .... कनके चुनती अविरत!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड'के 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'युगवाणी' काव्य संग्रह 'चींटी' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने चींटी जैसे लघु प्राणी की श्रमशीलता का वर्णन करके मनुष्य को इससे प्रेरणा लेने का संदेश दिया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि क्या तुमने कभी चींटी को ध्यानपूर्वक देखा है? चींटियों की पंक्ति एक सरल (सीधी) काली और विरल रेखा के समान प्रतीत होती है। वह अपने छोटे-छोटे पैरों से प्रति क्षण चलती रहती है। चींटियाँ जब मिलकर चलती हैं तो ऐसा मालूम पड़ता है जैसे कोई पतला काला धागा हिल-डुल रहा हो। कवि आगे कहता है कि वह चींटियों की पंक्ति (कतार) है। तुम ध्यान से देखो कि वह किस प्रकार निरंतर चलती रहती है। वह निरंतर अपने काम में जुटी रहती है और अपने व अपने परिवार के लिए छोटे-छोटे उपयोगी कणों को बिना रुके लगातार चुनती रहती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ चींटियों की कर्मठता का सजीव चित्रण कर मनुष्य को कर्मठता का संदेश दिया है। **2.** चींटियों की लघुता एवं कर्मठता का तुलनात्मक स्वरूप इस भाव को अभिव्यक्त करता है कि शारीरिक क्षमता का कर्मठता से कोई संबंध नहीं है, यह तो एक मानसिक प्रवृत्ति है। **3.** भाषा– साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** वर्णनात्मक **5. रस–** वीर रस (कर्मवीरता के कारण) **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, उपमा एवं अनुप्रास।

(ब) चींटी है प्राणी .... की चिनगी अक्षय!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने चींटी के गुणों और उसकी क्रियाशीलता का वर्णन किया है।

व्याख्या– चींटी एक सामाजिक प्राणी है। चींटी का अपना एक समाज होता है और उसी के साथ वह हिल मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी जीव है और उसमें एक अच्छे नागरिक के सभी गुण विद्यमान हैं।

कवि कहता है कि तुमने चींटी को ध्यान से देखा होगा। वह अत्यधिक लघु प्राणी है, परंतु उसका हृदय एवं आत्मबल अत्यंत विशाल है। चींटियों की पंक्ति भूरे बालों की कतरन के समान दिखाई देती है। उसकी लघुता को सभी जानते हैं, लेकिन उसके हृदय में असीम साहस है। वह सारी पृथ्वी पर, जहाँ चाहती है, निर्भय होकर विचरण करती है, उसे किसी भी स्थान पर घूमने में भय नहीं लगता है। वह लगातार अपने श्रम से, भोजन को एकत्र करने के काम में तल्लीन होकर जुटी रहती है। चींटी श्रम की साकार मूर्ति है। वह जीवन की कभी नष्ट न होने वाली चिंगारी है। चींटी एक अतिलघु प्राणी है, परंतु उसमें जीवन की संपूर्ण ज्योति जगमगाती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ चींटी का उदाहरण देकर मानव को प्रेरित किया है और उसे निरंतर अपना कर्तव्य करते रहने की शिक्षा दी है। कवि छोटे दिखने वाले जीवन में भी महानता ढूँढने में सक्षम है। कवि ने यहाँ परिश्रम के महत्व पर भी प्रकाश डाला है तथा सामाजिकता को एक बड़े बल समूह के रूप में प्रदर्शित किया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** वर्णनात्मक **4. रस–** वीर रस (कर्मवीरता के कारण) **5. गुण–** ओजमिश्रित प्रसाद **6. अलंकार–** उपमा एवं अनुप्रास।

(स) चंद्रलोक में प्रथम .... देशों के जन।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठय पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'सुमित्रानंदन पंत' द्वारा रचित 'ऋता' काव्य संग्रह से 'चंद्रलोक में प्रथम बार' शीर्षक से उदधृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने मानव के चंद्रमा पर पहुँचने की ऐतिहासिक घटना के महत्व को व्यक्त किया है। यहाँ कवि ने उन संभावनाओं का भी वर्णन किया है, जो मानव के चंद्रमा पर पैर रखने से साकार होती प्रतीत हो रही हैं।

व्याख्या– कवि कहता है कि जब चंद्रमा पर प्रथम बार मानव ने अपने कदम रखे तो ऐसा करके अपने देश-काल के उन सारे बन्धनों, जिन पर विजय पाना कठिन माना जाता था, छिन्न-भिन्न कर दिया। मनुष्य को यह आशा बँध गई कि इस ब्रह्मांड में कोई भी देश और ग्रह-नक्षत्र अब दूर नहीं है। यह निश्चय ही मनु के पुत्रों (मनुष्यों) की दिग्विजय है यह ऐसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण है कि अब सभी देशों के निवासी मानवों को परस्पर विरोध समाप्त करके एक-दूसरे के निकट आना चाहिए और प्रेम से रहना चाहिए। यह संपूर्ण विश्व ही अब एक देश में परिवर्तित हो गया है। सभी देशों के मनुष्य अब एक-दूसरे के निकट आएँ, यही कवि की आकांक्षा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने वैज्ञानिक घटना के परिप्रेक्ष्य में दार्शनिक आदर्शों की प्रेरणात्मक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** दोष **6. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक।

(द) फहराए ग्रह उपग्रह .... विस्तृत मन!

संदर्भ–पूर्ववत्

प्रसंग– कवि कामना करते हुए यहाँ यह कह रहा है कि पृथ्वी का आँचल सभी उपग्रहों पर फहराए और सभी जगह भाईचारा व्याप्त हो।

व्याख्या– कवि का कथन है कि मैं अब यह चाहता हूँ कि ब्रह्मांड के ग्रहों-उपग्रहों में इस पृथ्वी का श्यामल अंचल फहराने लगे। तात्पर्य यह है कि मनुष्य अन्य ग्रहों पर भी पहुँचकर वहाँ पृथ्वी जैसी हरियाली और जीवन का संचार कर दे। सुख और वैभव से युक्त इस संसार में मानव-जीवन के कल्याण की वर्षा हो; अर्थात् संपूर्ण संसार में कहीं भी दु:ख और दैन्य दिखाई न पड़े।

अमेरिका और सोवियत रूस नयी दिशाओं की रचना करें, क्योंकि अंतरिक्ष विज्ञान में यही देश सर्वाधिक प्रगति पर हैं। कवि का कहना है कि विश्व में प्रत्येक देश की संस्कृति और सभ्यता भिन्न-भिन्न है तथा अलग-अलग जीवन पद्धतियाँ हैं। इनकी भिन्नता समाप्त होनी चाहिए। तात्पर्य यह है कि सभी जीवन-पद्धतियाँ आपस में मिलकर एक हो जाएँ और मन की संकुचित भावना का अंत कर लोग उदार बनें तथा विश्व-मानव में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का विकास हो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने चारों ओर कल्याणमय जीवन के प्रसार की कामना की है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

(अ) चींटी है प्राणी सामाजिक, वह श्रमजीवी, वह सुनागरिक।

भाव स्पष्टीकरण– कवि पंत जी अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि चींटी एक सामाजिक प्राणी है, उसका अपना समाज होता है, जिसमें वह हिल-मिलकर नियमपूर्वक रहती है। वह कठोर परिश्रमी होती है तथा उसमें अच्छे नागरिक के सभी गुण होते हैं, अर्थात् मनुष्यों को भी चींटी जैसे लघु जीव से प्रेरणा लेते हुए परिश्रमी एवं अच्छा नागरिक बनने का प्रयत्न करना चाहिए तथा समाज में मिल-जुलकर नियत व कर्तव्यों का पालन करते हुए रहना चाहिए।

(ब) दिग्-विजयी मनु-सुत, निश्चय, यह महत् ऐतिहासिक क्षण, भू-विरोध हो शांत।

भाव स्पष्टीकरण– चंद्रलोक में प्रथम बार मानव के कदम रखने पर पंत जी अपने भाव स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि यह निश्चय ही मनु-पुत्रों अर्थात् मानव की बहुत बड़ी जीत (दिग्विजय) है। यह ऐसा महत्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण है जब सभी देशों के निवासियों को आपसी भेदभाव को समाप्त करके एक-दूसरे के समीप आना चाहिए अर्थात् पृथ्वी पर सब तरफ शांति का वातारण हो।

(स) अणु-युग बने धरा जीवन हित, स्वर्ग सृजन का साधन।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि पंत जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि विज्ञान का संपूर्ण विकास मानव-जीवन के कल्याण के लिए ही होना चाहिए। परमाणु शक्ति मानव-जीवन के विनाश का साधन न होकर पृथ्वी पर स्वर्ग के निर्माण का साधन बननी चाहिए अर्थात् मनुष्य द्वारा परमाणु शक्ति का प्रयोग मानव के हित के लिए ही होना चाहिए जिससे पृथ्वी पर मनुष्य स्वर्ग के सुखों का अनुभव कर सके।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. पंत जी की माता का देहांत उनके जन्म के कितने समय बाद हुआ?

(अ) पाँच दिन (ब) **छः घंटे**

(स) छः वर्ष (द) पाँच वर्ष

2. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना पंत जी की नहीं है?

(अ) लोकायतन (ब) पल्लव

(स) ग्रंथि (द) **सतसई**

3. पंत जी की किस रचना पर उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया?

(अ) लोकायतन (ब) **चिदंबरा**

(स) कला और बूढ़ा चाँद (द) इनमें से कोई नहीं

4. निम्न में से कौन 'प्रकृति के सुकुमार कवि' हैं?

(अ) **सुमित्रानंदन पंत** (ब) बिहारी

(स) महादेवी वर्मा (द) रसखान

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1 निम्नलिखित पद्यांशों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) गाय चराती, धूप खिलाती,
बच्चों की निगरानी करती, लड़ती, अरि से तनिक न डरती,
दल के दल सेना सँवारती, घर आँगन, जनपथ बुहारती।

उ०– प्रस्तुत पद्यांश में अनुप्रास अलंकार है।

(ब) अणु-युग बने धरा जीवन हित, स्वर्ग सृजन का साधन,
मानवता ही विश्व सत्य, भू-राष्ट्र करें आत्मार्पण!

उ०– प्रस्तुत पद्यांश में अनुप्रास अलंकार है।

2निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) वह भी क्या देही है, तिल-सी? प्राणों की रिलमिल झिलमिल सी!
दिन भर में वह मीलों चलती, अथक, कार्य से कभी न टलती।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने मानव को चींटी का उदाहरण देकर प्रेरित किया है और उसे निरंतर अपना कर्तव्य करने की शिक्षा दी है। **2.** कवि ने तुच्छ दिखने वाले जीवन में भी महानता का तत्व ढूँढ़ा है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** वर्णनात्मक **5. रस–** वीर (कर्मवीरता के कारण) **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा।

(ब) युग-युग का पौराणिक स्वप्न, हुआ मानव का संभव,
समारंभ शुभ नए चंद्र-युग का, भू को दे गौरव!

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने मानव के चंद्रमा पर पहुँचने को नए युग का आरंभ माना है। **2.** कवि के अनुसार मानव का चंद्रमा पर पहुँचना समस्त पृथ्वी व मानव जाति के लिए सम्मान की बात है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

6. हिमालय से, वर्षा सुंदरी के प्रति (महादेवी वर्मा)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– महादेवी वर्मा का जनम सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में हुआ था।

2. महादेवी वर्मा ने संस्कृत में स्नातकोत्तर की उपाधि किस विश्वविद्यालय से प्राप्त की?

उ०– महादेवी वर्मा जी ने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।

3. महादेवी वर्मा बौद्ध धर्म की दीक्षा कब लेना चाहती थीं?

उ०– महादेव वर्मा सन् 1929 ई. में बौद्ध धर्म की दीक्षा लेना चाहती थीं।

4. महादेवी वर्मा ने किनकी प्रेरणा से समाज-सेवा आरंभ की?

उ०– महादेवी जी ने गाँधी जी की प्रेरणा से समाज-सेवा आरंभ की।

5. महादेवी वर्मा ने 'साहित्य अकादमी' की स्थापना कब की?

उ०– महादेवी वर्मा ने सन् 1956 में 'साहित्य अकादमी' की स्थापना की।

6. महादेवी वर्मा को डी.लिट. की उपाधि कहाँ-कहाँ से प्राप्त हुई?

उ०– महादेवी वर्मा को विक्रम, दिल्ली तथा कुमाऊँ विश्वविद्यालय से डी.लिट. की उपाधि प्राप्त हुई।

7. महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने किस सम्मान से अलंकृत किया?

उ०– महादेवी वर्मा को भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया।

8. भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार महादेवी वर्मा को किस रचना के लिए मिला?

उ०– महादेवी वर्मा को 'यामा' काव्य के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला।

9. महादेवी वर्मा की दो काव्य रचनाओं के नाम लिखिए।

उ०– महादेवी वर्मा की दो काव्य रचनाएँ- 'नीरजा' एवं 'नीहार' हैं।

10. महादेव वर्मा का निधन कब हुआ?

उ०– महादेवी वर्मा का निधन सन् 1987 ई. में हुआ।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कविता में कवयित्री ने हिमालय की कौन-कौन सी विशेषताओं का वर्णन किया है?

उ०– कवयित्री महादेवी जी ने 'हिमालय से' कविता में हिमालय के बर्फ से ढके ऊँचे पर्वतों पर सूर्य की किरणें पड़ने से इंद्रधनुषी रंगों की आभा चमकने का सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने हिमालय पर्वत को वैरागी के समान उदासीन बताया है। महादेवी जी ने नभ में सिर ऊँचा किए हिमालय को गर्वित एवं करुणापूर्ण कहा है जिसका हृदय संसार को अपने सामने झुका देखकर पिघल जाता है। कवयित्री ने हिमालय को कोमल व कठोर कहा है। महादेवी जी ने हिमालय को समाधि में लीन कहा है जिसकी दृढ़ता के आगे तूफान व झंझावत भी हार मानकर लौट जाते हैं। अत: महादेवी जी ने हिमालय पर्वत को उच्चता का द्योतक बताया है।

2. वर्षा-सुंदरी के केशों को किसके तुल्य बताया गया है?

उ०– वर्षा सुंदरी के केशों को काले-काले बादलों के तुल्य बताया गया है।

3. 'हिमालय से' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– 'हिमालय से' कविता महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'सांध्यगीत' काव्य संग्रह से ली गई है। जिसमें उन्होंने हिमालय की सुंदरता तथा विशेषताओं का वर्णन किया है।

कविता में महादेवी जी हिमालय की महानता का वर्णन करते हुए कहती हैं कि हे हिमालय! तुम दीर्घकालीन महान हो। तुम्हारे सफेद बर्फ से ढके पर्वतों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो वह तुम्हारी हँसी के समान दिखाई पड़ती हैं तथा बर्फ पर सूर्य की किरणें इंद्रधनुषी रंगों की पगड़ी के समान लगती हैं। ठंडी वायु तुम्हारे प्रत्येक अंग में सुगंध का लेपन करती है परंतु फिर भी तुम उदासीन वैरागी के समान हो। तुम आकाश में सिर ऊँचा किए खड़े हो, परंतु तुम्हारा हृदय इतना उदार है कि तुमने दीन-हीन मिट्टी को भी अपनी गोद में लिया हुआ है। तुम्हारा मन विश्व को तुम्हारे चरणों में झुका देखकर द्रवित हो जाता है। तुम जितने कोमल हो उतनी ही कठोरता को सहन करने की शक्ति रखते हो। हे हिमालय! तुम्हारी समाधि तो सैकड़ों तूफानों एवं झंझावतों के आने पर भी नहीं टूटती। तुच्छ धूल के जलते कणों की पुकार से तुम्हारी आँखों से करुणा के आँसू जल-धारा बनकर बहने लगती है। तुम सब सुखों से विरक्त हो एवं सुख व दु:ख में समान बने रहते हो। महादेवी जी भी अपने जीवन को हिमालय जैसा बनाना चाहती हैं। वह भी हिमालय के समान कठोर साधना शक्ति से पूर्ण एवं कोमल हृदय वाली बनना चाहती हैं। जिसके हृदय में करुणा का सागर हो तथा आँखों में ज्ञान की ज्योति जगमगाती रहे।

4. 'बक पाँतों का अरविंद-हार' से कवयित्री का आशय स्पष्ट कीजिए।

उ०– यहाँ कवयित्री महादेवी वर्मा जी का आशय है कि जब वर्षारूपी सुंदरी के साँस लेने पर उसके वक्ष-स्थल कंपित होते हैं, तब ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे इसके वक्ष-स्थल पर बगुलों की पंक्तिरूपी कमल के पुष्पों का हार हिल रहा हो अर्थात् आकाश में श्वेत बगुलों की पंक्ति श्वेत कमल के फूलों के हार के समान चंचल लगती है।

5. 'वर्षा सुंदरी के प्रति' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'वर्षा सुंदरी के प्रति' कविता में कवयित्री महादेवी जी ने वर्षारूपी सुंदरी का अलंकारिक वर्णन किया है। उन्होंने वर्षा का युवती के रूप में मानवीकरण करके उसके रूप सौंदर्य का अनुपम वर्णन किया है। महादेवी जी ने बादलों की उपमा इस रूपसी युवती के केशों से की है। उन्होंने वर्षा रूपी सुंदरी के शरीर को उस महिला के शरीर के समान बताया है जो अभी स्नान करके आई हो। कवयित्री ने बादलों को वर्षा रूपी सुंदरी का वस्त्र तथा जुगनु को उसके आँचल के सोने के फूल बताया है। महादेवी जी ने आकाश में उड़ते बादलों की पंक्ति को इस सुंदरी के गले के श्वेत कमल के फूलों के हार के समान बताया है। इस सुंदरी के आगमन पर प्रकृति मनोरम हो जाती है तथा वातावरण में मधुरता छा जाती है। कवयित्री का भाव इस सुंदरी से आग्रह करना है कि हे वर्षारूपी सुंदरी! तुम संसाररूपी अपने शिशु को अपनी गोद में समेट लो तथा इस पर अपना दुलार बरसाती रहो।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. महादेवी वर्मा जी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– हिंदी साहित्य के छायावादी युग के साहित्यकर्मियों में महादेवी वर्मा का स्थान अविस्मरणीय है। उनकी वेदना भरी कविताओं के कारण उन्हें 'आधुनिक युग की मीरा' कहा जाता है।

जीवन परिचय– महादेवी का जन्म सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में हुआ था। इनकी माता का नाम

हेमरानी तथा पिता का नाम गोविंद सहाय वर्मा था। महादेवी जी ने प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। बाद में वे 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्राचार्या नियुक्त हुईं। उन्होंने बाद में यहीं पर कुलपति पद को भी सुशोभित किया।

महादेवी जी सन् 1929 ई. में बौद्ध धर्म में दीक्षा लेकर बौद्ध-भिक्षुणी बनना चाहती थीं, किंतु गाँधी जी के संपर्क में आने के बाद उनकी प्रेरणा से वे समाज-सेवा के कार्य में लग गईं। शिक्षा तथा साहित्य के क्षेत्र में उनकी सेवाएँ अभूतपूर्व थीं इन्होंने 'चाँद' पत्रिका का संपादन भी किया। सन् 1956 ई. में उन्होंने 'साहित्य एकादमी' की स्थापना के प्रयास में अकथनीय योगदान दिया। सन् 1987 ई. में उनका देहावसान हो गया।

साहित्यिक परिचय– महादेवी जी के काव्य और गद्यपरक साहित्य में मानवतावादी धारा का प्रवाह सर्वत्र है। वे करुणा व भावना की देवी हैं। उनके साहित्य में जहाँ दीन-हीन मानवता का अंकन है, वहीं निरीह पशु-पक्षियों के साथ मानवीय संबंधों की अभिव्यक्ति अतुलनीय है। रेखाचित्रों में उनका गद्य-कौशल देखते ही बनता है। उनके 'नीलकंठ मोर', 'गौरा गाय','सोना हिरनी' आदि रेखाचित्र अपने में अनोखे हैं। उनका गद्य वैचारिक गंभीरता से युक्त है, फिर भी उसमें काव्य-सा लालित्य है। इनके द्वारा रचित काव्य में रहस्यवाद, वेदना एवं सूक्ष्म अनुभूतियों के कोमल एवं मर्मस्पर्शी भाव व्यक्त हुए हैं। इन्होंने अनेक सरस गीतों की रचना की है। बौद्धों के दु:खमय तथा करुणावाद का इन पर बहुत प्रभाव है।

2. महादेवी जी की कृतियों व भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– रचनाएँ– महादेवी जी की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) काव्य-कृतियाँ– नीरजा, रश्मि, नीहार, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा

(ब) गद्य रचनाएँ– अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, मेरा परिवार, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ

भाषा-शैली– महादेवी जी ने अपने काव्य में विशेषरूप से गीतों में सरल व स्निग्ध, तत्समप्रधान खड़ीबोली का प्रयोग किया है। माधुर्य गुण के कारण इनकी भाषा लयपूर्ण हो गई है। इनके काव्य भावानुकूल और भावनात्मक गीति शैली में है, जिनमें कोमलकांत पदावली, लाक्षणिकता और संगीतात्मकता है। इनके काव्य में अलंकारों का चयन छायावादी है, जिनमें उपमा, रूपक, मानवीकरण, श्लेष आदि मुख्य हैं।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) नभ में गर्वित .... कितने कठिन प्राण!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'सांध्यगीत' काव्य संग्रह से 'हिमालय से' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– कवयित्री ने इन पंक्तियों में हिमालय की कठोरता और कोमलता का वर्णन किया है।

व्याख्या–कवयित्री का कथन है कि हे हिमालय! स्वाभिमान से आकाश को छूने वाला तुम्हारा मस्तक किसी शक्ति के सम्मुख कभी नहीं झुकता है, फिर भी तुम्हारा हृदय इतना उदार है कि तुम अपनी गोद में तुच्छ धूल को भी धारण किए रहते हो। संसार को अपने चरणों में झुका देखकर तुम्हारा कोमल हृदय पिघलकर सरिताओं के रूप में प्रवाहित होने लगता है। हे हिमालय! तुम अपने शरीर पर वज्र के आघात सहकर भी विचलित नहीं होते। इस प्रकार तुम हृदय से कोमल और शरीर से कठोर हो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ पर कवयित्री ने हिमालय पर्वत का मानवीकरण करते हुए उसे कोमल व कठोर हृदय वाला बताया है। **2.** भाषा की संगीतात्मकता दृष्टव्य है। **3. भाषा–** सरल, साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** भावात्मक एवं चित्रात्मक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** अनुप्रास, विरोधाभास एवं मानवीकरण।

(ब) टूटी है तेरी .... दु:ख में समान!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में श्रीमती महादेवी वर्मा ने हिमालय की दृढ़ता तथा उसके हृदय की कोमलता का सुंदर चित्रण किया है।

व्याख्या– महादेवी जी ने हिमालय को एक समाधिस्थ योगी के रूप में देखा है। वे उससे कहती है कि हे हिमालय! सैकड़ों आँधी-तूफान तुझसे टकराते हैं और तुम्हारी दृढ़ता के सम्मुख हार मानकर लौट जाते है, किंतु तुम अविचल भाव

से समाधि में लीन रहते हो। इतनी बड़ी सहन-शक्ति और दृढ़ता होने पर भी तुच्छ धूल के जलते कण की करुण पुकार सुनकर तुम्हारी आँखों से करुणा के आँसू जल धारा बनकर बहने लगते हैं। तुममें दृढ़ता है, पर ह्रदय की कोमलता भी है। तुम्हारी सुख-भोग में आसक्ति नहीं है। तुम सुख और दु:ख में एक समान रहते हो। यह समत्व की भावना तुम्हारी उच्चता की द्योतक है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ महादेवी जी ने प्रकृति का सुंदर चित्रण किया है। **2.** हिमालय जहाँ एक तरफ कठोर है वहीं दूसरी तरफ उसके कोमल करुण स्वरूप को भी दर्शाया गया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** गीति **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश, मानवीकरण।

(स) मेरे जीवन का .... दृग में विहान!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवयित्री हिमालय की महानता का वर्णन करती हुई अपने जीवन को हिमालय के समान ढालना चाहती हैं।

व्याख्या– महादेवी जी अपने जीवन को हिमालय की छाया में मिला देना चाहती हैं। तात्पर्य यह है कि वे हिमालय के सद्गुणों को अपने आचरण में उतारना चाहती हैं। इसीलिए वे हिमालय से कहती हैं कि मेरी कामना है कि मेरा शरीर भी तुम्हारी तरह कठोर साधना-शक्ति से परिपूर्ण हो और ह्रदय में तुम्हारे जैसी करुणा का सागर भर जाए। मेरे ह्रदय में तुम्हारे जैसी करुणा की बरसात के कारण सरसता बनी रहे, परंतु आँखों में ज्ञान की ज्योति जगमगाती रहे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. महादेवी जी हिमालय को देखकर उसके महान् गुणों को मन में सहेजने की कामना कर रही हैं। **2.** छायावाद का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** भावात्मक गीति **5. रस–** शांत **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** अनुप्रास, मानवीकरण।

(द) सौरभ भीना झीना .... घन-केश-पाश।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'महादेवी वर्मा' द्वारा रचित 'नीरजा' काव्य संग्रह से 'वर्षा सुंदरी के प्रति' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में वर्षा सुंदरी के शृंगार का अद्भुत वर्णन किया गया है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि हे वर्षारूपी नायिका! तुमने बादलों के रूप में एक सुगंधित पारदर्शक, कुछ गीला एवं हल्का काले रंग का झीना रेशमी वस्त्र धारण कर लिया है। आकाश में चमकने वाले जुगनू ऐसे लग रहे हैं, मानो तुम्हारे हिलते हुए आँचल से मार्ग में सोने के फूल झर रहे हों। बादलों में चमकती बिजली ही तुम्हारी उज्ज्वल चितवन है। जब तुम अपनी ऐसी सुंदर दृष्टि किसी पर डालती हो तो उनके मन में प्रेम के दीपक जगमगाने लगते हैं। हे रूपवती वर्षा सुंदरी! तुम्हारी बादलरूपी केश-राशि अत्यधिक सुंदर है।

काव्यगत सौंदर्य–1. वर्षा का मानवीकरण किया गया है। वर्षाकाल की विभिन्न वस्तुओं का वर्षा-सुंदरी के शृंगार प्रसाधनों के रूप में प्रयोग किया गया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** चित्रात्मक एवं प्रतीकात्मक **4. रस–** शृंगार **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** रूपक, उपमा, अनुप्रास, मानवीकरण एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(य) इन स्निग्ध लटों .... घन-केश-पाश।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में महादेवी वर्मा ने वर्षारूपी सुंदरी को एक माता के रूप में चित्रित किया है।

व्याख्या–कवयित्री वर्षारूपी सुंदरी से आग्रह करती है कि हे वर्षा सुंदरी! तुम अपने कोमल बालों की छाया में इस संसाररूपी अपने शिशु को समेट लो। उसे अपनी रोमांचित एवं विशाल गोद में रखकर उसका सुंदर मस्तक अपने बादलरूपी बालों से ढककर अपने हँसीयुक्त शीतल चुंबन से चूम लो। हे सुंदरी! तुम्हारे बादलरूपी बालों की छाया से, मधुर चुंबन और दुलार से इस संसाररूपी; शिशु का मन बहल जाएगा और उसकी उदासी दूर हो जाएगी। हे वर्षारूपी सुंदरी! तुम्हारी बादलरूपी काली केश-राशि बड़ी मोहक लग रही है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. वर्षा का मातृत्व रूप में मनोहर वर्णन हुआ है तथा बच्चे के प्रति माँ के दायित्व को समझाया गया है। **2.** वर्षा सुंदरी को माता के रूप में चित्रित करके कवयित्री ने प्रकृति के कोमलतम रूप को प्रस्तुत किया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** भावात्मक **5. रस–** शृंगार एवं वात्सल्य **6. गुण–** माधुर्य **7. अलंकार–** रूपक एवं मानवीकरण।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) सेली बनता है इंद्रधनुष, परिमल मल मल जाता बतास!

भाव स्पष्टीकरण– कवयित्री अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि जब हिमालय पर्वत के सफेद बर्फ पर सूर्य की सुनहरी किरणें पड़ती हैं और उससे जो रंगों का विकिरण होता है उससे लगता है कि हिमालय पर्वत के सिर पर इंद्रधनुषी रंगों वाली पगड़ी बाँध दी गई है और फूलों के संपर्क में रहने के कारण शीतल वायु हिमालय पर्वत के शरीर पर सुगंधित लेप करती प्रतीत होती है।

(ब) नभ-गंगा की रजतधार में, धो आई क्या इन्हें रात?

भाव स्पष्टीकरण– कवयित्री महादेवी वर्मा जी यहाँ भावों को स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि हे वर्षा सुंदरी! तुम्हारी बादल रूपी काले–काले बाल बहुत सुंदर हैं जो हवा में लहरा रहे हैं। क्या तुम अपने इन बालों को रात में आकाश–गंगा की चाँदी के समान उजली जल–धारा में धोकर आई हो? अर्थात् तुम्हारे काले–काले बादलरूपी बाल बहुत ही कोमल व सुंदर प्रतीत हो रहे हैं।

(स) केकी-रव की नुपूर-ध्वनि सुन, जगती जगती की मूक प्यास!

भाव स्पष्टीकरण– कवयित्री अपने भावों को स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि जब वर्षा ऋतु के आगमन पर चारों ओर नृत्य करते हुए मोरों की 'केकी–केकी' की मधुर ध्वनि सुनाई पड़ती है, तब ऐसा लगता है कि जैसे वर्षा सुंदरी के पैरों में बँधे घुंघरू बज रहे हों। उस ध्वनि को सुनकर पृथ्वी की भी मौन प्यास जाग्रत होने लगती है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के किस जिले में हुआ था?

(अ) मेरठ (ब) गाजियाबाद

(स) मुरादाबाद (द) **फर्रुखाबाद**

2. निम्न में से महादेवी वर्मा की कृति है–

(अ) स्वप्न (ब) मानसी

(स) **नीरजा** (द) ग्राम्य–गीत

3. महादेवी वर्मा ने संपादन किया था–

(अ) सरस्वती पत्रिका का (ब) **चाँद पत्रिका का**

(स) इंदु पत्रिका का (द) हंस पत्रिका का

4. निम्न में से महादेवी जी की काव्य-कृति है–

(अ) **नीहार** (ब) मेरा परिवार

(स) पथ के साथी (द) स्मृति की रेखाएँ

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) सेली बनता है इंद्रधनुष,परिमल मल मल जाता बतास!

उ०– यहाँ पुनरूक्तिप्रकाश एवं अनुप्रास अलंकार है।

(ब) नभ में गर्वित झुकता न शीश, पर अंक लिए है दीन क्षार।

उ०– यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

(स) रूपसि तेरा घन-केश-पाश।

उ०– यहाँ मानवीकरण व रूपक अलंकार है।

(द) केकी-रव की नुपूर-ध्वनि सुन जगती जगती की मूक प्यास!

उ०– यहाँ यमक अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(अ) नभ गंगा की रजतधार में
धो आई क्या इन्हें रात?
कंपित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा सा तन हे सद्यस्नात!
भीगी अलकों के छोरों से
चूतीं बूँदें कर विविध लास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उ०- **काव्यगत सौंदर्य- 1.** महादेवी जी ने इन पंक्तियों में वर्षा सुंदरी का एक स्त्री के रूप में मानवीकरण किया है। **2. भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली-** चित्रात्मक **4. रस-** शृंगार **5. गुण-** माधुर्य **6. अलंकार-** रूपक, मानवीकरण एवं अनुप्रास।

(ब) उच्छ्वसित वक्ष पर चंचल है
बक पाँतों का अरविंद-हार;
तेरी निश्वासें छू भू को
बन-बन जातीं मलयज बयार;
केकी-रव की नुपूर-ध्वनि सुन
जगती जगती की मूक प्यास!
रूपसि तेरा घन-केश-पाश!

उ०- **काव्यगत सौंदर्य- 1.** यहाँ प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। **2.** वर्षा को सुंदर नायिका के रूप में चित्रित करके कवयित्री ने प्रकृति के कोमलतम रूप को प्रस्तुत किया है। **3. भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली-** चित्रात्मक **5. रस-** शृंगार **6. गुण-** माधुर्य **7. अलंकार-** रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश, यमक एवं अनुप्रास।

(च) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

7. स्वदेश-प्रेम (पं० रामनरेश त्रिपाठी)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०- पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई. में जिला जौनपुर के अंतर्गत कोइरीपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. रामनरेश त्रिपाठी के पिता का क्या नाम था?

उ०- रामनरेश त्रिपाठी के पिता का नाम पं० रामदत्त त्रिपाठी था।

3. रामनरेश त्रिपाठी की शिक्षा कहाँ तक हुई?

उ०- रामनरेश त्रिपाठी की शिक्षा कक्षा 9 तक हुई।

4. रामनरेश त्रिपाठी को किन-किन भाषाओं का ज्ञान था?

उ०- रामनरेश त्रिपाठी को हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला एवं गुजराती भाषाओं का ज्ञान था।

5. रामनरेश किस सम्मेलन के मंत्री रहे?

उ०- रामनरेश हिंदी सहित्य सम्मेलन, प्रयाग के मंत्री रहे।

6. रामनरेश त्रिपाठी ने कैसे गीतों का संकलन किया?

उ०- रामनरेश त्रिपाठी ने ग्राम गीतों का संकलन किया।

7. रामनरेश त्रिपाठी की कोई दो प्रमुख कृतियाँ बताइए।

उ०- रामनरेश त्रिपाठी की दो प्रमुख कृतियाँ— लक्ष्मी तथा प्रेमलोक हैं।

8. त्रिपाठी जी की फुटकर रचनाओं पर आधारित कृति का नाम बताइए।

उ०– त्रिपाठी जी की फुटकर रचनाओं पर आधारित कृति का नाम 'मानसी' है।

9. त्रिपाठी जी ने अपनी कृतियों में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है?

उ०– त्रिपाठी जी ने अपने कृतियों में ओज प्रधान, सरस एवं सरल खड़ीबोली हिंदी का प्रयोग किया है।

10. रामनरेश त्रिपाठी का निधन कब हुआ था?

उ०– रामनरेश त्रिपाठी का निधन सन् 1962 ई. में हुआ था।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. प्रस्तुत कविता के आधार पर मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्यों को स्पष्ट कीजिए।

उ०– प्रस्तुत कविता के आधार पर कवि हमें अपनी मातृभूमि के प्रति हमारे कर्तव्यों के पालन के लिए प्रेरित कर रहा है कि हमें ऐसी भारत-भूमि का निवासी होने का गौरव प्राप्त हुआ जो सुखों में स्वर्ग के समान है, अत: इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। जब तक हमारी साँसे चल रही हैं और हमारे हृदय में धड़कन है हमें अपने देश के गौरव को ऊँचा रखना है और कोई भी ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे इसके सम्मान में कमी आए। हमें देश की रक्षा करते समय मृत्यु के भय से नहीं डरना चाहिए क्योंकि मृत्यु व जीवन तो सृष्टि का नियम है। अपने देश से प्रेम करते हुए हमें आत्म-त्याग की भावना से पूर्ण होना चाहिए क्योंकि यह भावना ही प्रेम में प्राणों का संचार करती है। अत: देश से प्रेम, इसकी रक्षा, इसके गौरव व सम्मान को ऊँचा बनाए रखना हमारा परम कर्तव्य है।

2. कवि ने 'स्वदेश-प्रेम' कविता में अतीत की किन घटनाओं का उल्लेख किया है?

उ०– कवि ने 'स्वदेश-प्रेम' कविता में अतीत की उन घटनाओं का उल्लेख किया है जब हमारे पूर्वजों की कीर्ति सर्वत्र फैली हुई थी। चंद्रमा एवं तारों के समूहों ने इसे देखा था। हमारी पूर्वजों की विजय घोषों व युद्ध गर्जनाओं को असंख्य बार यह आकाश सुन चुका है। हमारे महान् पूर्वजों को विजय गीतों से सभी दिशाएँ गूँज जाती थीं तथा जिनकी महिमा का साक्षी हिमालय आज भी है। इन कर्मठ व वीर पूर्वजों की सेवा में समुद्र भी स्वयं तत्पर रहता था तथा उनके असंख्य जहाजों को उठाकर पृथ्वी के समस्त तटों पर पहुँचाया करता था। भारत भूमि वीरों की भूमि रही है, जहाँ पर वीर पुरुषों ने अपनी मातृभूमि के लिए अनेक बार अपने प्राणों का बलिदान किया है।

3. कवि ने 'विश्राम स्थल' किसे और क्यों कहा है?

उ०– कवि ने मृत्यु को विश्राम स्थल कहा है क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुन: नवीन जीवन की यात्रा प्रारंभ करता है।

4. 'स्वदेश-प्रेम' नामक कविता से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उ०– 'स्वदेश-प्रेम' कविता के माध्यम से कवि त्रिपाठी जी भारतवासियों को अपने पूर्वजों की गौरव गाथा से प्रेरणा लेने के लिए प्रेरित कर रहे हैं कि उनके पूर्वज वीर, कर्मठ, परिश्रमी आदि गुणों से युक्त थे जिनके साक्षी चाँद, तारे व हिमालय पर्वत आदि हैं। विषुवत प्रदेश व ध्रुव प्रदेशों में रहने वाले व्यक्ति भी अपनी मातृभूमि से प्रेम करते हैं, जहाँ बहुत-सी विषमताएँ हैं। वह भारतवासियों को प्रेरित करते हुए कहते हैं कि तुम्हें तो ऐसी भूमि प्राप्त है जो सुखों में स्वर्ग के समान है, अत: हमें इस भूमि से प्रेम व इसकी रक्षा करनी चाहिए। जब तक हमारे शरीर में साँस है हमें इसके गौरव को ऊँचा रखना चाहिए तथा इसके सम्मान के लिए नतमस्तक रहना चाहिए। कवि इस कविता के माध्यम से भारतवासियों को प्रेम, त्याग, और स्वाभिमान का संदेश देना चाहते हैं।

5. 'त्याग के बिना प्रेम निष्प्राण है।' कथन के आशय का स्पष्टीकरण कीजिए।

उ०– इस कथन का आशय है कि प्रेम त्याग माँगता है। सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों का बलिदान करना पड़े तो हमें पीछे नहीं हटना चाहिए तथा प्रसन्नतापूर्वक बलिदान कर देना चाहिए क्योंकि बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत होता है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है, अत: सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए। अर्थात् सच्चे प्रेम के लिए त्याग की भावना परम आवश्यक है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. पं० रामनरेश त्रिपाठी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– पं० रामनरेश त्रिपाठी स्वदेश-प्रेम, मानव सेवा और पवित्र प्रणय के कवि हैं। आपकी रचनाओं में छायावाद का सूक्ष्म

सौंदर्य एवं आदर्शवाद का मानवीय दृष्टिकोण एक साथ घुल मिल गया है। आपके बारे में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का कथन है– ''पं० रामनरेश त्रिपाठी मननशील, विद्वान, परिश्रमी, लोक साहित्य के धनी थे। आपने अपनी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, मानव-सेवा, पवित्र प्रेम का नवीन आदर्श उत्पन्न किया।''

जीवन परिचय– सूक्ष्म सौंदर्य का चित्रण करने वाले पं० रामनरेश त्रिपाठी का जन्म जिला जौनपुर के अंतर्गत कोईरीपुर नामक ग्राम में सन् 1889 में एक कृषक परिवार में हुआ था। आपके पिता पं० रामदत्त त्रिपाठी एक ईश्वर भक्त ब्राह्मण थे। पं० रामनरेश त्रिपाठी ने मात्र कक्षा 9 तक ही शिक्षा ग्रहण की थी। बाद में स्वाध्याय द्वारा हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य कई भाषाओं में भी निपुणता प्राप्त की। अपने साहित्य सेवा को जीवन का लक्ष्य बनाया। आपने हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला एवं गुजराती भाषाओं पर भी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। हिंदी प्रचार के उद्देश्य से आपने 'हिंदी मंदिर' की स्थापना की। आप हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के मंत्री भी रहे। आपने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार का सराहनीय कार्य कर हिंदी की अपूर्व सेवा की। देशी रियासतों के अनेक राजा आपके मित्र थे, जिनके सहयोग से आप अपनी यात्राओं का आयोजन करते थे। आपने लगभग 20 हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा करके हजारों ग्राम गीतों का संकलन किया और अपनी कृतियों का प्रकाशन भी स्वयं ही कराया। राष्ट्रीयता, देश प्रेम, मानव सेवा, त्याग जैसे विषयों पर आपने अनेक कविताएँ लिखी हैं, जो अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। सन् 1962 ई. में आपका स्वर्गवास हो गया।

साहित्यिक परिचय– त्रिपाठी जी एक समर्थ कवि, संपादक एवं कुशल पत्रकार थे। इनके निबंध भी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस प्रकार कवि, निबंधकार, संपादक आदि के रूप में त्रिपाठी जी सदैव याद किए जाएँगे। अपनी साहित्यिक सेवाओं द्वारा हिंदी साहित्य के सच्चे सेवक के रूप में त्रिपाठी जी प्रशंसा के पात्र हैं। देशभक्ति एवं राष्ट्रीयता से ओतप्रोत आपकी रचनाएँ अत्यंत प्रेरणाप्रद हैं।

2. पं० रामनरेश त्रिपाठी की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– कृतियाँ– रामनरेश त्रिपाठी का रचना संसार विविधमुखी हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, बाल साहित्य, आलोचना, जीवन चरित, काव्य आदि लिखे हैं जिनका विवरण इस प्रकार है—

उपन्यास– लक्ष्मी

नाटक– वीरांगना, प्रेमलोक

कहानी-संग्रह– सुभद्रा, स्वपनों के चित्र

आलोचना– तुलसीदास और उनकी कविता

बाल साहित्य– बालकथा, गुपचुप, बुद्धि विनोद, फूलरानी

जीवन चरित–महात्मा बुद्ध, आकाश की बातें, अशोक

लोकगीत संग्रह– ग्राम्य गीत

काव्य संकलन– मिलन, पथिक,मानसी, स्वप्न

संगृहीत काव्य– कविता कौमुदी

'मिलन', 'पथिक' एवं 'स्वप्न' आपके द्वारा रचित खंडकाव्य हैं, जबकि 'मानसी' आपकी फुटकर रचनाओं का संग्रह है, इसमें देश-प्रेम, मानव-सेवा, प्रकृति वर्णन तथा बंधुत्व की भावनाओं पर आधारित प्रेरणाप्रद कविताएँ संगृहीत हैं, इनमें पात्रों तथा कथाओं के माध्यम से राष्ट्रप्रेम, बलिदान और त्याग के महत्व को स्पष्ट किया गया है। 'कविता कौमुदी' में उनके द्वारा संगृहीत कविताएँ हैं। इन्होंने लोकगीतों का एक संग्रह 'ग्राम्य-गीत' भी प्रकाशित कराया था।

भाषागत विशेषताएँ– त्रिपाठी जी की भाषा ओज प्रधान, सरस और सरल खड़ीबोली हिंदी है। माधुर्य गुण भी इनकी भाषा की विशेषता है। शैली अत्यधिक प्रभावपूर्ण एवं प्रवाहमयी है, जिसके अंतर्गत राष्ट्रप्रेम, मानवता एवं नैतिकता का चित्रण हुआ है। त्रिपाठी जी द्वारा मुख्यत: वर्णनात्मक एवं उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। आपके काव्य में द्विवेदीयुगीन नैतिकता एवं छायावादी सौंदर्य दृष्टि एक साथ देखने को मिलती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) शोभित है सर्वोच्च .... वक्ष: स्थल पर।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'पं० रामनरेश त्रिपाठी' द्वारा रचित 'स्वप्न' खंडकाव्य से 'स्वदेश-प्रेम' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में भारत के गौरवपूर्ण अतीत की झाँकी प्रस्तुत की गई है।

व्याख्या– कवि त्रिपाठी जी कहते हैं कि यह 'भारत' हमारे चिरस्मरणीय पूर्वजों का देश है। इसका मस्तक हिमालयरूपी सर्वोच्च मुकुट से सुशोभित हो रहा है, हमारे पूर्वजों के विजय–गीतों से आज तक भी संपूर्ण दिशाएँ गूँज रही हैं। ये ही तो वे पूर्वज थे, जिनकी महिमा की गवाही आज भी सत्य स्वरूप वाला श्रेष्ठ हिमालय दे रहा है अथवा जिनकी महिमा की गवाही आज भी हिमालय के रूप में प्रत्यक्ष है। इस भारत–भूमि के अति विस्तृत अथवा विशाल वक्षस्थल पर विभिन्न देशों के विमान समूह बना बनाकर उतरा करते थे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने हिमालय का महत्व व सौंदर्य का वर्णन किया है। **2.** कवि ने यहाँ अपने पूर्वजों के गुणों का गरिमापूर्वक गुणगान किया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** भावात्मक एवं वर्णनात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(ब) विषुवत् -रेखा का .... प्राण निछावर॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने इन पंक्तियों में बताया है कि प्रत्येक मनुष्य को अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। वह उसे छोड़कर कहीं जाना पसंद नहीं करता।

व्याख्या– जो मनुष्य भूमध्य-रेखा का निवासी है, जहाँ असहनीय गर्मी पड़ती है, वहाँ वह गर्मी के कारण हाँफ–हाँफकर अपना जीवन व्यतीत करता है, फिर भी उस स्थान से लगाव के कारण वहाँ की भीषण गर्मी को छोड़कर वह शीतल प्रदेश में नहीं जाता। वह कष्ट उठाता हुआ भी अपनी मातृभूमि पर असाधारण प्रेम और अपार श्रद्धा रखता है। जो मनुष्य ध्रुव प्रदेश का रहने वाला है, जहाँ सदा बर्फ जमी रहने के कारण भयंकर सर्दी पड़ती है, वहाँ वह भयंकर ठंड से काँप–काँपकर अपना जीवन–निर्वाह कर लेता है, किंतु ठंड से घबराकर गर्म प्रदेशों में जाकर जीवन नहीं बिताता। उसे भी अपनी मातृभूमि से बहुत प्रेम होता है और उसकी रक्षा के लिए वह अपने प्राण निछावर करने के लिए भी तत्पर रहता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने इस सत्य को प्रमाणित करने का सफल प्रयत्न किया है कि अपनी जन्मभूमि स्वर्ग से महान होती है। **2.** कवि ने उदाहरणों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि दुर्गम प्रदेशों में विषम परिस्थितियों में रहने वाले लोग भी अपनी मातृभूमि को छोड़कर सुविधाजनक स्थानों पर नहीं जाना चाहते हैं। **3.** यहाँ कवि ने उदाहरणों के द्वारा विदेशों में प्राप्त भौतिक सुविधाओं के प्रति आकर्षित होकर विदेश जाने वाले भारतवासियों के मन में स्वदेश–प्रेम जाग्रत करने का प्रयास किया है। **4. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **5. शैली–** भावात्मक **6. रस–** वीर **7. गुण–** ओज **8. अलंकार–** अनुप्रास एवं पुनरुक्तिप्रकाश **9. छंद–** मात्रिक छंद।

(स) जब तक साथ .... का भी भय॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में त्रिपाठी जी स्वाभिमान की भावना बनाए रखने पर बल दे रहे हैं।

व्याख्या– कविवर त्रिपाठी जी का कथन है कि जब तक तुम्हारी साँसे चल रही हैं और तुम्हारा हृदय धड़क रहा है, तब तक तुम्हें अपना और अपने देश का गौरव ऊँचा रखना है। अपनी पलकें, अपना सिर तथा अपना मनोबल ऊँचा रखना है; अर्थात् तुम्हें कोई ऐसा कार्य नहीं करना है, जिससे तुम्हें किसी के सामने सिर झुकाना पड़े, आँखें नीची करनी पड़ें और दीन–हीन बनना पड़े। जब तक तुम्हारे शरीर में एक बूँद भी रक्त शेष रहे, तब तक हे शत्रु को जीतने वाले भारतीयों! तुम दीन वचन नहीं बोलो और देश की रक्षा करते हुए यदि तुम्हारी मृत्यु भी हो जाए तो तुम्हें उसका भी डर नहीं होना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. स्वाभिमान की रक्षा का प्रभावशाली उपदेश देकर भारतीय नागरिकों को प्रोत्साहित किया गया है। **2.** सत्यं, शिवं, सुंदरम् पर आधारित स्वरूप भी यही है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं उपमा **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(द) निर्भय स्वागत करो .... वस्त्र बहाकर॥

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने प्रस्तुत पंक्तियों में मृत्यु से भयभीत न होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– हे भारत के वीरों! तुम निर्भय होकर मृत्यु का स्वागत करो और मृत्यु से कभी मत डरो; क्योंकि मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य अपने जीवनभर की थकावट को दूर कर विश्राम प्राप्त करता है, अत: मानव को उससे भयभीत नहीं होना

चाहिए। मृत्यु वह स्थान है, जहाँ मनुष्य पुराने शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण करता है और पुन: नवीन जीवन की यात्रा पर अग्रसर होता है। कवि कहता है कि मृत्यु एक नदी है, जिसमें नहाकर मनुष्य जीवनभर की थकान को दूर करता है। वह उस मृत्युरूपी नदी में अपने शरीररूपी पुराने वस्त्रों को बहा देता है और पुन: दूसरे नए जीवनरूपी वस्त्र को धारण करता है। कवि का तात्पर्य है कि हमें निर्भीकता और उल्लास के साथ मृत्यु का स्वागत करना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने यहाँ मृत्यु से बिना भयभीत हुए देश के लिए अपना सर्वत्र अर्पण करने की प्रेरणा दी है। **2.** जीवनरूपी मार्ग के बीच में मृत्युरूपी विश्राम गृह की कल्पना कवि की नितांत मौलिक कल्पना है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **8. छंद–** मात्रिक छंद।

(य) सच्चा प्रेम वही .... है विकसित।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने त्याग और बलिदान को ही सच्चे देश-प्रेम के लिए आवश्यक माना है।

व्याख्या– कवि कहता है कि सच्चे प्रेम में आत्मत्याग की भावना निहित होती है। अर्थात् आत्म-त्याग पर ही सच्चा प्रेम निर्भर होता हैं सच्चे प्रेम के लिए यदि हमें अपने प्राणों को भी न्योछावर करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। बिना त्याग के प्रेम प्राणहीन या मृत है। त्याग से ही प्रेम में प्राणों का संचार होता है; अत: सच्चे प्रेम के लिए प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव तत्पर रहना चाहिए। देशप्रेम एक पवित्र भावना है, जो निर्मल और सीमारहित त्याग से सुशोभित होती है। देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है तथा आत्मा के विकास से ही मनुष्य का विकास होता है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ देशप्रेम की उत्पत्ति के मूल भावों पर प्रकाश डाला गया है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** उद्‌बोधन **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **7. छंद–** मात्रिक।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) गूँज रही हैं सकल दिशाएँ, जिनके जय गीतों से अब तक।।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि रामनरेश त्रिपाठी भारतीयों को अपने पूर्वजों से प्रेरणा लेने का संदेश देते हुए स्पष्ट करते हैं कि हमारे उन पूर्वजों के वीरता से भरे कार्यों के कारण उनके विजय के गीतों से आज सारी दिशाएँ गूँज रही हैं अर्थात् उनके वीरतापूर्ण कार्यों के कारण आज भी उन्हें सर्वत्र याद किया जाता है व सम्मान दिया जाता है।

(ब) विषुवत्-रेखा का वासी जो, जीता है निज हाँफ-हाँफ कर।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि भारतीयों को मातृभूमि के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हुए स्पष्ट करते हैं कि भूमध्य रेखा में भयंकर गर्मी पड़ती है परंतु वहाँ रहने वाले लोगों को भले ही हांफ-हांफकर जीना पड़े। वे मातृभूमि से प्रेम के कारण उसे छोड़कर नहीं जाते हैं। वे कष्ट उठाकर भी अपनी मातृभूमि पर असाधारण प्रेम और श्रद्धा रखते हैं व उसके प्रति समर्पित रहते हैं, उसी प्रकार भारतीयों को भी अपनी मातृभूमि के लिए असाधारण प्रेम व श्रद्धा से समर्पित रहना चाहिए।

(स) आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित।।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि ने देशप्रेम की भावना को मनुष्यता के विकास का कारण बताते हुए स्पष्ट किया है कि देशप्रेम की भावना से ही मनुष्य की आत्मा विकसित होती है। आत्मा के विकास से मनुष्य का विकास होता है। अत: मनुष्य को देशप्रेम की भावना का विकास करके मानवता का विकास करना चाहिए।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. रामनरेश त्रिपाठी का जन्म किस गाँव में हुआ था?

(अ) **कोइरीपुर** (ब) कोईपुर

(स) कोशीपुर (द) कोइपुरी

2. हिंदी प्रचार के उद्देश्य से त्रिपाठी जी ने किसकी स्थापना की?

(अ) हिंदी मंच (ब) **हिंदी मंदिर**

(स) हिंदी कुंज (द) हिंदी कालेज

3. निम्न में से लोकगीत का संग्रह कौन-सा है?

(अ) भ्रमरावली　　(ब) गुपचुप

(स) अशोक　　(द) **ग्राम्य-गीत**

4. निम्न में से त्रिपाठी जी की रचना है-

(अ) गोदान　　(ब) **स्वप्न**

(स) मिलन　　(द) राष्ट्रप्रेम

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए-

(अ) जिनकी महिमा का है अविरल, साक्षी सत्य-रूप हिम-गिरि-वर।

उ०- यहाँ रूपक एवं अनुप्रास अलंकार है।

(ब) नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी, बहती हैं अब भी निशि-वासर।

उ०- यहाँ उपमा अलंकार है।

(स) फिर नूतन धारण करता है, काया-रूपी वस्त्र बहाकर।

उ०- यहाँ रूपक अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(अ) अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम-घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
देख चुके हैं जिनका वैभव,
ये नभ के अनंत तारागण।
अगणित बार सुन चुका है नभ,
जिनका विजय-घोष रण-गर्जन।।

उ०- **काव्यगत सौंदर्य- 1.** कवि ने अपने पूर्वजों के गुणों का गरिमापूर्वक गुणगान किया है। **2. भाषा-** तत्समात्मक खड़ीबोली **3. शैली-** भावात्मक **4. रस-** वीर **5. गुण-** ओज **6. अलंकार-** अनुप्रास, रूपक एवं पुनरुक्तिप्रकाश।

(ब) सागर निज छाती पर जिनके,
अगणित अर्णव-पोत उठाकर
पहुँचाया करता था प्रमुदित,
भूमंडल के सकल तटों पर।।
नदियाँ जिसकी यश-धारा-सी,
बहती हैं अब भी निशि-वासर।
ढूँढो, उनके चरण-चिह्न भी,
पाओगे तुम इनके तट पर।।

उ०- **काव्यगत सौंदय- 1.** पूर्वजों के गौरव का यशोगान व आलंकारिक वर्णन किया गया है। **2. भाषा-** साहित्यिक खड़ीबोली हिंदी **3. शैली-** भावात्मक **4. रस-** वीर **5. गुण-** ओज **6. अलंकार-** अनुप्रास, उपमा एवं रूपक **7. छंद-** मात्रिक।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

8. पुष्प की अभिलाषा, जवानी (माखनलाल चतुर्वेदी)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. माखन लाल चतुर्वेदी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 ई. को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई नामक स्थान पर हुआ था।

2. माखनलाल जी के पिता का क्या नाम था?

उ०– माखनलाल जी के पिता का नाम पं० नंदलाल चतुर्वेदी था।

2. माखनलाल जी ने घरेलु अध्ययन से किन-किन भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया?

उ०– माखनलाल जी ने घरेलु अध्ययन से संस्कृत, बाँग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।

4. माखनलाल जी ने किन-किन पत्रिकाओं का संपादन किया था?

उ०– माखनलाल जी ने कर्मवीर व प्रभा पत्रिकाओं का संपादन किया।

5. माखनलाल जी किसके संपर्क में आकर स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सम्मिलित हो गए?

उ०– माखनलाल जी गणेशशंकर विद्यार्थी के संपर्क में आकर स्वतंत्रता प्राप्ति के आंदोलन में सम्मिलित हो गए।

6. माखनलाल जी किस सम्मेलन के अध्यक्ष रहे?

उ०– माखनलाल जी 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष रहे।

7. माखनलाल जी को भारत सरकार ने किस उपाधि से सम्मानित किया?

उ०– माखनलाल जी को भारत सरकार ने 'पद्म विभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

8. माखनलाल जी की किस रचना के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार मिला?

उ०– माखनलाल जी को 'हिमतरंगिनी' रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

9. माखनलाल जी किस प्रकार की भाषा-शैली का प्रयोग करते थे?

उ०– माखनलाल जी शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली भाषा व ओजपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग करते थे।

10. माखनलाल जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– माखनलाल जी की मृत्यु 30 जनवरी सन् 1968 ई. को हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पुष्प को किन-किन बातों की चाह नहीं है और क्यों?

उ०– पुष्प को किसी भी प्रकार का सम्मान पाने, देवकन्या के आभूषण में गूँथने, प्रेमी द्वारा अपनी प्रेमिका के लए बनाई गई माला में बिंधकर प्रेमिका को आकर्षित करने, सम्राटों के शवों पर चढ़कर सम्मान पाने व श्रद्धालुओं द्वारा पूज्य देवी-देवताओं के मस्तक पर चढ़कर अपने भाग्य पर इतराने की चाह नहीं है क्योंकि पुष्प इस प्रकार के किसी भी सम्मान को व्यर्थ एवं निरर्थक मानता है।

2. 'पुष्प की अभिलाषा' नामक कविता से आपको क्या संदेश मिलता है?

उ०– 'पुष्प की अभिलाषा' कविता से हमें देशप्रेम की भावना का संदेश मिलता है। इस कविता में पुष्प किसी भी प्रकार के सम्मान को व्यर्थ एवं निरर्थक समझता है वह तो उस मार्ग पर अर्पित होना चाहता है जिस मार्ग से राष्ट्रभक्त वीरों की टोलियाँ मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुतियाँ देने के लिए जाती हैं। वह देशप्रेम अर्थात् मातृभूमि के लिए बलिदान के मार्ग में स्वयं को अर्पित करने में ही सुख अनुभव करता है। अत: हमें इस कविता के माध्यम से मातृभूमि की रक्षा के लिए स्वयं को समर्पित करने की प्रेरणा मिलती है।

3. 'जवानी' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

उ०– जवानी कविता के माध्यम से कवि भारतीय नौजवान युवकों को देशप्रेम के लिए प्रेरित करते हुए उन्हें मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को बलिदान करने के लिए कहना चाहता है। वह देश की युवा शक्ति के उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों में प्रवृत होने के लिए प्रेरित करता है जिससे कि यह युवा शक्ति देश की परिस्थितियों को बदल सके।

कवि देश के युवकों को वृक्ष व फलों आदि के उदाहरण देकर परोपकार की भावना के लिए प्रेरित करता है तथा नवयुवकों को स्वाभिमान के साथ जीने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए मार्ग पर चलने के लिए कहता है।

4. 'गोद में मणियाँ समेट 'खगोल आया' से कवि का क्या आशय है?

उ०– यहाँ कवि का आशय है कि समय तो परिवर्तनशील होता है। ब्रह्मांड जिन ग्रह-नक्षत्रों रूपी मणियों को गोद में लेकर घूमता है, वे भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट है। अर्थात् समय का भूगोल हमेशा एक समान नहीं रहता। तुमने जब जब क्रांति की है, तब-तब यह बदलता रहा अर्थात् नए राष्ट्रों का निर्माण हुआ। जिस प्रकार आकाश मंडल में विभिन्न विस्फोटों के बाद ही ग्रह नक्षत्रों का निर्माण हुआ है, जो ब्रह्मांड में मणियों के समान लगते हैं। उसी प्रकार तुम भी क्रांति के द्वारा देश में परिवर्तन लाओ।

5. 'जवानी' कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

उ०– जवानी कविता माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित 'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह से ली गई है। चतुर्वेदी जी महान् राष्ट्रभक्त कवियों में से एक हैं। कवि चतुर्वेदी जी ने प्रस्तुत कविता में नौजवानों को संबोधित किया है और कहा है कि हे जवानी! वह तू ही तो है जो अपने अंदर उत्साह शक्ति और प्राणवत्ता को समेटे हुए है। कवि कहता है कि तू अपना तेज खो चुकी है। मैं तो जिधर भी अपनी नजर डालता हूँ मुझे वहाँ गति ही दिखाई देती है। फिर यह संभव नहीं है कि तू ठहर जाए। अगर इस गतिशील समय में तू ठहर गई तो तू दो शताब्दी पिछड़ जाएगी। कवि जवानी से कहते हैं कि तू बलिदान करने के लिए तत्पर रह। समर्पण की आवश्यकता होने पर तू पीछे मत हट। तू आलस्य का त्याग कर दे और क्रांति के लिए तैयार हो जा। प्रस्तुत कविता में युवकों का आह्वान करते हुए उन्हें मातृभूमि के लिए बलिदान करने के लिए प्रेरित किया गया है। कवि कहता है कि हे नवयुवकों! तुम अपने आपको बलिदान करके इस धरती को कंपित कर दो तथा हिमालय के एक-एक कण के लिए स्वयं को समर्पित कर दो। युवकों को अपने ऊँचे संकल्पों के बल पर सभी बाधाओं को दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। कवि ने वृक्षों तथा फलों के माध्यम से युवाओं के मन में बलिदान का संकल्प लेकर सिर गर्व से उठाने की भावना जाग्रत करने का प्रयास किया है। यहाँ युवाओं को स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी गई है। उन्हें कायर, स्वाभिमान से रहित और परतंत्र प्रकृति वाले कुत्तों जैसे व्यक्तियों के साथ जीवन-निर्वाह न करने को कहा गया है। कविता में कवि ने अपने पूर्वजों द्वारा दिखाए गए मार्ग को अपनाने के लिए युवाओं को प्रेरित किया है। हमारे पूर्वज देश के स्वाभिमान के लिए मर मिट गए हैं। युवक जिन स्थानों पर अपना बलिदान करते हैं, वे स्थान पृथ्वी के तीर्थ समझे जाते हैं। समय परिवर्तनशील है। समय का भूगोल हमेशा एक जैसा नहीं रहा। ब्रह्मांड ग्रह नक्षत्रों को अपनी गोद में लेकर घूमता है, वह भी खगोलीय विस्फोट की ही अमूल्य भेंट है। जो व्यक्ति प्रलय के स्वप्न देखते हैं उनके लिए विशाल पृथ्वी भी तरबूज जैसी छोटी वस्तु बन जाती है। अर्थात् इस धरती को भी दो टुकड़ों में विभाजित कर सकते हैं।

कवि कहते हैं कि हे युवकों! यदि तुम्हारा खून लाल नहीं है और तुम्हारे मुख पर ओज नहीं है तो तुम भारतमाता के पुत्र कहलाने के योग्य नहीं हो। तब तुम्हारा कंकाल देश के लिए किसी भी प्रकार काम नहीं आएगा। कवि कहते हैं कि चाहे वेदों के उपदेश हो या स्वयं देवताओं के मुख से निकली आकाशवाणी हो, अगर वह युवाओं में उत्साह नहीं जगाती तो वह निरर्थक है। यह संसार शस्त्र बल का नहीं है, दृढ़ संकल्प का है। किसी भी क्रांति का उद्देश्य समाज में परिवर्तन लाना होता है, जिसे दृढ़-निश्चय से प्राप्त किया जा सकता है। दृढ़ संकल्प से मर मिटने की भावना जाग्रत होने पर, ऐसे व्यक्ति अपने मार्ग से विचलित नहीं होते हैं। हे युवकों! जीवन में जवानी उसी का नाम है जो मृत्यु को उत्सव और उल्लासपूर्ण क्षण समझे। जीवन में बलिदान का दिन ही जीवन का सबसे उल्लासपूर्ण त्योहार होता है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– माखनलाल चतुर्वेदी महान राष्ट्रभक्त कवियों में से एक हैं। परतंत्र भारतीयों की दीन-हीन दशा को देखकर इनकी आत्मा अत्यधिक व्याकुल हो गई। ये उन कवियों में से एक थे, जो अपना सर्वस्व त्यागकर भी अपने देश का उत्थान करना चाहते थे। राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण होने के कारण ही इन्हें हिंदी-साहित्य के क्षेत्र में 'भारतीय आत्मा' के नाम से जाना जाता है। डॉ० राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी, माखनलाल जी के राष्ट्रीय भावना से संबंधित गीतों से अत्यधिक प्रभावित थे, इसलिए उन्होंने उनके बारे में लिखा भी है-''चतुर्वेदी जी हिंदी के तीन श्रेष्ठ प्रलय गीत-गायकों में से एक हैं। राष्ट्र के अनेक बलिदानियों ने इनके गीत गाते-गाते मातृभूमि को अपने प्राणों की भेंट चढ़ाई है। देश की सूखी नसों में इनकी रचनाएँ अब भी नई जवानी फूँकती हैं।''

जीवन परिचय– हिंदी जगत के सुप्रसिद्ध कवि, लेखक एवं पत्रकार पं० माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 4 अप्रैल सन् 1889 ई. को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले के बावई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम पं० नंदलाल चतुर्वेदी था, जो एक प्रसिद्ध अध्यापक थे। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में ही प्राप्त की। इसके पश्चात् इन्होंने घर पर ही संस्कृत, बाँग्ला, गुजराती और अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया।

ये कुछ समय तक अध्यापक के रूप में भी कार्यरत रहे। इसके पश्चात् इन्होंने खंडवा में 'कर्मवीर' नामक साप्ताहिक पत्र का संपादन कार्य आरंभ किया। सन् 1913 ई. में ये मासिक पत्रिका 'प्रभा' के संपादक पद पर नियुक्त हुए। इसी समय ये गणेशशंकर विद्यार्थी के संपर्क में आए और उन्हीं के विचारों से प्रभावित होकर ये स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किए गए आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे, जिस कारण इन्हें अनेक बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। सन् 1943 ई. में जेल से बाहर आने पर चतुर्वेदी जी 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। हरिद्वार के महंत शांतानंद द्वारा चाँदी के रुपयों से इनका तुलादान किया गया। भारत सरकार द्वारा इन्हें 'पद्म विभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया गया तथा इनकी रचना 'हिमतरंगिनी' के लिए इन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी महान रचनाओं के लिए चतुर्वेदी जी को सागर विश्वविद्यालय द्वारा सन् 1959 ई. में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से युवा वर्ग में नव-जागरण एवं वीरता का भाव उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। 30 जनवरी सन् 1968 ई. को इनका निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय– माखनलाल चतुर्वेदी का साहित्यिक जीवन पत्रकारिता से प्रारंभ हुआ। इनमें देशप्रेम की प्रबल भावना विद्यमान थी। अपने निजी संघर्षों, वेदनाओं और यातनाओं को इन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया। 'कोकिल बोली' शीर्षक कविता में इनके बंदी जीवन के समय प्राप्त यातनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है। इनका संपूर्ण साहित्यिक जीवन राष्ट्रीय विचारधाराओं पर आधारित है। ये आजीवन देशप्रेम और राष्ट्र कल्याण के गीत गाते रहे। इनके राष्ट्रवादी भावनाओं पर आधारित काव्य में त्याग, बलिदान,कर्तव्य-भावना और समर्पण के भाव निहित है। ब्रिटिश साम्राज्य के अत्याचारों को देखकर इनका अंतर्मन ज्वालामुखी की तरह धधकता रहता था। अपनी कविताओं में प्रेरणा, हुंकार, प्रताड़ना,उद्‌बोधन और मनुहार के भावों को भरकर ये भारतीयों की सुप्त चेतना को जगाते रहे। भारतीय संस्कृति, प्रेम, सौंदर्य और आध्यात्मिकता पर भी इन्होंने अनेक हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किए हैं।

2. **माखनलाल चतुर्वेदी की कृतियों का उल्लेख करते हएु उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

कृतियाँ– चतुर्वेदी जी ने गद्य एवं काव्य दोनों विषयों में रचनाएँ की। इनके द्वारा रचित प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(अ) कृष्णार्जुन-युद्ध– इसमें पौराणिक नाटक को भारतीय नाट्य-परंपरा के अनुरूप प्रस्तुत किया गया है। अभिनय की दृष्टि से यह अत्यंत सशक्त रचना है।

(ब) साहित्य-देवता– यह चतुर्वेदी के निबंधों का संग्रह है। इसमें संकलित सभी निबंध भावप्रधान हैं।

(स) हिमतरंगिनी– इस रचना पर इन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

(द) कला का अनुवाद– यह चतुर्वेदी जी की कहानियों का संग्रह है।

(य) संतोष, बंधन-सुख– इनमें गणेशशंकर विद्यार्थी के जीवन से संबंधित स्मृतियों का संकलन है।

(र) रामनवमा– इस कविता संग्रह में देशप्रेम एवं प्रभुप्रेम को समान रूप से वर्णित किया गया है।

(ल) 'युगचरण', 'समर्पण', 'हिमकिरीटिनी', 'वेणु लो गूँजे धरा' आदि इनकी अन्य काव्य रचनाएँ हैं।

भाषागत विशेषताएँ– चतुर्वेदी जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है तथा कई स्थानों पर विषय पर अनुसार उर्दू एवं फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। ये अपनी भाषा के माध्यम से जटिल से जटिल विषय को भी सरल एवं सरस बनाने में सक्षम थे। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में त्याग, बलिदान, कर्तव्य-भावना एवं समर्पण के भाव को मुख्यत: वर्णित किया है। इनकी कविताओं में वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता है।

इनकी छंद योजना में भी नवीनता है। इन्होंने अपनी कविताओं में गेय छंद के साथ उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा एवं अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग किया है। चतुर्वेदी जी कविताओं में भाव पक्ष की अपेक्षा कला-पक्ष को प्रमुखता देते थे। इन्होंने शैली के रूप में ओजपूर्ण भावात्मक शैली का प्रयोग किया है। चतुर्वेदी जी की कविताओं में कल्पना ऊँची उड़ान के साथ ही भावों की तीव्रता भी प्रदर्शित होती है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) मुझे तोड़ लेना .... वीर अनेक।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'माखनलाल चतुर्वेदी' द्वारा रचित 'युगचरण' काव्यसंग्रह से 'पुष्प की अभिलाषा' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने पुष्प के माध्यम से देश पर बलिदान होने की प्रेरणा दी है।

व्याख्या– पुष्प उपवन के माली से प्रार्थना करता है कि हे माली! तुम मुझे तोड़कर उस मार्ग में डाल देना, जिस मार्ग से होकर अनेक राष्ट्र-भक्त वीर, मातृभूमि पर अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए जा रहे हों। फूल उन वीरों की चरण-रज का स्पर्श पाकर भी अपने का धन्य मानेगा; क्योंकि उनके चरणों पर चढ़ना ही देश के बलिदानी वीरों के लिए सच्ची श्रद्धांजलि है।

काव्यगत सौंदर्य– 1.कवि ने फूल के माध्यम से अपनी राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्त किया है। **2.** कवि किसी प्रकार के सम्मान को प्राप्त करने की अपेक्षा एक आत्मबलिदानी सैनिक के समान स्वयं को समर्पित कर देना चाहता है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक एवं भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज, **7. अलंकार–** मानवीकरण **8. छंद–** तुकांत मुक्त।

(ब) पहन ले .... उठ री जवानी!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'माखनलाल चतुर्वेदी' द्वारा रचित 'हिमकिरीटिनी' काव्य संग्रह से 'जवानी' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस पद्य में देश की युवा शक्ति में उत्साह का संचार करते हुए उसे देशोत्थान के कार्यों के प्रवृत्त होने का आह्वान किया गया है।

व्याख्या– प्रस्तुत पद्यांश में कवि नवयुवकों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि हे नवयुवकों की जवानी! तू उठ और दुर्गा की भाँति मनुष्यों के मुंडों की माला पहन ले। नरमुंडों की इस माला में तू अपने सिर को सुमेरु बना, अर्थात् बलिदान के क्षेत्र में तू सर्वोपरि बन। यदि आज समर्पण की आवश्यकता पड़े तो तू उससे पीछे मत हट। जिस प्रकार लहलहाते हुए धानों की हरियाली में धरती का जीवन झलकता है, ऐसे ही हे जवानी, तू भी उत्साह में भरकर धानी चूनर ओढ़ ले। प्राण-तत्व तेरे साथ है; अत: हे युवकों की जवानी! तू आलस्य को त्यागकर उठ खड़ी हो और सर्वत्र क्रांति ला दे।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने युवावस्था को संबोधित करते हुए यह अपेक्षा की है कि वह गतिशील, उत्साही और शिव संकल्पवाली बनें। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** उद्‌बोधन **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** उत्प्रेक्षा, अनुप्रास व उपमा **7. छंद–** तुकांत-मुक्त

(स) रक्त है? या .... चल जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने अपनी ओजस्वी वाणी में वृक्ष और उसके फलों के माध्यम से युवकों में देश के लिए बलिदान होने की प्रेरणा प्रदान की है।

व्याख्या– कवि वीरों को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं कि हे वीरों! तुम अपनी युवावस्था की परख अपने शीश देकर कर सकते हो। इस बलिदानी परीक्षण से तुम्हें यह भी ज्ञात हो जाएगा कि तुम्हारी धमनियों में शक्तिशाली रक्त दौड़ रहा है अथवा उनमें केवल शक्तिहीन पानी ही भरा हुआ है।

हे युवाओं! फल के भार से लदे हुए वृक्षों की ओर देखो। वे पृथ्वी की ओर अपना मस्तक झुकाए हुए हैं। कली के भीतर से झाँकते फल कली के संकल्पों (अरमानों) को बता रहे हैं। तुम्हारे हृदय से भी इसी प्रकार बलिदान हो जाने का संकल्प प्रकट होना चाहिए। यह तो बहुत ही प्यारा संकल्प है, इसीलिए पुष्प कली गर्व से सिर उठाए हुए हैं। जब फल पक गए, तब डालियों ने पृथ्वी की ओर सिर झुका दिया है। अब ये फल दूसरों के लिए अपना बलिदान करेंगे। हे मित्र नौजवानों! वृक्षों की ये शाखाएँ तुम्हें संकेत दे रही हैं कि औरों के लिए मर-मिटने को तैयार हो जाओ। वृक्षों ने फल के रूप में अपने सिर बलिदान हेतु दिए हैं। तुम भी अपना सिर देकर वृक्षों की इस बलिदान-परंपरा को अपने जीवन में उतारो, आचरण में ढालो और युग की आवश्यकतानुसार स्वयं को उसकी प्रगतिरूपी माला में गूँथते हुए आगे बढ़ते रहो।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने देश के नवयुवकों को बलिदान की प्रेरणा दी है। **2.**वृक्षों पर फल आते हैं, जिन्हें वे स्वयं नहीं खाते, वरन् संसार उनका उपभोग करता है। यह उनकी परोपकारशीलता है, कवि युवकों से भी परोपकार की ऐसी भावना की आशा करता है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं उपमा **8. छंद–** मुक्त तुकांत।

(द) श्वान के सिर .... मस्तानी जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने स्वाभिमान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए युवकों से उसे किसी भी कीमत पर न खोने का आह्वान किया है।

व्याख्या– कवि कहता है कि कहने को सिर तो कुत्ते का भी होता है,पर उसमें स्वाभिमान तो नहीं होता। वह तो अपनी क्षुधापूर्ति के लिए दूसरों की चाटुकारी करता फिरता है और उनके पैरों को चाटता रहता है। इसलिए स्वाभिमान के अभाव में उसकी वाणी में कोई शक्ति नहीं रह जाती। कुत्ता चाहे कितना ही जोर से भौंक ले, किंतु उसमें इतना साहस ही नहीं होता कि उसके भौंकने से सिंह डर जाए; क्योंकि दूसरे की रोटियाँ खाते ही उसका स्वाभिमान नष्ट हो जाता है। उसमें साहस नहीं रह जाता। इस प्रकार जीवित होने पर भी वह मरे हुए के समान हो जाता है; अत: हे देश के शक्तिस्वरूप नुवयुवकों! तुम्हें अपने स्वाभिमान की रक्षा करनी है और पराधीन नहीं रहना है, कुत्तों की भाँति रोटी के टुकड़ों के लिए अपने स्वाभिमान को नहीं खोना है। तुम्हें अपनी प्रचंड दुर्गा जैसी असीम शक्ति को आपसी झगड़ों में नष्ट नहीं करना है, अपितु उसे देश के दुश्मनों के संहार में लगाना है। तुम्हारी ऐसी मस्तानी जवानी का सारी दुनिया लोहा मानती है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. इन पंक्तियों में कवि ने स्वाभिमान से जीने की प्रेरणा दी है, जो कवि की उदांत भावनाओं का परिचय देती है। **2.** कवि ने देश के युवाओं को स्वाभिमान की प्रेरणा देने के लिए स्वाभिमान रहित व्यक्तियों की उपमा कुत्ते से की है। **3.भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, रूपक एवं उपमा **8. छंद–** मुक्त एवं तुकांत।

(य) टूटता-जुड़ता .... है, जवानी!

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– कवि ने युवकों को देश के गौरव की रक्षा के लिए, देश के क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित किया है।

व्याख्या– चतुर्वेदी जी कहते हैं कि हे युवकों! समय का भूगोल हमेशा एक जैसा नहीं रहा। तुमने जब-जब क्रांति की है, तब-तब यह टूटा है और जुड़ा है अर्थात् नए-नए राष्ट्र बने हैं। तुम्हारी क्रांति का सत्कार करने के लिए ही यह ब्रह्मांड अनेक रंग-बिरंगे तारारूपी मणियों को अपनी गोद में लेकर प्रकट हुआ है। अत: तुम्हारा स्वभाव इतना ओजस्वी होना चाहिए, जिससे कि विश्व के मानचित्र और इतिहास बदला जा सके। हे युवकों! तुम्हें चाहिए कि तुम अपने जीवन की जगमगाहट से देश के गौरव को प्रकाशित करो, किन्तु जिनके हृदय बर्फ की तरह ठंडे पड़ गए हैं, वे उसी प्रकार क्रांति नहीं कर सकते हैं, जिस प्रकार कि ठंडा बारूद नहीं जल सकता। हे युवकों! तुम यदि प्रलय की भाँति पराधीनता और अन्याय के प्रति क्रांति नहीं कर सकते तो तुम्हारी जवानी व्यर्थ है। तुम चाहो तो पृथ्वी की भी तरबूज की तरह दो फाँक कर सकते हो। हे देश के युवकों की जवानी! तू यदि देश की आजादी के लिए अपन रक्तरूपी अमर पानी दे दे तो तू अमर हो जाएगी और संसार में तेरा उदाहरण देकर तुझे सराहा जाएगा।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि का मानना है कि विध्वंस की गोद से ही निर्माण के पुष्प खिलते हैं और प्रलय के बाद ही नई सृष्टि का निर्माण होता है। कवि ने यहाँ इसी भावना को व्यक्त करते हुए, देश की युवाशक्ति को बलिदान तथा अपने शीश को अर्पण करके मृत्यु का वरण करने की प्रेरणा दी है। जिससे राष्ट्र का कल्याण हो सके। **2.** युवा शक्ति के द्वारा ही परिवर्तन संभव है, अत: युवाओं को क्रांति के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक एवं उद्‌बोधनात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास, उपमा एवं रूपक **8. छंद–** मुक्त तुकांत।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवि फूल के माध्यम से अपने भाव स्पष्ट करते हैं। फूल कहता है कि मुझे अभिलाषा नहीं है कि

कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए बनाई जाने वाली माला में मुझे गूँथे अर्थात् कवि कहता है कि मुझे किसी सम्मान की चाह नहीं है, मुझे तो देशप्रेम के लिए समर्पित व बलिदान होने से ही गौरव का अनुभव होता है।

(ब) मसल कर, अपने इरादों सी, उठा कर, दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें?

भाव स्पष्टीकरण– कवि माखनलाल जी युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए स्पष्ट करते हैं कि हे नौजवानों! तुम्हारे पास अपने ऊँचे संकल्पों को पूरा करने के लिए दो हथेलियाँ हैं। अपनी उन हथेलियों को अपने ऊँचे संकल्पों के समान उठाकर तुम पृथ्वी को गोल कर सकते हो अर्थात् अपने प्रयासों से तुम बड़ी से बड़ी बाधा को हटाकर पृथ्वी का स्वरूप बदल सकते हो।

(स) विश्व है असि का?–नहीं संकल्प का है! हर प्रलय का कोण काया–कल्प का है।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ मानवता की भावना को स्पष्ट करते हुए कहता है कि क्या यह संसार तलवार का है? क्या इसे शस्त्रों के द्वारा ही जीता जा सकता है? नहीं ऐसा नहीं है। यह संसार दृढ़ संकल्प वाले व्यक्तियों का है, जिस पर तलवार के द्वारा नहीं अपितु दृढ़ निश्चय द्वारा विजय पाई जा सकती है। प्रत्येक प्रलय का उद्देश्य संसार में क्रांति लाना होता है, अत: नवयुवकों के संकल्प से विश्व में परिवर्तन आरंभ होते हैं, उनके संकल्पों से एक क्रांति आ जाती है, अत: युवकों को इस क्रांति के लिए अग्रसर होना चाहिए अर्थात् संसार में हिंसा का त्याग कर दृढ़ निश्चय कर नवयुवकों को परिवर्तन के लिए अग्रसर होना चाहिए। जिससे मानवता का विकास हो।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'भारतीय आत्मा' के नाम से विख्यात हैं–

(अ) मीराबाई　(ब) सूरदास
(स) **माखनलाल चतुर्वेदी**　(द) बिहारीलाल

2. माखनलाल जी ने निम्न में से कौन-सी पत्रिका का संपादन किया?

(अ) हंस　(ब) चाँद
(स) नंदन　(द) **कर्मवीर**

3. माखनलाल चतुर्वेदी की रचना है–

(अ) सरयू पार की यात्रा　(ब) भारत दुर्दशा
(स) कन्यादान　(द) **युगचरण**

4. माखनलाल चतुर्वेदी की रचना नहीं है?

(अ) समर्पण　(ब) साहित्य-देवता
(स) **प्रिय-प्रवास**　(द) हिमकिरीटिनी

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं, उठ री जवानी।।

उ०– प्रस्तुत पंक्तियों में उपमा अलंकार है।

(ब) तुम न खेलो ग्राम-सिंहों में भवानी।

उ०– यहाँ रूपक अलंकार है।

(स) लाल चेहरा है नहीं–फिर लाल किसके?

उ०– यहाँ यमक अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) ये न मग हैं, तव चरण की रेखियाँ हैं,
बलि दिशा की अमर देखा-देखियाँ हैं।
विश्व पर, पद से लिखे कृति लेख हैं ये,
धरा तीर्थों की दिशा की मेख हैं ये!

प्राण-रेखा खींच दे, उठ बोल रानी,
री मरण के मोल की चढ़ती जवानी!

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.** कवि ने देश की युवा शक्ति को सशक्त प्रेरणात्मक स्वर में राष्ट्र कल्याण का पथ प्रशस्त करने का संदेश दिया है। **2.** यहाँ राष्ट्र कल्याण के पथ पर बलिदान हो जाने का भाव मुखरित हुआ है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधन **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास एवं रूपक **8. छंद–** तुकांत मुक्त।

(ब) लाल चेहरा है नहीं-फिर लाल किसके?
लाल खून नहीं? अरे, कंकाल किसके?
प्रेरणा सोई कि आटा दाल किसके?
सिर न चढ़ पाया कि छापा-माल किसके?
वेद की वाणी कि हो आकाश-वाणी,
धूल है जो जग नहीं पाई जवानी।

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.** कवि ने बताया है कि जवानी वही है, जिसमें ओज हो, प्रेरणा हो तथा बलिदान करने की भावना हो **2.** त्याग की भावना को ही प्रेम की शोभा बताया गया है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ी बोली **4. शैली–** भावात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** यमक, अनुप्रास **8. छंद–** मुक्त तुकांत

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

9. झाँसी की रानी की समाधि पर (सुभद्राकुमारी चौहान)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म सन् 1904 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के इलाहाबाद जनपद के निहालपुर नामक ग्राम में हुआ था।

2. सुभद्राकुमारी चौहान के पिता जी का क्या नाम था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान के पिता जी का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था।

3. सुभद्राकुमारी चौहान की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ पर हुई?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की प्रारंभिक शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कालेज में हुई।

4. सुभद्राकुमारी चौहान का विवाह किस आयु में किसके साथ हुआ था?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान का विवाह पंद्रह वर्ष की आयु में मध्य प्रदेश के खंडवा नामक स्थान के निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ हुआ था।

5. सुभद्राकुमारी चौहान किसकी प्रेरणा से देश-सेवा करने के लिए तत्पर हुईं?

उ०– सुभद्रा कुमारी चौहान गाँधी जी की प्रेरणा से देश-सेवा करने के लिए तत्पर हुईं।

6. सुभद्राकुमारी चौहान ने किसके प्रोत्साहनके फलस्वरूप काव्य रचना प्रारंभ की?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान ने माखनलाल चतुर्वेदी जी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप काव्य रचना प्रारंभ की।

7. सुभद्राकुमारी चौहान के काव्यों में किस रस की प्रधानता है?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान के काव्यों में वीर एवं वात्सल्य रस की प्रधानता है।

8. सुभद्राकुमारी चौहान की तीन कृतियों के नाम लिखिए।

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की तीन कृतियाँ हैं— मुकुल, त्रिधारा एवं बिखरे मोती।

9. सुभद्राकुमारी चौहान की मृत्यु कब और कैसे हुई?

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान की मृत्यु सन् 1948 ई. में एक मोटर दुर्घटना में हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कवयित्री को झाँसी की रानी की समाधि क्यों प्रिय है?

उ०– कवयित्री को झाँसी की रानी की समाधि इसलिए प्रिय है क्योंकि यहाँ स्वतंत्रता प्राप्ति की आशा चिंगारी रखी गई है, जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा प्रदान करती रहेगी।

2. 'कवियों की अमर गिरा' से क्या तात्पर्य है?

उ०– 'कवियों की अमर गिरा' से तात्पर्य है कि कवियों ने अपने काव्यों में अपनी वाणी के द्वारा रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की कभी न समाप्त होने वाली कहानी गाई है, क्योंकि रानी की समाधि के प्रति उनमें श्रद्धाभाव है, पर अन्य समाधियाँ जो इस समाधि से अधिक सुंदर हैं, ऐसी नहीं हैं। अर्थात् इस समाधि की कहानी को वीरों की वाणी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है क्योंकि यह समाधि अन्य समाधियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और पूज्य है।

3. प्रस्तुत कविता में 'भग्न विजयमाला' कहकर किसे इंगित किया गया है?

उ०– प्रस्तुत कविता में 'भग्न विजयमाला' कहकर रानी लक्ष्मीबाई को इंगित किया गया है। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई युद्धभूमि में अंग्रेजों के साथ वीरता से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुई थी।

4. प्रस्तुत कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि का वर्णन करते हुए रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान की गौरवगाथा पर प्रकाश डालते हुए उनके प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि दी है। कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आशा की चिंगारी कहा है, जहाँ रानी की अस्थियाँ रखी गई हैं। रानी यहाँ स्वयं का बलिदान देकर दूसरे व्यक्तियों के लिए आदर्श बन गई है। यह छोटी-सी समाधि उसके महान् त्याग और देशभक्ति की निशानी है। जिससे सभी व्यक्ति प्रेरणा प्राप्त करते हैं क्योंकि वीर का मान युद्धक्षेत्र में बलि होने से बढ़ जाता है। कवियों ने अपनी वाणी में इस वीरांगना की कहानी गाई है। हमने बुंदेलों और हरबोलों के मुँह से रानी की वीरता की कहानी सुनी है। इस कविता के द्वारा कवयित्री देशवासियों के मन में देशप्रेम पर प्राण न्योछावर करने की भावना जाग्रत करने का प्रयत्न कर रही है।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक व काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

उ०– सुभद्राकुमारी चौहान को स्वतंत्रता-संग्राम की सक्रिय सेनानी, राष्ट्रीय चेतना की अमर गायिका तथा वीर रस की एकमात्र हिंदी कवयित्री कहा जाता है। इनकी कविताओं में सच्ची वीरांगना का ओज एवं शौर्य प्रकट होता है। सुभद्रा जी एकमात्र ऐसी कवयित्री हैं, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय युवा वर्ग को युग-युग की अकर्मण्य उदासी को त्यागकर स्वतंत्रता संग्राम में स्वयं को पूर्णत: समर्पित कर देने के लिए प्रेरित किया। डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने सुभद्राकुमारी चौहान एवं उनके काव्य की प्रशंसा में लिखा है, ''आधुनिक कालीन कवयित्रियों में सुभद्रा जी का प्रमुख स्थान है। उनकी 'झाँसी की रानी' शीर्षक कविता सर्वाधिक लोकप्रिय है और उसे जो प्रसिद्धि प्राप्त हुई, वह अनेक बड़े-बड़े महाकाव्यों को भी प्राप्त न हो सकी।''

जीवन परिचय– राष्ट्र-प्रेमी सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जनपद के निहालपुर नामक ग्राम में सन् 1904 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा क्रॉस्थवेट गर्ल्स कॉलेज में हुई। इनकी बचपन से ही हिंदी काव्य में अत्यधिक रुचि थी। मात्र पंद्रह वर्ष की आयु में इनका विवाह मध्य प्रदेश के खंडक नामक स्थान के निवासी ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान के साथ संपन्न हुआ। विवाह के पश्चात् इनका जीवन पूर्ण रूप से परिवर्तित हो गया। विवाह के पश्चात् गाँधी जी के संपर्क में आने पर ये उनके विचारों से अत्यधिक प्रभावित हुईं और इन्होंने अपने अध्ययन कार्य को भी त्याग दिया तथा देश-सेवा के लिए तत्पर हो गईं। इसके पश्चात् इन्होंनें अनेक राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया और इसी कारण इन्हें अनेक बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी। उसी समय सुभद्रा जी की भेंट पं. माखनलाल चतुर्वेदी से हुई। चतुर्वेदी जी के प्रोत्साहन के फलस्वरूप इन्होंने काव्य रचना प्रारंभ की। देशभक्ति भाव से युक्त इनकी कविताएँ सहज ही प्रत्येक व्यक्ति को ओजस्विता से युक्त कर देती थीं। सुभद्रा जी की 'झाँसी की रानी' और 'वीरों का कैसा हो वसंत' शीर्षक कविताएँ आज भी लाखों युवकों के हृदय में वीरता की ज्वाला उत्पन्न कर देती हैं। इसी कारण इन्हें 'राष्ट्र चेतना की अमर गायिका' भी कहा जाता है। सन् 1948 ई. में एक मोटर-दुर्घटना में सुभद्रा जी की असामयिक मृत्यु हो गई।

साहित्यिक एवं काव्यगत सौंदर्य– राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित काव्य के सृजन के साथ ही सुभद्रा जी ने वात्सल्य भाव पर आधारित कविताओं की भी रचना की। इन कविताओं में सुभद्रा जी का नारी–सुलभ मातृ–भाव दर्शनीय है। इनकी राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित कविताओं में देशभक्ति, अपूर्व साहस तथा आत्मोसर्ग की भावना चित्रित होती है। इनके द्वारा रचित कविताओं के माध्यम से ऐसा प्रतीत होता है, कि इन्हें जेल–जीवन की संपूर्ण यातनाओं को हँसते–खेलते, सुखपूर्वक सहन करने में आनंद प्राप्त होता था।

2. सुभद्राकुमारी चौहान की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– **कृतियाँ–** सुभद्राकुमारी जी ने हिंदी साहित्य में लेखन का कार्य कवयित्री के रूप में प्रारंभ किया, किंतु इन्होंने अपने प्रौढ़ गद्य–लेखन द्वारा हिंदी भाषा को सजाने–सँवारने तथा अर्थ–गाम्भीर्य प्रदान करने में जो प्रयत्न किया है, वह भी प्रशंसनीय है। सुभद्रा जी द्वारा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

(अ) **काव्य-संग्रह–** मुकुल, त्रिधारा

(ब) **कहानी-संग्रह–** सीधे–सादे चित्र, बिखरे मोती, उन्मादिनी आदि

सुभद्रा जी को 'मुकुल' काव्य–संग्रह एवं 'बिखरे मोती' कहानी–संग्रह पर 'सेकसरिया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

भाषागत विशेषताएँ– सुभद्राकुमारी जी ने अपनी रचनाओं में मुख्य रूप से शुद्ध, साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने विषय के अनुसार अनेक स्थानों पर तद्भव शब्दों का भी प्रयोग किया है तथा कुछ स्थानों पर मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। इनकी रचनाओं में किसी भी वाक्य में अस्पष्टता के दर्शन नहीं होते हैं। इनकी रचना–शैली में ओज, प्रसाद और माधुर्य भाव से युक्त गुणों का समन्वित रूप देखने को मिलता है। राष्ट्रीयता पर आधारित इनकी कविताओं में सजीव एवं ओजपूर्ण संगीतात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। सुभद्रा जी की रचनाएँ उनके द्वारा विषय के अनुरूप भाषा एवं शैली का प्रयोग करने के कारण ही पाठकों पर प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम रही हैं। इन्होंने अपनी काव्य–रचनाओं में मुख्यत: वीर एवं वात्सल्य रस का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में अलंकारों का प्रयोग बहुत कम देखने को मिलता है। छंद के रूप में सुभद्रा जी ने तुकांत मुक्त–छंदों का प्रयोग किया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) यहीं कहीं पर .... स्मृतिशाला-सी।।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'सुभद्राकुमारी चौहान' द्वारा रचित 'त्रिधारा' काव्य संग्रह से 'झाँसी की राना की समाधि पर' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता का वर्णन करते हुए भावपूर्ण श्रृद्धांजलि दी है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि समाधि के आस–पास ही रानी लक्ष्मीबाई टूटी हुई विजयमाला के समान बिखर गई थी। युद्धभूमि में अंग्रेजी सेना के साथ बहादुर से लड़ते हुए रानी के शरीर के अंग यहीं–कहीं बिखर गए थे। इस समाधि में वीरांगना लक्ष्मीबाई की अस्थियाँ एकत्र कर रख दी गई हैं, जिससे कि देश की भावी पीढ़ी उनके गौरवपूर्ण त्याग–बलिदान से प्रेरणा ले सकें।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की वीरता एवं बलिदान की गाथा का ओजपूर्ण वर्णन किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** उपमा, श्लेष एवं अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत–मुक्त।

(ब) इससे भी सुंदर .... जंतु ही गाते।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य समाधियों से अधिक महत्वपूर्ण माना है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि संसार में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि से भी सुंदर अनेक समाधियाँ बनी हुई हैं, परंतु उनका महत्व इस समाधि से कम ही है। उन समाधियों पर रात्रि में गीदड़, झींगुर, छिपकली आदि क्षुद्र जंतु गाते रहते हैं अर्थात् वे समाधियाँ अत्यंत उपेक्षित हैं, जिन पर तुच्छ जंतु निवास करते हैं अर्थात् रानी लक्ष्मीबाई की समाधि अन्य सभी समाधियों से श्रेष्ठ है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को सर्वश्रेष्ठ बताते हुए अपनी श्रद्धांजलि के भाव प्रकट किए हैं। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति एवं ओजपूर्ण **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(स) पर कवियों की .... वीरों की बानी।।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई को श्रद्धांजलि देते हुए कहा है कि रानी की गौरवगाथा की कहानी अनेक कवियों ने अपनी वाणी में गाई है।

व्याख्या– सुभद्राकुमारी चौहान रानी की वीरता तथा यशगाथा का वर्णन करते हुए कहती है कि कवियों की अमर वाणी में रानी लक्ष्मीबाई की समाधि की कभी न समाप्त होने वाली कहानी गाई जाती है; क्योंकि रानी की समाधि के प्रति उनमें अपार श्रद्धाभाव है पर अन्य समाधियाँ ऐसी नहीं हैं। इस समाधि की कहानी को वीरों की वाणी बड़े प्रेम और श्रद्धा के साथ गाती है। अत: यह समाधि अन्य समाधियों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण और पूज्य है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि को अन्य सभी समाधियों में महत्वपूर्ण माना है। कवयित्री ने इस कविता के माध्यम से तत्कालीन समाज में स्वतंत्रता के लिए जागृति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** गीति एवं ओजपूर्ण **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज एवं प्रसाद **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत मुक्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) जल कर जिसने स्वतंत्रता की, दिव्य आरती फेरी।

भाव स्पष्टीकरण– यहाँ कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान को स्पष्ट करते हुए कहा है कि रानी ने देशप्रेम के लिए स्वयं का बलिदान देकर इसी समाधि के स्थान पर स्वतंत्रता की आरती उतारी थी अर्थात् रानी ने स्वयं का बलिदान देकर स्वतंत्रता संग्राम को तेज कर दिया था।

(ब) अंतिम लीलास्थली यही है, लक्ष्मी मरदानी की।

भाव स्पष्टीकरण– कवयित्री ने रानी लक्ष्मीबाई की समाधि के प्रति अपने भाव स्पष्ट करते हुए इस समाधि को पूजनीय व अद्‌भुत बताया है। जो रानी लक्ष्मीबाई जैसी वीरांगना की अंतिम कर्मस्थली है अर्थात् इस समाधि के स्थान पर ही रानी अंतिम बार पुरुषों के समान अंग्रेजों से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई थी।

(स) यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।

भाव स्पष्टीकरण– सुभद्राकुमारी चौहान यहाँ स्पष्ट करती हैं कि समाधि के स्थान पर रानी की अस्थियाँ (राख) रखी गई हैं। ये अस्थियाँ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक चिंगारी के समान हैं, जो आग के रूप में फैलकर पराधीनता से मुक्त होने के लिए देशवासियों को सदैव प्रेरणा देती रहेंगी अर्थात् रानी की समाधि को देखकर हमें पराधीनता से मुक्त होने की प्रेरणा मिलती है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म कहाँ हुआ था?

(अ) निहालगढ़ (ब) **निहालपुर**
(स) खंडवा (द) मेरठ

2. सुभद्राकुमारी चौहान के पति का क्या नाम था?

(अ) रामसिंह चौहान (ब) माखन सिंह चौहान
(स) **लक्ष्मण सिंह चौहान** (द) शिव सिंह चौहान

3. सुभद्राकुमारी की कृति है–

(अ) प्रथम आयाम (ब) **त्रिधारा**
(स) साकेत (द) चिदंबरा

4. सुभद्राकुमारी की रचनाओं में किस रस की प्रधानता है?

(अ) **वीर रस** (ब) शोक रस
(स) हास्य रस (द) इनमें से कोई नहीं

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार निरूपण कीजिए–

(अ) उसके फूल यहाँ संचित हैं,
है यह स्मृतिशाला-सी।

उ०– यहाँ श्लेष एवं उपमा अलंकार है।

(ब) यह समाधि, यह लघु समाधि है,
झाँसी की रानी की।

उ०– यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(स) आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर,
चमक उठी ज्वाला-सी।

उ०– यहाँ उपमा एवं दृष्टांत अलंकार है।

2. निम्नलिखित पद्यांशों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

(अ) सहे वार पर वार अंत तक, लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर, चमक उठी ज्वाला-सी।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य–1. यहाँ लक्ष्मीबाई की वीरता का यशोगान किया गया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–**गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश व उपमा **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(ब) बढ़ जाता है मान वीर का, रण में बलि होने से।
मूल्यवती होती सोने की, भस्मा यथा सोने से।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने युद्ध में बलिदान देने वाली रानी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए हैं तथा उसके बलिदान को अमूल्य बताया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** आख्यानक गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** दृष्टांत, पुनरुक्तिप्रकाश **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(स) रानी से भी अधिक हमें अब, यह समाधि है प्यारी।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की, आशा की चिनगारी।।

उ०– काव्यगत सौंदर्य– 1. कवयित्री ने लक्ष्मीबाई की समाधि से स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रेरणा लेने के लिए युवकों का आह्वान किया है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** आख्यानक गीति **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** रूपक एवं अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

10. बढ़ अकेला (त्रिलोचन शास्त्री)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. त्रिलोचन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

उ०– त्रिलोचन जी का जन्म 20 अगस्त, 1917 ई. को उत्तर प्रदेश राज्य के सुल्तानपुर जिले के कठघरा चिरानी पट्टी नामक स्थान पर हुआ था।

2. त्रिलोचन जी ने 'शास्त्री' परीक्षा कौन-से विषय में और कहाँ से प्राप्त की?

उ०– त्रिलोचन जी ने 'शास्त्री' परीक्षा लाहौर से संस्कृत विषय में प्राप्त की।

3. त्रिलोचन जी के पिता जी का क्या नाम था?

उ०– त्रिलोचन जी के पिता जी का नाम जगरदेव सिंह था।

4. त्रिलोचन जी की भाषा कैसी थी?

उ०– त्रिलोचन जी की भाषा मुख्यत: शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली थी।

5. त्रिलोचन जी किस इंटर कालेज में किस विषय के प्रवक्ता रहे?

उ०– त्रिलोचन जी गणेशराम इंटर कॉलेज, जौनपुर में अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता रहे।

6. त्रिलोचन जी ने कौन-सी पत्रिकाओं का संपादन किया?

उ०– त्रिलोचन जी ने प्रभाकर, वानर, हंस, आज, समाज आदि पत्रिकाओं का संपादन किया।

7. त्रिलोचन जी के तीन काव्य संग्रहों के नाम बताइए।

उ०– त्रिलोचन जी के तीन काव्य संग्रह हैं— जीने की कला, धरती, उस जनपद का कवि हूँ आदि।

8. त्रिलोचन जी की कहानी संग्रह का नाम बताइए।

उ०– त्रिलोचन जी की कहानी संग्रह का नाम देशकाल है।

9. त्रिलोचन जी की मृत्यु कब हुई?

उ०– त्रिलोचन जी की मृत्यु 9 दिसंबर, सन् 2007 ई. को गाजियाबाद में हुई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'बढ़ अकेला' नामक कविता में कवि ने किस बातों से सदैव बचने के लिए कहा है?

उ०– 'बढ़ अकेला' नामक कविता में कवि ने मनुष्य को लोगों की आलोचनाओं से सदैव बचने के लिए सफलता-असफलता की चिंता किए बिना आगे बढ़ते रहने के लिए कहा है। कवि ने पथिक को निराश न होने, भयभीत न होने, बाधा से न घबराने आदि के लिए कहा है व अपने मार्ग पर निरंतर अग्रसर होने के लिए कहा है।

2. 'बढ़ अकेला' नामक कविता में कवि किसे संबोधित कर रहा है?

उ०– 'बढ़ अकेला' नामक कविता में कवि मनुष्य या व्यक्ति को संबोधित कर रहा है तथा उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा है।

3. 'विश्व जीवन मूक दिन का प्राणमय स्वर' से कवि का क्या अभिप्राय है?

उ०– यहाँ कवि का अभिप्राय है कि समग्र प्रकृति का स्वर शांति ही है शांति अर्थात् मौन को ही जीवन से युक्त समझना चाहिए। जिसके लिए प्रकृति हमें अनेक प्रकार से प्रेरित करती है। अर्थात् मनुष्य तेरा जो आत्मरूपी प्राणमय कोश है, तू कौन (शांत मन) होकर इस विश्व-जीवन के किसी एक दिन उसके स्वर को सुन। अत: तू शांत मन से अपनी अंतरआत्मा की आवाज को सुन।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. त्रिलोचन शास्त्री का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– त्रिलोचन जी का प्रगतिशील काव्यधारा में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ये आधुनिक कविता की प्रगतिशील त्रयी के तीन स्तंभों में से एक हैं। इस त्रयी के अन्य दो स्तंभ नागार्जुन एवं शमशेर बहादुर सिंह थे। इन्होंने एक सफल काव्य-लेखक, संपादक एवं डायरी लेखक के रूप में हिंदी-साहित्य को अतुलनीय समृद्धि प्रदान की है।

जीवन परिचय– कवि त्रिलोचन शास्त्री का जन्म 20 अगस्त, 1917 ई. में उत्तर प्रदेश राज्य के सुल्तानपुर जिले के कठघरा चिरानी पट्टी नामक स्थान पर हुआ था। इनका वास्तविक नाम वासुदेव सिंह था। इनके पिता का नाम जगरदेव सिंह था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव कठघरा चिरानी पट्टी से ही प्राप्त की। इसके पश्चात् इन्होंने काशी हिंदू विश्वलविद्यालय से अंग्रेजी विषय में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। पश्चात् लाहौर में संस्कृत विषय में 'शास्त्री' परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ये 'शास्त्री' के नाम से प्रसिद्ध हुए। त्रिलोचन जी को हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू व संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था। ये लंबे समय तक गणेशराम इंटर कॉलेज, जौनपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता पद पर कार्यरत रहे। सन् 1970-1972 ई. तक शास्त्री जी ने विदेशी छात्रों को हिंदी, संस्कृत व उर्दू की शिक्षा प्रदान की। इसके पश्चात् इन्होंने कुछ वर्षों तक उर्दू विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय की द्वैभाषिक कोश (उर्दू-हिंदी) परियोजना में कार्य किया। शास्त्री जी मुक्तिबोध सृजन पीठसागर विश्वविद्यालय, सागर(मध्य प्रदेश) में अध्यक्ष पद पर भी कार्यरत रहे। इन्होंने सन् 1995 ई. से सन् 2001 ई. तक जन संस्कृति मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में कार्यभार सँभाला। इसके पश्चात् इन्होंने 'प्रभाकर', 'वानर', 'हंस', 'आज', 'समाज' आदि पत्र एवं पत्रिकाओं का संपादन किया। त्रिलोचन जी ने समस्त जीवन बाजारवाद का विरोध किया। यद्यपि उन्होंने हिंदी विषय में प्रयोगधर्मिता का मुख्यत: समर्थन किया। शास्त्री जी के अनुसार भाषा में जितने प्रयोग होंगे, वह उतनी अधिक समृद्ध एवं स्पष्ट होगी। इन्होंने हमेशा ही नवसृजन को बढ़ावा दिया। महान कवि एवं लेखक त्रिलोचन शास्त्री जी का 9 दिसंबर, 2007 ई. को गाजियाबाद में निधन हो गया।

साहित्यिक परिचय– त्रिलोचन जी काव्य की प्रगतिशील धारा के यथार्थवादी कवियों में से एक प्रमुख कवि थे। त्रिलोचन जी की कविताओं में प्रमुख रूप से कमजोर वर्ग के मेहनती एवं समाज द्वारा तिरस्कृत व्यक्तियों की व्यथा का वर्णन किया गया है। उनकी कविता का निम्नलिखित अंश इस कथन का उदाहरण है—

उस जनपद का कवि हूँ
जो भूखा दूखा है
नंगा है अनजान है कला नहीं जानता
कैसी होती है, वह क्या है, वह नहीं मानता

2. त्रिलोचन जी की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए–

उ०– **कृतियाँ–** त्रिलोचन जी ने गद्य एवं काव्य दोनों ही विषयों में लेखन-कार्य किया, किंतु उन्हें मुख्यत: कवि अथवा काव्य-लेखक के रूप में ही जाना जाता है। शास्त्री जी का प्रथम कविता-संग्रह 'धरती' सन् 1945 ई. में प्रकाशित हुआ था। 'गुलाब और बुलबुल', 'उस जनपद का कवि हूँ' एवं 'ताप के ताए हुए दिन' उनके चर्चित कविता संग्रह हैं। शास्त्री जी के अब तक 17 कविता-संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

(अ) **काव्य-संग्रह–** शब्द, अरधान, तुम्हें सौंपता हूँ, मेरा घर, चैती, अनकहनी भी, जीने की कला

(ब) **कहानी संग्रह–** देशकाल

(स) **डायरी–** दैनंदिनी

(द) **संपादित–** मुक्तिबोध की कविताएँ

भाषागत विशेषताएँ– इन्होंने अपनी रचनाओं में मुख्यत: शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में लोकभाषा अवधी एवं प्राचीन भाषा संस्कृत का भी प्रयोग हुआ है। प्रगतिशील काव्यधारा के कवि होने के कारण शास्त्री जी मार्क्सवादी चेतना से संपन्न कवि थे। नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल एवं शास्त्री जी तीनों ने वाम विचारधारा से संबंधित कविताओं की रचना की है, किंतु शास्त्री जी की कविताएँ इन दोनों प्रसिद्ध लेखकों से भिन्न भाव प्रकट करती हैं। शास्त्री जी लेखन कार्य में तुलसीदास जी एवं निराला जी को अपना आदर्श मानते थे।

त्रिलोचन शास्त्री जी ने अपने काव्य-संग्रह में गीत, गजल, सॉनेट, कुंडलियाँ, बरवै, मुक्त छंद जैसे अनेक प्रचलित छंदों का प्रयोग किया है। इन सभी छंदों में सॉनेट (चतुष्पदी) के कारण वह अत्यधिक प्रसिद्ध हुए। शास्त्री जी को हिंदी सॉनेट का जन्मदाता कहा जाता है। उन्होंने इस छंद को भारतीय रूप में परिवर्तित कर लगभग 550 सॉनेट की रचना की। इनके द्वारा इस छंद में रचित कविताओं की तुलना स्पेन्सर, मिल्टन एवं शेक्सपीयर जैसे कवियों की कविताओं से की जाती है। सॉनेट की जितनी विशेषताओं का वर्णन साहित्यों में किया गया है, उन सभी का स्पष्ट एवं प्रभावशाली प्रयोग त्रिलोचन जी के काव्य में किया गया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) बढ़ अकेला .... अभियान वेला।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'त्रिलोचन शास्त्री' द्वारा रचित 'बढ़ अकेला' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– कवि ने इन पंक्तियों में स्पष्ट किया है कि व्यक्ति को सांसारित बातों की चिंता न करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अकेले ही आगे बढ़ना चाहिए।

व्याख्या– कवि व्यक्ति को संबोधित करते हुए कह रहा है कि यदि तुम्हारे साथ चलने के लिए कोई न हो तो भी तुमको अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अकेले ही अपने पथ पर आगे बढ़ चलना चाहिए। यदि स्वयं को अकेला मानकर, भय से या अन्य किसी कारण से तुम्हारे कदम बढ़ने के बाद रुक जाएँगे तो सोच लो कि ये सांसारिक लोग तुम्हें क्या कहेंगे अर्थात् तुम्हारे विषय में क्या सोचेंगे। इसलिए तुमको प्रत्येक बाधा का सामना करते हुए आगे ही बढ़ते चले जाना है। यह संसार विचित्र प्रकार के लोगों से भरा हुआ है, जो किसी व्यक्ति को उचित उद्देश्य की ओर अग्रसर होता हुआ देखकर उसे निराश करने की, रोकने की प्रत्येक संभव कोशिश करता है। लेकिन तुमको इनकी चिंता किए बिना अपने लक्ष्य को प्राप्त

करने के लिए आगे ही बढ़ते जाना है, तुमको केवल अपना उद्देश्य ही प्राप्त नहीं करना है, वरन् अन्य लोगों के लिए भी एक ऐसा पथ तैयार करना है, जिस पर चलकर वे बिना किसी अवरोध के अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें। लक्ष्य प्राप्त करने के लिए, आगे बढ़ने के लिए अथवा किसी भी अभियान के लिए यही उचित समय है। अत: समय को पहचानकर तुम्हें आगे बढ़ जाना चाहिए।

काव्यगत सौंदर्य– 1. निरंतर प्रयत्न और कर्मशील रहकर ही मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करता है और इस कार्य में कोई उसकी सहायता नहीं कर सकता, कवि ने इस तथ्य को बड़े भावपूर्ण ढंग से यहाँ प्रस्तुत किया है। **2.**'पंथ' और 'बेला' का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है। **3.** कदम आगे बढ़ाकर रोक लेने वाले व्यक्ति का संसार उपहास करता है। **4. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **5. शैली–** विवेचनात्मक **6. रस–** वीर **7. गुण–** ओज **8. अलंकार–** अनुप्रास **9. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(ब) श्वास ये .... काम मेला।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि कहता है कि यदि लक्ष्य-प्राप्ति में कोई प्रेरक-सहायक न हो तो भी व्यक्ति को आगे बढ़ते रहना चाहिए।

व्याख्या– कवि व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता हुआ कह रहा है कि तुम यह मत समझो कि इस मार्ग पर चलने वाले तुम अकेले हो। तुम्हारे साथ तुम्हारी साँस है,जो प्रत्येक क्षण चलते हुए तुम्हें आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित कर रही हैं इस मार्ग पर पहले भी अनेक लोग चल चुके हैं, जिनके निशान तुम्हें मिल जाएँगे। उन्होंने ये मार्ग तुम्हारे चलने के लिए ही बनाया है; अत: तुम्हें संकोच करने की आवश्यकता नहीं है। इस सुनसान और निर्जन रास्ते पर आगे बढ़कर तुम्हें इसकी शोभा को बढ़ाना है। ईश्वर द्वारा तुमको प्रदत्त मानव-जीवन उसका एक अमूल्य उपहार है। यदि तुम यह समझते हो कि जब तुम्हारा साथ देने वाले बहुत से लोग मिलेंगे, तब ही तुम आगे बढ़ोगे तो तुम्हारा यह विचार गलत है। व्यर्थ के लोगों के जमघट से लक्ष्य प्राप्ति नहीं होती। कर्म करते हुए आगे बढ़ने से ही लक्ष्य प्राप्त होता है। अत: तुम अकेले ही अपने कर्तव्य-पथ पर आगे बढ़ते रहो।

काव्यगत सौंदर्य–1. मनुष्य ईश्वर द्वारा प्रदत्त अमूल्य देन है। **2.**मनुष्य को कभी यह नहीं सोचना चाहिए कि अमुक मार्ग का वह ही अकेला पथिक है। इस मार्ग पर उससे पहले भी अनेक लोग चल चुके हैं। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** उद्‌बोधनात्मक **5. रस–** वीर **6. गुण–** ओज **7. अलंकार–** अनुप्रास **8. छंद–** तुकांत-मुक्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) हो न कुंठित, हो न स्तंभित, यह मधुर अभियान वेला।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ मनुष्य को स्पष्ट करते हुए कहता है कि यह संसार विचित्र प्रकार के लोगों से भरा है, जो किसी व्यक्ति को उचित मार्ग पर बढ़ते हुए देखकर उसे निराश करने, रोकने की हरसंभव कोशिश करते हैं। अत: मनुष्य तू उनकी बातों पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य पर बिना किसी निराशा के आगे बढ़ता चल। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, आगे बढ़ने के लिए यह समय उचित है अर्थात् तुम समय को पहचानो और आगे बढ़ो।

(ब) शून्य का श्रृंगार तू, उपहार तू किस काम मेला।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ मनुष्य को आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हुए अपने भाव स्पष्ट करता है जो मार्ग तुमने निर्धारित किया है इस सुनसान व निर्जन रास्ते पर आगे बढ़कर तुम्हें ही इसकी शोभा को बढ़ाना है। ईश्वर ने तुम्हें अमूल्य मानव-जीवन प्रदान किया है। यदि तुम सोचोगे कि जब तुम्हारा साथ देने वाले बहुत लोग होंगे, तब ही तुम इस मार्ग पर आगे बढ़ोगे तो तुम्हारा यह विचार गलत है। व्यर्थ के लोगों को जमा करने से लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है, अपितु कर्म करते हुए आगे बढ़ने से लक्ष्य प्राप्त होता है अर्थात् मनुष्य तुम किसी की चिंता किए बिना अपने मार्ग पर लक्ष्य प्राप्ति के लिए चलो।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. त्रिलोचन जी का जन्म कब हुआ?

(अ) 20 अग्रसत, सन् 1925 को   (ब) 20 अगस्त, सन् 1948 को

(स) **20 अगस्त, सन् 1917 को**   (द) 20 अगस्त, सन् 1934 को

2. **त्रिलोचन जी का वास्तविक नाम था–**

(अ) बलदेव सिंह (ब) यशवंत सिंह

(स) **वासुदेव सिंह** (द) कर्मवीर सिंह

3. **त्रिलोचन जी किस काल के कवि हैं?**

(अ) रीतिकाल (ब) द्विवेदी युग

(स) नई कविता (द) **प्रगतिवादी**

4. **त्रिलोचन जी की भाषा में निम्न में से किसका समन्वय है?**

(अ) सरल और व्याकरण (ब) कठिन और सरल

(स) कठिन और ब्रजभाषा (द) **अवधी और सरल**

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. **'बढ़ अकेला' कविता में व्याप्त अलंकार का नाम बताइए तथा प्रयुक्त अलंकार के दो उदाहरण भी लिखिए।**

उ०– 'बढ़ अकेला' कविता में सर्वत्र अनुप्रास अलंकार है। इसके उदाहरण हैं—

(अ) चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।

(ब) खैर खून खाँसी खुशी, बैर प्रीति मदमान,
रहिमन दाबे न दबै, जानत राकल जहान।

2. **निम्नलिखित पद्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–**

बढ़ अकेला
विश्व जीवन मूक दिन का प्राणमय स्वर,
सांद्र पर्वत-शृंग पर अभिराम निर्झर,
सकल जीवन जो जगत् के
खेल भर उल्लास खेला।
बढ़ अकेला!

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.**कवि ने मनुष्य को प्रकृति से प्रेरणा लेकर कार्य करने की सलाह दी है क्योंकि मौन रहकर भी प्रकृति बहुत कुछ कहती है। **2.भाषा–** संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली **3. शैली–** उद्‌बोधनात्मक **4. रस–** वीर **5. गुण–** ओज **6. अलंकार–** अनुप्रास **7. छंद–** तुकांत-मुक्त।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

11. नदी (केदारनाथ सिंह)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **केदारनाथ सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

उ०– केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1934 ई. को उत्तर प्रदेश राज्य के बलिया जनपद के चकिया नामक ग्राम में हुआ था।

2. **केदारनाथ जी ने एम.ए. व पीएच.डी. की उपाधि कब प्राप्त की?**

उ०– केदारनाथ जी ने सन् 1956 ई. में एम.ए. तथा सन् 1964 ई. में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

3. **केदारनाथ जी ने हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कहाँ कार्य किया?**

उ०– केदारनाथ जी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के पद पर कार्य किया।

4. **केदारनाथ जी ने कौन-सी पत्रिका का संपादन किया?**

उ०– केदारनाथ जी ने 'हमारी पीढ़ी' पत्रिका का संपादन किया।

5. **केदारनाथ जी का प्रथम काव्य संग्रह कब प्रकाश में आया?**

उ०– केदारनाथ जी का प्रथम काव्य-संग्रह सन् 1960 ई. में प्रकाश में आया।

5. केदारनाथ जी की दो प्रमुख काव्य कृतियों के नाम लिखिए।

उ०– केदारनाथ जी की दो प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं—जमीन पक रही है, टॉलस्टॉय और साइकिल।

7. केदारनाथ जी की भाषा-शैली बताइए।

उ०– केदारनाथ जी ने सरल, सरस एवं स्पष्ट खड़ीबोली तथा वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'नदी' कविता में नदी किसका प्रतीक है?

उ०– 'नदी' कविता में नदी संस्कृति व सभ्यता का प्रतीक है। यह संस्कृति का जीवंत रूप है, वह हमारी सभ्यता की जननी है। नदी वास्तव में यहाँ बहते हुए जल की धारामात्र नहीं है, बल्कि वह हमारा जीवन है अर्थात् हमारा प्राणतत्व, हमारी सभ्यता एवं संस्कृति है।

2. 'नदी' को कबाड़ी की दुकान तक पहुँचना किस प्रकार बताया गया है?

उ०– 'नदी' कविता में सभ्यता एवं संस्कृति का प्रतीक है। यदि हम अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का थोड़ा-सा भी ध्यान दें और उसे अपने साथ ले चलने का लेशमात्र भी विचार हमारे दिमाग में हो, तो यह नदी रूपी सभ्यता एवं संस्कृति हमारे साथ सदैव आगे बढ़ती जाती है, फिर चाहे हम संसार के किसी भी कोने में जाएँ, यह हमारे साथ रहती है। यह सच्चे साथी की तरह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ती, फिर चाहे हम कबाड़ी की दुकान में ही क्यों न बैठे हों।

इस प्रकार हमारे साथ लेकर चलने से नदी अर्थात् सभ्यता एवं संस्कृति कबाड़ी की दुकान में भी दृष्टिगोचर होती है।

3. तारों से आँख बचाकर नदी क्या कर रही है?

उ०– यदि हम साथ रहने वाली नदी को किसी स्थान पर छोड़ दें तो वह वहाँ नहीं रूकेगी वरन् अनगिनत तारों अर्थात् लोगों की आँखों से बचकर वहाँ भी अपनी एक नई दुनिया बसा लेगी अर्थात् सभ्यता एवं संस्कृति रूपी नदी का सूक्ष्मतम अंश भी अगर कहीं छूट जाता है तो यह गहनतम अंधकार में भी अगणित व्यक्तियों से दृष्टि बचाकर चुपचाप धीरे-धीरे अपना विशाल साम्राज्य स्थापित कर लेती है।

4. 'नदी' नामक कविता से आपको क्या संदेश मिलता है।

उ०– 'नदी' नामक कविता से हमें संदेश मिलता है कि हमें कभी भी अपनी सभ्यता एवं संस्कृति की अनदेखी व अनादर नहीं करना चाहिए तथा इसके संरक्षण के लिए उपाय करने चाहिए। यह सभ्यता एवं संस्कृति हमारा साथ हर पल देती है क्योंकि यह हमें प्यार करती है। यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति से दूर भागती नई पीढ़ी को शिक्षा आदि के माध्यम से उसका एक बार दिग्दर्शन करा दें तो हमारी सभ्यता एवं संस्कृति इतनी सुंदर, मोहक और आकर्षक है कि वह उस पर अपना मोहक जादू चलाकर उसे अपने साथ बहने के लिए विवश कर देगी।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. केदारनाथ सिंह का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक परिचय पर प्रकाश डालिए।

उ०– कवि केदारनाथ सिंह हिंदी साहित्य के प्रगतिवादी कवियों की श्रृंखला में प्रसिद्ध कवि हैं। इन्होंने ग्रामीण एवं नगरीय जीवन का जो सजीव वर्णन किया है, वह किसी अन्य कवि के लिए मात्र एक कल्पना है अर्थात् असंभव है। केदारनाथ जी आधुनिक श्रेणी के कवियों में सबसे अलग एवं उच्च कोटि के कवि हैं। इनकी रचना का विषय कुछ भी हो, किंतु उन सभी का वर्णन सजीव-सा प्रतीत होता है।

जीवन परिचय– केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई, 1934 ई. को उत्तर प्रदेश राज्य के बलिया जनपद के चकिया नामक ग्राम में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा चकिया गाँव में ही प्राप्त की। इसके पश्चात् इन्होंने बनारस विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया तथा सन् 1956 ई. में हिंदी विषय में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। सन् 1964 ई. में आधुनिक हिंदी कविता में 'बिम्बविधान' विषय पर पीएच.डी. की उपाधि भी बनारस विश्वविद्यालय से ही प्राप्त की।

ये उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी; सेंट एंड्रूज कॉलेज गोरखपुर; उदित नारायण कॉलेज, पडरौना एवं गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर में अध्यापक पद पर कार्यरत रहे। इसके पश्चात् ये जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली में हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। इनके कार्यक्षेत्र का विस्तार ठेठ ग्रामांचल से महानगर तक है। इनकी कृति 'अकाल में सारस' के लिए इन्हें सन् 1989 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त इन्हें मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, कुमारन आशातन पुरस्कार (केरल), दिनकर पुरस्कार, जीवन भारती पुरस्कार (उड़ीसा)

और व्यास पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। हिंदी साहित्य अकादमी के वर्ष 2009-10 के सर्वोच्च शलाका सम्मान से भी इन्हें पुरस्कृत किया गया है। किंतु इन्होंने हिंदी एवं हिंदी की सच्ची सेवा करने वालों को उचित सम्मान न दिए जाने के विरोध में इस सम्मान को वापस कर दिया। इन्होंने विधिवत् काव्य-रचना सन् 1952-1953 ई. के मध्य प्रारंभ की। इसी समय इन्होंने वाराणसी से 'हमारी पीढ़ी' पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। इनकी प्रथम कविता संग्रह सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुई। केदारनाथ जी 'तीसरा सप्तक' कवियों में से एक प्रसिद्ध कवि हैं।

साहित्यिक परिचय– इनकी कविताओं का प्रमुख विषय ग्रामीण एवं शहरी समस्याएँ हैं। इन कविताओं में सर्वत्र निराशा में भी आशा की किरण दिखाई देती है एवं पतझड़ में भी वसंत के आगमन की संभावनाएँ दृशित होती हैं। जन-जन में मानव-मूल्यों के संचार का इनका प्रयास भी इनकी कविताओं में सम्मिलित है। ये अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण आधुनिक उच्च कवियों की श्रेणी में सम्मिलित किए जाते हैं।

2. केदारनाथ सिंह की कृतियों का उल्लेख करते हुए उनकी भाषागत विशेषताएँ बताइए।

उ०– कृतियाँ– केदारनाथ सिंह जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

अभी बिल्कुल अभी, जमीन पक रही है, यहाँ से देखो, अकाल में सारस, टॉलस्टॉय और साइकिल, मेरे समय के शब्द, कल्पना और छायावाद, उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ, बाघ आदि।

भाषागत विशेषताएँ– इन्होंने अपने कविताओं में व्यावहारिक, सरल, सरस एवं स्पष्ट खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। इनकी काव्य भाषा के विषय में कहा गया है कि भाषा के संबंध में केदारनाथ जी का संशय उत्तरोत्तर बढ़ा है और ये इस बात की लगातार शिनाख्त करते दिखाई देते हैं कि भाषा कहाँ है, कैसे बचेगी और कहाँ विफल है, कहाँ विकसित किए जाने की आवश्यकता है। इस क्रम में केदारनाथ जी को इस बात का आभास भी होता है कि अभी भाषा का विकसित होना शेष है। इन्होंने अपनी भाषा में विषय के अनुसार तद्भव शब्दों एवं ग्रामीण शब्दों का भी प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में कहीं पर भी पांडित्य-प्रदर्शन का प्रयास नहीं किया है। इन्होंने अपनी काव्य-रचनाओं में तुक एवं छंदों का प्रयोग नहीं किया है। इन्होंने शैली का प्रयोग विषय के अनुसार किया है। जिनमें वर्णनात्मक, व्याख्यात्मक शैली का प्रमुख स्थान है। इन्होंने अपनी रचनाओं में भाषा-शैली में ऐसी नवीनता प्रदर्शित की है कि उनके प्रयोग से इनकी कविता में सजीवता आ गई है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्ति भाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) अगर धीरे चलो .... छोड़ दो।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'केदारनाथ सिंह' द्वारा रचित 'नदी' शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– इस काव्यांश में 'नदी' को सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि ने यहाँ अपनी सभ्यता और संस्कृति से कटते लोगों की मानसिकता पर चिंता व्यक्त करते हुए उसके संरक्षण के उपायों की विवेचना की है।

व्याख्या– कवि केदारनाथ सिंह कहते हैं कि नदी वास्तव में बहते हुए जल की धारामात्र नहीं है; बल्कि वह तो हमारा जीवन है, हमारा प्राणतत्व है। हमारी संस्कृति का जीवंत रूप है, वह हमारी सभ्यता की जननी है। नदी हमारी रग-रग में दौड़ रही है। यदि हम धीरे से पूर्ण मनोयोग के साथ अपनी सभ्यता और संस्कृतिरूपी नदी के विषय में गंभीरतापूर्वक विचार करें, उससे रागात्मक रूप से जुड़ने के लिए परस्पर संवाद करें तो वह हमारे अंतर्मन को छूकर गहरे तक उसे भिगो जाती है। इसके विपरीत यदि हम अत्याधुनिकता की भ्रामक दौड़ में अन्धाधुन्ध दौड़ते जाएँगे और अपनी सभ्यता और संस्कृति की ओर दृष्टि उठाकर भी नहीं देखेंगे तो यह नदी हम से छूट जाएगी, दिन-प्रतिदिन दूर होती चली जाएगी। यदि हम अपनी संस्कृति और सभ्यता का थोड़ा-सा ध्यान रखें और उसे अपने साथ ले चलने का लेशमात्र भी विचार हमारे मस्तिष्क में हो तो यह नदी हमारे साथ सदैव आगे बढ़ती जाती है, फिर हम चाहे संसार के किसी भी कोने में जाएँ, यह हमारे साथ रहती है। यह सच्चे साथी की तरह कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ती, फिर चाहे हम कबाड़ी की दुकान में बैठे हों अथवा किसी राजमहल में।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने नदी रूपी सभ्यता एवं संस्कृति के महत्व पर प्रकाश डाला है। **2.** कवि का अपनी संस्कृति व सभ्यता के प्रति प्रेम यहाँ प्रकट हुआ है। **3.भाषा–** सरल खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक एवं वर्णनात्मक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** अनुप्रास।

(ब) कभी सुनना .... देगी नदी।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश में कवि बताता है कि भले ही व्यक्ति भौतिक रूप से कितना भी आधुनिक हो जाए, किंतु उसके मन-मस्तिष्क में अपनी सभ्यता और संस्कृति के प्रति लगाव अवश्य होता है।

व्याख्या– कवि कहता है कि जीवन की अस्त-व्यस्त अथवा आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी सभ्यता और संस्कृतिरूपी नदी के पैरों की आहट सुनाई नहीं देती। मगर जब रात्रि में पूरा शहर पूरा संसार सोया होता है और हमारी कानरूपी अन्तश्चेतना जाग्रत होती है, हमारी वैचारिकता हमारे आचार-व्यवहार का विश्लेषण करती है कि हम क्या सही कर रहे हैं और क्या गलत कर रहे हैं, तब उन शांति के क्षणों में हमें घर के प्रत्येक कोने से, उसके प्रत्येक खिड़की दरवाजे से कहीं धीमी दूर से आती हुई सी तो कहीं आसपास से उस नदी के बहने की आवाज स्पष्ट सुनाई देती है। इस आवाज के साथ हमें सभ्यता और संस्कृति की इस नदी में पलने वाले जीवन-मूल्योंरूपी निरीह मादा घड़ियालों के ताड़ित-पीड़ित किए जाने की आह और कराह भी सुनाई देती है। कवि सभी शांत-एकांत क्षणों में इस नदी के बहने और उसमें पलने वाले मादा-घड़ियालों की कराह को सुनने का अनुरोध यहाँ करता है। वह इस नदी के कल-कल निनाद को सुनकर उसे जीवन-संगीत बनाने अथवा कराह की ध्वनि को सुनकर उसके निवारण के उपाय करने का अनुरोध कदाचित् नहीं कर रहा है; क्योंकि उसे विश्वास है कि एक बार इस कल-कल निनाद और कराह को सुनने के बाद किसी भी व्यक्ति को उसे जीवन-संगीत बनाने और परिवर्तित करने के प्रयासों से कोई नहीं रोक सकता।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि कहता है कि व्यक्ति कितना भी चाहकर अपनी सभ्यता एवं संस्कृति से पूर्णरूप से दूर नहीं हो सकता। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. अलंकार–** पुनरुक्तिप्रकाश एवं अनुप्रास।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) वह चलती चली जाएगी कहीं भी , यहाँ तक कि कबाड़ी की दुकान तक भी।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ स्पष्ट करता है कि यदि हम अपनी सभ्यता व संस्कृति को साथ लेकर चलें तो वह हमारे साथ आगे बढ़ती जाती है, हम चाहे संसार के किसी भी कोने में जाएँ, यह हमारे साथ रहती है, फिर चाहे हम कबाड़ी की दुकान में ही क्यों न जाएँ हमारी सभ्यता व संस्कृति हमारे सच्चे साथी की तरह हमारे साथ रहती है।

(ब) करोड़ों तारों की आँख बचाकर वह चुपके से रच लेगी एक समूची दुनिया।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ स्पष्ट करता है कि यदि हम अपनी नदीरूपी सभ्यता को कहीं छोड़ देते हैं तो वह रुकती नहीं है, वरन् अनगिनत तारों रूपी लोगों की आँखों से बचकर अपनी नई दुनिया बसा लेती है अर्थात् अगर सभ्यता व संस्कृति का सूक्ष्मतम अंश भी कहीं छूट जाता है तो यह गहनतम अंधकार में भी करोड़ों-करोड़ तारोंरूपी अपने विनाशकों से दृष्टि बचाकर भी चुपचाप धीरे-धीरे अपना विशाल साम्राज्य स्थापित कर लेती है।

(स) एक मादा घड़ियाल की कराह की तरह सुनाई देगी नदी।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ कहता है कि एकाग्रचित होकर नदी की आवाज को सुनने का प्रयास करो। आपको नदी की प्रवाहित होने वाली मधुर ध्वनि एक मादा मगरमच्छ की दर्दयुक्त कराह जैसी आती प्रतीत होगी अर्थात् हमें सभ्यता एवं संस्कृति रूपी नदी में पलने वाले जीवन-मूल्यों रूपी निरीह मादा मगरमच्छों को दंडित-पीड़ित किए जाने की आह और कराह भी सुनाई देगी।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. केदारनाथ जी का जन्म किस गाँव में हुआ था?

(अ) बलिया (ब) **चकिया**

(स) दतिया (द) सूरजपुर

2. केदारनाथ को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब मिला?

(अ) सन् 1986 में (ब) सन् 1987 में

(स) सन् 1988 में (द) **सन् 1989 में**

3. **केदारनाथ जी द्वारा संपादित पत्रिका है–**

(अ) हंस (ब) माया

(स) **हमारी पीढ़ी** (द) चाँद

4. **केदारनाथ सिंह की कृति है–**

(अ) पवित्रता (ब) श्रद्धा-मनु

(स) **जमीन पक रही है** (द) गीत

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

1. **प्रस्तुत कविता 'नदी' में किस अलंकार की प्रमुखता है? उसकी परिभाषा भी दीजिए।**

उ०– 'नदी' कविता में अनुप्रास अलंकार की प्रमुखता है।

परिभाषा– जहाँ पर कोई वर्ण (अक्षर) एक से अधिक बार आता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण– चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।

2. **निम्नलिखित पद्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–**

तुम्हें वर्ष के सबसे कठिन दिनों में भी
प्यार करती है एक नदी
नदी जो इस समय नहीं है इस घर में
पर होगी जरूर कहीं न कहीं
किसी चटाई
या फूलदान के नीचे
चुपचाप बहती हुई

उ०– **काव्यगत सौंदर्य– 1.** यहाँ कवि ने बताया है कि सभ्यता एवं संस्कृति रूपी नदी जीवन के कठिनतम समय में भी हमारे साथ रहकर हमें संबल प्रदान करती है। **2. भाषा–** सरल खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** शांत **5. गुण–** प्रसाद **6. छंद–** मुक्त।

(छ) पाठ्येतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

12. युवा जंगल, भाषा एकमात्र अनंत है (अशोक वाजपेयी)

अभ्यास

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **अशोक वाजपेयी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?**

उ०– अशोक वाजपेयी का जन्म 16 जनवरी, 1941 ई. में दुर्ग, मध्य प्रदेश में हुआ था।

2. **अशोक वाजपेयी ने बी.ए. की परीक्षा कहाँ से उत्तीर्ण की?**

उ०– अशोक वाजपेयी ने अपनी बी.ए. की परीक्षा सागर, मध्य प्रदेश से उत्तीर्ण की।

3. **अशोक वाजपेयी ने स्नातकोत्तर उपाधि किस कॉलेज से ग्रहण की?**

उ०– अशोक वाजपेयली ने सेंट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली से स्नातकोत्तर की उपाधि ग्रहण की।

4. **अशोक वाजपेयी को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब और कौन-सी रचना के लिए मिला?**

उ०– अशोक वाजपेयजी को सन् 1994 ई. में 'कहीं नहीं वहीं' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

5. **अशोक वाजपेयी का प्रथम कविता संग्रह कब प्रकाशित हुआ?**

उ०– अशोक वाजपेयी का प्रथम कविता संग्रह सन् 1966 ई. में प्रकाशित हुआ।

6. **अशोक वाजपेयी की रचनाओं में भाषा का आधार क्या है?**

उ०– अशोक वाजपेयी की रचनाओं में सरल भाषा के माध्यम से जटिल से जटिल बात को कहा गया है। इन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से अपनी सभी रचनाओं में सजीवता उत्पन्न की है।

7. अशोक वाजपेयी के तीन कविता संग्रहों के नाम बताइए।

उ०– अशोक वाजपेयजी के तीन कविता संग्रह हैं– शहर अब भी संभावना है, कहीं नहीं वहीं तथा आविन्यों है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'युवा जंगल' नामक कविता में किस पीड़ा के बारे में बताया गया है?

उ०– 'युवा जंगल' नामक कविता में कवि ने जंगलों के विनाश की पीड़ा को एक पेड़ के द्वारा व्यक्त करते हुए उनके संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है। कवि ने हरे जंगल को एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है।

2. हरा पेड़ एक दीप्त संरचना कैसे है?

उ०– हरा पेड़ एक दीप्त संरचना हैं क्योंकि वह हरी पत्तियों से युक्त ईश्वर की एक प्रभासित अनुपम रचना है और वह पत्तियों की हरियाली की आभा से युक्त है। बिना हरी पत्तियों के पेड़ का अस्तित्व कुछ भी नहीं है। एक हरा पेड़ हरी-हरी पत्तियों से ही सुशोभित होता है।

3. 'युवा जंगल' कविता का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उ०– 'युवा जंगल' कविता का मूलभाव हरियाली ओर वृक्षों के महत्व को प्रकट करना है। कविता के माध्यम से कवि ने वन-संरक्षण की आवश्यकता का वर्णन किया है। कविता में कवि ने पेड़ के माध्यम से उनके मन की पीड़ा का वर्णन किया है। कवि चारों तरफ हरियाली देखना चाहता है, इसलिए वृक्षों के निरंतर कटाव को देखकर उसका हृदय अत्यधिक दु:खी हो जाता है। कवि संसार को वनों के संरक्षण के प्रति जाग्रत करना चाहता है और जंगलों से लोगों को उत्साह, जोश, मस्ती आदि की प्रेरणा लेने के लिए कह रहा है। कवि जंगलों की रक्षा के लिए विभिन्न उपायों को अपनाने पर बल देता है।

4. 'भाषा एकमात्र अनंत है' कविता से क्या संदेश प्राप्त होता है?

उ०– 'भाषा एकमात्र अनंत है' कविता से हमें यह संदेश प्राप्त होता है कि संसार में प्रत्येक वस्तु नश्वर है। जिसे एक-न-एक दिन समाप्त हो ही जाना है परंतु भाषा एक ऐसी वस्तु है जो अजर-अमर है तथा इसकी विद्यमानता किसी न किसी रूप में सदैव रहती है। शब्द एक बार विकसित हो जाने के बाद अमर हो जाता है इसके रूप, रंग, गंध में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आती है बल्कि समय के साथ इसकी अभिव्यंजना शक्ति में वृद्धि होती है, क्योंकि उसका नित-नए-अर्थों में प्रयोग किया जाने लगता है। कविता से हमें भी भाषा के समान अपने कार्यों के द्वारा अमर होने का संदेश मिलता है कि हम कुछ ऐसे कार्यों को करें जिससे हमारा नाम अनंत काल तक अमर रहे।

(ग) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. अशोक वाजपेयी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

उ०– अशोक वाजपेयी जी आधुनिक प्रगतिवादी कविता के प्रमुख कवि हैं। अशोक जी ने एक कवि, संपादक एवं आलोचक के रूप में हिंदी साहित्य का सेवा की है। इनका संपूर्ण काव्य आधुनिक साहित्य चेतना का प्रतीक है। इनकी कृतियों में धर्म, दर्शन, सामाजिक जीवन, नैतिकता एवं भौतिकता के दर्शन होते हैं।

जीवन परिचय– अशोक वाजपेयी जी का जन्म 16 जनवरी, 1941 ई. में दुर्ग, मध्य प्रदेश में हुआ था। इन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा यहीं से ही प्राप्त की। इन्होंने अपनी बी.ए. की परीक्षा सागर, मध्य प्रदेश से उत्तीर्ण की। इन्होंने सेंट स्टीफेंस कॉलेज, दिल्ली से 'स्नातकोत्तर' की उपाधि प्राप्त की। वाजपेयी जी ने भारतीय प्रशासनिक सेवा की सरकारी परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् इन्होंने भारत सरकार के विभिन्न पदों पर कार्य किया। अशोक जी प्रशासनिक व्यस्ताओं के बीच भी निरंतर साहित्यिक सृजन में तत्पर रहे। इन्होंने मध्य प्रदेश में भारत भवन, उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी, ध्रुपद केंद्र, चक्रधर नृत्य केंद्र, मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला परिषद आदि संस्थाओं की स्थापना करके काफी समय तक उनका संचालन कार्य भी किया। इसके पश्चात् इन्होंने महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति का कार्यभार सँभाला।

वाजपेयी जी जितने सिद्ध संपादक एवं आलोचक हैं, उतने ही महत्वपूर्ण कवि भी हैं। इन्होंने पूर्वग्रह, समास और बहुवचन आदि पत्रिकाओं का संपादन कार्य किया एवं इन्होंने कुछ कविताओं का भी संपादन किया, जिनमें कुमार गंधर्व, निर्मल वर्मा, मुक्तिबोध एवं शमशेर बहादुर सिंह की कविताएँ प्रमुख हैं। इनका पहला कविता संग्रह 'शहर अब भी संभावना है' को सन् 1966 ई. में प्रकाशित किया गया। अशोक वाजपेय जी सन् 1994 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उन्हें उनकी रचना 'कहीं नहीं वहीं' के लिए दिया गया।

साहित्यिक सौंदर्य– अशोक वाजपेयी सार्वजनिकता के नहीं आत्मीयता व निजता के कवि हैं। उनका शब्द की अदम्यता, असमानता और पवित्रता में अटूट विश्वास है। मनुष्य, मनुष्य की जिजीविषा, उसका रहस्य और उनका हर्ष–विषाद उनकी कविता के केंद्र हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में शुद्ध साहित्यिक खड़ीबोली का प्रयोग किया है। अपनी रचनाओं में वाजपेयी जी ने विषयों के अनुसार मुहावरों, लोकाक्तियों एवं तद्भव शब्दों का प्रयोग किया है। इनकी शैली का रूप वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक है। इन्होंने संस्कृति से संवाद करती हुई रचनाओं में शांत रस का प्रयोग किया है। वाजपेयी जी ने शब्द–शक्ति के सभी रूपों के साथ–साथ अतुकांत व मुक्तक छंद का प्रयोग किया है।

2. वाजपेयी जी की कृतियों व भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ०– **कृतियाँ–** अशोक वाजपेयी जी की प्रमुख कृतियाँ निम्नलिखित हैं—

आविन्यों, उम्मीद का दूसरा नाम, कहीं नहीं वहीं, कुछ रफू कुछ थिगड़े, दुख चिट्ठीरसा है, पुरखों की परछी में धूप, शहर अब भी संभावना है, अपनी आसन्नप्रसवा माँ के लिए, अधपके अमरुद की तरह पृथ्वी, एक खिड़की, एक बार जो कितने दिन और बचे हैं? कोई नहीं सुनता, गाढ़े अँधेरे में, चींटी, चीख, जबर जोत, पहला चुंबन पूर्वजों की अस्थियों में, फिर घर, बच्चे एक दिन, मुझे चाहिए, मौत की ट्रेन में दिदिया, युवा जंगल, वह कैसी कहेगी, वह नहीं कहती, विदा, विश्वास करना चाहता हूँ, वे बच्चे, शरण्य, शेष, सड़क पर एक आदमी, सद्य: स्नाता, समय से अनुरोध, सूर्य।

भाषागत विशेषताएँ– वाजपेयी जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध, साहित्यिक खड़ीबोली भाषा का प्रयोग किया है। इन्होंने अपनी रचनाओं में विषय के अनुसार तद्भव शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है। ये अपनी सरल भाषा के माध्यम से जटिल से जटिल बात को भी स्पष्ट करने में सक्षम हैं। इन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से ही अपनी सभी कृतियों में सजीवता उत्पन्न की है। इनकी कविताओं में कवियों, चित्रकारों एवं संगीतकारों के साथ–साथ भारतीय संस्कृति का भी सुंदर वर्णन किया गया है। इन्होंने शैली के रूप में वर्णनात्मक एवं व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग किया है।

(घ) पद्यांश व्याख्या एवं पंक्तिभाव

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए और इनका काव्य सौंदर्य भी स्पष्ट कीजिए–

(अ) एक युवा जंगल .... आकाश ठहरा है।

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'अशोक वाजपेयी' द्वारा रचित 'युवा जंगल' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि हरियाली और वृक्षों के महत्व का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या– कवि कहता है कि वृक्षों के निरंतर कटाव को देखकर उसका हृदय अत्यधिक दु:खी होता है, क्योंकि वह चारों तरफ हरियाली ही निहारना चाहता है। हरियाली और वृक्षों का उसके जीवन में अत्यधिक महत्व है। एक दिन एक युवा अर्थात् नवीन जंगल की ओर उसकी दृष्टि जाती है तो वह उसे देखकर अत्यधिक प्रसन्न हो जाता है। वह युवा जंगल से स्वयं को आत्मसात–सा कर लेता है। जब युवा जंगल अपनत्व की भावना से छोटी–छोटी शाखाओं रूपी हरी–हरी अँगुलियों से उसे बुलाता है तो धीरे–धीरे उसकी रंगों में भी लाल रक्त के स्थान पर हरा रक्त प्रवाहित होता प्रतीत होता है। आशय यह है कि कवि उस समय स्वयं को एक पौधे के रूप में स्वीकार कर रहा था। कवि की आँखों के सामने जो परछाइयाँ आती जाती दीखती हैं, वह भी उसे हरी ही दिखाई पड़ती हैं। धीरे–धीरे उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि उसने अपने कंधों पर हरे रंग का एक आकाश ही उठा रखा है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने जंगल को प्रेरणास्रोत के रूप में प्रस्तुत किया है तथा कवि का स्वयं को वृक्ष के रूप में कल्पना करना अद्भुत है। **2. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **3. शैली–** प्रतीकात्मक **4. रस–** शांत **5. गुण–** माधुर्य **6. अलंकार–** मानवीकरण **7. छंद–** अतुकांत–मुक्त।

(ब) होठ मेरे................................आ ऽता ऽ हूँ।

संदर्भ– पूर्ववत्

प्रसंग– युवा जंगल के बुलाने पर कवि सहर्ष उसके आह्वान को स्वीकार करता हुआ अपने मन के विचारों को स्पष्ट कर रहा है।

व्याख्या– कवि कहता है कि उसके होठ हरियाली को निहारकर बरबस हरियाली के गान गाने के लिए बुदबुदाने लगते हैं और अकस्मात् उसके मुख से निकल पड़ता है कि वह एक हरे पेड़ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह हरी पंक्तियों से युक्त ईश्वर की एक प्रभासित रचना है।

कवि युवा जंगल को संबोधित करता हुआ कह रहा है कि यदि तुम मुझे बुला रहे हो तो मैं तुम्हारे पास आ रहा हूँ। मैं स्वयं को हरियाली से युक्त वसंत में पूर्णरूपेण ओत-प्रोत करके आता हूँ। आशय यह है कि कवि उस समय अपने को भी एक वृक्ष के रूप में ही कल्पित कर रहा है। जब हम किसी के साथ, चाहे वह जड़ हो या चेतन; स्वयं को आत्मसात् करके देखते हैं तो उसके सुख-दु:ख हमें अपने ही सुख-दु:ख प्रतीत होते हैं। जब हमारा दृष्टिकोण विस्तृत होता है तो हम स्वयं से सारी प्रकृति को और सारी प्रकृति में स्वयं को समाहित रखते हैं; अर्थात् भिन्नता जैसी कोई वस्तु होती ही नहीं और यदि होती भी है तो वह स्वार्थ ही है। स्वार्थी व्यक्ति को प्रकृति में सभी भिन्न दिखाई देते हैं।

काव्यगत सौंदर्य– 1. यहाँ कवि ने वृक्षों के संरक्षण का संदेश दिया है। **2.** कवि की प्रकृति के साथ एकात्मभाव की कल्पना अभूतपूर्व है। **3. भाषा–** साहित्यिक खड़ीबोली **4. शैली–** प्रतीकात्मक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. अलंकार–** मानवीकरण **8. छंद–** अतुकांत-मुक्त।

(स) फूल झरता है .... अनंत है!

संदर्भ– प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'काव्यखंड' के 'अशोक वाजपेयजी' द्वारा रचित 'भाषा एकमात्र अनंत है' नामक शीर्षक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत कविता पंक्तियों में कवि भाषा की विशेषता का वर्णन कर रहा है। उसका कहना है कि सब कुछ समाप्त हो सकता है, लेकिन भाषा का अस्तित्व सदैव विद्यमान रहेगा। कवि कहता है कि सब कुछ समाप्त होने के उपरांत भी भाषा की विद्यमानता रहेगी; क्योंकि भाषा अनंत है।

व्याख्या– कवि का कहना है कि भाषा ही एकमात्र अनंत है; अर्थात् जिसका अंत नहीं है। फूल वृक्ष से टूटकर पृथ्वी पर गिरते हैं, उसकी पंखुडियाँ टूटकर बिखर जाती हैं और अन्तत: फूल मिट्टी में ही विलीन हो जाता है। वह प्रकृति से जन्मा है और अंत में प्रकृति में ही लीन हो जाता है। फूल की तरह शब्द विलीन नहीं होते। भाषा जो शब्दों से बनती है, वह कभी समाप्त नहीं होती। सदियों के पश्चात भी भाषा का अस्तित्व बना रहता है। यह दूसरी बात है कि विशद समयान्तराल में भाषा के स्वरूप में परिवर्तन अवश्य हो जाता है, लेकिन वह समाप्त नहीं होती। यह उसी प्रकार है जैसे एक बालक गेंद को उछालता है और दूसरा उसे पकड़कर पुन: उछाल देता है। आज किसी ने कोई बात कही, सैकड़ों वर्षों बाद परिवर्तित स्वरूप में कोई दूसरा व्यक्ति भी उसी बात को कह देता है। अत: निश्चित है कि भाषा ही एकमात्र अनंत है, जिसका कोई अंत नहीं है।

कवि कहता है कि हमें प्राचीन काल से संबंधित ज्ञान इतिहास और भूगोल जैसे विषयों की सहायता से प्राप्त हो जाता है। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जब इतिहास और भूगोल भी नहीं लिखे गए थे। भाषा का अस्तित्व उस समय भी था। उस समय भी कोई एक वृद्ध व्यक्ति जब कोई पद गुनगुनाता था तो घर के ही किसी अन्य भाग में बैठा हुआ कोई अन्य वृद्ध उसी पद को या अन्य किसी पद को गुनगुना उठता था और इसी माध्यम से भाषा आज तक चलती चली आ रही है। कवि के कहने का अभिप्राय यह है कि भाषा की विद्यमानता किसी-न-किसी रूप में सदैव रही है।

पुन: कवि कहता है न बच्चा रहेगा, न वृद्ध; क्योंकि बच्चा एक समयांतराल पर वृद्ध हो जाएगा और वृद्ध जीवन छोड़ चुका होगा। न गेंद रहेगा, न ही फूल और न ही दालान; क्योंकि ये सभी वस्तुएँ नश्वर हैं। एक-न-एक दिन सभी को समाप्त हो ही जाना है। लेकिन इन सबके समाप्त हो जाने के बाद भी शब्द बने रहेंगे; क्योंकि वह भाषा का ही एक भाग है और भाषा ही एकमात्र अनंत है।

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने भाषा को अजर-अमर बताया है। संसार की सभी वस्तुओं के समान यह नश्वर नहीं है। **2.** सदियों पूर्व की घटनाओं को हमारे सामने उपस्थित करने का एकमात्र साधन भाषा है। **3.** कविता में फूल, गेंद, बच्चा, बच्ची, वृद्ध, दालान शब्दों का प्रयोग संसार की विभिन्न वस्तुओं और क्रियाओं की जीवनावधि को दर्शाने के लिए किया गया है। **4.** कवि ने इतिहास व भूगोल से पहले भाषा की सत्ता को स्वीकार किया है। **5. भाषा–** देशज शब्द युक्त सरल खड़ीबोली **6. शैली–** विवेचनात्मक **7. रस–**शांत **8. गुण–** प्रसाद **9. छंद–** अतुकांत-मुक्त।

2. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए–

(अ) एक युवा जंगल मुझे, अपनी हरी उँगलियों से बुलाता है।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ अपने भाव स्पष्ट करते हुए कहता है कि उसे एक युवा, अर्थात् नवीन जंगल अपनत्व की भावना से छोटी-छोटी शाखाओं रूपी हरी-हरी अँगुलियों से बुलाता है अर्थात् कवि निरंतर नष्ट होते वृक्षों को देखकर

अपार दु:ख अनुभव करता है तथा वह स्वयं को एक वृक्ष के रूप में आत्मसात कर लेता है जिसे युवा जंगल अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। युवा जंगल कवि से अपने संरक्षण का आग्रह कर रहा है।

(ब) न गेंद, न फूल, न दालान रहेंगे फिर भी शब्द भाषा एकमात्र अनंत है।

भाव स्पष्टीकरण– कवि यहाँ स्पष्ट करता है कि संसार की सभी नश्वर वस्तुएँ गेंद, फूल तथा दालान एक दिन समाप्त हो जाएंगे परंतु फिर भी शब्द बने रहेंगे क्योंकि वह भाषा का ही एक भाग है और भाषा ही एकमात्र अनंत है अर्थात् संसार में सभी वस्तुएँ नाशवान हैं केवल भाषा ही अजर-अमर है जो कभी नहीं मरती, वह तो अनंतकाल तक विद्यमान रहती है।

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. अशोक वाजपेयी किस युग से संबंधित हैं?

(अ) आदिकाल (ब) भारतेंदु युग

(स) छायावादी युग (द) **प्रगतिवादी युग**

2. अशोक वाजपेयजी की रचना है–

(अ) मर्यादा (ब) **वे बच्चे**

(स) बीजक (द) गीतावली

3. वाजपेयी जी का पहला काव्य संग्रह है–

(अ) कहीं नहीं वहीं (ब) **शहर अब भी संभावना है**

(स) फिर घर (द) चीख

4. अशोक वाजपेयी की रचना नहीं है–

(अ) **लहर** (ब) वह नहीं कहती

(स) फिर घर (द) युवा जंगल

(च) काव्य सौंदर्य एवं व्याकरण-बोध

निम्नलिखित पद्यांश का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए–

भूगोल और इतिहास से परे
किसी दालान में बैठा हुआ!
न बच्चा रहेगा,
न बूढ़ा,
न गेंद, न फूल, न दालान
रहेंगे फिर भी शब्द
भाषा एकमात्र अनंत है!

काव्यगत सौंदर्य– 1. कवि ने इतिहास और भूगोल से पहले भाषा का सत्ता को स्वीकार किया है। **2.** कवि ने गेंद, फूल, बूढ़ा, बच्ची व दालान आदि के द्वारा स्पष्ट किया है कि कोई वस्तु, फूल और बूढ़े की तरह एक-दो दिन में नष्ट हो जाती है तो कोई वस्तु गेंद, बच्ची व दालान की तरह कुछ वर्षों अथवा शताब्दियों के बाद नष्ट हो जाती है। अर्थात् सांसारिक वस्तुएँ एक-न-एक दिन नष्ट हो ही जाती हैं चाहे वे लंबे समय बाद ही क्यों न हों। परंतु भाषा का अस्तित्व हमेशा रहता है। वह कभी नहीं मरती। अत: यहाँ भाषा के अतिरिक्त कुछ भी शाश्वत नहीं है। **3. भाषा–** सरल खड़ीबोली **4. शैली–** विवेचनात्मक **5. रस–** शांत **6. गुण–** प्रसाद **7. छंद–** अतुकांत-मुक्त।

(घ) पाठ्यतर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

संस्कृत खंड
प्रथमः पाठः वाराणसी

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) वाराणसी सुविख्याता .... विलोक्य इमां बहुप्रशंसन्ति।

[**सुविख्याता** = सुप्रसिद्ध, **सलिल** = जल, **कूले** = किनारे पर, **घट्टानां** = घाटों की, **वलयाकृतिः** = घुमावदार आकार वाली, **चन्द्रिकायाम्** = चाँदनी में, **राजते** = सुशोभित होती है, **विलोक्य** = देखकर।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'वाराणसी' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– वाराणसी बहुत प्राचीन नगरी है। यह स्वच्छ जल की तरंगों वाली गंगा के किनारे स्थित है। इसके घाटों की घुमावदार आकृति वाली पंक्ति श्वेत चाँदनी में बहुत सुंदर लगती है। दूर देशों के असंख्य यात्री प्रतिदिन यहाँ आते हैं और इसके घाटों की सुंदरता देखकर इसकी बहुत प्रशंसा करते हैं।

(ख) एषा नगरी भारतीयसंस्कृतेः .... अनुवादः पारसीभाषायां कारितः।

[**इत एव** = यहीं से, **संस्कृतेश्च** = संस्कृति का, **आलोकः** = प्रकाश, **प्रसृतः** = फैला है, **उपनिषदाम्** = उपनिषदों के, **कारितः** = कराया।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– यह नगरी भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा की केंद्रस्थली है। यहीं से संस्कृत साहित्य और संस्कृति का प्रकाश सब जगह फैला है। मुगल युवराज दारा शिकोह ने यहाँ आकर भारतीय-दर्शन-शास्त्रों का अध्ययन किया। वह उनके ज्ञान से ऐसा प्रभावित हुआ कि उन उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में कराया।

(ग) मरणं मङ्गलं यत्र .... काशी केन मीयते।

[**विभूति** = भस्म, **विभूषणम्** = आभूषण है, **कौपीनं** = लँगोटी, **कौशेयं** = रेशमी वस्त्र, **मीयते** = मापी जा सकती है।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'वाराणसी' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– जहाँ पर मरना कल्याणकारी समझा जाता है, जहाँ भस्म ही आभूषण है, जहाँ लँगोटी ही रेशमी वस्त्र है, वह काशी किसके द्वारा मापी जा सकती है? अर्थात् उसकी तुलना किससे की जा सकती है? तात्पर्य यह है कि किसी से भी नहीं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) वाराणसी नगरी कस्याः नद्याः कूले स्थिता?

उ०– वाराणसी नगरी गङ्गायाः नद्याः कूले स्थिता।

(ख) वाराणसी कस्याः भाषायाः केंद्रम् अस्ति?

उ०– वाराणसी संस्कृतभाषायाः केन्द्रम् अस्ति।

(ग) कः मुगलयुवराजः वाराणस्याम् आगस्य भारतीय दर्शनशास्त्राणाम् अध्ययनम् अकरोत्?

उ०– मुगलयुवराजः दाराशिकोहः वाराणस्याम् आगत्य भारतीय दर्शनशास्त्राणाम् अध्ययन् अकरोत्।

(घ) सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

उ०– सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणस्यां नगर्यां विद्यते।

(ङ) वाराणसी किमर्थं प्रसिद्धा?

उ०– वाराणसी विविधानां शिल्पानां कलानां, संस्कृतभाषायाः, संस्कृतेश्च कृते प्रसिद्धा अस्ति।

(च) वाराणस्यां गेहे गेहे किं द्योतते?

उ०– वाराणस्यां गेहे-गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **वाराणसी बहुत प्राचीन नगरी है।**
   अनुवाद– वाराणसी बहुना प्राचीना नगरी अस्ति।
2. **यहाँ पर प्रतिवर्ष अनेक पर्यटक आते हैं।**
   अनुवाद– अत्र प्रतिवर्षे अनेका: पर्यटका: आयन्ति।
3. **वाराणसी का काशी विश्वनाथ मंदिर बहुत प्रसिद्ध है।**
   अनुवाद– वाराणस्यां काशी विश्वनाथ: मन्दिर: सुविख्याता अस्ति।
4. **वाराणसी में संस्कृत के अध्ययन के लिए प्रचुर व्यवस्था है।**
   अनुवाद– वाराणस्यां संस्कृतस्य अध्ययनाय प्रचुर: व्यवस्था: सन्ति।
5. **यहाँ पर दारा ने भी संस्कृत का अध्ययन किया था।**
   अनुवाद– अत्र दारा अपि संस्कृतस्य अध्ययनम् अकरोत्।
6. **वाराणसी नगरी विविध धर्मों की संगमस्थली है।**
   अनुवाद– वाराणसी नगरी विविध धर्माणां सङ्गमस्थली अस्ति।
7. **दारा ने उपनिषदों का अनुवाद फारसी भाषा में करवाया था।**
   अनुवाद– दारा उपनिषदाम् अनुवाद: पारसीभाषायां अकरोत्।
8. **वाराणसी में मरना मंगलकारी माना गया है।**
   अनुवाद– वाराणस्यां मरणं मङ्गलं अमानयति।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–**

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
विमलसलिलतरङ्गाया:	विमल + सलिल + तरङ्गाया:
चन्द्रिकायां	चन्द्रिका + आयाम्
भारतीया:	भारत + ईया:
उपनिषदाम्	उपनिषद + आम्
महात्मान:	महा + आत्मान्
साहित्ये	स + आहित्ये
कौशेयशाटिका:	कौशेय + शाटिका:
प्राचीनपरम्पराम्	प्राचीन + परम्पराम्

2. **निम्नलिखित शब्दों की संधि कीजिए–**

संधि-विच्छेद	**संधि शब्द**
वलय + आकृति:	वलयाकृति:
इति + एते	इत्येते
अत्र + आगत्य:	अत्रागत्य:
विभूति: + च	विभूतिश्च

3. **निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लिखिए–**

शब्द	**उपसर्ग**	**प्रत्यय**
अनुभवति	अनु	इ
अनुकरणीय:	अनु	ईय
कृत्वा:	कृ	त्वा
सदगुणा:	सद्	आ:

(छ) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

द्वितीयः पाठः अन्योक्तिविलासः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) नितरां नीचोऽस्मीति .... परेषां गुणग्रहीतासि॥

[**नितराम्** = बहुत, अत्यधिक, **नीचोऽस्मीति** = मैं नीचा (गहरा) हूँ, **खेदं** = दु:ख, **कदापि =** कभी भी, **मा कृथा:** = मत करो, **यतः** = क्योंकि, **परेषां** = दूसरों के, **गुणग्रहीतासि** = गुणों को ग्रहण करने वाले हो, रस्सियों को ग्रहण करने वाला।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'अन्योक्तिविलास:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– हे कुएँ! (मैं) अत्यधिक नीचा (गहरा) हूँ। इस प्रकार कभी भी दु:ख मत करो, क्योंकि (तुम) अत्यंत सरस हृदय वाले (जल से पूर्ण) हो (और) दूसरों के गुणों (रस्सियों) को ग्रहण करने वाले हो। अर्थात् हे गंभीर पुरुष! 'मैं अत्यंत तुच्छ हूँ' ऐसा समझकर तुम मन में खेद मत करो, क्योंकि तुम सरस हृदय वाले हो और दूसरे के गुणों को ग्रहण करते हो।

(ख) कोकिल! यापय .... रसालः समुल्लसति।

[**कोकिल** = कोयल, **यापय** = बिताओ, **विरसान्** = नीरस, **करीलविटपेषु** = करील के वृक्षों पर, **यावन्मिलदलिमालः** = जब तक भौंरों की पंक्ति से युक्त, **रसालः** = आम, **समुल्लसति** = सुशोभित होता है।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– हे कोयल! जब तक भौंरों की पंक्ति से युक्त कोई आम का वृक्ष विकसित हो, तब तक तुम अपने नीरस दिनों को करील के वृक्षों पर ही बिताओ अर्थात् जब तक अच्छे दिन आएं व्यक्ति को बुरे दिन किसी प्रकार व्यतीत कर लेने चाहिए।

(ग) रे रे चातक! .... दीनं वचः॥

[**सावधानमनाना** = सावधान चित्त से, **श्रूयताम्** = सुनिए, **अम्भोदा** = बादल, **नैतादृशा:** = ऐसे नहीं हैं, **वृष्टिभिरार्द्रयन्ति** = वर्षा के द्वारा गीला कर देते हैं, **वसुधा** = पृथ्वी को, **वृथा** = व्यर्थ, **यंयं** = जिस जिसको, **पुरतो** = सामने, **मा ब्रूहि** = मत कहो, **दीनं वचः** = दीनता के वचन।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

व्याख्या– हे मित्र चातक! सावधान मन से क्षणभर सुनो। आकाश में बहुत-से बादल रहते हैं, पर सभी ऐसे (उदार) नहीं होते। कुछ तो वर्षा से पृथ्वी को गीला कर देते हैं, (पर) कुछ व्यर्थ में गरजते हैं (तुम) जिस-जिसको देखते हो उस-उसके सामने दीनता के वचन मत कहो अर्थात् संसार में अनेक व्यक्ति धनवान व समर्थ हैं, परंतु सभी उदार नहीं होते। अत: तुम प्रत्येक से आशा करते हुए उसके सामने हाथ मत फैलाओ, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति दानी नहीं होता।

(घ) न वे ताडनात् .... गुञ्जया तोलयन्ति॥

[**ताडनात्** = पीटने से, **वह्निमध्ये** = आग के बीच में, **विक्रयात** = बेचने से, **क्लिश्यमानोऽहमस्मि** = मैं दु:खी नहीं हूँ, **तदेंक** = वह एक है, **गुञ्जयाः** = रत्ती से, **तोलयन्ति** = तौलते हैं।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

व्याख्या– मैं (स्वर्ण) न तो पीटे जाने से, न अग्नि में तपाए जाने से और न बेचे जाने से दु:खी होता हूँ। मुझे स्वर्ण को एक ही दु:ख है कि लोग मुझको रत्ती से तोलते हैं अर्थात् मेरी कितनी भी कठिन परीक्षा ली जाए, मुझे उसमें दु:ख नहीं है, किंतु तुच्छ से मेरी तुलना की जाए, यही दु:ख है।

(ङ) रात्रिर्गमिष्यति भविष्यति .... गज उज्जहार।

[**रात्रिर्गमिष्यति** = रात्रि व्यतीत हो जाएगी, **भविष्यति** = होगा, **सुप्रभातं** = सुंदर प्रभात, **भास्वानुदेष्यति** = सूर्य उदित होगा, **हसिष्यति** = खिलेगा, **पङ्कजालिः** = कमलों का समूह, **इत्थं** = इस प्रकार से, **विचन्तयति**= विचार करने पर, **कोशगते द्विरेफे** = कमल कोश में बंद भ्रमर के द्वारा, **हन्त** = दु:ख है, **नलिनी** = कमलिनी को, **उज्जहार** = हरण कर लिया।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– (कोई भौंरा कमल में बंद हो गया। वह रातभर यही विचारता रहा कि) 'रात व्यतीत होगी, सुंदर प्रभात होगा, सूर्य उदित होगा, कमलों का समूह खिलेगा।'' दु:ख का विषय है कि कमल कोश में बंद भौंरे के विचारमग्न होने पर, किसी हाथी ने कमलिनी को उखाड़ लिया अर्थात् मनुष्य सुख की आशा में अपने दु:ख के दिन काटता है, परंतु उसका वह दु:ख समाप्त भी नहीं हो पाता कि उसे मृत्यु ग्रस लेती है। व्यक्ति सोचता कुछ है और होता कुछ और है। वस्तुत: उसके ऊपर कुछ भी निर्भर नहीं है। होता वही है जो ईश्वर चाहता है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) कूपः किमर्थं दुःखम् अनुभवति?

उ०– कूप: नितरां नीच: अस्ति, अत: स: दुखम् अनुभवति।

(ख) नीर क्षीर विषये हंसस्य का विशेषता अस्ति?

उ०– नीर क्षीर विषये नीर क्षीर–विवेकम् एव हंसस्य विशेषता अस्ति।

(ग) कवि हंस किं बोधयति?

उ०– कवि हंस नीर–क्षीर–विभागे आलस्यं न कर्तुं बोधयति।

(घ) कविः चातकं किम् उपदिशति?

उ०– कवि: चातकं उपदिशति यत् स: सर्वेषां पुरत: दीनं वच: न ब्रूयात्।

(ङ) सुवर्णस्य मुख्यं दुःखं किमस्ति?

उ०– जना: सुवर्णं गुञ्जया सह तोलयन्ति इति सुवर्णस्य मुख्यदु:खम् अस्ति।

(च) भ्रमरे चिन्तयति गजः किम् अकरोत्?

उ०– भ्रमरे चिन्तयति गज: नलिनीम् उज्जहार।

(छ) गजः कां उज्जहार?

उ०– गज: नलिनीम् उज्जहार।

(ज) कवि कोकिलं किम् कथयति?

उ०– कवि कोकिलं कथयति (बोधयति) यत् वसंतकालं यावत् रसाल: न समुल्लयति तावत् करीलविटपेषु एव सन्तोषं कर्त्तव्यम् ।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. हे कुएँ! अत्यधिक नीचा हूँ, ऐसा खेद मत करो।

अनुवाद– रे कूप! अहं नितरां नीच: एता खेदं मा कृथा:।

2. सबके सामने दीन वचन न कहो।

अनुवाद– सर्वेषां पुरत: दीनं वच: मा कथयतु।

3. हे कोयल! तुम धैर्य रखो।

अनुवाद– रे कोकिल! त्वं धैर्यं धारय।

4. हे चातक! क्षणभर सुनो।

अनुवाद– रे चातक! क्षणं श्रुतयाम्।

5. **अपना कर्तव्य शीघ्र करो।**
अनुवाद– स्व कर्तव्यं शीघ्रं कुरु।
6. **हे हंस! तुम अपना कार्य करते रहो।**
अनुवाद– रे हंस! त्वं स्वकार्यं कुर्वन तिष्ठ।
7. **आकाश में बहुत से बादल हैं।**
अनुवाद– गगने बहुना नीरद सन्ति।
8. **दीन वचन मत बोलो।**
अनुवाद– दीनं वचः मा ब्रूहि।
9. **सदैव पशु-पक्षियों की सहायता करो।**
अनुवाद– सदा पशुस्य-विहगस्य सहायतां कुरु।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित क्रियापदों में धातु, लकार, पुरुष व वचन बताइए–**

क्रियापद	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
अस्मि	अस्	लट् लकार	उत्तम	एकवचन
श्रूयताम्	श्रु	लोट लकार	प्रथम	द्विवचन
गमिष्यति	गम्	लृट् लकार	प्रथम	एकवचन
भविष्यति	भू	लृट् लकार	प्रथम	एकवचन
गर्जन्ति	गर्ज	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन

2. **निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए–**

सन्धि शब्द	**सन्धि विच्छेद**
कदापि	कदा + अपि
अत्यन्त	अति + अन्त
अधुनान्यः	अधुना + अन्यः
नैतादृशाः	न + एतादृशाः
तदेकम्	तत् + एकम्

3. **कमल, हाथी, बादल के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए।**

कमल	–	जलजः, सरोजः, नीरजः।
हाथी	–	गजः, द्विरदः, हस्ती।
बादल	–	नीरदः, मेघः, घनः।

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

तृतीयः पाठः वीरः वीरेण पूज्यते

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. **निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–**

(क) स्थानम्– अलक्षेन्द्रस्य .... वीरभावो हि वीरता।।

[**अलक्षेन्द्रः** = सिकंदर, **सैन्यशिविरम्** = सेना का शिविर, **वन्दिनम्** = कैदी को, **अभिवादयते** = नमस्कार करता है, **साक्षेपम्** = ताना मारते हुए, **बन्धनगतः** = कैद किया हुआ, **पिञ्जरे** = पिंजरे में, **पराक्रमते** = पराक्रम करता है, **उभयत्र** = दोनों जगह।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'वीर: वीरेण पूज्यते' नामक पाठ से उद्‌धृत है।

अनुवाद– (स्थान-सिकंदर की सेना का शिविर। सिकंदर और आम्भीक बैठे हुए हैं। बंदी बनाए गए पुरुराज को आगे करके यवनों का सेनापति एक ओर से प्रवेश करता है।)

सेनापति– सम्राट की जय हो।

पुरुराज– यह भारतीय वीर (मैं) भी यवनराज का अभिवादन करता है।

सिकंदर– (ताना मारते हुए) अहा! बंधन में पड़े हुए भी तुम अपने को वीर मानते हो, पुरुराज।

पुरुराज– यवनराज! सिंह तो सिंह ही होता है, वन में रहे या पिंजरे में।

सिकंदर– किंतु पिंजरे में पड़ा हुआ सिंह कुछ भी पराक्रम नहीं करता है।

पुरुराज– पराक्रम करता है, यदि अवसर मिलता है और हे यवनराज ''बंधन हो अथवा मरण हो, जीत हो या हार हो, दोनों ही अवस्थाओं में तीर समान रहता है। वीरभाव को ही वीरता कहते हैं।''

(ख) अलक्षेन्द्रः– भारतम् .... यत्र सन्ततिः॥

[**विरुद्धं** = विपरीत, **द्रुह्यन्ति** = द्रोह करते हैं, **हस्तक्षेपः** = दखल, **भारतीयः** = भारतवासी।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सिकंदर– भारत एक राष्ट्र है। तुम्हारा यह कथन गलत है। यहाँ तो राजा और प्रजा आपस में द्रोह करते हैं।

पुरुराज– वह सब हमारा आंतरिक मामला है। उसमें बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप असहनीय है? यवनराज! अलग धर्म, अलग भाषा और अलग वेशभूषा के होते हुए भी हम सब भारतीय हैं। हमारा राष्ट्र विशाल है। जैसा कि— ''समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो देश स्थित है, वह भारतवर्ष है। जिसकी संतान भारतवासी हैं।''

(ग) अलक्षेन्द्रः–(सरोषम्).. युध्यस्व विगतज्वरः॥

[**सरोषम्** = क्रोध सहित, **दुर्विनीत** = दुष्ट, **न विस्मरामः** = नहीं भूलते हैं, **हतो** = मारे जाने पर, **प्राप्स्यसि** = प्राप्त करोगे, **जित्वा** = जीतकर, **भोक्ष्यसे** = भोगोगे, **निराशीर्निर्ममो**= बिना किसी इच्छा और मोह के।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सिकंदर– (क्रोध सहित) दुष्ट! क्या तू नहीं जानता कि इस समय तू विश्व विजेता सिकंदर के सामने (खड़ा) है।

पुरुराज– जानता हूँ, किंतु सत्य तो सत्य ही है, यवनराज। हम भारतवासी गीता के संदेश को नहीं भूलते हैं।

सिकंदर– तो क्या है, तुम्हारी गीता का संदेश?

पुरुराज– सुनो ''(यदि युद्ध में) मारे गए, तो तुम स्वर्ग को प्राप्त करोगे अथवा जीत गए तो पृथ्वी (के राज्य) को भोगोगे। (इसलिए तुम) छारहित, मोहरहित और संतापरहित होकर युद्ध करो।''

(घ) सेनापतिः– सम्राट! .... मैत्रीमहोत्सवं सम्पादयामः।

[**मोचय** = खोल दो, **इतं पर** = अब से, **सम्पादयामः** = करते हैं।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– सेनापति– सम्राट!

सिकंदर– वीर पुरुराज के बंधन खोल दो।

सेनापति– सम्राट की जैसी आज्ञा।

सिकंदर– (एक हाथ से पुरु का और दूसरे हाथ से आम्भीक का हाथ पकड़कर) वीर पुरुराज! मित्र आम्भीक! अब से हम बराबरी के मित्र हैं। इस समय मित्रता का महोत्सव मनाएँ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) अलक्षेन्द्रः कः आसीत्?

उ०– अलक्षेन्द्र: यनवराज: आसीत्।

(ख) पुरुराजः कः आसीत्?

उ०– पुरुराजः एकः भारतवीरः आसीत्।

(ग) पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत्?

उ०– पुरुराजः अलक्षेन्द्रण सह युद्धम् अकरोत्।

(घ) अलक्षेन्द्रः पुरुराजेन सह कथं मैत्री इच्छति?

उ०– अलक्षेन्द्रः भारतीय नृपैः सह मैत्री कृत्वा भारतं विभाज्य जेतुम् इच्छति।

(ङ) गीतायाः कः सन्देशः?

उ०– ''युद्धे जयस्य पराजस्य वा चिन्तां त्यक्तवा युद्धं करणीयम् । युद्धे मरणेन स्वर्गप्राप्तिः जयेन च राज्यं प्राप्तिः भवति'' इति गीतायाः सन्देशः।

(च) वीरः केन पूज्यते?

उ०– वीरः वीरेण पूज्यते।

(छ) अलक्षेन्द्रः पुरुं किं प्रश्नम् अपृच्छत्?

उ०– कस्तावद् गीतायाः सन्देशः? इति अलक्षेन्द्रः पुरुं अपृच्छत्।

(ज) 'भारतम् एकं राष्ट्रम् इति' कस्य उक्तिः?

उ०– 'भारतम् एकं राष्ट्रम् इति अल्क्षेन्द्रस्य उक्तिः।

(झ) अलक्षेन्द्रः सेनापतिं किम् आदिशत्?

उ०– अलक्षेन्द्रः सेनापतिम् आदिशत् यत् ''वीरस्य पुरुराज बन्धनानि मोचय।''

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **पिंजरे में बंद शेर कभी पराक्रम नहीं करता है।**
   अनुवाद– पञ्जरस्थः सिंहः न किमपि पराक्रमते।
2. **भारत एक राष्ट्र है।**
   अनुवाद– भारतः एकः राष्ट्रः अस्ति।
3. **तुम अपने को वीर कहते हो।**
   अनुवाद– त्वं स्वस्य वीरः कथयत्।
4. **राष्ट्र की रक्षा करना हमारा धर्म है।**
   अनुवाद– राष्ट्रस्य रक्षणम् अस्माकं धर्मः अस्ति।
5. **वीर पुरुष एक दूसरे का सम्मान करते हैं।**
   अनुवाद– वीरः पुरुषः एकः अन्यस्य सम्मानं कुर्वन्ति।
6. **भाषा व वेशभूषा अलग होने पर भी हम सब एक हैं।**
   अनुवाद– भाषाः वेशभूषाः च पृथक् अपि वयं सर्वे अभिन्नाः स्मः।
7. **यह वाचाल निश्चिती ही मारने योग्य है।**
   अनुवाद– इदं वाचालः निश्चितेव हन्ता योग्य अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. **'वि' उपसर्ग का प्रयोग करते हुए निम्न उदाहरण को देखकर पाँच नए शब्द बनाइए।**

भक्ति	–	वि + भक्ति	=	विभक्ति
शेष	–	वि + शेष	=	विशेष
मुक्त	–	वि + मुक्त	=	विमुक्त
षम	–	वि + षम	=	विषम
योग	–	वि + योग	=	वियोग
देश	–	वि + देश	=	विदेश

2. **निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति और वचन लिखिए–**

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
जना:	प्रथमा	बहुवचन
पञ्जरे	सप्तमी	एकवचन
बन्धनम्	द्वितीया	एकवचन
सर्वे	प्रथमा	बहुवचन
गीताया:	पञ्चमी/षष्ठी	एकवचन
सन्धिना	तृतीया	एकवचन
तव	षष्ठी	एकवचन

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

चतुर्थः पाठः प्रबुद्धो ग्रामीणः

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. **निम्नलिखित का संदर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–**

(क) एकदा बहवः जनाः .... बहुज्ञः च अस्ति।''

[**एकदा** = एक बार, **धूमयानम्** = रेलगाड़ी, **आरुह्य** = चढ़कर, **नगरं प्रति** = नगर की ओर, **उपहसन्** = हँसी करते हुए, **जल्पनम्** = कथन, **अज्ञा:** = मूर्ख, **ब्रवीतु** = कहें, **बहुज्ञ:** = बहुत अधिक जानने वाला।]

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'प्रबुद्धो ग्रामीण:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– एक बार बहुत से लोग रेलगाड़ी में चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामवासी थे और कुछ नगरवासी। उनके चुपचाप बैठे रहने पर एक नगरवासी ने ग्रामवासियों की हँसी उड़ाते हुए कहा,'' ग्रामवासी पहले की भाँति आज भी अशिक्षित और मूर्ख हैं। न तो उनका विकास हुआ है और न हो सकता है।'' उसके इस प्रकार के कथन को सुनकर कोई चतुर ग्रामीण बोला–'' हे नगरवासी भाई! आप ही कुछ कहें, क्योंकि आप शिक्षित और बहुत जानकार हैं।''

(ख) ''आम् स्वीकृतः समयः''....................................... उत्तरं ब्रवीतु भवान्।''

[**आम्** = हाँ, **स्वीकृतः समय:** = शर्त स्वीकार है, **कथिते** = कहने पर, **तस्मिन् नागरिके** = उस नागरिक के, **श्रुत्वा** = सुनकर, **युक्तम्** = ठीक है, **अपदो** = बिना पैरों का, **साक्षरः** = अक्षरयुक्त, **अमुखः** = बिना मुख के, **स्फुटवक्ता** = साफ बोलने वाला।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद–''हाँ, मुझे शर्त स्वीकार है'', उस नागरिक के ऐसा कहने पर ग्रामीण ने नागरिक से कहा–''पहले आप ही पूछें।'' उस नागरवासी ने ग्रामवासी से कहा–''पहले तुम ही पूछो।'' यह सुनकर वह ग्रामवासी बोला–''ठीक है मैं ही पहले पूछता हूँ– बिना पैर का है, परंतु दूर तक जाता है, साक्षर (अक्षरों से युक्त) है, परंतु पंडित नहीं है, बिना मुख का है, परंतु साफ बोलने वाला है, उसे जो जानता है, वह विद्वान है।'' आप इसका उत्तर बताएँ।

(ग) पुनः ग्रामीणो ऽ ब्रवीत् .... नागरिकेभ्यः प्रबुद्धतराः भवन्ति।

[**दण्डदानेन** = दण्ड देने के कारण, **खिन्नः** = दु:खी, **विचार्य** = सोचकर, **काञ्चित्** = किसी, **अस्मरत्** = याद कर सका, **लज्जमानः** = लज्जित होता हुआ, **स्वकीयाया:**= अपनी, **विहस्य** = हँसकर, **सम्यक्** = उचित, **याति** =जाता है, **युक्तमपि** = युक्त होने पर भी, **अववीर्य** = उतरकर, **तूष्णीम** = चुपचाप, **वाचालं** = अधिक बोलने वाला, **दृष्ट्वा** = देखकर, **अहसन्** = हँसे, **अन्वभवत्** = अनुभव किया, **सर्वत्र** = सभी जगह, **प्रबुद्धतराः** =अधिक बुद्धिमान्।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– फिर ग्रामवासी ने कहा—''अब आप पहेली पूछें।''दण्ड देने के कारण दु:खी नागरवासी बहुत समय तक विचार करने पर भी कोई पहेली याद न कर सका, अत: अधिक लज्जित होते हुए बोला—''अपनी पहेली का तुम ही उत्तर बताओ।'' तब उस ग्रामवासी ने हँसते हुए अपने पहेली का सही उत्तर बताया, ''पत्र'' क्योंकि यह पैरों के बिना भी दूर तक जाता है, अक्षरों से युक्त होते हुए भी पंडित नहीं होता है। इसी समय उस ग्रामवासी का गाँव आ गया। वह हँसता हुआ रेलगाड़ी से उतरकर अपने गाँव चला गया। नगरवासी लज्जित होकर पहले की तरह चुपचाप बैठ गया। सब यात्री उस अधिक बोलने वाले नगरवासी की तरफ देखकर हँसने लगे। तब उस नगरवासी ने अनुभव किया कि ज्ञान सभी जगह होता है। ग्रामीण भी कभी नगरवासियों से अधिक बुद्धिमान होते हैं।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) ग्रामीणान् उपहसन् नागरिक: किम् अकथयत्?

उ०– ग्रामीणान् उपहसन् नागरिक: अकथयत् –''ग्रामीण: अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिता: अज्ञाश्च सन्ति। न तेषां विकास: अभवत् न च भवितुं शक्नोति।''

(ख) समये स्वीकृते प्रथमं क: अवदत्?

उ०– समये स्वीकृते प्रथमं ग्रामीण: अवदत् ।

(ग) प्रहेलिकाया: उत्तरं दातुं क: समर्थ: न अभवत्?

उ०– नागरिक: प्रहेलिकाया: उत्तरं दातुं समर्थ: न अभवत् ।

(घ) नागरिक: किमर्थं लज्जित: अभवत्?

उ०– नागरिक: ग्रामीणस्य प्रहेलिकाया: उत्तरं दातुं समर्थ: न अभवत् , अत: लज्जित: अभवत्।

(ङ) पदेन विना किं दूरं याति?

उ०– पदेन विना पत्रं दूरं याति।

(च) ज्ञानं कुत्र सम्भवति?

उ०– ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

(छ) ग्रामीणान् क: उपाहसत्?

उ०– ग्रामीणान् एक: नागरिक: उपहसत्।

(ज) 'ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति' इति क: अन्वभवत्?

उ०– 'ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति' इति नागरिक: अन्वभवत्।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. रेलगाड़ी में लोग यात्रा कर रहे थे।

अनुवाद– रेलयाने जना: यात्रा कुर्वन्ति स्म:।

2. रेलगाड़ी के यात्रियों में कुछ लोग अशिक्षित थे।

अनुवाद– रेलयानस्य यात्रिया केचित् जना: अशिक्षिता: आसीत्।

3. आप शिक्षित हैं और हम अशिक्षित।

अनुवाद– भवान् शिक्षित: अस्ति वयं च अशिक्षिता:।

4. मैं तुम्हें सौ रुपये दूँगा।

अनुवाद– अहं त्वां शत रुप्यकाणि दास्यामि्।

5. हम परस्पर एक दूसरे से पहेली पूछेंगे।

अनुवाद– वयं परस्परं एक: अन्ये: प्रहेलिकाम् प्रक्ष्याम:।

6. ज्ञान प्रत्येक स्थान पर संभव है।

अनुवाद– ज्ञानं सर्वत्र सम्भवति।

7. नागरिक को कोई पहेली याद नहीं आई।

अनुवाद– नागरिकं काञ्चित प्रहेलिकाम् अस्मरत:।

8. मैं मूर्ख नहीं हूँ।

अनुवाद– अहं अज्ञा: न अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित धातुओं में 'तव्यत' प्रत्यय जोड़कर नए शब्द बनाइए–

धातु		प्रत्यय		नया शब्द
पा	+	तव्यत्	-	पातव्य्
ध्या	+	तव्यत्	-	ध्यातव्य
पठ्	+	तव्यत्	-	पठितव्य
स्था	+	तव्यत्	-	स्थातव्य
प्राप्	+	तव्यत्	-	प्राप्तव्य

2. पाठ से लङ् लकार के पद चयन करके एक सूची बनाइए।

उ०– पाठ से लङ् लकार के पदों का चयन— आसन्, अकथयत्, अवदत्, अचिन्तयत्, अभवत्, अस्मरत:, अब्रवीत, आगत:, अववीर्य, अचलत्, अतिष्ठत्, अहसन्, अन्वभवत्।

3. निम्नलिखित शब्दों का सरल संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

धूमयानम् – वयं **धूमयानम्** आरुव्य नगरं गमिष्याम:।

समय: – आमं **समय:** स्वीकृत:।

सम्यक् – ग्रामीण: प्रहेलिकाम् **सम्यक्** उत्तरं पत्रं आसीत्।

निर्धनम् – ग्रामीणस्य जना: **निर्धनम्** भवन्ति।

अपदो – **अपदो** किं दूर याति?

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें

पञ्चम: पाठ: देशभक्त: चंद्रशेखर:

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का संदर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) स्थानम्-वाराणसी .... आजाद: (स्थिरीभूय)।

[**पीठे** = कुर्सी पर, **दुर्धर्ष:** = उद्दंड, **पारसीक:** = पारसी, **आरक्षका:** = सिपाही, **सम्मुखम्** = सामने, **आनयन्ति** = ले आते हैं, **अभियोग:** = मुकदमा, **पुष्टाङ्ग** = हष्ट पुष्ट शरीर वाला, **षोडषवर्षीय** = सोलह वर्ष का, **प्रस्तरखण्डेन** = पत्थर के टुकड़े से, **आहत:** = घायल हो गया, **स्थिरीभूय:** = दृढ़ होकर।]

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'देशभक्त: चंद्रशेखर:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– (स्थान–वाराणसी न्यायालय, न्यायाधीश की कुर्सी पर एक उद्दंड पारसी बैठा हुआ है। सिपाही चंद्रशेखर को उसके सामने लाते हैं। मुकदमा प्रारंभ होता है। चंद्रशेखर हष्ट पुष्ट शरीर वाले, गोरे रंग के, सोलह वर्ष के एक किशोर हैं।

सिपाही– श्रीमान जी! यह चन्द्रशेखर है। यह राजद्रोही है। पिछले दिन इसने ही असहयोग आंदोलनकारियों की सभा में एक सिपाही दुर्जय सिंह के मस्तक पर पत्थर के टुकड़े से प्रहार किया था। उससे दुर्जय सिंह घायल हो गया था।

न्यायाधीश– (उस बालक को आश्चर्य से देखते हुए) अरे बालक! तुम्हारा क्या नाम है?

चन्द्रशेखर– आजाद (दृढ़ता से)

(ख) ततः दृष्टिगौचरौ भवतः .... स पञ्चदशकशाघातैः ताडितः।

[**दृष्टिगौचरौ भवतः** = दिखाई देते हैं, **कोपीन्त्रावशेष** = लँगोटीमात्र पहने हुए, **फलकेन दृढ़ बद्धः** = हथकड़ी में कसकर बाँधा गया, **कशाहस्तेन** = हाथ में कोड़ा लिए हुए, **कारावासाधिकारी** = जेलर, **आदेश समकालमेव** = आदेश पाते ही, **कशाघातः कर्तव्यः** = कोड़े मारना, **स्वाविनयस्य** = अपनी धृष्टता का।]

संदर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– (इसके पश्चात् लँगोटीमात्र पहने हुए हथकड़ी से मजबूत बँधे हुए चन्द्रशेखर और हाथ में कोड़ा लिए चांडाल से अनुगमित जेल अधिकारी गंडासिंह दिखाई पड़ते हैं।)

गंडासिंह– (जल्लाद से) दुर्मुख! मेरा आदेश पाते ही कोड़े लगाना। (चंद्रशेखर) अरे धृष्ट युवक! अब तू अपनी धृष्टता का फल प्राप्त कर राजद्रोह। दुर्मुख! एक कोड़े का प्रहार करो! (दुर्मुख चन्द्रशेखर को कोड़े से पीटता है।)

चन्द्रशेखर– भारतमाता की जय हो।

गंडासिंह– दुर्मुख! दूसरा कोड़े का प्रहार करो (दुर्मुख पुनः कोड़ा मारता है।) पीटे गए चन्द्रशेखर बार-बार 'भारतमाता की जय हो' कहते हैं।

(इस प्रकार वे पन्द्रह कोड़ों से पीटे जाते हैं।)

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) चन्द्रशेखरः कः आसीत्?

उ०– चन्द्रशेखरः प्रसिद्धः क्रातिकारी देशभक्त च आसीत्।

(ख) चन्द्रशेखरः कथं बन्दीकृतः?

उ०– चन्द्रशेखरः आङ्ग्लशासकैः राजद्रोही घोषितः अतः बन्दीकृतः।

(ग) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अकथयत्?

उ०– चन्द्रशेखरः स्वनाम् 'आजाद' इति अकथयत्।

(घ) न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं किम् अदण्डयत्?

उ०– न्यायाधीशः चन्द्रशेखरं पञ्चदश कशाधातान् अदण्डयत्।

(ङ) ''शत्रूणां कृते मदीयाः इमे रक्तबिन्दवः अग्निस्फुलिङ्गाः भविष्यन्ति'', इदं कस्य कथनम् अस्ति?

उ०– इदं चन्द्रशेखरस्य कथनम् अस्ति।

(च) चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम किम् अकथयत्?

उ०– चन्द्रशेखरः स्वपितुः नाम 'स्वतन्त्र' इति अकथयत्।

(छ) दुर्मुखः कः आसीत्?

उ०– दुर्मखः चाण्डालः आसीत्।

(ज) आरक्षकस्य किं नाम आसीत्?

उ०– आरक्षकस्य नाम दुर्जयसिंहः आसीत्।

(झ) केन कारणेन चन्द्रशेखरः न्यायालये आनीतः?

उ०– आरक्षकस्य दुर्जयसिंहस्य मस्तके प्रस्वरखण्डेन प्रहारेण कारणेन चन्द्रशेखरः न्यायालये आनीतः।

(ञ) राष्ट्रभक्तः कः अस्ति?

उ०– राष्ट्रभक्तः चन्द्रशेखरः अस्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. प्रत्येक देशवासी को राष्ट्र-प्रेम होना चाहिए।

अनुवाद– प्रत्येकः देशवासी राष्ट्रप्रेमः भवेत्।

2. सबको अपना कर्तव्य करना चाहिए।

अनुवाद– सर्वेणां स्वकर्तव्यं कुर्यात्।

3. न्यायाधीश ने चन्द्रशेखर को पन्द्रह कोड़ों का दण्ड दिया।

अनुवाद– न्यायाधीश: चन्द्रशेखरं पञ्चदश: काशाघातान् दण्डयामि।

4. सभी को अपने देश के प्रति ईमानदार होना चाहिए।

अनुवाद– सर्वेणां स्वदेशे प्रति: ईमानदार: भवेत्।

5. देशभक्त निर्भीक होते हैं।

अनुवाद– देशभक्ता: निर्भीक: अस्ति।

6. एकता में बड़ी शक्ति होती है।

अनुवाद– एकते बहु शक्ति: भवति् ।

7. भारतमाता की जय हो।

अनुवाद– जयतु भारतम्।

8. हम सभी भारतमाता के अनन्य भक्त हैं।

अनुवाद– वयं सर्वेणां भारतमातस्य अनन्य: भक्त: अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्द-रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

शब्द-रूप	**विभक्ति**	**वचन**
रामात्	पञ्चमी	एकवचन
रामेभ्य:	चतुर्थी/पञ्चमी	बहुवचन
रामाणाम्	षष्ठी	बहुवचन
रामाभ्याम्	तृतीया	द्विवचन
रामौ	प्रथमा	द्विवचन

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

शब्द	**विलोम**
दुर्धर्ष:	विनम्र:
सम्मुखं	विम्मुखं
किशोर:	वृद्ध:
राजद्रोही	देशभक्त:
दुर्विनीत	विनीत:

3. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
अनेनैव	अनेन + एव्
आरक्षकस्य	आ + रक्षकस्य
कुत्रास्ति	कुत्र + अस्ति
कशाघात	कश + आघात
दुर्विनीत	दु: + विनीत

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

षष्ठः पाठः केन किं वर्धते?

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) सुवचनेन .... क्षमया तपः।

[**सुवचनेन** = सुंदर (मधुर) वचनों से, **इन्दुदर्शनेन** = चंद्रमा के देखने से, **रागः** = प्रेम, **उद्यमेन** = परिश्रम से, **श्रीः** = लक्ष्मी, **औचित्येन** = उचित व्यवहार से, **औदार्येण** = उदारता से।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'केन किं वर्धते?' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– मधुर वचनों से मित्रता बढ़ती है। चंद्रमा के दर्शन से समुद्र बढ़ता है। शृंगार से प्रेम बढ़ता है। विनय से गुण बढ़ता है। दान से कीर्ति बढ़ती है। परिश्रम से धन सम्पत्ति बढ़ती है। सत्य से धर्म बढ़ता है। रक्षा (पोषण) करने से उपवन बढ़ता है। सदाचार से विश्वास बढ़ता है। अभ्यास से विद्या बढ़ती है। न्याय से राज्य बढ़ता है। उचित व्यवहार से बड़प्पन बढ़ता है। उदारता से प्रभुता बढ़ती है। क्षमा से तप बढ़ता है।

(ख) पूर्ववायुना .... व्यसनेन विषयः।

[**पूर्ववायुना** = पूरवैया (पूर्वी वायु) **आह्लाद** = आनंद, **वैश्वानरः** = अग्नि, **अशौचेन** = अपवित्रता से, **अपथ्येन** = परहेज न करने से, **तृष्णा** = इच्छा, कामना।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– पुरवैया (पूर्वी वायु) से बादल बढ़ता है। लाभ से लोभ बढ़ता है। पुत्र के दर्शन से हर्ष बढ़ता है। मित्र के दर्शन से आनंद बढ़ता है। बुरे वचनों से झगड़ा बढ़ता है। तिनकों से आग बढ़ती है। नीच लोगों की संगति से दृष्टता बढ़ती है। उपेक्षा से शत्रु बढ़ते हैं। पारिवारिक झगड़े से दु:ख बढ़ता है। दुष्ट हृदय से दुर्दशा बढ़ती है। अपवित्रता से दरिद्रता बढ़ती है। परहेज न करने से रोग बढ़ता है। असंतोष से कामना बढ़ती है। बुरी आदतों से वासना बढ़ती है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) गुणः केन वर्धते?

उ०– गुण: विनयेन वर्धते।

(ख) श्रीः केन वर्धते?

उ०– श्री: उद्यमेन वर्धते।

(ग) अभ्यासेन किं वर्धते?

उ०– अभ्यासेन विद्या वर्धते।

(घ) तपः केन वर्धते?

उ०– तप: क्षमया वर्धते।

(ङ) मित्रदर्शनेन किं वर्धते।

उ०– मित्रदर्शनेन आह्लादो वर्धते।

(च) रिपुः केन वर्धते?

उ०– रिपु: उपेक्षया वर्धते।

(छ) सत्येन कः वर्धते?

उ०– सत्येन धर्म: वर्धते।

(ज) वैश्वानरः केन वर्धते?

उ०– वैश्वानर तृणेन वर्धते।

(झ) **पुत्रदर्शनेन कः वर्धते?**

उ०– पुत्रदर्शनेन हर्षः वर्धते।

(ञ) **लोभः केन वर्धते?**

उ०– लोभः लाभेन वर्धते।

(ब) **अनुवादात्मक**

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. **कीर्ति दान से बढ़ती है।**
   अनुवाद– कीर्तिः दानेन वर्धते।
2. **अभ्यास से विद्या बढ़ती है।**
   अनुवाद– अभ्यासेन विद्या वर्धते।
3. **लाभ से लोभ बढ़ता है।**
   अनुवाद– लाभेन लोभः वर्धते।
4. **श्रृंगार से राग बढ़ता है।**
   अनुवाद– श्रृङ्गारेण रागः वर्धते।
5. **दरिद्रता अपवित्रता से बढ़ती है।**
   अनुवाद– दारिद्र अशौचेन वर्धते।
6. **तिनकों के द्वारा अग्नि बढ़ती है।**
   अनुवाद– तृणैः वैश्नावरः वर्धते।
7. **सत्य से धर्म में बढ़ोतरी होती है।**
   अनुवाद– सत्येन धर्मस्य वृद्धिर्भवति।

(स) **व्याकरणात्मक**

1. **निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–**

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
सुवचनेन	सु + वचन + एन
औचित्येन	औचित्य + एन
दुर्वचनेन	दुः + वचन + एन
असन्तोषेण	असन्तोष + एन
इन्द्रदर्शनेन	इन्दुः + दर्शन + एन

2. **निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–**

शब्द	**विलोम**
मैत्रीः	शत्रुताः
अपथ्यः	पथ्यः
सन्तोषः	असन्तोषः
व्यसनः	अव्यसनः
लोभः	सन्तोषः

(द) **पाठ्येत्तर सक्रियता**

विद्यार्थी स्वयं करें।

सप्तमः पाठः अन्तरिक्षयात्रा

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) यद्यपि याने मया बहु .... अहम् एकं गृहमविशम्।

[**अशितम्** = खाया, **क्षुधया** = भूख से, **गुलिका:** = गोलियाँ, **अट्टालिकाः** = अटारी, ऊँचे-ऊँचे भवन, **परिलक्षिताः** = दिखाई दी, **प्रत्यभासन्त** = प्रतीत हो रही थी, **सुविशालौ** = बहुत विशाल अर्थात् बड़े-बड़े, **द्वावपि** = दोनों ही, **कपाटौ** = दोनों किवाड़, **आनावृतौ सञ्जातौ** = खुल गए, **उपलक्षितं** = प्रतीत होता है, **यदत्रत्या**: = कि यहाँ के, **क्वापि** = कहीं, **अन्ततः** = अंत में, **गृहमविशम्** = घर में प्रवेश कर गए।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'अन्तरिक्षयात्रा' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– यद्यपि मैंने यान में बहुत खाया था तो भी वहाँ घूमने से मैं भूख से पीड़ित हो गया। उसके लिए मैंने कुछ गोलियाँ खाईं। घूमने पर मैंने बड़े-बड़े सुंदर मार्ग देखे। मार्ग के दोनों ओर गगन को छूने वाले ऊँचे-ऊँचे भवन दिखाई दिए। ये सब नए बने हुए से प्रतीत हो रहे थे। जब हम उस नगर के द्वार पर पहुँचे, उसके बड़े-बड़े दोनों किवाड़ खुल गए। ऐसा प्रतीत होता था कि कोई हमारी प्रतिक्षा करता हुआ बैठा था। वहाँ यातायात के लिए कोई साधन नहीं था। मैंने सोचा कि यहाँ के सब नगरवासी कहीं गए हुए हैं। अंत में मैंने एक घर में प्रवेश किया।

(ख) तत्रासीत् एकः महान् .... सङ्कटापन्नः भविष्यति।

[**कक्षः** = कमरा, **समुन्नतं** = बहुत ऊँचा, **स्वचालितौ** = अपने आप चलने वाले, **अनावृतौ** = खुल गए, **विस्तीर्णे** = विशाल, **चित्रपट कार्यक्रमः** = सिनेमा का कार्यक्रम, **अश्रूयत्** = सुनाई पड़ी, **अत्रापि** = यहाँ भी, **महती** = बहुत बड़ी, **पोषणाय** = पालन-पोषण के लिए, **समुपलब्धा** = प्राप्त कर ली थी, **अवाप्तम्** = प्राप्त था, **सुप्तः अभवत्** = सो गया या मर गया, **विज्ञापयितुं** = बतलाने के लिए, **तथ्यं** = रहस्य, **जानीयात्** = जान ले, **गृहणीयात्** = ग्रहण करें, **अचिरमेव** = शीघ्र ही, **विनङ क्षयति** = नष्ट हो जाएगा, **विरत**: = बंद हो गई, **घर्घरनादः** = घर्घर की ध्वनि, **अपतम्** = गिर पड़ा, **तथैव** = उसी प्रकार का, **सङ्कटापन्नः** = संकटग्रस्त।]

अनुवाद– वहाँ एक बड़ा कमरा था, जिसमें दरवाजा बहुत ऊँचा था। वहाँ भी किवाड़ अपने आप चलने वाले थे और स्वयं खुल गए। उस विशाल भवन में स्वयं चलने वाला चित्रपट कार्यक्रम चल रहा था। उसमें एक धीमी आवाज सुनाई दी। उसमें उस लोक की कथा इस प्रकार वर्णित थी— ''कभी यहाँ भी मनुष्यों का सभ्य समाज था। वह समाज बहुत उन्नत था। उसने बड़ी वैज्ञानिक प्रगति प्राप्त कर ली थी। उस समाज के सभी कार्य स्वचालित थे, किंतु दु:ख है कि जनसंख्या की अधिकता के कारण पोषण के लिए भोजन प्राप्त नहीं था। अन्त में भोजन के बिना सारा समाज सो गया(नष्ट हो गया) ये यन्त्र केवल यह बताने के लिए ही चलते हैं कि दूसरे किसी लोक का मानव यह रहस्य जान ले और हमारा संदेश ग्रहण करें। शीघ्र ही यह सब स्वयं नष्ट हो जाएगा।'' इस प्रकार बताकर अचानक वह ध्वनि रुक गई। वहाँ कोई महान घर्घर का शब्द उठा। मैं भी भूमि पर गिर पड़ा। तब मैने जाना कि मैं एक विचित्र स्वप्न देख रहा था। मैंने बार-बार सोचा यदि हम भी अन्न के उत्पादन में और रक्षा करने में सावधान न हुए तो हमारा पृथ्वीलोक भी उसी प्रकार संकटग्रस्त हो जाएगा।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) पर्यटकः अन्तरिक्षं केन यानेन अगच्छत्?

उ०– पर्यटक: अन्तरिक्षं राकेटयानेन अगच्छत्।

(ख) पर्यटकः स्वप्ने कुत्र अगच्छत्?

उ०– पर्यटक: स्वप्ने अन्तरिक्षलोकं अगच्छत।

(ग) क्षुधया पीड़ितः पर्यटकः किम् अखादत्?

उ०– क्षुधया पीड़ित: पर्यटक: काश्चित् गुलिका: अखादत।

(घ) मार्गम् उभयतः किं आसीत्?

उ०– मार्गम् उभयत: गगनचुम्बिन्य: अट्टालिका: आसीत्।

(ङ) यानात् बहिः आगत्य यात्री कुत्र पर्याटम्?

उ०– यानात् बहि: यात्री मार्गे पर्याटम्।

(च) क्षुधा दूरीकरणाय यात्री किम् अकरोत्?

उ०– क्षुधा दूरीकरणाय यात्री गुलिका: अखादत्।

(छ) तत्र पर्यटकः किम् अशृणोत्?

उ०– तत्र पर्यटक: अशृणोत् यत् ''अत्रापि सभ्य: समाज: आसीत्।''

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. मैं प्रातःकाल के समय उस लोक में पहुँचा।

अनुवाद– अहं प्रात:कालस्य तत्र लोके उपागच्छम्।

2. वहाँ पर कोई भी पेड़ नहीं था।

अनुवाद– तत्र कोऽपि वृक्ष: न आसीत्।

3. मैं रॉकेट यान से धीरे-धीरे उतरा।

अनुवाद– अहं राकेटयानेन शनै:-शनै: अवातरम्।

4. मैं पृथ्वी पर गिर पड़ा।

अनुवाद– अहं भूमौ अपतम्।

5. वहाँ सूर्य नहीं था फिर भी उजाला था।

अनुवाद– तत्र सूर्य: न आसीत् यद्यपि प्रकाश: आसीत्।

6. भवन में स्वयं खुलने वाले दरवाजे थे।

अनुवाद– भवने स्वचालित: कपाटौ आसीत्।

7. मेरे सामने एक सुंदर नगर आ गया।

अनुवाद– मया सम्मुखं एकं सुन्दरं नगरं आपतितम्।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**
यावदेव	यावत् + एव
उपागच्छं	उप + आगच्छं
तत्रासीत्	तत्र + आसीत्
प्रत्यभासन्त	प्रति + अभासन्त
समुपलब्धा	सम + उपलब्धा

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों में प्रयुक्त विभक्ति का कारण बताइए–

(क) अन्ततः <u>भोजनं</u> विना सकलः समाजः सुम्वः अभवत्।

उ०– 'विना' के योग में द्वितीय विभक्ति होती है।

(ख) तथापि तत्र <u>भ्रमणेन</u> अहं क्षुधया पीडितः।

उ०– कारण में तृतीय विभक्ति होती है।

(ग) तत्र <u>यातायातास्य</u> कृते न किमपि साधनम् आसीत्।

उ०– कृते के योग में षष्ठी विभक्ति होती है।

(घ) अहमपि <u>भूमौ</u> अपतम्।

उ०– आधार में सप्तमी विभक्ति होती है।

3. उपागच्छं (उप + आगच्छं) शब्द में 'उप' उपसर्ग है। इसी तरह निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए–

शब्द	**उपसर्ग**
अनुभूतम्	अनु
उपागता:	उप
अचिन्तयं	अ
सुविशालौ	सु
बहुसमुन्नत:	बहु

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें

अष्टम: पाठ: भारतीय संस्कृति:

अभ्यास

(अ) तथ्यागत

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए–

(क) ''विश्वस्य स्रष्टा ईश्वर .... अस्माकं संस्कृते: सन्देश:।

[**स्त्रष्टा** = रचयिता, **विभिन्नमतावलम्बिन**: = विभिन्न मतों के अनुयायी, **समभाव**: = समान भाव।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृतखंड' के 'भारतीय संस्कृति:' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद–''विश्व का रचयिता ईश्वर एक ही है'', यह भारतीय संस्कृति का मूल है। विभिन्न मतों के अनुयायी अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं। अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्ध, ख्रिस्त, अल्लाह आदि नाम एक ही परमात्मा के हैं। उसी ईश्वर को लोग 'गुरु' भी मानते हैं। अत: सभी मतों के प्रति समान भाव और सम्मान हमारी संस्कृति का संदेश है।

(ख) भारतीय संस्कृति: तु .... राष्ट्रस्य उन्नति: कर्तव्या।

[**सङ्गमस्थली** = मिलने का स्थान, **काले - काले** = समय समय पर, **समहिता**: = सम्मिलित हुए, **समासिकी** = सामूहिक, समुच्चयात्मक, **समुपासका**: = उपासक, **सौहार्देन** = प्रेम से]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– भारतीय संस्कृति तो सभी मतों के अनुयायियों के मिलने का स्थान है। समय-समय पर अनेक प्रकार के विचार भारतीय संस्कृति में मिल गए। यह संस्कृति समुच्चयात्मकं (सामूहिक) संस्कृति है, जिसके विकास में अनेक जातियों, सम्प्रदायों और विश्वासों का योगदान दिखाई पड़ता है। इसलिए हम भारतवासियों की एक संस्कृति और एक राष्ट्रीयता है। हम सभी एक संस्कृति की उपासना करने वाले और एक राष्ट्र के नागरिक हैं। जिस प्रकार भाई-भाई परस्पर मिलकर सहयोग और प्रेम से परिवार की उन्नति करते हैं, उसी प्रकार हमें भी सहयोग और प्रेम से राष्ट्र की उन्नति करनी चाहिए।

(ग) एषा कर्मवीराणां .... दु:खभाग् भवेत्।।

[**कर्मवीराणां** = कर्म में संलग्न रहने वालों की, **कुर्वन्नेवेह** = यहाँ करते हुए ही, **जिजीविषेच्छतं समा:** = सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करनी चाहिए, **उद्घोष**: = घोषणा, **संलग्ना** = लगे हुए हैं, **कर्मकरणम्** = कर्म करना, **वर्जनीयम्** = छोड़ने योग्य, **विपरीतम्** = विरुद्ध, **आचराम**: = आचरण करते हैं, **लक्षिता भवेत्** = दिखाई दे, **अभिलषाम:** = चाहते हैं, **अभ्युदयाय** = उन्नति के लिए, **प्रसरेत्** = प्रसारित हो, **निरामया**: = रोगरहित, **भद्राणि** = कल्याण, **दु:खभाग्** = दु:ख का भागी।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– यह कर्म में संलग्न रहने वालों की भूमि है। ''यहाँ कर्म करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए।'' यह इसकी घोषणा है। पहले कर्म, बाद में फल–यह हमारी संस्कृति का नियम है। इस समय जब हम राष्ट्र के नव–निर्माण में लगे हुए हैं, निरंतर काम करना ही हमारा प्रधान कर्तव्य है। अपने परिश्रम का फल भोगने योग्य है, दूसरे के श्रम का शोषण छोड़ने योग्य है। यदि हम सब विपरीत आचरण करते हैं तो हम भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक नहीं हैं। हम तभी वास्तविक रूप में भारतीय हैं, जब हमारे आचार–विचार में हमारी संस्कृति दिखाई दे। हम सब चाहते हैं कि संसार की उन्नति के लिए भारतीय संस्कृति का यह दिव्य संदेश संसार में सब जगह फैले–''सब सुखी हों। सब रोगरहित हों। सब कल्याण को देखें, अर्थात् सभी का कल्याण हो। कोई भी दु:खी न हो, अर्थात् कोई भी दु:ख का भागी न बने।''

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) भारतीय: संस्कृते: मूलं किम् अस्ति?

उ०– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक एव इति भारतीय–संस्कृते: मूलम् अस्ति।

(ख) भारतीया: संस्कृति: कां सङ्गमस्थली?

उ०– भारतीया: संस्कृति सर्वेषां मतावालम्बिनां सङ्गमस्थली।

(ग) अस्माकं संस्कृति: कीदृशी वर्तते?

उ०– अस्माकं संस्कृति: सदा गतिशीला वर्तते।

(घ) अस्माकं संस्कृते: क: नियम:?

उ०– अस्माकं संस्कृते नियम: 'पूर्व कर्मं, तदनन्तरं' फलम् इति अस्ति।

(ङ) ''मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्'' कस्या: अस्ति एष: दिव्य: सन्देश:?

उ०– ''मा कश्चित् दु:खभाग् भवेत्''एष: भारतीय संस्कृति: दिव्य: सन्देश: अस्ति।

(च) संस्कृते: अर्थ: क:?

उ०– मानवजीवनस्य संस्करणम् संस्कृति: इति संस्कृति: शब्दस्य तात्पर्यम्।

(छ) विश्वस्य स्त्रष्टा क:?

उ०– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक एव अस्ति।

(ज) अस्माकं भारतीय संस्कृते: क: सन्देश:?

उ०– सर्वेषां मतानां समभाव: सम्मानश्च अस्माकं संस्कृते: दिव्य: सन्देश: अस्ति।

(झ) ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' एष: दिव्य: सन्देश: कस्या: अस्ति?

उ०– ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' अस्माकं संस्कृते सन्देश: अस्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. भारतीय संस्कृति विश्वभर में प्रसिद्ध है।

अनुवाद– भारतीय संस्कृति सर्वे विश्वे सुविख्यात अस्ति।

2. अपनी संस्कृति की रक्षा करना हमारा धर्म है।

अनुवाद– स्वसंस्कृते: रक्षणम् अस्माकं धर्म: अस्ति।

3. भारतीय संस्कृति विविध धर्मों का संगम है।

अनुवाद–भारतीया संस्कृति: विविधानां धर्मणां सङ्गमस्थली।

4. हमें भारतीय संस्कृति को सदैव बनाए रखना चाहिए।

अनुवाद– वयं भारतीया संस्कृतं सदा संरक्षयेत्।

5. विश्व का रचयिता ईश्वर एक है।

अनुवाद– विश्वस्य स्त्रष्टा ईश्वर: एक: अस्ति।

6. सभी सुखी हों, हमारी ऐसी कामना है।

अनुवाद– सर्वे सुखिन: भवन्तु, अस्माकं एव अभिलाषा अस्ति।

(स) व्याकरणात्मक

1. निम्नलिखित शब्दों में संधि-विच्छेद कीजिए–

संधि शब्द		**संधि-विच्छेद**
मतावलम्बिनां	–	मत + अवलम्बिनां
समुपासका:	–	सम + उपासका:
कुर्वन्नेवेह	–	कुर्वन्न + एव + इह
जिजीविषेच्छतं	–	जिजीविषेत् + शतं
यदास्याकम्	–	यद + अस्याकम्

2. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए–

मानवः	–	पुरुषः, नरः।
ईश्वरः	–	प्रभुः, ईशः।
श्रमः	–	परिश्रमः, उद्यमः।
लोकः	–	संसारः, विश्वः।
अग्निः	–	पावकः, आगः।

3. निम्नलिखित में धातु, लकार, पुरुष व वचन बताइए–

शब्द	**धातु**	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
भवति	भू	लट् लकार	प्रथम	एकवचन
दृश्यते	दृश	लट् लकार	प्रथम	एकवचन
भजन्ते	भज	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन
मन्यन्ते	मन	लट् लकार	प्रथम	बहुवचन
अकुर्वन	कृ	लङ् लकार	प्रथम	बहुवचन

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

नवमः पाठः जीवन-सूत्राणि

अभ्यास

(अ) तथ्यात्मक

1. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिंदी में अनुवाद कीजिए।

(क) माता गुरुतरा भूमेः .... बहुतरी तृणात्॥

[**गुरुतरा** = महान, भारी, **खात्** = आकाश से, **वातात्** = पवन से, **शीघ्रतरं** = शीघ्रगामी, **तणात्** = तिनके से।]

सन्दर्भ– प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य पुस्तक 'हिंदी' के 'संस्कृत खंड' के 'जीवन-सूत्राणि' नामक पाठ से उद्धृत है।

अनुवाद– (युधिष्ठिर यक्ष को उत्तर देते हैं) माता पृथ्वी से भी भारी (महान) है। आकाश से ऊँचा पिता है। मन वायु से अधिक शीघ्रगामी है। चिंता तिनको से (भी) अधिक (दुर्बल बनाने वाली) है।

(ख) किंस्वित् प्रवसतो.................................... मित्रं मरिष्यतः॥

[**किंस्वित्** = क्या, **प्रवसतोः** = विदेश में रहने वाले का, **गृहे सतः** = घर में रहने वाले का, **आतुरस्य** = बीमार का, **मरिष्यतः** = मरते हुए का।]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– (यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है) विदेश में रहने वाले का मित्र कौन है? घर में रहने वाले का मित्र कौन है? रोगी का मित्र कौन है? मरने वाले का मित्र कौन है?

(ग) **किंस्विदेकपदं .... सुखम्?॥**

[**किंस्विदेकपदं** = मुख्य स्थान क्या है?]

अनुवाद– (यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है।) धर्म का मुख्य स्थान क्या है? यश का मुख्य स्थान क्या है? स्वर्ग का मुख्य स्थान क्या है? और सुख का मुख्य स्थान क्या है?

(घ) **धान्यानामुत्तमं .... किमुत्तमम्॥**

[**धान्यानाम्** = अन्नों में, **दाक्ष्यं** = दक्षता]

सन्दर्भ– पूर्ववत्

अनुवाद– (यक्ष युधिष्ठिर से प्रश्न करता है।) अन्नों में उत्तम अन्न क्या है? धनों में उत्तम धन क्या है? लाभों में उत्तम लाभ क्या है? सुखों में उत्तम सुख क्या है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) खात् उच्चतरं किम् अस्ति?

उ०– खात् उच्चतरं पिता अस्ति।

(ख) वातात् शीघ्रतरं किम् अस्ति?

उ०– वातात् शीघ्रतरं मन: अस्ति।

(ग) प्रवसतो मित्रं किम् अस्ति?

उ०– प्रवसतो मित्रं सार्थम् अस्ति।

(घ) मरिष्यत: मित्रं किम् अस्ति?

उ०– मरिष्यत: मित्रं दानं अस्ति।

(ङ) नर: किं हित्वा न शोचति?

उ०– नर: क्रोधं हित्वा न शोचति।

(च) आतुरस्य मित्रं किं अस्ति?

उ०– आतुरस्य मित्रं वैद्य: अस्ति।

(छ) किं नु हित्वा सुखी भवेत्?

उ०– लोभं हित्वा सुखी भवेत्।

(ज) अनृतं केन जयेत्?

उ०– सत्येन अनृतं जयेत्।

(झ) सर्वेषु उत्तम धनं किम् अस्ति?

उ०– सर्वेषु उत्तम धनं श्रुतं अस्ति।

(ब) अनुवादात्मक

निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. भूमि से बढ़कर माता है।

अनुवाद– माता भूमे: महत्तरा अस्ति।

2. विदेश में धन मित्र होता है।

अनुवाद– विदेशेषु धनं मित्रं भवति।

3. श्रुत ही उत्तम धन है।

अनुवाद– श्रुतम् एव उत्तमं धनं अस्ति।

4. चोर घर में प्रवेश कर रहे हैं।

अनुवाद– चौर: गृहे प्रवेशन्ति स्म:।

5. घर में पत्नी ही मित्र है।

अनुवाद–भार्या एव गृहे मित्रं अस्ति।

6. **संतुष्टि सब सुखों में उत्तम है।**

अनुवाद– संतुष्टि: सर्वे सुखे उत्तमं अस्ति।

7. **अगर आप अभिमान को त्याग दोगे तो सब कोई आपको प्रिय लगेंगे।**

अनुवाद– भवान् अभिमानम् त्यज्यसि, तृहि सर्वे भवान् प्रियं आरप्मसे।

(स) व्याकरणात्मक

1. **निम्नलिखित शब्द–रूपों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**

शब्द–रूप	विभक्ति	वचन
प्रिय:	प्रथमा	एकवचन
तृणात्	पञ्चमी	एकवचन
खात्	पञ्चमी	एकवचन
गृहे	प्रथमा, द्वितीया/सप्तमी	द्विवचन/एकवचन
कामम्	द्वितीया	एकवचन

2. **निम्नलिखित पदों के विलोम शब्द लिखिए–**

शब्द	विलोम
खात्	भूमि:
गुरु	शिष्य:
यश:	अपयश:
भूमे:	आकाशे:
मित्रं	शत्रु:

3. **'भू' धातु के विधिलिङ् लकार के तीनों पुरुषों और वचनों के रूप में लिखिए।**

भू धातु विधि लिङ् लकार

पुरुष:	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	भवेत्	भवेताम्	भवेयु:
मध्यम	भवे:	भवेतम्	भवेव
उत्तम	भवेयम्	भवेव	भवेम

(द) पाठ्येत्तर सक्रियता

विद्यार्थी स्वयं करें।

खण्डकाव्य

पठित खंडकाव्य से सारांश अथवा संक्षिप्त कथावस्तु, चरित्र–चित्रण तथा तथ्यों/घटनाओं पर आधारित **दो प्रश्न** पूछे जाएँगे, जिनमें से किसी **एक प्रश्न** का उत्तर देना होगा। इसके लिए कुल **4 अंक** निर्धारित हैं।

अर्थ और विशेषताएँ– 'पद्य–काव्यों को रचना के आधार पर दो भागों में बाँटा गया है– **प्रबंध काव्य** और **मुक्तक काव्य**। प्रबंध काव्य में कोई कथा क्रमानुसार प्रस्तुत की जाती है, जबकि मुक्तक काव्य में फुटकर रचनाएँ होती हैं। प्रबंध काव्य के भी निम्नलिखित दो भेद माने जाते हैं–

(क) महाकाव्य– महाकाव्य में मानव–जीवन का सर्वांग और क्रमबद्ध वर्णन होता है।

(ख) खंडकाव्य– खंडकाव्य में जीवन का सर्वांग वर्णन न होकर कतिपय मार्मिक घटनाओं का वर्णन होता है।

कथावस्तु की दृष्टि से महाकाव्य, उपन्यास और नाटक के अधिक समीप होता है, जबकि खंडकाव्य कहानी और एकांकी के समीपस्थ होता है।

खंडकाव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. खंडकाव्य का कथानक क्रमबद्ध एवं प्रवाहपूर्ण होता है।
2. इसमें किसी महापुरुष के जीवन की प्रमुख घटनाओं का वर्णन होता है।

3. कथा का विभाजन प्राय: सर्गों में होता है।
4. खंडकाव्य का नायक प्राय: श्रेष्ठ मानवीय सद्‌गुणों से युक्त होता है।
5. देश-काल, युग की परिस्थितियों, प्रकृति, युद्ध, महोत्सव आदि का प्रसंगानुसार संक्षिप्त वर्णन होता है।
6. खंडकाव्य में शृंगार, करुण, वीर अथवा शांत रस में से कोई एक रस मुख्य होता है। शेष रस गौण रूप में होते हैं।
7. खंडकाव्य में कोई प्रासंगिक कथा नहीं होती।

1. मेवाड़-मुकुट (गंगारत्न पांडेय)

देवरिया, बहराइच, बरेली, सीतापुर, सुल्तानपुर, बुलंदशहर आदि जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न-1 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य की कथावस्तु (कथानक) संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य की विषय-वस्तु स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य की घटनाओं पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर- गंगारत्न पांडेय द्वारा रचित 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य में महाराणा प्रताप के त्याग, शौर्य, साहस एवं बलिदानपूर्ण जीवन के एक मार्मिक कालखंड का चित्रण है। स्वतंत्रता प्रेमी प्रताप दिल्लीश्वर अकबर से युद्ध में पराजित होकर अरावली के जंगल में भटकते फिरते हैं। यहीं से काव्य का प्रारंभ होता है। प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु सात सर्गों में विभाजित है।

अरावली सर्ग की रचना पूर्व-पीठिका के रूप में की गयी है। हल्दीघाटी के मैदान में बड़ी वीरता से युद्ध करने के बाद भी महाराणा प्रताप की सेना पराजित हो जाती है। उस युद्ध के बाद महाराणा प्रताप साधनहीन होकर अरावली के जंगलों में भटकते हैं।

अरावली एक पर्वत-शृंखला है, जो राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी अंचल में गौरव से सिर उठाए खड़ी है। महाराणा प्रताप शत्रु की कन्या 'दौलत' को अपनी शरण में रख उससे पुत्रीवत् व्यवहार करते हैं। उनकी पत्नी लक्ष्मी अपने पुत्र की गोद में लिए वनवासिनी सीता के समान एक वृक्ष के नीचे बैठी है। अरावली स्वयं स्वतंत्रता के उपासक इस प्रताप की रक्षा में सन्नद्ध है।

द्वितीय सर्ग का नामकरण महाराणा प्रताप की पत्नी लक्ष्मी के नाम पर हुआ है। इस सर्ग में उसी का चरित्र अंकित हुआ है। रानी लक्ष्मी के वैभव के दिन देखे हैं और अब उसे निर्धनता का जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। लेकिन सच्ची भारतीय पत्नी और वीर क्षत्राणी के रूप में उसे अपने कष्टों की चिंता नहीं है। वह कंद-मूल फल खाकर व पृथ्वी पर सोकर धैर्यपूर्वक अपने दिन गुजार देती है। उसके हृदय में उथल-पुथल मची हुई है। अपने बच्चे की दयनीय दशा देखकर वह कभी-कभी धीरज खो बैठती है। वह सोचती है कि राणा ने स्वतंत्रता नहीं बेची, इसीलिए दु:ख मिल रहा है। वह उत्साहित होकर कह उठती है— ''हमको नहीं डुबा पाएगा यह कष्टों का सागर।''

तभी राणा कुटी के बाहर आकर रानी के जागते रहने का कारण पूछते हैं। रानी की मनोदशा समझकर राणा प्रताप सजल नेत्र हो जाते हैं।

तृतीय सर्ग का नामकरण काव्य के नाम पर हुआ है। इसमें प्रताप के अंतर्द्वंद्व का चित्रण है। राणा प्रताप के सामने मेवाड़ की मुक्ति की विकराल समस्या है। वे अपने भाई शक्ति सिंह के विश्वासघात से आहत हैं और उसके अकबर से मिल जाने का उन्हें दु:ख भी है। यह सोचकर भी उनका उत्साह कम नहीं होता। वे मानते हैं कि जब उसकी आत्मा धिक्कारेगी, तो वह अवश्य ही लौटकर वापस आएगा। वे मन-ही-मन प्रतिज्ञा करते हैं कि वे मेवाड़ को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राण तक दे देंगे। वे चेतक की स्वामिभक्ति तथा शत्रु-पक्ष की कन्या दौलत के विषय में भी विचार करते हैं तथा अनायास 'दौलत' से मिलने के लिए चल देते हैं।

चतुर्थ सर्ग का नामकरण बालिका दौलत के नाम पर हुआ है। दौलत अकबर के मामा की बेटी है। वह पर्णकुटी के पीछे एक वृक्ष की छाया में बैठी अपने विगत जीवन के बारे में विचार करती हुई कहती है कि ''उस भोग-विलास भरे जीवन में कटुता ही थी, प्रीति नहीं।'' अकबर के साम्राज्यवाद की लिप्सा उसके कोमल हृदय में घृणा के बीज बो देती है, किंतु राणा प्रताप के प्रति उसके विचार पिता जैसी श्रद्धा से युक्त हैं।

राणा के भाई शक्तिसिंह पर 'दौलत' का मन आकृष्ट है, किंतु वह राणा के सम्मुख अपनी कहानी कहकर उनके दु:ख को और नहीं बढ़ाना चाहती। वह शक्तिसिंह और प्रताप की तुलना करती हुई कहती है कि ''ये सूर्य हैं, वह दीपक है।'' दौलत को उसी समय वृक्षों के पीछे से किसी की पदचाप सुनाई पड़ती है। यहीं पर इस सर्ग का समापन हो जाता है।

पञ्चम सर्ग का शीर्षक 'चिंता' है। 'दौलत' के पास पहुँचकर राणा उसके एकांत चिंतन का कारण पूछते हैं। दौलत अपने को परम सुखी और निश्चिंत बताती हुई स्वयं राणा के रात-दिन चिंतित रहने को ही अपनी चिंता का कारण बताती है। इसी प्रसंग में राणा प्रताप कहते हैं कि वे रानी लक्ष्मी की आँखों में आँसू देखकर कुछ विचलित हैं। अत: दौलत राणा के साथ लक्ष्मी के पास जाकर उसके मन की पीड़ा को जानते और यथाशक्ति उसे दूर करने के लिए तत्पर हो जाती है।

अपने पुत्र की गोद में लिटाए हुए रानी लक्ष्मी सोच रही है कि उसके कारण ही राणा अपने देश को त्यागकर जंगल में भटक रहे हैं। उसी समय दौलत का मीठा स्वर उसके कानों में गूँज उठता है। रानी और दौलत के वार्तालाप के इसी अवसर पर महाराणा प्रताप रानी को सूचना देते हैं कि मेवाड़-भूमि की मुक्ति के लिए, वे मेवाड़ से दूर सिंधु-प्रदेश में जाकर सैन्य-संग्रह करेंगे। राणा के इस निश्चय को सुनकर लक्ष्मी में चेतना दौड़ पड़ती है। वह भी मेवाड़ की स्वाधीनता हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर हो जाती है।

छठे सर्ग का शीर्षक 'पृथ्वीराज' सर्ग है। क्षितिज से अरुणाभा फैल जाने पर राणा सभी को यात्रा के लिए तैयार कर देते हैं, उसी समय एक अनुचर अकबर के दरबारी कवि पृथ्वीराज का पत्र लाकर राणा को देता है। वे पत्र पढ़कर पृथ्वीराज से मिलने जाते हैं। पृथ्वीराज अपने और अपने जैसे अन्य राजपूत नरेश के स्वार्थपूर्ण व्यवहार पर दु:ख प्रकट करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपनी राजपूती मर्यादा को भूलकर अकबर का साथ दिया था। अब हम अकबर से प्रतिशोध लेकर मेवाड़ को पुन: प्राप्त करेंगे। पृथ्वीराज यह भी बताते हैं कि भामाशाह सेना का प्रबंध करने के लिए साधन प्रस्तुत करेंगे।

सप्तम सर्ग का शीर्षक 'भामाशाह' के नाम पर है। राणा प्रताप एकांत में बैठकर बदली हुई परिस्थिति पर विचार करते हैं। उसी समय भामाशाह पृथ्वीराज के साथ आकर जय-जयकार करते हुए नत-मस्तक हो जाते हैं। भामाशाह अपने पूर्वजों द्वारा संचित अपार-निधि राणा के चरणों में अर्पित करना चाहते है, परंतु राणा प्रताप दी हुई वस्तु को वापस लेना मर्यादा के अनुकूल नहीं मानते।

प्रताप का यह वचन सुनकर भामाशाह कहता है कि क्या यह प्रत्येक नागरिक का पावन कर्तव्य नहीं है कि वह देश के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दे? भामाशाह के इस विनयपूर्ण अकाट्य तर्क को राणा प्रताप अस्वीकार नहीं कर पाते और भामाशाह को गले से लगा लेते हैं। यह 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य की समाप्ति हो जाती है।

प्रश्न–2 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग (अरावली) का सारांश (कथा) संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– अरावली सर्ग की रचना पूर्व-पीठिका के रूप में की गई है। हल्दीघाटी के मैदान में बड़ी वीरता से युद्ध करने के बाद भी महाराणा प्रताप की सेना पराजित हो जाती है। उस युद्ध के बाद महाराणा प्रताप साधनहीन होकर अरावली के जंगलों में भटकते हैं।

अरावली एक पर्वत-शृंखला है, जो राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी अंचल में गौरव से सिर उठाए हुई है। कवि ने अरावली और वनस्थली का मानवीकरण किया है। अरावली पर्वत महाराणा प्रताप को अपने अंचल में पाकर गर्व का अनुभव कर अपने को धन्य मानता है। उसे विश्वास है कि यह महापुरुष मेवाड़ के स्वाभिमान की रक्षा करेगा और उसके गए हुए गौरव को वापस लाएगा। स्वतंत्रता का दीवाना प्रताप अपनी पत्नी लक्ष्मी और पुत्र अमर के साथ इस वीराने में भ्रमण कर रहा है। महाराणा प्रताप शत्रु की कन्या 'दौलत' को अपनी शरण में रख उससे पुत्रीवत् व्यवहार करता है। वन के पशु एवं कोल-किरात आदि वन्य जातियाँ ही अब मानो उसके प्रजाजन हैं। उनकी पत्नी लक्ष्मी अपने पुत्र को गोद में लिए वनवासिनी सीता के समान एक वृक्ष के नीचे बैठी हैं। अरावली स्वयं स्वतंत्रता के उपासक इस प्रताप की रक्षा में सन्नद्ध है।

प्रश्न–3 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के लक्ष्मी सर्ग (द्वितीय सर्ग) की कथा संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग का सारांश (कथानक) लिखिए।**

उत्तर– द्वितीय सर्ग का नामकरण महाराणा प्रताप की पत्नी लक्ष्मी के नाम पर हुआ है। इस सर्ग में उसी का चरित्र अंकित हुआ है। रानी लक्ष्मी ने वैभव के दिन देखे हैं और अब उसे निर्धनता का जीवन व्यतीत करना पड़ रहा है। लेकिन सच्ची भारतीय पत्नी और वीर क्षत्राणी के रूप में उसे अपने कष्टों की चिंता नहीं है। वह कंद-मूल-फल खाकर व पृथ्वी पर सोकर धैर्यपूर्वक अपने दिन गुजार देती है। उसे केवल बच्चों की, प्रताप की एवं 'दौलत' की भूख सहन नहीं है। वह अपनी कुटी के बाहर मौन बैठी है। उसके हृदय में उथल-पुथल मची हुई है। अपने बच्चे की दयनीय दशा देखकर वह कभी-कभी धीरज खो बैठती है। इस सुंदर राजपुत्र का कैसा भाग्य, जो राणा का पुत्र होकर भी दूध के लिए तरसता है। वह भाग्य की इस बिडंबना को अत्याचार और अन्याय का समर्थक मानती हुई उद्विग्न हो जाती है। वह सोचती है कि राणा ने केवल यही तो किया कि अपने शत्रु के सम्मुख शीश नहीं झुकाया, इसी अपराध के कारण उन्हें वन-वन भटकना पड़ रहा है। हमने

स्वतंत्रता नहीं बेची, इसीलिए दु:ख मिल रहा है। वह उत्साहित होकर कह उठती है— ''हमको नहीं डुबा पाएगा यह कष्टों का सागर।''

तभी राणा कुटी के बाहर आकर रानी के जागते रहने का कारण पूछते हैं। रानी 'कुछ नहीं, कुछ नहीं' कहती हुई कुटी के भीतर चली जाती है। रानी की मनोदशा समझकर राणा प्रताप सजल नेत्र हो जाते हैं।

प्रश्न–4 'मेवाड़- मुकुट' के 'प्रताप' सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।
अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश लिखिए।**
अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग 'प्रताप सर्ग' पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– तृतीय सर्ग का नामकरण काव्य के नाम पर हुआ है। इसमें प्रताप के अंतर्द्वंद्व का चित्रण है। राणा प्रताप के सामने मेवाड़ की मुक्ति की विकराल समस्या है। वे विचारमग्न होकर एक पेड़ के नीचे बैठकर सोचने लगते हैं कि उनकी पत्नी लक्ष्मी ने उनके साथ क्या-क्या कष्ट नहीं सहे हैं, वह वन-वन मारी फिर रही है। फिर भी वह अपने कर्तव्यपालन से विचलित नहीं हुई। मुझे भी अपना कर्तव्यपालन करना चाहिए। वे अपने भाई शक्तिसिंह के विश्वासघात से आहत हैं और उसके अकबर से मिल जाने का उन्हें दु:ख भी है। वे कहते हैं—

शक्तिसिंह, जिसको मैंने था बंधु बनाकर पाला।
वह भी मुझसे द्रोह कर गया निकला विषधर काला।।

यह सोचकर भी उनका उत्साह कम नहीं होता। वे जानते हैं कि जब उसकी आत्मा धिक्कारेगी, तो वह अवश्य ही लौटकर वापस आएगा। वे मन-ही-मन प्रतिज्ञा करते हैं कि वे मेवाड़ को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राण तक दे देंगे। वे सोचते हैं कि मानसिंह जैसा वीर भी अकबर के इशारे पर नाच रहा है, परंतु मेरा मस्तक अकबर के सामने नहीं झुक सकता। वे अपने स्वामिभक्त घोड़े चेतक का स्मरण कर करुणा से द्रवित हो जाते है।

वे फिर सोचने लगते हैं कि अरावली में रहते हुए स्वतंत्रता संग्राम के लिए पर्याप्त साधन जुटाना कठिन है। वे देश की मुक्ति के लिए अरावली को छोड़कर सिंधु प्रदेश में जाकर सैन्य-संग्रह करके शत्रु से लोहा लेकर मेवाड़ को मुक्त कराने की सोचते हैं। वे अपने सिसोदिया वंश की आन रखने का संकल्प लेते हैं, किंतु साधनहीन हुए यह विचार करते हैं कि वह शत्रुपक्ष का सामना कैसे करें। वे चेतक की स्वामिभक्ति तथा शत्रु-पक्ष की कन्या दौलत के विषय में भी विचार करते हैं। ''पर दौलत का क्या होगा, क्या वह भी साथ चलेगी?'' प्रश्न मन में उठते ही वे अनायास 'दौलत' से मिलने के लिए चल देते हैं।

प्रश्न–5 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के 'दौलत' सर्ग (चतुर्थ सर्ग) की कथावस्तु लिखिए।

उत्तर– चतुर्थ सर्ग का नामकरण बालिका दौलत के नाम पर हुआ। दौलत अकबर के मामा की बेटी है। वह पर्णकुटी के पीछे एक वृक्ष की छाया में बैठी अपने विगत जीवन को याद कर रही है। वह अकबर के दरबार की और अपने विगत जीवन के बारे में विचार करती है कि ''उस भोग-विलास भरे जीवन में कटुता ही थी प्रीति नहीं।'' उसे बीते जीवन की तुलना में अपना वर्तमान जीवन अधिक सुखद मालूम होता है। अकबर के साम्राज्यवाद की लिप्सा उसके कोमल हृदय में घृणा के बीज बो देती है, किंतु राणा प्रताप के प्रति उसके विचार पिता जैसी श्रद्धा से युक्त हैं—

सचमुच ये कितने महान् कितने गौरवशाली।
इनको पिता बनाकर मैंने बहुत बड़ी निधि पा ली।।

दौलत विचार करती हुई स्वयमेव कह उठती है कि ''अकबर यह क्यों नहीं समझते कि ईश्वर ने सबको समान बनाया है।'' राणा के भाई शक्तिसिंह पर 'दौलत' का मन आकृष्ट है, किंतु वह राणा के सम्मुख अपनी कहानी कहकर उनके दु:ख को और नहीं बढ़ाना चाहती। वह शक्तिसिंह और प्रताप की तुलना करती हुई कहती है कि ''ये सूर्य हैं, वह दीपक है।'' वह राणा प्रताप के लिए कुछ करना चाहती है। विचारों में निमग्न दौलत को उसी समय वृक्षों के पीछे से किसी की पदचाप सुनाई पड़ती है। यही पर इस सर्ग का समापन हो जाता है।

प्रश्न–6 'मेवाड़-मुकुट' के 'चिंता' सर्ग (पञ्चम सर्ग) में दिए रानी लक्ष्मी के मनोभावों को स्पष्ट कीजिए।
अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर 'चिंता' (पञ्चम) सर्ग का सारांश (कथावस्तु व कथानक) लिखिए।**

उत्तर– 'दौलत' के पास पहुँचकर राणा उसके एकांत चिंतन का कारण पूछते हैं। दौलत अपने को परम सुखी और निश्चिंत बताती हुई स्वयं राणा के रात-दिन चिंतित रहने को ही अपनी चिंता का कारण बताती है। राणा उसे प्यार से कहते हैं—''तूने तो आकर किए मुखर, सोए थे जो स्वर मौन यहाँ।''

इसी प्रसंग में राणा प्रताप कहते हैं कि वे रानी लक्ष्मी की आँखों में आँसू देखकर कुछ विचलित हैं। रानी लक्ष्मी के धीर-गंभीर स्वभाव की बात कहते हुए दौलत कहती है कि वे अपने मन की गहराई में सारे दु:खों को इस प्रकार समाहित रखती हैं कि किसी को उनके दु:खी होने का पता नहीं लग पाता। उनकी आँखों में आँसू होने का अर्थ निश्चित ही कोई असामान्य घटना है। अत: दौलत राणा के साथ लक्ष्मी के पास जाकर उसके मन की पीड़ा को जानने और यथाशक्ति उसे दूर करने के लिए तत्पर हो जाती है।

अपने पुत्र को गोद में लिटाए हुए रानी लक्ष्मी सोच रही है कि उसके कारण ही राणा अपने देश को त्यागकर जंगल में भटक रहे हैं। उसके मानस में हल्दीघाटी के युद्ध-स्थल में चेतक पर सवार होकर वीरों का आह्वान करते हुए राणा प्रताप का चित्र अंकित हो जाता है। उसी समय दौलत का मीठा स्वर— ''माँ, किस चिंता में एकाकी बैठी हो चुपचाप इधर'' कानों में गूँज उठता है। रानी और दौलत के वार्तालाप के इसी अवसर पर महाराणा प्रताप रानी को अपने निश्चय की सूचना देते हैं कि मेवाड़ भूमि की मुक्ति के लिए कुछ समय के लिए वे मेवाड़ से दूर सिंधु प्रदेश में जाकर सैन्य संग्रह करेंगे और या तो वे सफल होगा अथवा मिट जाएँगे। राणा के इस निश्चय को सुनकर लक्ष्मी में चेतना दौड़ पड़ती है। क्षत्राणी होने के कारण वह भी मेवाड़ की स्वाधीनता हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तत्पर हो जाती है। ततपश्चात् अगले दिन प्रात: ही प्रस्थान करने का निश्चय हो जाता है।

प्रश्न–7 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर कवि पृथ्वीराज और राणा प्रताप के बीच हुए वार्तालाप का सारांश लिखिए।

अथवा **खंडकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग (षष्ठ सर्ग) का कथानक संक्षेप में लिखिए।**

अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के 'पृथ्वीराज' सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर– क्षितिज में अरुणाभा फैल जाने पर राणा सभी को यात्रा के लिए तैयार कर देते हैं। उसी समय एक अनुचर अकबर के दरबारी कवि पृथ्वीराज का पत्र लाकर राणा को देता है। वे पत्र पढ़कर पृथ्वीराज से मिलने जाते हैं। पृथ्वीराज अपने और अपने जैसे अन्य राजपूत नरेशों के स्वार्थपूर्ण व्यवहार पर दु:ख प्रकट करते हुए कहते हैं कि उन्होंने अपनी राजपूती मर्यादा को भूलकर अकबर का साथ दिया था। वहाँ क्षुद्र स्वार्थ के कारण उनका स्वाभिमान, स्वातंत्र्य-प्रेम और जातीय गौरव सभी कुछ नष्ट हो गया है। अब हमने कष्ट रहित मन से यह स्वीकार किया है कि हम आपको साधनहीन वन-वन भटकने नहीं देंगे। हमें आपके भुजबल पर भरोसा है। अब हम अकबर से प्रतिशोध लेकर मेवाड़ को पुन: प्राप्त करेंगे। जब राणा प्रताप अपने साधनहीन होने की बात करते हैं, तब पृथ्वीराज बताता है कि भामाशाह सेना का प्रबंध करने के लिए साधनों को प्रस्तुत करेंगे। यह सूचना देकर और राणा प्रताप की आज्ञा लेकर वे भामाशाह को बुलाने चले जाते हैं।

प्रश्न–8 'मेवाड़-मुकुट' के सातवें सर्ग 'भामाशाह' का सारांश लिखिए।

अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर राणा प्रताप और भामाशाह के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन कीजिए।**

अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य में वर्णित किस घटना ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया है? उदाहरण देकर समझाइए।**

अथवा **'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य मेवाड़ की स्वाधीनता का संग्राम था।' इस उक्ति पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– राणा प्रताप एकांत में बैठकर बदली हुई परिस्थिति पर विचार करते हैं। उन्हें लगता है कि इनके जीवन-पथ में नियति अब नया मोड़ लाना चाहती है, तभी तो अकबर के मित्र कवि उनकी खोज करते हुए भामाशाह के साथ अरावली में आ पहुँचे हैं। उसी समय भामाशाह पृथ्वीराज के साथ आकर जय-जयकार करते हुए नत-मस्तक हो जाते हैं। भामाशाह अपने पूर्वजों द्वारा संचित अपार-निधि राणा के चरणों में अर्पित करना चाहते हैं, परंतु राणा प्रताप क्षत्रिय होकर पराया धन स्वीकार करना; अपने कुल की मर्यादा के विपरीत मानते हुए उसे लेने से इनकार कर देते हैं। भामाशाह निवेदन करता है कि वह राजवंश की दी हुई संपत्ति ही राजवंश की सेवा में अर्पित कर रहा है, परन्तु राणा प्रताप दी हुई वस्तु को वापस लेना मर्यादा के अनुकूल नहीं मानते—

राजवंश ने जिनको जो कुछ दिया, न वापस लूँगा।
शेष प्राण हैं अभी, देश-हित में हँस-हँस होम करूँगा।।

प्रताप का यह वचन सुनकर भामाशाह कहता है कि क्या देश-हित में त्याग और बलिदान का अधिकार केवल राजवंश को ही है? क्या यह प्रत्येक नागरिक का पावन कर्तव्य नहीं है कि वह देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दे?

भामाशाह के इस विनयपूर्ण अकाट्य तर्क को राणा प्रताप अस्वीकार नहीं कर पाते और एक क्षण को मौन रह जाते हैं, फिर भामाशाह को गले से लगा लेते हैं। भामाशाह के समर्पण को स्वीकार कर राणा प्रताप तुरंत सैन्य-संग्रह के लिए तत्पर हो जाते हैं। अब मेवाड़ की मुक्ति का स्वप्न उन्हें साकार होता दिखाई देने लगता है। यहीं 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य की समाप्ति हो जाती है।

प्रश्न–9 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर महाराणा प्रताप (खंडकाव्य के नायक) का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के नायक कौन हैं? उनके चरित्र की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के जिस पात्र ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया हो, उसका चरित्रांकन कीजिए।**
***अथवा* ''महाराणा प्रताप भारतीय इतिहास के एक ऐसे महापुरुष हैं, जिनसे जातीय स्वाभिमान, देशप्रेम व स्वाधीनता के लिए सर्वस्व बलिदान की सीख राष्ट्र की पीढ़ियाँ निरंतर ग्रहण करती रहेंगी।'' मेवाड़-मुकुट के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' के आधार पर राणा प्रताप के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' के नायक के त्याग और पराक्रम का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर राणा प्रताप के योगदान का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर– महाराणा प्रताप 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के नायक हैं। कवि ने इस काव्य में भारतीय इतिहास के विख्यात महापुरुष महाराणा प्रताप के त्याग, संघर्ष, देशभक्ति, उदारता और बलिदान का चित्रण किया है। वे हल्दीघाटी के युद्ध में अकबर से पराजित होकर अरावली के सघन वनों में भटकते हुए भी अपनी प्यारी मातृभूमि मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए साधन की खोज करते रहते हैं। राणा प्रताप के इन गुणों को अपनाने हेतु प्रेरित करना ही कवि का उद्देश्य रहा है। महाराणा प्रताप के चरित्र में निम्नवत् विशेषताएँ हैं—

1. देशभक्त– प्रताप में देशप्रेम कूट-कूटकर भरा हुआ है। वे मेवाड़ की मुक्ति के लिए अरावली की चोटियों में भटकते हुए भी अपने कर्तव्य से विमुख नहीं होते। वे अपना सर्वस्व गँवाकर भी मातृभूमि की रक्षा के लिए कृतसंकल्प हैं। उन्हें मेवाड़ से, वहाँ की धरती से, नदी-पर्वतों से और वनों-मैदानों से भी असीम प्यार है। वे देश की स्वतंत्रता व सेवा का आमरण व्रत लिए हुए हैं—

मैं स्वदेश के लिए जीवित हूँ, उसके लिए मरूँगा।

2. उदार और भावुक हृदय– प्रताप का हृदय अत्यधिक उदार है। वे शत्रु की कन्या 'दौलत' को भी पुत्रीवत् पालते हैं। अपने भाई शक्तिसिंह के अकबर से मिल जाने पर भी वे उसे उसकी मूर्खता ही मानते हैं और उसे क्षमा कर देते हैं। उनके शब्दों से भाई के प्रति उनकी सहृदयता झलकती है— मेरा ही है मुझसे दूर कहाँ जाएगा। इसी प्रकार घोड़े 'चेतक' की मृत्यु पर वे बहुत शोक-विह्वल हो उठते हैं। वे अकबर के मित्र पृथ्वीराज और भामाशाह से भी आत्मीयता से मिलते हैं।

3. स्वतंत्रता प्रेमी– स्वतंत्रता के प्रति प्रेम प्रताप के रोम-रोम में व्याप्त है। भारत के सभी शासक अकबर की शक्ति के कारण उसकी अधीनता स्वीकार कर लेते हैं, परंतु वह ''जब तक साँस है स्वतंत्र रहूँगा, दास नहीं हो सकता'' कहते हुए पराधीनता स्वीकार नहीं करते और पराजित होकर अरावली की पहाड़ियों में भटकते रहते हैं और मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए युक्ति सोचते रहते हैं—

मैं मातृभूमि को अपनी पुनः स्वतंत्र करूँगा।
या स्वतंत्रता की वेदी पर लड़ता हुआ मरूँगा।।

4. दृढ़-प्रतिज्ञ– राणा प्रताप दृढ़-प्रतिज्ञा हैं। वह अपने संकल्प को बार-बार दुहराते हैं। वे प्रतिज्ञा करते हैं कि जब तक शरीर में श्वास है, मेवाड़ की भूमि को स्वतंत्र करने का प्रयास करता रहूँगा।

जब तक तन में प्राण, लड़ेगा, पलभर चैन न लेगा।
सूर्य चंद्र टल जाए, किंतु व्रत उसका नहीं टलेगा।।

5. स्वाभिमानी– राणा प्रताप में क्षत्रियोचित स्वाभिमान विद्यमान है, इसलिए भामाशाह के द्वारा सैन्य-संगठन के लिए दिए जाने वाले अपरिमित धन को स्वीकार करना वे अपने स्वाभिमान के विरुद्ध मानते हैं। राजवंश के द्वारा दिए गए धन को भी स्वीकार करना वे उचित नहीं मानते—

राजवंश ने जिसको जो कुछ दिया, न वापस लूँगा।
शेष प्राण हैं अभी, देश-हित हँस-हँसकर होम करूँगा।।

महाराणा प्रताप की नस-नस में स्वाभिमान समाया हुआ है। उन्हें अपनी जाति, कुल और देश पर अभिमान है। वे जाति और देश पर मर-मिटना भी जानते थे। स्वाभिमान के कारण वह मेवाड़ की मुक्ति के लिए जीवनभर संघर्ष करते रहे, परंतु अकबर के सामने सिर झुकाने को किसी भी मूल्य पर तैयार न हुए।

6. शरणागतवत्सल और वात्सल्यपूर्ण पिता– राणा प्रताप का हृदय अत्यंत उदार एवं विशाल है। वे शत्रुपक्ष की कन्या दौलत को शरण देते हैं और उसे अपनी पुत्री के समान ही पालते है। इस संबंध में कवि के उद्‌गार हैं—

अरि की कन्या को भी उसने रख पुत्रीवत वन में।
एक नया आदर्श प्रतिष्ठित किया वीर जीवन में।।

दौलत के मुख से निकले हुए शब्द राणा प्रताप के उसके प्रति वात्सल्य भाव को प्रकट करते हैं—

सचमुच ये कितने महान् हैं कितने गौरवशाली।
इनको पिता बनाकर मैंने बहुत बड़ी निधि पा ली।।

7. धैर्यवान्– महाराणा निर्भीक, साहसी और धैर्यशाली हैं। वे दु:खमय जीवन व्यतीत करते हैं, फिर भी शत्रु के सामने नही झुकते। वे कन्द-मूल-फल खाकर और भूमि पर सोकर भी धैर्य नहीं छोड़ते है। स्वयं अरावली पर्वत भी उनकी धीरता के विषय में कहता है—

वह मति-धीर वीर, विपदा से किंचित् नहीं डरेगा।
फिर मेरे अतीत गौरव का, जीर्णोद्धार करेगा।।

8. पराक्रमा– महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व की ओजस्विता दर्शनीय है। वे युद्धस्थल में शत्रुओं को धराशायी करने में पूर्ण सक्षम हैं। वे अपरिमित सैन्य-शक्ति संपन्न अकबर से युद्ध करते हैं तथा उसकी सेना के दाँत खट्टे कर देते हैं। उनके पराक्रम का लोहा स्वयं अकबर भी मानता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि महाराणा प्रताप स्वतंत्रता-प्रेमी, देशभक्त, उदारहृदय, त्यागी, दृढ़-प्रतिज्ञ, निर्भीक और स्वाभिमानी लौह-पुरुष हैं। वे भारतीय इतिहास में सदैव वंदनीय रहेंगे।

प्रश्न–10 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर भामाशाह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

***अथवा* भामाशाह का चरित्र आज के अर्थप्रधान युग में प्रासंगिक और अनुकरणीय होने के कारण अपना एक विशिष्ट महत्व रखता है। 'मेवाड़-मुकुट' के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' के आधार पर भामाशाह की देशभक्ति तथा त्याग-भावना पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* भामाशाह के चरित्र की तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए और बताइए कि उनसे आपको क्या प्रेरणा मिलती है?**

***अथवा* 'मेवाड़-मुकुट' के आधार पर भामाशाह के चारित्रिक गुणों (विशेषताओं) पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– भामाशाह 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के प्रमुख पात्र हैं। वे मेवाड़-केसरी महाराणा प्रताप की ऐसे समय में सहायता करते हैं, जब वे बिल्कुल असहाय और निराश हो चुके थे। उनका चरित्र त्याग का आदर्श चरित्र है; अत: कवि ने उनके नाम पर एक पृथक सर्ग की रचना करके उन्हें गौरव प्रदान किया है। उनके चरित्र में मुख्य रूप से निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं—

1. महान् त्यागी– भामाशाह का त्याग अनुपम और आदर्श है। अपने पिता-पितामहों के द्वारा संचित लक्ष-लक्ष मुद्राओं को राणा के चरणों में समर्पित करते हुए वे अपने को धन्य समझते हैं—

पिता-पितामहों के द्वारा यह निधि वर्षो की संचित है।
साधन-संग्रह हेतु देव के चरणों में अर्पित है।।

भामाशाह का त्याग प्रताप को कर्तव्य-पथ की ओर प्रेरित करता है। महाराणा प्रताप स्वयं कहते हैं— ''जिस मेवाड़ भूमि पर भामाशाह जैसे त्यागी, बलिदानी पुरुषों ने जन्म लिया, वह भला किस तरह परतंत्र रह सकती है।''

2. राजवंश में निष्ठा– भामाशाह की राजवंश में निष्ठा है। वे राणा प्रताप से कहते हैं कि हमने सारी संपदा राजवंश से ही प्राप्त की है— राजवंश के ही प्रसाद से श्रीसंपन्न बने हम। वे अपने को राज्य का सेवक और सारी संपदा को राज्य की ही मानते हुए इस संपदा का उपयोग राज्य की रक्षा के लिए किए जाने को उचित ठहराते हैं।

3. तर्कशील– भामाशाह उत्कृष्ट तार्किक व्यक्ति हैं। उनमें बुद्धि और तर्क का मणिकांचन योग है। प्रताप द्वारा धन अस्वीकार करने पर वे स्पष्ट तर्क देते हुए कहते हैं–''देशहित में त्याग और बलिदान का अधिकार केवल राजवंश को ही नहीं है, वरन् यह प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दे।'' यहाँ जो कुछ जिस किसी के पास है, वह स्वदेश का है–

उसके ऋण से उऋण करे जो, वह धन देव कहाँ है।
तन-मन-धन-जीवन सब उसका, अपना कुछ न यहाँ है।।

4. देशप्रेमी– भामाशाह को अपनी मातृभूमि मेवाड़ से अटल अनुराग है। स्वदेश-प्रेम की भावना से प्रेरित होकर ही वे महाराणा प्रताप को सैन्य-संगठन के लिए अपनी अतुल संपत्ति समर्पित कर देते हैं। वे कहते हैं–

यदि स्वदेश के मुक्ति यज्ञ में, यह आहुति दे पाऊँ।
पितरों सहित देव निश्चय ही, मैं कृतार्थ हो जाऊँ।।

5. उत्साही एवं प्रेरक– भामाशाह एक उत्साही व्यक्ति हैं। प्रथम मिलन में ही वे राणा प्रताप का उत्साह बढ़ाते हैं तथा उनको मेवाड़ की रक्षा हेतु प्रेरित करते हैं। भामाशाह के प्रेरणात्मक शब्द ही राणा प्रताप के निराश मन में आशा का संचार करते हैं–

अविजित हैं, विजयी भी होंगे, देव शीघ्र निःसंशय।
मातृभूमि होगी स्वतंत्र फिर, हम होंगे फिर निर्भय।।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भामाशाह का देशप्रेम और त्याग अनुपम है। वह तर्कशील, विनयशील और राजवंश में निष्ठा रखने वाले धनी पुरुष हैं। भामाशाह जैसा त्याग का आदर्श विश्व-इतिहास में दुर्लभ है।

प्रश्न–11 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य के आधार पर पृथ्वीराज का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– पृथ्वीराज अकबर के दरबारी कवि हैं और अकबर के मित्र भी। पहले वे राणा प्रताप के विरुद्ध राजा मानसिंह के पक्ष में रहते हैं किंतु जब अकबर उनके भी कुल की लाज लूटने लगता है, तब उनका रक्त खौलता है और वे आकर महाराणा प्रताप से मिलते हैं तथा उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे राजपूतों की लाज बचाएँ। 'मेवाड़-मुकुट' खंडकाव्य में उनके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं–

1. पश्चात्ताप की भावना– पृथ्वीराज पश्चात्ताप की भावना से युक्त हैं। जब राणा प्रताप उनसे क्रोध, घृणा और व्यंग्य की भाषा में बोलते हैं, तब पृथ्वीराज सब कुछ शांतिपूर्वक सुनते हैं और फिर सच्चे हृदय से अपनी पिछली गलतियों के लिए पश्चात्ताप करते हैं तथा अपने आपको 'अकबर का चारण' कहकर संबोधित करते हैं–

यह अकबर का चारण अपने, जीवन की निधि खोकर।
आया, चरण शरण राणा की, आज पाप निज धोकर।।

पृथ्वीराज का दुःख देखकर महाराणा प्रताप का हृदय पिघल जाता है। वे कहते हैं कि पृथ्वीराज का पश्चात्ताप राजपूतों की जागृति का शुभ लक्षण है।

2. प्रतिशोध की भावना से दग्ध– पृथ्वीराज के मन में अकबर के प्रति प्रतिशोध की भावना प्रज्जवलित है। जब राणा प्रताप पृथ्वीराज से पूछते हैं कि अब वे हाथ-पर-हाथ रखकर बैठना चाहते हैं अथवा अकबर से प्रतिशोध लेना चाहते हैं, तब पृथ्वीराज प्रतिशोध की भयंकर भावना से भरकर कह उठते हैं–

बोले हाँ प्रतिशोध मात्र, प्रतिशोध लक्ष्य अब मेरा।
उसके हित ही लगा रहा हूँ, अरावली का फेरा।।

3. सच्चे सहयोगी– कवि पृथ्वीराज में एक सच्चे सहयोगी की भावना भी पाई जाती है। वे महाराणा प्रताप की उचित समय पर सहायता करते हैं। वे अपने साथ भामाशाह को लाते हैं, जो लाखों स्वर्ण मुद्राएँ महाराणा को अर्पित कर देता है।

4. महाराणा प्रताप के प्रति श्रद्धा– पृथ्वीराज राणा प्रताप के प्रति अत्यधिक श्रद्धा-भाव रखते है। जैसे ही महाराणा प्रताप को देखते हैं, वे दोनों हाथ उठाकर उनकी जय-जयकार करते हैं और कहते हैं कि ''वे सिसौदिया कुल-भूषण हैं। मेवाड़ का कण-कण उनका यशोगान कर रहा है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि पृथ्वीराज के चरित्र में एक सच्चे देशभक्त की सभी भावनाएँ विद्यमान है, जो उचित अवसर पाकर अभिव्यक्त हुई हैं।

प्रश्न–12 ''मेवाड़-मुकुट'' खंडकाव्य के आधार पर लक्ष्मी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– लक्ष्मी महाराणा प्रताप की सच्चे अर्थों में उनकी अर्द्धांगिनी हैं। वे भी महाराणा प्रताप के साथ वन–वन भटक रही हैं और उनके समान ही कष्ट सह रही हैं। प्रस्तुत खंडकाव्य में उनके चरित्र की अग्रलिखित विशेषताएँ प्रकट होती हैं—

1. दृढ़ता एवं वीरता– वे वीरांगना हैं। जब महाराणा प्रताप कहते हैं कि उन्होंने मेवाड़ छोड़ने का निश्चय कर लिया है, तो उनका मन पुनः उत्साह से भर जाता है। वे राणा से कहती हैं कि वे उनकी चिंता न करें। वे क्षत्राणी हैं और वे जौहर करना जानती हैं।

2. उदारहृदया– लक्ष्मी के हृदय विशाल और संकीर्ण सांप्रदायिक विचारों से परे है। अकबर की ममेरी बहन दौलत उनके साथ आकर रहने लगती है। वे उसको उतना ही स्नेह करती हैं, जितना अपने पुत्र अमर को। वे यह नहीं सोचती कि यह बालिका एक यवन पुत्री है और शत्रु की बहन है। यही कारण है कि दौलत भी लक्ष्मी को सच्चे हृदय से अपनी माँ मानती है और उनका उसी प्रकार सम्मान करती है।

3. महाराणा प्रताप के लिए अपार श्रद्धा– लक्ष्मी के हृदय में महाराणा के लिए अपार श्रद्धा है। वे कहती हैं कि उनका एकमात्र अपराध यही है कि उन्होंने कभी अत्याचारी के आगे सिर नहीं झुकाया, अपने धर्म और स्वाभिमान को नहीं बेचा और दासता का जीवन स्वीकार नहीं किया। इसके कारण ही उन्हें इतने कष्ट झेलने पड़ रहे हैं किंतु उनकी आत्मा महान् है और इससे उन्हें संतोष प्राप्त होता है। वास्तव में लक्ष्मी को यही खेद है कि निर्दोष होते हुए भी महाराणा इतना कष्ट भोग रहे हैं।

4. मानसिक-संघर्ष– लक्ष्मी इतने कष्ट झेलती हैं कि मानसिक संघर्ष के कारण उन्हें अनेक प्रकार की शंकाएँ होने लगती हैं। वे सोचती हैं कि कर्म–योग की बातें करना कोरा आदर्श है। वास्तव में भोग ही सच्चा जीवन–दर्शन है। संसार में दयावान् तथा सद्विचार वाले व्यक्ति दुःख भोगते हैं और कुमार्ग पर चलने वाले सफलता प्राप्त करते हैं।

5. परदुःख-कातरता– लक्ष्मी स्वयं कष्ट सह सकती हैं, पर दूसरों के कष्ट उनसे नहीं देखे जाते। वे कहती हैं कि यदि वे अकेली होतीं तो उन्हें भूखे रहने की कोई चिंता न थी किंतु उनसे अमर, दौलत और राणा जी का भूखों रहना नहीं देखा जाता।

6. स्वतंत्रता-प्रेमी– पर्याप्त मानसिक संघर्ष झेलते हुए भी अंत में उनकी स्वतंत्रता की भावना की विजय होती है। वे कहती हैं कि वे कष्ट सहती रहेंगी। कष्ट उन्हें विचलित नहीं कर पाएँगे। वे कभी अत्याचारों के आगे शीश नहीं झुकाएँगी।

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि रानी लक्ष्मी उदाहृदया, साहसी एवं सहनशील हैं। वे एक आदर्श पत्नी तथा स्नेही माँ हैं। संकटों के झंझावात कभी–कभी उन्हें विचलित कर देते हैं, किंतु अंत में उनकी दृढ़ता और उनके स्वतंत्रता–प्रेम की ही विजय होती है। वे कष्टों के समक्ष नतमस्तक होने से इंकार कर देती हैं।

प्रश्न–13 ''मेवाड़-मुकुट'' खंडकाव्य के आधार पर दौलत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– दौलत अकबर के मामा की लड़की है, जो राज–प्रासादों के वैभव को त्यागकर वन में महाराणा प्रताप के साथ रहने लगती है। महाराणा प्रताप भी उसे अपनी पुत्री की तरह ही स्नेह करते हैं। दौलत को पाकर राणा प्रताप यह भूल जाते हैं कि उनके कोई पुत्री नहीं है।

दौलत के चरित्र का कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है, वह काल्पनिक पात्र है। इसका वर्णन स्वर्गीय श्री द्विजेंद्रलाल राय के नाटक 'राणा प्रताप सिंह' में मिला है। कवि ने प्रस्तुत काव्य में उसे वहीं से ग्रहण किया है। उसके चरित्र में हमे निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं—

1. वन-जीवन के प्रति अनुराग– दौलत राजकुमारी है किंतु उसे वन–जीवन से अपार अनुराग है। वह प्रकृति में अनुपम सौंदर्य के दर्शन करती है और वन के जीवन में सुख–शांति का अनुभव करती है।

2. महाराणा के प्रति श्रद्धा– दौलत के हृदय में महाराणा के प्रति असीम श्रद्धा और आदर–भाव है। वह देखती है कि उसके पिता महाराणा से शत्रुता रखते हैं फिर भी महाराणा के हृदय में उसके प्रति महान् स्नेह–भाव है। वे पहले उसे खिलाते हैं, फिर स्वयं भोजन करते हैं। उसमें और अमर में कोई भेद नहीं करते तथा इस बात को कभी मन में नहीं आने देते हैं कि वह एक यवन और शत्रु–सुता है।

3. दरबारी जीवन से घृणा– दौलत अकबर के दरबारी जीवन से घृणा करती है। उसका कहना है कि आगरा में वैभव है, ऐश्वर्य है, रँगरेलियाँ हैं किंतु वहाँ छल–कपट है, दंभ और द्वेष है। यथार्थ में वहाँ का वातावरण बड़ा ही दूषित है। वहाँ सहृदयता का अभाव है और आपस में स्नेह नहीं है। इसलिए वह उस जीवन को त्याग देती है और राणा की कुटिया में आकर शांति प्राप्त करती है।

4. शक्तिसिंह के लिए प्रेम– दौलत के वन में आने का वास्तविक कारण यह है कि वह शक्तिसिंह से प्रेम करती है। वह शक्ति सिंह के गुणों पर नहीं अपितु उसके रूप पर मुग्ध है। वह जानती है कि शक्तिसिंह क्षुद्र-हृदय और कायर है, फिर भी वह उसके रूप को निहारना चाहती है।

5. त्याग और सेवा-भावना– दौलत चाहती है वह महाराणा प्रताप की कुछ सेवा कर सके—

केवल एक पुकार यही, उठती है अंतरतम से।
राणा की अनुगता बनूँ, जीवन सँवार लूँ क्रम से।।

6. रानी लक्ष्मी के प्रति श्रद्धा– दौलत को रानी लक्ष्मी के लिए उतनी ही श्रद्धा है, जितनी महाराणा प्रताप के लिए। वह उनकी प्रकृति से भली-भाँति परिचित है और मुक्त-कंठ से उनकी प्रशंसा करती है।

7. अकबर से घृणा– दौलत को इस बात का दु:ख है कि ऐसे महान् व्यक्ति को भी अकबर इतना कष्ट दे रहा है। राणा का एकमात्र अपराध यही है कि उन्होंने महाबली की दासता स्वीकार नहीं की। अत: वह अकबर से घृणा करती है।

2. कर्मवीर भरत (लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक')

रायबरेली, फर्रुखाबाद, पीलीभीत, मेरठ जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के कथानक/कथावस्तु का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में वर्णित प्रमुख घटनाओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर– [इस प्रश्न के उत्तर हेतु आगे दिए सभी सर्गों के सारांश का अध्ययन करें।]

प्रश्न–2 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर अयोध्या तथा चित्रकूट का संक्षिप्त वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य का कथानक एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य संबंधी कथानक स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के आधार पर संक्षेप में बताइए कि भरत के अयोध्या लौटने पर उन्हें अयोध्या किस रूप में दिखाई दी?**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में वर्णित भरत के अयोध्या आगमन का चित्रण कीजिए।**

उत्तर–

प्रथम सर्ग (आगमन)

श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' कृत 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य छह सर्गों में विभक्त है। इसके प्रथम सर्ग का कथासार इस प्रकार है—

भरत तथा शत्रुघ्न दोनों ननिहाल गए हुए थे। अयोध्या के दूत अकस्मात् वहाँ पहुंचे और उन्होंने भरत तथा शत्रुघ्न को यह सूचना दी कि दोनों राजकुमारों को गुरु वशिष्ठ ने तत्काल अयोध्या में बुलाया है। भरत ने दूतों से अपने माता-पिता, भाइयों आदि की कुशलता जाननी चाही, किंतु दूत अपनी भावनाओं को दबाकर मौन ही रहे। दूत दशरथ-मरण तथा राम-वनगमन की बात को चतुरतापूर्वक छिपा गए। भरत तथा शत्रुघ्न अपने मामा की आज्ञा प्राप्त कर अयोध्या की ओर चल पड़े। मार्ग में उन्हें सब सूना-सा लगा। अयोध्या में प्रवेश करते समय तो उन्हें आश्चर्य भी हुआ; क्योंकि उनके आगमन पर न तो किसी प्रकार का उल्लास मनाया गया और न उनके स्वागत की कोई तैयारी दिखाई दी। राजमहल में सभी मौन होकर संकेतों में बातें करते हुए दिखाई दिए। चतुर बुद्धि भरत ने किसी अमंगल की कल्पना तो कर ली किंतु उन्हें वास्तविक घटना का बोध नहीं हो पाया। भरत जी सीधे दशरथ-भवन पहुँचे, कितु वहाँ का सूनापन देखकर उनका मन चिंतित हो उठा। उन्होंने राजद्वार पर किसी द्वारपाल अथवा मंत्री को भी नहीं देखा। अब भरत व्याकुल होकर अपनी माता कैकेयी के भवन की ओर चल पड़े।

प्रश्न–3 'कर्मवीर भरत' के द्वितीय सर्ग 'राजभवन' का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के द्वितीय सर्ग 'राजभवन' में वर्णित घटनाओं पर प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर द्वितीय सर्ग का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के द्वितीय सर्ग का कथानक स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' में व्यंजित 'भरत-कैकेयी' संवाद का सोदाहरण वर्णन कीजिए।**

अथवा **'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग में कैकेयी द्वारा राम को वन भेजने के कौन-कौन से कारण प्रस्तुत किए गए हैं? स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– **द्वितीय सर्ग (राजभवन)**

कैकेयी अपने भवन में चुपचाप बैठी हुई थी। उसने भरत का मस्तक चूमकर उनका स्वागत किया। भरत ने अपनी माता से पिता दशरथ, भाई राम तथा लक्ष्मण आदि की कुशलता पूछी और उन सबकी अनुपस्थिति के विषय में प्रश्न किया। कैकेयी ने बड़े संयत स्वर में महाराज दशरथ की मृत्यु का संवाद भरत को सुनाया। इस दु:खद संवाद को भरत सहन नहीं कर पाए और मूर्च्छित होकर गिर पड़े। कैकेयी ने भरत को किसी प्रकार सँभाला और अत्यंत धैर्य के साथ उनके सम्मुख अपने मन के भावों को इस प्रकार प्रकट किया—

''राजा का कर्तव्य है कि वह अपने शिक्षित-अशिक्षित, सुखी-दु:खी सभी प्रकार के नागरिकों की रक्षा करे। अयोध्यावासी तो सभी नागरिक हैं, परंतु दूर जंगल में रहने वाले वनवासी तो दीन, दु:खी, उदास तथा अरक्षित हैं। मैंने यही सोचकर कि इन भोले-भाले तथा असहाय वनवासियों के दु:ख को केवल राम ही दूर कर सकते हैं, राम को वन में भेजने की नीति अपनाई। मैंने महाराजा दशरथ का युद्धक्षेत्र में साथ दिया था। राम को वन में भेजने तथा भरत को राजगद्दी दिलाने में मेरे मन में लोक-कल्याण की भावना ही रही है, किंतु दु:ख है कि महाराज दशरथ राम-वनगमन की बात सहन नहीं कर सके और उन्होंने मोहवश अपने प्राण त्याग दिए। राम के व्यक्तित्व को अधिक चमकाने के लिए ही मैंने इस प्रकार की नीति अपनाई है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि राम ने तो मेरी बात को सहर्ष स्वीकार करके वन की ओर प्रस्थान किया, परंतु महाराजा दशरथ मोहवश स्वर्ग सिधार गए।''

माता कैकेयी के मुख से इस दु:खजन वृतांत को सुनकर भरत पुन: धरती पर गिर पड़े। कैकेयी ने साहस बटोरकर भरत को समझाया, परंतु भरत कुपित होकर बोले— क्या किसी रानी ने अपने पति को स्वर्ग तथा पुत्र को वन में भेजने का दृष्कृत्य किया है? अन्य माताएँ तो यही सोचेंगी कि इस षड्यंत्र में भरत का ही हाथ है। मैं अन्य माताओं को अपना मुख कैसे दिखाऊँगा? राम की अनुपस्थिति में मैं अयोध्या की राजगद्दी को किस प्रकार सँभाल सकता हूँ? कैकेयी ने भरत को धैर्य बँधाते हुए कहा कि राम तो मुनि विश्वामित्र के साथ पहले भी वन में रहकर अपने साहस का परिचय दे चुके हैं तथा राम में इस प्रकार की योग्यता है कि वह वनवासियों के हृदय में चेतना जाग्रत कर सकते हैं। कैकेयी ने भरत को राजगद्दी सँभालने तथा शोक न करने के लिए कहा। राम के चरित्र की विशेषताओं का वर्णन करते हुए उसने भरत को अपने कर्तव्यपालन की शिक्षा दी। कैकेयी ने दृढ़-विश्वास के साथ कहा कि भले ही उसे स्वयं भरत अथवा कोई अन्य दोष दे, परंतु उसने यह कार्य लोकहित की दृष्टि से किया है। भरत तथा शत्रुघ्न दोनों भाई कैकेयी की बात को सुनकर अत्यंत दु:खी मन से माता कौशल्या की ओर चल पड़े।

प्रश्न–4 'कर्मवीर भरत' के 'कौशल्या-सुमित्रा मिलन' वर्ग का कथानक (सारांश) लिखिए/वर्णन कीजिए।
अथवा **'कर्मवीर भरत' में वर्णित कौशल्या-सुमित्रा संवाद का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।**

उत्तर– **तृतीय सर्ग (कौशल्या-सुमित्रा मिलन)**

भरत के आगमन की सूचना सुनकर कौशल्या का हृदय अत्यधिक स्नेह से भर गया। अपने सम्मुख खड़े तथा चरणों में शीश झुकाए हुए भरत और शत्रुघ्न को कौशल्या ने आशीर्वाद दिया। भरत को छाती से लगाकर कौशल्या अत्यधिक विलाप करने लगी। कौशल्या की दशा को देखकर भरत का हृदय फटने लगा। दशरथ-मरण तथा राम के वनगमन का कारण अपनी माता कैकेयी के वरदानों को मानकर भरत ने स्वयं को धिक्कारा। भरत ने कहा कि आज तो सभी यह कहेंगे कि भरत को राजगद्दी की लालसा अवश्य होगी। भरत की बात सुनकर माता कौशल्या ने उन्हें समझाते हुए कहा, ''पुत्र! इस घटनाचक्र में न तुम्हारा कोई हाथ है और न कैकेयी का कोई दोष है। होनी तो होकर रहती है। मैं अपने भरत की पवित्रता और सत्यता को भली प्रकार जानती हूँ। तुम्हारे विरुद्ध यदि कोई कुछ कहेगा तो मैं उसकी जीभ खींच लूँगी।'' कौशल्या ने भरत का उत्साह बढ़ाते हुए उसे कर्तव्यपालन की प्रेरणा दी। कौशल्या ने स्पष्ट रूप में कहा कि वीर तथा अंत:करण को शुद्ध रखने वाले साहसी पुरुष निंदा पर कभी ध्यान नहीं दिया करते। जो निंदा तथा अपयश के भय-जाल में उलझ जाते हैं, वे जीवन में कभी महान् कार्य नहीं कर पाते।

भरत के आगमन की सूचना मिलने पर सुमित्रा भी वहाँ दौड़ी हुई आई तथा दोनों पुत्रों को गले से लगाया। माता सुमित्रा के सम्मुख भी भरत ने स्वयं को अपराधी माना। उन्होंने कहा कि मेरी माता ने मुझको राजगद्दी का लोभी किस प्रकार जाना। उसने राम के स्थान पर मुझे ही वनवास क्यों नहीं दिलाया? सुमित्रा ने भी भरत को समझाया कि राम शस्त्र-संचालन में

अत्यंत निपुण और वन में जाकर राक्षसों का विनाश करने में सक्षम हैं। उन्होंने पहले ही विश्वामित्र से शस्त्रास्त्र की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त कर ली। सुमित्रा ने धैर्य के साथ कहा—''तुम्हारे दु:खी होने से तो उर्मिला, पाण्डवी आदि भी दु:खी होंगी। तुम दु:ख को छोड़ो और कर्तव्य का पालन करो।''

''बिना कर्म के ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं होती तथा आत्मबल के बिना व्यक्ति कभी पवित्र नहीं बन पाता।'' इतना कहकर सुमित्रा ने दोनों पुत्रों को गले लगाकर मुनि वशिष्ठ के पास भेज दिया।

प्रश्न-5 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के चतुर्थ सर्ग 'आदर्श वरण' का वर्णन कीजिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के 'आदर्श वरण' सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर-

चतुर्थ सर्ग (आदर्श वरण)

भरत तथा शत्रुघ्न मुनि वशिष्ठ के पास पहुँचे। कौशल्या तथा सुमित्रा के समान वशिष्ठ ने भी भरत को समझाया। पिता दशरथ के शव को देखकर तो भरत मूर्च्छित हो गए। चेतना लौटने पर मुनि वशिष्ठ ने उन्हें समझाया— ''नाश और विकास, सुख और दु:ख, मृत्यु और जीवन साथ-साथ चलते हैं। इस जीवन के रंगमंच पर हम सभी अभिनय करते हैं। केवल ईश्वर ही सूत्रधार तथा संचालक होता है।'' भरत ने अत्यंत शोकाकुल अवस्था में दशरथ के शव का सरयू के किनारे पर दाह-संस्कार किया। इसके पश्चात् मुनि वशिष्ठ, सुमंत तथा अन्य सभासदों ने भरत से राजगद्दी सँभालने के लिए कहा, परंतु राम के होते हुए भरत ने राजगद्दी सँभालने की बात स्वीकार नहीं की। भरत ने राम से मिलने का प्रस्ताव रखा, जिसे वशिष्ठ, सुमंत आदि सभी ने स्वीकार किया। भरत के साथ राम से मिलने शत्रुघ्न भी चले। कैकेयी तथा कौशल्या भी भरत के साथ वन में जाने के लिए तैयार हो गई। नगरवासी भी उनके साथ चलने का आग्रह करने लगे। अगले दिन प्रात: वशिष्ठ, सुमंत, माता कौशल्या, कैकेयी तथा अनेक नगरवासी वन की ओर चले। भरत प्रारंभ में पैदल ही चले, परंतु कौशल्या के कहने पर वे रथ पर बैठ गए। दिनभर चलने के पश्चात सभी ने तमसा नदी के किनारे पर विश्राम किया और फिर गुरु वशिष्ठ की आज्ञा लेकर गोमती नदी को पार करके आगे बढ़े।

प्रश्न-6 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के पंचम सर्ग 'वनगमन' का सारांश लिखिए/वर्णन कीजिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के पंचम सर्ग का कथानक लिखिए।**

उत्तर-

पंचम सर्ग (वनगमन)

इक्ष्वाकु पताका को रथ पर फहराती हुई देखकर निषादराज गुह को कुछ संदेह होने लगा। उन्होंने समझा कि भरत ने पहले राम को वन में भिजवाया और अब वह राम से युद्ध करने आए हैं, परंतु निषादों के एक वृद्ध द्वारा समझाने पर उन्हें सही ज्ञान हुआ। भरत को मुनि वशिष्ठ और माताओं के साथ आता देखकर निषादराज की शंका समाप्त हो गई। भरत के समीप पहुँचने पर तथा वशिष्ठ जी की बातों से तो वह अत्यंत गद्‌गद् हो गए। भरत के अगाध स्नेह को देखकर तो वह और भी अधिक पुलकित हो उठे। निषादराज ने भी भरत के सम्मुख राम के प्रभाव का वर्णन किया। वह सभी को नाव में बैठाकर गंगा पार ले गए। चित्रकूट वन को समीप आते देखकर भरत तथा शत्रुघ्न दोनों भाई रथ से उतरकर पैदल ही चल पड़े।

प्रश्न-7 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के षष्ठ सर्ग 'राम-भरत मिलन' सर्ग का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में वर्णित 'राम-भरत मिलन' सर्ग का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के अंतिम सर्ग की कथा/कथानक लिखिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के षष्ठ सर्ग का सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य पर आधारित 'राम-भरत मिलन' सर्ग का औचित्य और भरत का आदर्श प्रेम सुस्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के अंतिम सर्ग 'राम-भरत मिलन' में वर्णित प्रमुख प्रसंगों का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में सर्वाधिक सुन्दर सर्ग आपको कौन-सा प्रतीत हुआ और क्यों?**

उत्तर-

षष्ठ सर्ग (राम-भरत मिलन)

एक निषाद ने राम के आश्रम में भरत के आगमन की सूचना दी। लक्ष्मण कुछ सशंकित हुए, परंतु राम ने नंगे पैर दौड़कर भरत को गले से लगा लिया। भरत बेसुध-से होकर राम के चरणों में लिपट गए। शत्रुघ्न ने भी भाई राम से आशीर्वाद प्राप्त किया। राम ने अपनी माताओं के चरण स्पर्श किए और आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके पश्चात् मुनि वशिष्ठ ने राम को दशरथ-मरण का संवाद सुनाया, जिसे सुनकर राम तथा लक्ष्मण दु:ख से अधीर हो उठे। यह देखकर वशिष्ठ जी ने राम को समझाया। कुछ दिनों तक सभी लोग राम के आश्रम में आनंदमग्न रहे। चित्रकूट आश्रम का प्राकृतिक वातावरण अत्यंत मनोरम था।

यद्यपि राम भरत के मन की बात भली प्रकार समझ रहे थे, फिर भी भरत ने एक दिन अवसर मिलने पर राम से कहा—''भाई राम, अयोध्या का सिंहासन सूना पड़ा है, आप राजगद्दी सँभालें, मैं यहीं वन में रहूँगा।'' कैकयी भी राम से कहती है कि ''इस संपूर्ण दु:खजनक नाटक के मूल में मेरा ही हाथ है। भरे-पूरे रघुवंश में मैंने ही कालिमा लगाई है। हे पुत्र राम! भरत जो कहा रहा है, तुम उसे मान लो। हम सबका यही मत है कि तुम अयोध्या वापस चलो।'' राम ने बड़ी सहानुभूति से भरत तथा कैकेयी को समझाते हुए कहा कि ''पिता स्वर्गलोक चले गए, माताएँ विधवा हो गई। मैं राजा बनकर पितृ-वचन को भंग किस प्रकार करूँ? इससे तो राजवंश का आदर्श ही समाप्त हो जाएगा।'' भरत बड़े भाई राम के आदर्श तथा अगाध स्नेह के सम्मुख नतमस्तक हो गए। अंत में भरत ने आग्रह किया कि वे राम की चरण-पादुकाओं को लेकर जाएँगे और अयोध्या में चौदह वर्षों तक राम की चरण-पादुकाओं का ही राज्य होगा।

राम ने भरत को अनेक बातें समझाई और उन्हें गले से लगाकर अपनी चरण-पादुकाएँ अर्पित की। भरत के साथ अन्य पुरवासी भी अयोध्या लौटे। भरत ने अयोध्या से बाहर नंदीग्राम में एक पर्णकुटी बनवाई और स्वयं कुशा के आसन पर बैठे तथा राम की चरण-पादुकाओं को राज-सिंहासन पर सुशोभित किया। इस प्रकार भरत ने अपने चरित्र का आदर्श रूप प्रस्तुत किया।

सर्ग का औचित्य– प्रस्तुत खंडकाव्य में सर्वाधिक सुन्दर इस सर्ग का महत्वपूर्ण स्थान है; क्योंकि इस सर्ग के बिना काव्य-रचना का उद्देश्य अपूर्ण ही रह जाता है। इस सर्ग में राम-भरत के स्नेह, त्याग और दीन-दु:खियों के प्रति उदारता, प्रेम एवं उनके कल्याण करने का जो संदेश दिया गया है, वह न मिलता। उस स्थिति में खंडकाव्य केवल कवि के भाव-विलास की पूर्ति का निर्मित होता है। इस प्रकार यह काव्य-रचना औचित्यविहीन सिद्ध होती।

प्रश्न–8 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर भरत का चरित्र-चित्रण कीजिए।

***अथवा* भरत को 'कर्मवीर' की उपाधि क्यों दी गई? स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर भरत के चरित्र की उन प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए, जो आपको अत्यधिक प्रभावित करती हैं।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' में ''भरत मानव-सेवा और भ्रातृप्रेम की साकार मूर्ति हैं।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के प्रमुख नायक (प्रधान पात्र) का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' का नायक कौन है? उसके चरित्र की प्रधान विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' के चरित्र की (चार) विशेषताएँ लिखिए।**

***अथवा* भरत तप,त्याग और शील पर दृढ़ रहने वाला उदात्त चरित्र है। 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर इस कथन को प्रमाणित कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत का चरित्र अद्वितीय है' इस कथन की पुष्टि खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के नामकरण के औचित्य पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'नहीं राज वैभव में है अनुरक्ति तुम्हारी,**
तुम विदेह हो, अटल राम की भक्ति तुम्हारी।'

– 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर भरत के चरित्र की इन विशेषताओं की पुष्टि कीजिए।

***अथवा* ''भरत को 'कर्मवीर' की संज्ञा दी गई है।'' –कथन के आधार पर भरत का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

***अथवा* 'भरत के जीवन में कर्म सर्वोपरि था।' 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर उक्त कथन की पुष्टि कीजिए।**

उत्तर– श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' कृत 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के नायक 'भरत' हैं। उनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

1. राम के सच्चे अनुयायी– भरत को सबसे बड़ा दु:ख राम के वनगमन का है। राम के प्रति उनके मन में असीम आदर का भाव है। वन में जाकर वे राम से अवध लौटने की प्रार्थना भी करते हैं। राम का वनवासी रूप देखकर वे व्याकुल हो जाते हैं। वे तो राम के पूर्ण भक्त, आज्ञाकारी तथा कृपापात्र बने रहना चाहते हैं। राम द्वारा समझाए जाने पर वे अंत में यही कहते हैं—

लघु भ्राता ही नहीं नाथ! मैं दास तुम्हारा,
मोह-सिंधु में डूब रहा था मुझे उबारा।

राम की चरण-पादुकाओं को वे चौदह वर्षों तक राज-सिंहासन पर सुशोभित करते हैं। वे शील और विनम्रता की साक्षात् प्रतिमा हैं। उनकी सरलता और विनम्रता से सभी प्रभावित हैं। भरत द्वारा चरण-पादुकाएँ माँगने पर राम कहते भी हैं—

राज्य छोड़कर तुच्छ खड़ाऊँ तुमने माँगे,
त्याग भाव में भरत रहे हैं सबसे आगे।

भरत के शील, स्वभाव तथा महान् त्याग की चर्चा जगत्-भर में व्याप्त हो गई है—

फैली क्षण में भरत-शील की कथा नगर में,
चर्चा होने लगी त्याग-व्रत की घर-घर में।

2. परम त्यागी तथा अनासक्त– कैकेयी के बार-बार समझाने पर भी भरत राजगद्दी को स्वीकार नहीं करते। वे राज्य का वास्तविक अधिकारी राम को ही मानते हैं। भरत के इस अनासक्त भाव को सभी जानते हैं। स्वयं कौशल्या कहती है कि भरत को राज्य का लेशमात्र भी मोह नहीं है। सुमित्रा भी उनकी प्रशंसा करती हुई कहती हैं—

नहीं राज्य-वैभव में है अनुरक्ति तुम्हारी,
तुम विदेह हो, अटल राम की भक्ति तुम्हारी।

स्वयं मुनि वशिष्ठ तथा राम भी भरत के त्याग तथा अनासक्त-भाव की प्रशंसा करते हैं।

3. भावुक-हृदय– भरत अत्यधिक भावुक हैं। अपने अतिरिक्त वे अन्य सभी के सुख-दु:ख की चिंता करते हैं। पिता के स्वर्गवास का समाचार सुनकर वे अत्यधिक शोकाकुल हो जाते हैं। अवध के राज्य को वे किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं करते। राम के वनगमन, पिता के देहांत, माताओं के वैधव्य और उर्मिला की विरह व्यथा को जानकर उनका हृदय दु:ख के सागर में गोते लगाने लगता है।

4. आदर्श महापुरुष– प्रस्तुत खंडकाव्य के चरित्र-नायक भरत सरल हृदय तथा आदर्श महापुरुष हैं। छल-कपट, षड्यंत्र आदि दोषों से वे पूरी तरह मुक्त हैं। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि उनकी माता कैकेयी ने उनके लिए वरदान में राज्य माँग लिया है तो उन्हें अपार ग्लानि हुई। वे स्वयं को अपराधी समझने लगे। उनका मन उन्हें धिक्कारने लगा। उन्हें यह बात स्वीकार नहीं थी कि कोई व्यक्ति उनके चरित्र पर शंका करें। कौशल्या, कैकेयी, वशिष्ठ तथा राम के सम्मुख वे अपने हृदय की इस महानता को प्रकट करते हैं। वे रघुवंश की नीति व मर्यादा का पालन करते हुए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं। वे कहते भी हैं—

किंतु ज्येष्ठ को राजतिलक की परंपरा है,
राजा दु:ख से नहीं, अनय से सदा डरा है।

यद्यपि कैकेयी द्वारा भरत को अनेक प्रकार से समझाया जाता है, तथापि भरत बड़े भाई राम के जीवित रहते अयोध्या के राज्य को स्वीकार करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। अपनी माता कैकेयी के प्रति अपना क्रोध प्रकट करते हुए भरत कहते हैं—

माँग अवध का राज्य किया अपना मन भाया,
किंतु भरत के भाल अयश का तिलक लगाया।

5. कर्मवीर– भरत सच्चे कर्मवीर हैं। वे लोभ-लालच में बहुत दूर और अपने उत्तरदायित्वों के प्रति पूर्ण गंभीर हैं। यही कारण है कि वह बिना प्रयत्न के मिले राज्य को भी ठुकरा देते हैं और उसे उसके वास्तविक उत्तराधिकारी राम के चरणों को ही समर्पित कर देते हैं। राम जब चौदह वर्षों के लिए उन पर राज्य-भार डाल ही देते हैं तो वे उस उत्तरदायित्व को पूर्णनिष्ठा से निभाते हैं और वह भी राज-सिंहासन को हाथ लगाए बिना। ऐसा कर्मयोगी भारतीय साहित्येतिहास-पुराणादि में भरत के अतिरिक्त दूसरा कोई दिखाई नहीं देता।

नामकरण का औचित्य/सार्थकता– इस दृष्टि से कवि का भरत को कर्मवीर कहना सर्वथा उचित ही है। खंडकाव्य का नामकरण 'कर्मवीर भरत' भी भरत की कर्मवीरता को प्रदर्शित करने के लिए ही रखा गया है, जो सब प्रकार से औचित्यपूर्ण और सार्थक है।

प्रश्न–9 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर कैकेयी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा **'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य की कैकेयी के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

अथवा **'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर कौशल्या अथवा कैकेयी के चरित्र का वर्णन कीजिए।**

अथवा **'' 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में कैकेयी के चरित्र को उज्जवल बनाकर भारतीय नारी को गौरव प्रदान किया गया है।'' इस कथन को स्पष्ट कीजिए।**

अथवा '' 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि कैकेयी का चरित्र है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

अथवा '' 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य में कैकेयी का चरित्र सर्वथा भिन्न है।'' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा **''ममता तजकर मैंने पत्थर किया कलेजा।**
जन सेवा के लिए राम को वन में भेजा।।''

–'कर्मवीर भरत' से उद्धृत उक्त पंक्तियों के आधार पर कैकेयी के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर– श्री लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' द्वारा रचित 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य की रचना में कवि का उद्देश्य कैकेयी के चरित्र के उज्जवल पक्ष को चित्रित करना है। अनेक कवियों ने कैकेयी के चरित्र में विमाता की कठोरता व स्वार्थपरता का चित्रण किया है, परंतु प्रस्तुत खंडकाव्य में कवि ने कैकेयी के चरित्र में निष्कपटता, दूरदर्शिता, सरल-हृदयता तथा लोक-कल्याण की भावना को दर्शाया है। कवि ने अपने इस उद्देश्य में पूर्ण सफलता भी प्राप्त की है।

कैकेयी की प्रमुख चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

1. कर्तव्यपरायणा तथा लोकहितरक्षिका– कैकेयी पत्नी, माता तथा रानी के कर्तव्यों को भली प्रकार समझती है। वह भावना की अपेक्षा कर्तव्य को अधिक महत्व देती है। राम को वन भेजने में भी उसका यही प्रमुख उद्देश्य है। वह जानती है कि राम राक्षसों का वध कर सकते हैं। और सीधे-सादे भरत अयोध्या का राज्य सँभाल सकते हैं। अपनी लोकहित की भावना को व्यक्त करती हुई कैकेयी कहती है—

ममता तज कर मैंने पत्थर किया कलेजा,
जन-सेवा के लिए राम को वन में भेजा।

कैकेयी कर्तव्यपरायणता के सामने लोकनिंद्रा को तुच्छ समझती है।

2. निश्छलहृदया तथा स्पष्टवादिनी– कैकेयी अपने हृदय के भावों को भरत के सम्मुख स्पष्ट शब्दों में व्यक्त करती है। इसी के साथ वह यह भी सिद्ध करती है कि राम का वनगमन क्यों उचित है। उसके मन में किसी के प्रति ईर्ष्या नहीं है। वह राम को भी उतना ही प्यार करती है, जितना अपने पुत्रों को। उसका हृदय निश्छल है, इसीलिए वह भी भरत के साथ वन में जाने को तैयार हो जाती है। वन में वह राम से कहती है—

राम-भरत में भेद? हाय कैसी दुर्बलता
आगे चलते राम भरत को पीछे चलता।
बेटा, लगी कलंक कालिमा उसे मिटाओ,
भरत कह रहा जो उसकी भी बात बनाओ।

कैकेयी के निश्छल हृदय की प्रशंसा करते हुए मुनि वशिष्ठ कहते हैं—

तब गुरु बोले साधु! साधु! कैकेयी रानी,
भरत-हृदय की राम-भक्ति तुमने पहचानी।

राम भी कैकेयी की दूरदर्शिता को समझते हैं। कैकेयी के प्रति उनकी भावना देखिए—

नहीं तुम्हारा दोष काल की टेढ़ी गति है,
विश्व-विकास-कारिणी हो तुम मेरी मति है।

3. वीरांगना तथा युद्ध-नीति-निपुण– कैकेयी युद्ध-विद्या में कुशल है। एक बार उसने युद्धक्षेत्र में राजा दशरथ की सहायता करके दो वरदान भी प्राप्त किए थे। वह अत्यंत पराक्रमी तथा साहसी है। वह किसी भी कार्य में पहल करने वाली है। निंदा अथवा अपयश का भय उसे लेशमात्र भी नहीं सताता। अपने वीरत्व तथा मातृत्व पर उसे गर्व है। वह स्वयं कहती भी है—

असि अर्पण कर मैंने रण कंकण बाँधा है,
रणचंडी का व्रत मैंने रण में साधा है।
मेरे बेटों ने पय पिया सिंहनी का है,
उनका पौरुष देख इंद्र मन में डरता है।

वस्तुत: कैकेयी एक ऐसी असाधारण नारी है, जिसे कोई भी सरलता से नहीं समझ पाता।

4. मानवता के प्रति आस्था रखने वाली– कैकेयी केवल राजकुल के प्रति ही प्रेम प्रकट नहीं करती, उसे तो वन में रहने वाले अशिक्षित प्राणियों के हित का भी ध्यान है। वह उन्हें भी सम्मान तथा स्नेह की भावना से देखती है। वनवासियों के प्रति वह कहती है—

जिन्हें नीच पामर कहकर हम दूर भगाते,
वे भी तो अपने हैं मानवता के नाते।

कैकेयी अपनी मानवता की भावना को इस प्रकार स्पष्ट करती है—

उन्हें उठाना क्या राजा का धर्म नहीं है?
गले लगाना क्या मानव का धर्म नहीं है?

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कवि ने कैकेयी के चरित्र को उज्जवल बनाकर भारतीय नारी को गौरव प्रदान किया है। वस्तुत: इस खंडकाव्य के लिखने में कवि का प्रमुख उद्देश्य भी यही है और इस उद्देश्य की प्राप्ति में लेखक को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

प्रश्न–10 'कर्मवीर भरत' खंडकाव्य के आधार पर राम के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– कवि लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' द्वारा रचित खंडकाव्य 'कर्मवीर भरत' में राम एक आदर्श पात्र हैं। राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। उदात्त गुणों के कारण ही प्रस्तुत खंडकाव्य में राम अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। राम की चरित्रगत विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

1. भरत के प्रति अगाध प्रेम– भरत के प्रति राम के हृदय में अपार प्रेम है। भरत की भ्रातृ-भक्ति तथा अपने प्रति उनके परम प्रेम को देखकर उनका मन भाव-विभोर हो जाता है। राम भरत के आग्रह से प्रसन्न होकर कहते हैं—

बोले-'जो भी कहो वही मैं आज करूँगा।
तुम कह दो तो अयश सिंधु में कूद पड़ूँगा।।

2. कर्तव्य-प्रेमी– वे पिता के आज्ञाकारी पुत्र हैं। भाई भरत और माता कैकेयी के अनुरोध पर वे अयोध्या वापस आने को तैयार नहीं होते। वे अपने कर्तव्य के प्रति अत्यंत ही जागरूक हैं। कर्मक्षेत्र में प्रविष्ट कराने का श्रेय अपनी माता को देते हुए वे कहते हैं—

कर्मक्षेत्र दे मुझे पिया स्वयमेव गरल है,
माँ मेरा जीवन तुमने कर दिया सफल है।

3. शक्ति, शील एवं सौंदर्य से समन्वित रूप–कैकेयी राम को अपने सभी पुत्रों से समर्थ और शक्ति संपन्न मानती है और इसीलिए उन्हें जन-सेवा का भार सौंपती है। कैकेयी के शब्दों में राम-''धीर, वीर, गंभीर, धनुर्धर, शोभाशाली, पतित-उद्धारक, दैत्य-संहारक, गति मतवाली'' हैं। वह राम के संबंध में कहती है—

राम हमारा शील शक्ति सौंदर्य समन्वित,
उसका जीवन हो जन सेवा हेतु समर्पित।
दु:खी जनों को देख मनयन उसके भर आते,
देख दुष्ट को लाल वही लोचन हो जाते।।

4. रघुकुल के आदर्श– राम रघुकुल के आदर्श तथा रघुकुल शिरोमणि हैं। वे रघुकुल के समस्त आदर्शों का पालन करते हैं। ननिहाल में भरत दूत से पूछते हैं—

रघुकुल के आदर्श जिन्हें लगते हैं प्यारे।
कहो कुशल से तो हैं भ्राता राम हमारे।।

5. प्रेम, दया तथा त्याग के आगार– राम के चरित्र में वाणी की मधुरता, मानवता के प्रति प्रेम, जन-जीवन के विकास के प्रति रुचि, उदारता, दयालुता, मनस्विता तथा त्याग आदि सभी गुण विद्यमान हैं। उनका चरित्र गंगा की भाँति पवित्र और

निर्मल है। उनकी मुस्कान चाँदनी की भाँति मोहक है। उनका मुखमंडल बाल-सूर्य की भाँति दीप्तिमान् है और उनके नेत्र कमल के समान सुंदर हैं। राम के विषय में कैकेयी कहती है—

वे तो परम उदार, सदय, जय नीति मनस्वी।
त्याग, प्रेम, आदर्श, साधनाशील, यशस्वी।।
सुरसरि सा पावन-चरित्र उनका निर्मल है।
पूर्ण इन्दु, चन्द्रिका सदृश, मुस्कान सरल है।।

6. दृढ़-निश्चयी– राम दृढ़-निश्चयी हैं; अत: वे अपने निश्चय से कभी भी पीछे नहीं हटते। वे सबसे क्षमा-याचना करते हुए कहते हैं—

क्षमा करें सब लोग विवशता मेरे मन की,
अपनाई है कठिन राह मैंने जीवन की।

इस प्रकार अनन्य गुणों से युक्त 'कर्मवीर भरत' के राम एक आदर्श मर्यादा-पुरुषोत्तम हैं।

3. कर्ण (केदारनाथ मिश्र 'प्रभात')

एटा, जौनपुर, बलिया, अलीगढ़, हमीरपुर आदि जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'कर्ण' खंडकाव्य में कितने सर्ग हैं? उनके नाम बताइए।

उत्तर– कर्ण खंडकाव्य में सात सर्ग हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं— (i) रंगशाला में कर्ण, (ii) द्यूतसभा में द्रौपदी, (iii) कर्ण द्वारा कवच-कुंडल दान, (iv) श्रीकृष्ण और कर्ण, (v) माँ-बेटा, (vi) कर्ण-वध, (vii) जलांजलि।

प्रश्न–2 'कर्ण' खंडकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।**
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के कथानक पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' नामक खंडकाव्य की कथावस्तु सात सर्गों में विभक्त है। इसकी कथावस्तु महाभारत के प्रसिद्ध वीर कर्ण के जीवन से संबंद्ध है।

प्रथम सर्ग (रंगशाला में कर्ण) में कर्ण के जन्म से लेकर द्रौपदी के स्वयंवर तक की कथा का संक्षेप में वर्णन है। जब कुंती अविवाहित थी; सूर्य की उपासना के फलस्वरूप उसे एक तेजस्वी पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। उसने लोक-लाज और कुल की मर्यादा के भय से उस शिशु को नदी की धारा में बहा दिया। नि:संतान सारथी अधिरथ उस बालक को घर ले आया। उसके द्वारा पाले जाने के कारण वह 'सूत-पुत्र' कहलाया।

एक दिन वह बालक राजभवन की रंगशाला में पहुँच गया। सूत-पुत्र होने के कारण वहाँ उसकी वीरता का उपहास किया गया और उसे सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया। पांडवों से ईर्ष्या रखने वाले दुर्योधन ने स्वार्थवश उसे प्रेम और सम्मान प्रदान किया। इससे कर्ण के आहत मन को कुछ धीरज एवं बल मिला।

द्रौपदी के स्वयंवर में जब कर्ण मत्स्य-वेध करने उठा, तब द्रौपदी ने भी निम्न जाति का कहकर उसे अपमानित किया। इस प्रकार दूसरी बार एक नारी द्वारा अपमानित होकर भी वह मौन ही रहा, किंतु क्रोध की चिंगारी उसके नेत्रों में फूटने लगी।

द्वितीय सर्ग (द्यूतसभा में द्रौपदी) में अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध से लेकर द्रौपदी के चीर-हरण तक का कथानक वर्णित है। द्रौपदी के स्वयंवर में ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ने मत्स्य-वेध करके द्रौपदी का वरण कर लिया। द्रौपदी पाँचों पांडवों की वधू बनकर आ गई। विदुर के समझाने बुझाने पर युधिष्ठिर को हस्तिनापुर का आधा राज्य मिल गया।

युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। यज्ञ में आमंत्रित दुर्योधन को जल-स्थल का भ्रम हो गया। इस पर द्रौपदी ने व्यंग्य किया, जिस पर दुर्योधन क्षोभ से भर गया।

वापस आकर उसने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर शकुनि की सलाह से द्यूत-क्रीड़ा की योजना बनाई और पांडवों को आमंत्रित किया। इस द्यूत-क्रीड़ा में युधिष्ठिर सारा राजपाट, भाइयों और अंत में द्रौपदी को भी हार बैठे। कर्ण और दुर्योधन ने बदले का उपयुक्त अवसर जानकर द्रौपदी को निर्वस्त्र करने को कहा। कर्ण को अपना प्रतिशोध लेना था। वह बोला— पाँच पतियों वाली कुलवधु कैसी? कर्ण ने दु:शासन को इस प्रकार उत्तेजित तो किया परंतु बाद में वह अपने इस दुष्कृत्य के लिए आजीवन पछताता रहा।

तृतीय सर्ग (कर्ण द्वारा कवच-कुंडल दान) में दुर्योधन द्वारा वैष्णव-यज्ञ करने से लेकर, कर्ण द्वारा कवच-कुंडल दान करने तक का कथानक है। दुर्योधन ने चक्रवर्ती सम्राट का पद ग्रहण करने के लिए वैष्णव-यज्ञ किया। कर्ण ने प्रतिज्ञा की कि मैं जब तक अर्जुन को नहीं मार दूँगा, तब तक कोई भी याचक मुझसे जो कुछ भी माँगेगा।, मैं वही दान दे दूँगा, मांस-मंदिरा का सेवन नहीं करूँगा और अपने चरण भी नहीं धुलवाऊँगा। अर्जुन इंद्र के पुत्र थे; अत: इंद्र ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के पास गए और कवच-कुंडल का दान माँगा। कर्ण ने इंद्र की याचना पर जन्म से प्राप्त अपने दिव्य कवच-कुंडल सहर्ष शरीर से काटकर दे दिए। ये ही कर्ण की जीवन-रक्षा के सुदृढ़ आधार थे।

चतुर्थ सर्ग (श्रीकृष्ण और कर्ण) में श्रीकृष्ण द्वारा कौरव-पांडवों का समझौता कराने, समझौता न होने पर कर्ण को कौरव पक्ष से युद्ध न करने के लिए समझाने के असफल प्रयास का वर्णन है। श्रीकृष्ण पांडवों की ओर से कौरवों की राजसभा में दूत के रूप में न्याय माँगने गए, किंतु दुर्योधन ने बार-बार यही कहा कि युद्ध के अतिरिक्त अब और कोई रास्ता नहीं है। श्रीकृष्ण निराश होकर कर्ण को समझाते हैं कि तुम पांडवों के भाई हो; अत: अपने भाइयों के पक्ष का समर्थन करो।

कर्ण की आँखों में वेदना के आँसू उमड़ आए। वह बोला कि मुझे आज तक घृणा, अनादर और अपमान ही मिला है। आज अधिरथ मेरे पिता और राधा मेरी माँ हैं। इन्हें छोड़कर मैं कुंती को अपनी माँ के रूप में ग्रहण नहीं कर सकता। मैं मित्र दुर्योधन के प्रति कृतघ्न नहीं बन सकता। लेकिन आप यह बात कभी युधिष्ठिर से मत कहिएगा कि मैं उनका बड़ा भाई हूँ, अन्यथा वे यह राज-पाट छोड़ देंगे। बहुत दिनों से मुझे एक आत्मग्लानि रही है कि द्रौपदी भरी सभा में अपमानित हुई थी और मैंने ही वह दुष्कर्म कराया था। अत: इस शरीर को त्यागकर अपने इस दुष्कर्म का प्रायश्चित करूँगा।

पंचम सर्ग (माँ-बेटा) में कुंती द्वारा कर्ण के पास जाने का वर्णन है। पांडवों के लिए चिंतित कुंती बहुत सोच-विचारकर कर्ण के आश्रम पहुँचती है। कुंती के कुछ कहने से पहले ही कर्ण ने अपने जीवनभर की पीड़ा को साकार करते हुए अपने हृदय की ज्वाला माँ के सम्मुख स्पष्ट कर दी।

वह बोला कि माँ होकर तुमने मेरे साथ छल किया है। मैं अपने मित्र दुर्योधन का कृतज्ञ हूँ, मैं उसे धोखा नहीं दे सकता। यह बिडंबना ही होगी कि एक माता अपने पुत्र के द्वार से खाली हाथ लौट जाए। मैंने केवल अर्जुन को ही मारने की प्रतिज्ञा की है। मैं तुम्हे वचन देता हूँ कि मैं अर्जुन के अतिरिक्त किसी पांडव को नहीं मारूँगा।

षष्ठ सर्ग (कर्ण-वध) में महाभारत युद्ध आरंभ होने से लेकर कर्ण की मृत्यु तक की कथा का वर्णन है। महाभारत का युद्ध आरंभ हुआ। भीष्म पितामह कौरवों के सेनापति बनाए गए। वे इस शर्त पर सेनापति बने कि वे कर्ण का सहयोग नहीं लेंगे। युद्ध के दसवें दिन घायल होकर शर-शय्या पर पड़ने के बाद कर्ण के भीष्म पितामह के पास पहुँचने पर उन्होंने उसको भर आँख निहारने की इच्छा प्रकट की तथा उसे दानवीर, धर्मवीर और महावीर बतलाया।

भीष्म पितामह ने कहा कि तुम भी अर्जुन आदि की तरह कुंती के ही पुत्र हो। हमारी इच्छा यही है कि तुम पांडवों से मिल जाओ। कर्ण ने अपने को प्रतिज्ञाबद्ध बताते हुए ऐसा करने से मना कर दिया। उसने पितामह से कहा कि भले ही उस ओर कृष्ण हों, किंतु अर्जुन को मारने हेतु मैं हर प्रयास करूँगा। यह सुनकर पितामह ने उसे अपने शस्त्रास्त्र उठाकर दुर्योधन का स्वप्न पूर्ण करने के लिए कहा।

भीष्म के बाद द्रोणाचार्य को सेनापति नियुक्त किया गया। पंद्रहवें दिन वे भी वीरगति को प्राप्त हुए। युद्ध के सोलहवें दिन कर्ण कौरव दल के सेनापति बने। उनकी भयंकर बाण-वर्षा से पांडव विचलित होने लगे, तभी भीम का पुत्र घटोत्कच भयंकर मायापूर्ण आकाश युद्ध करता हुआ कौरव सेना पर टूट पड़ा। कर्ण ने अमोघ-शक्ति का प्रहार कर घटोत्कच को मार डाला। इस अमोघ-शक्ति का प्रयोग वह केवल अर्जुन पर करना चाहता था। अचानक कर्ण के रथ का पहिया धँस गया। कर्ण रथ से उतरकर स्वयं पहिया निकालने लगा। तभी श्रीकृष्ण का आदेश पाते ही अर्जुन ने नि:शस्त्र कर्ण का बाण-प्रहार से वध कर दिया।

सप्तम सर्ग (जलांजलि) में युद्ध की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर द्वारा कर्ण को जलांजलि देने की कथा का वर्णन है। कर्ण के वीरगति प्राप्त करते ही कौरव सेना का मानो प्रदीप बुझ गया। वे शक्तिहीन हो गए। सेना अस्त-व्यस्त हो गयी। कर्ण के बाद शल्य और दुर्योधन भी मारे गए। युद्ध की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को जलदान किया। तभी कुंती की ममता उमड़ पड़ी और उसने युधिष्ठिर से कर्ण को भाई के रूप में जलदान करने का आग्रह किया।

युधिष्ठिर के द्वारा पूछने पर कुंती ने कर्ण के जन्म का रहस्य प्रकट कर दिया। यह जानकर कि कर्ण उनके बड़े भाई थे, युधिष्ठिर का मन भर गया और वे बोले कि ''माँ! वे हमारे अग्रज थे। कर्ण जैसे महामहिम, दानवीर, दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़-चरित्र, समर-धीर, अद्वितीय तेजयुक्त भाई को पाकर कौन धन्य नहीं होता। ''उन्होंने कठोर शब्दों में कहा कि ''तुम्हारे द्वारा इस रहस्य को छिपाने के कारण ही वे जीवनभर अपमान का घूँट पीते रहे।'' युधिष्ठिर के हृदय की इस करुण व्यंजना के साथ ही खंडकाव्य समाप्त हो जाता है।

प्रश्न–3 'कर्ण' काव्य के प्रथम सर्ग (रंगशाला में कर्ण) की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर– श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' नामक खंडकाव्य की कथावस्तु सात सर्गों में विभक्त है। कथावस्तु के आधार पर ही सर्गों का नामकरण किया गया है। इसकी कथावस्तु महाभारत के प्रसिद्ध वीर कर्ण के जीवन से संबद्ध है। प्रथम सर्ग का नाम 'रंगशाला में कर्ण' है। इस सर्ग में कर्ण के जन्म से लेकर द्रौपदी के स्वयंवर तक की कथा का संक्षेप में वर्णन है। कुंती को; जब वह अविवाहित थी; सूर्य की आराधना के फलस्वरूप एक तेजस्वी पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई। उसने लोक-लाज और कुल की मर्यादा के भय से उस शिशु को नदी की धारा में बहा दिया। नि:संतान सारथी अधिरथ उस बालक को अपना पुत्र मानकर घर ले आया। उसे भला क्या ज्ञात था कि जो बालक उसे मिला है,उसमें साक्षात् सूर्य का तेज है। यही बालक महाभारत का अजेय वीर, कर्मवीर और दानवीर कर्ण के नाम से प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा पाले जाने के कारण वह 'सूत-पुत्र' तथा पत्नी राधा के पुत्र-रूप में 'राधेय' कहलाया।

एक दिन वह बालक राजभवन की रंगशाला में पहुंच गया। सूत-पुत्र होने के कारण वहाँ उसकी वीरता का उपहास किया गया। यद्यपि वह सुंदर और सुकुमार बालक था, किंतु अर्जुन ने उसे सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया। कौरव-पांडव राजकुमारों के गुरु कृपाचार्य भी उससे घृणा करते थे।

दुर्योधन कर्ण के वीर-वेश और ओज से अत्यंत प्रभावित था। पांडवों से ईर्ष्या रखने वाले दुर्योधन ने सोचा कि इसे अपनी ओर मिला लेने से भविष्य में पांडव-पक्ष को दबाए रखना संभव हो जाएगा; अत: स्वार्थवश उसने उसे प्रेम और सम्मान प्रदान किया। इससे कर्ण के आहत मन को कुछ धीरज एवं बल मिला।

द्रौपदी के स्वयंवर में बड़े-बड़े वीर धनुर्धर आए हुए थे और स्वयंवर की प्रतिभा के अनुसार लक्ष्य वेध करना था। जब कर्ण मत्स्य-वेध करने उठा, तब द्रौपदी ने भी उसको निम्न जाति का कहकर अपमानित किया—

सूत-पुत्र के साथ न मेरा गठबंधन हो सकता।
क्षत्राणी का प्रेम न अपने गौरव को खो सकता।।

इस प्रकार दूसरी बार एक नारी द्वारा अपमानित होकर भी वह मौन ही रहा, किंतु क्रोध की चिंगारी उसके नेत्रों से फूटने लगी। सूर्य की ओर बंकिम दृष्टि करके,उसने मन-ही-मन अपने अपमान का बदला देने का प्रण कर लिया।

प्रश्न–4 'कण' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग (द्यूतसभा में द्रौपदी) का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा अपनी भाषा में लिखिए।**

उत्तर– द्वितीय सर्ग में अर्जुन द्वारा मत्स्य-वेध से लेकर द्रौपदी के चीर-हरण तक का कथानक वर्णित है। द्रौपदी के स्वयंवर में ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन ने मत्स्य-वेध करके द्रौपदी का वरण कर लिया। बाद में जब भेद खुला तो अन्य राजागण ईर्ष्या से प्रेरित हो गए, किंतु द्रौपदी अर्जुन को पाकर धन्य थी। द्रौपदी पाँचों पांडवों की वधू बनकर आ गई। विदुर के समझाने-बुझाने पर युधिष्ठिर को हस्तिनापुर का आधा राज्य मिल गया।

युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया। यज्ञ में आमंत्रित दुर्योधन उनके यश-वैभव और राज्य की सुव्यवस्था देखकर ईर्ष्या व द्वेष से जलने लगा। दुर्योधन ने जैसे ही सभाभवन में प्रवेश किया तो उसे जहाँ जल भरा था, वहाँ स्थल का और जहाँ स्थल था, वहाँ जल का भ्रम हो गया। इस पर द्रौपदी ने व्यंग्य किया, जिस पर दुर्योधन क्षोभ से भर गया।

वापस आकर उसने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर शकुनि की सलाह से द्यूत-क्रीड़ा की योजना बनाई और पांडवों को आमंत्रित किया। इस द्यूत-क्रीड़ा में युधिष्ठिर; सारा राजपाट, भाइयों और अंत में द्रौपदी को भी हार बैठे। दुर्योधन की आज्ञा से दु:शासन द्रौपदी को भरी सभा में बाल पकड़कर घसीटता हुआ लाया। द्रौपदी ने बहुत अनुनय-विनय की, परंतु इस दुष्कृत्य को देखकर भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, पांडव तथा सभी सभासद मौन रह गए। कर्ण और दुर्योधन की प्रसन्नता का ठिकाना न था।

कर्ण ने बदले का उपयुक्त अवसर जानकर दु:शासन को उत्तेजित किया और द्रौपदी को निर्वस्त्र करने का कहा। विकर्ण से यह अन्याय सहन नहीं हुआ, उसने अन्याय का विरोध किया, परंतु कर्ण को अपना प्रतिशोध लेना था। वह बोला— विकर्ण, यह कुलवधू नहीं, दासी है। पाँच पतियों वाली कुलवधू कैसी? उसने दु:शासन को आज्ञा दी—

दु:शासन मत ठहर, वस्त्र हर ले कृष्णा के सारे।
वह पुकार ले रो-रोकर, चाहे वह जिसे पुकारे।।

कर्ण ने दु:शासन को इस प्रकार उत्तेजित तो किया परंतु बाद में अपने इस दृष्कृत्य के लिए वह आजीवन पछताता रहा।

प्रश्न–5 'कर्ण' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग (कर्ण द्वारा कवच-कुंडल दान) की कथा का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण द्वारा कवच-कुंडल दान के प्रसंग को लिखिए।**
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण की दानशीलता का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– तृतीय सर्ग में दुर्योधन द्वारा वैष्णव-यज्ञ करने से लेकर, कर्ण द्वारा अर्जुन-वध की प्रतिज्ञा तथा कवच-कुंडल दान करने तक का कथानक है। दुर्योधन ने चक्रवर्ती सम्राट का पद ग्रहण करने के लिए वैष्णव-यज्ञ किया। कर्ण ने प्रतिज्ञा की कि मैं जब तक अर्जुन को नहीं मार दूँगा, तब तक कोई भी याचक मुझसे जो कुछ भी माँगेगा, मैं उसे वह दान में दे दूँगा, मांस-मदिरा का सेवन नहीं करूँगा, अपने चरण भी नहीं धुलवाऊँगा और न ही शांति से बैठूँगा। युधिष्ठिर को इस प्रतिज्ञा से चिंता हुई, जबकि दुर्योधन की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। कर्ण के पास जन्मजात कवच-कुंडल थे, जिनके रहते उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता था। अर्जुन इंद्र के पुत्र थे, अत: इंद्र को अपने पुत्र के प्राणों की चिंता हुई। वह ब्राह्मण का वेश बनाकर कर्ण के पास आ गए और कवच-कुंडल का दान माँगा। सूर्य ने यद्यपि अपने पुत्र कर्ण को स्वप्न में इंद्र की इस चाल के प्रति सावधान कर दिया था, तथापि दानवीर कर्ण ने उनसे साफ-साफ कह दिया—

ब्राह्मण माँगे दान, कर्ण ले निज हाथों को मोड़।

कोई भी याचक बनकर यदि मुझसे मेरे प्राण भी माँगे तो वह भी मेरे लिए अदेय नहीं। कर्ण ने इंद्र की याचना पर जन्म से प्राप्त अपने दिव्य कवच-कुंडल सहर्ष शरीर से काटकर दे दिए। ये ही कर्ण की जीवन-रक्षा के सुदृढ़ आधार थे।

प्रश्न–6 'कर्ण' खंडकाव्य के 'श्रीकृष्ण और कर्ण' नामक चतुर्थ सर्ग की कथा (कथावस्तु या कथानक) का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण और कर्ण के बीच हुए वार्तालाप का उद्धरण देते हुए चतुर्थ सर्ग की कथा संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर– चतुर्थ सर्ग में श्रीकृष्ण द्वारा कौरव-पांडवों का समझौता कराने, समझौता न होने पर कर्ण को कौरव पक्ष से युद्ध न करने के लिए समझाने के असफल प्रयास का वर्णन है। श्रीकृष्ण पांडवों की ओर से कौरवों की राजसभा में दूत के रूप में न्याय माँगने गए, किंतु दुर्योधन ने बार-बार यही कहा कि युद्ध के अतिरिक्त अब और कोई रास्ता नहीं है। श्रीकृष्ण निराश होकर कर्ण को कुछ दूर तक रथ में अपने साथ लाते हैं और उसे समझाते हैं कि तुम पांडवों के भाई हो; अत: अपने भाइयों के पक्ष का समर्थन करो। तुम धर्मप्रिय, बुद्धिमान और धनुर्धर हो। तुम पापी और दुराचारी का साथ मत दो। तुम मेरे साथ पांडवों के पक्ष में चलो और सम्राट का पद प्राप्त करो।

कर्ण की आँखों में वेदना के आँसू उमड़ आए। वह बोला कि मुझे आज तक घृणा, अनादर और अपमान ही मिला है। 'मैं कुंती का पुत्र हूँ।' यह कहने के तो कुंती के पास कई अवसर आए—

यों न उपेक्षित होता मैं, यों भाग्य न मेरा सोता।
स्नेहमयी जननी ने यदि रंचक भी चाहा होता।।
घृणा, अनादर, तिरस्क्रिया, यह मेरी करुण कहानी।
देखो, सुनो कृष्ण! क्या कहता इन आँखों का पानी।

कर्ण आगे कहता है कि आज अधिरथ मेरे पिता और राधा मेरी माँ हैं। इन्हें छोड़कर कैसे मैं कुंती को अपनी माँ के रूप में ग्रहण कर लूँ? कैसे मैं मित्र दुर्योधन के प्रति कृतघ्न बनूँ, जिसने मुझ पर अपूर्व उपकार किया है? तुम अर्जुन को महावीर, अदम्य और अजेय कहते हो, लेकिन अर्जुन की वीरता तुम्हारे ही बल से है, अन्यथा वह कुछ भी नहीं। मैं जानता हूँ, जिधर तुम हो, विजय उधर ही होगी। अर्जुन से जाकर कह देना कि अब तो मेरे पास कवच और कुंडल भी नहीं हैं, किंतु मेरा पुरुषार्थ और आत्मबल ही मुझे यह बलिदान देने के लिए प्रेरित कर रहा है। आप यह बात कभी युधिष्ठिर से मत कहिएगा कि मैं उनका बड़ा भाई हूँ, अन्यथा वे यह राज-पाट छोड़ देंगे और दुर्योधन का कृतज्ञ होने के कारण मैं सब कुछ उसके चरणों पर धर दूँगा।

बहुत दिनों से मुझे एक आत्मग्लानि रही है कि द्रौपदी भरी सभा में अपमानित हुई थी और मैंने ही वह दुष्कर्म कराया था। अत: इस शरीर को त्यागकर अपने इस दुष्कर्म का प्रायश्चित करुँगा।

प्रश्न–7 'कर्ण' खंडकाव्य के 'माँ-बेटा' नामक पंचम सर्ग की कथा का सारांश अथवा कथानक लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण तथा कुंती के वार्तालाप का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– पंचम सर्ग में कुंती द्वारा कर्ण के पास जाने का वर्णन है। महाभारत का युद्ध प्रारंभ होने में पाँच दिन शेष हैं। पांडवों के लिए

चिंतित कुंती बहुत सोच-विचारकर कर्ण के आश्रम पहुँचती है। कुंती के कुछ कहने से पहले ही कर्ण ने उसे अपने जीवनभर की पीड़ा को साकार करते हुए 'सूत-पुत्र राधेय' कहकर प्रणाम किया। कुंती की आँखों में आँसू आ गए। उसने कहा कि तुम कुंती-पुत्र और पांडवों के बड़े भाई हो। आज अपने भाइयों में मिलकर दुर्योधन का कपटजाल तोड़ दो। कर्ण ने अपने हृदय की ज्वाला माँ के सम्मुख स्पष्ट कर दी–

क्यों तुमने उस दिन न कहा, सबके सम्मुख ललकार।
कर्ण नहीं है सूत-पुत्र, वह भी है राजकुमार।।

स्वयं कुंती के सम्मुख राजभवन में अपमान, स्वयंवर सभा में अपमान तथा सर्वत्र सूत-पुत्र कहलाने की उसकी पीड़ा उभर आई। वह बोला कि मेरे अपमानित और लांछित होते समय तुम्हारा पुत्र प्रेम कहाँ गया था? मैं अपने मित्र दुर्योधन का कृतज्ञ हूँ, मैं उसे धोखा नहीं दे सकता। कर्ण की वाणी सुनकर कुंती की आँखों में आँसुओं की धारा बहने लगी। वह मौन खड़ी थी, कर्ण ने कहा कि यद्यपि भाग्य मेरे साथ बहुत खिलवाड़ कर रहा है फिर भी यह विडंबना ही होगी कि एक माता अपने पुत्र के द्वार से खाली हाथ लौट जाए। उसने कहा कि मैंने केवल अर्जुन को ही मारने की प्रतिज्ञा की है। मैं तुम्हे वचन देता हूँ कि मैं अर्जुन के अतिरिक्त किसी पांडव को नहीं मारूँगा। मेरे हाथों यदि यदि अर्जुन मारा गया तो तुम अपनी इच्छानुसार उसका रिक्त स्थान मुझसे भर सकती हो और यदि मैं स्वयं मारा गया तो तुम पाँच पांडवों की माता तो रहोगी ही। इच्छित वरदान पाकर कुंती लौट गई, परंतु वह कर्ण के मन में विचारों का तूफान उठा गई।

प्रश्न–8 'कर्ण' खंडकाव्य के 'कर्ण-वध' नामक षष्ठ सर्ग की कथा को संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर भीष्म पितामह तथा कर्ण के बीच हुए संवाद का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य की सबसे प्रमुख घटना का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'कर्ण अपने प्रण व धुन का पक्का था' खंडकाव्य के आधार पर इसकी पुष्टि कीजिए।**

उत्तर– इस सर्ग में महाभारत का युद्ध आरंभ होने से लेकर कर्ण के मृत्यु तक की कथा का वर्णन है। पाँच दिन बाद महाभारत का युद्ध हुआ। भीष्म पितामह कौरवों के सेनापति बनाए गए। वे इस शर्त पर सेनापति बने कि वे कर्ण का सहयोग नहीं लेंगे; क्योंकि वह कपटी, अत्याचारी, अधिरथी तथा अभिमानी है। कर्ण ने उनका प्रण सुनकर प्रतिज्ञा की कि वह भीष्म पितामह के जीवित रहते शस्त्र ग्रहण नहीं करेंगे अन्यथा सूर्य-पुत्र नहीं कहलाएँगे। भीष्म प्रतिदिन अकेले दस सहस्र वीरों को मारते थे, किंतु दसवें दिन बाणों से घायल होकर वे शर-शय्या पर गिर पड़े। कर्ण ने भीष्म पितामह के पास पहुँचने पर उन्होंने कर्ण को भर आँख निहारने की इच्छा प्रकट की, उसे जल के भँवर में नाव खेने वाला कहा तथा उसे दानवीर,धर्मवीर और महावीर बतलाया–

घूर्ण्य काल-जल में बस तू ही नौका खेने वाला।
दानवीर तू, धर्मवीर तू, तू संबल आरत का।
जो न कभी बुझ सकता, वह दीप महाभारत का।।

भीष्म पितामह ने कहा कि मैंने तेरा सूत-पुत्र कहकर तिरस्कार किया, केवल इसलिए कि तुम किसी भी तरह इस युद्ध से विरत हो जाओ और दुर्योधन अपने इस युद्धरूपी कांड में सफल न हो सके। उन्होंने पुन: कहा कि तुम यह संदेश छोड़ दो कि तुम सूत-पुत्र हो। तुम भी अर्जुन आदि की तरह कुंती के ही पुत्र हो। हमारी इच्छा यही है कि तुम पांडवों से मिल जाओ। कर्ण ने अपने को प्रतिज्ञाबद्ध बताते हुए ऐसा करने से मना कर दिया। उसने पितामह से कहा कि विधि के लिखे हुए को कौन बदल सकता है? मुझसे भी मेरा मन यही कहता है कि मैं अपनी मृत्यु की कहानी स्वयं लिख रहा हूँ। किंतु यह भी सत्य है पितामह कि मैं अपना साहस नहीं छोड़ूँगा। भले ही उस ओर कृष्ण हों, किंतु अर्जुन को मारने हेतु मैं हर प्रयास करूँगा। यह सुनकर पितामह ने कर्ण की जय-जयकार की और उसके मार्ग के समस्त अमंगलों को दूर होने की कामना की। उसे अपने शस्त्रास्त्र उठाकर दुर्योधन का स्वप्न पूर्ण करने के लिए कहा।

भीष्म के बाद द्रोणाचार्य को सेनापति नियुक्त किया गया। पन्द्रहवें दिन वे भी वीरगति को प्राप्त हुए। युद्ध के सोलहवें दिन कर्ण कौरव दल के सेनापति बने। उनकी भयंकर बाण-वर्षा से पांडव विचलित होने लगे, तभी भीम का पुत्र घटोत्कच भयंकर मायापूर्ण आकाश युद्ध करता हुआ कौरव सेना पर टूट पड़ा। घटोत्कच के भीषण प्रहार से कौरव सेना में त्राहि-त्राहि मच गई। उन्होंने रक्षा के लिए कर्ण को पुकारा। कर्ण ने अमोघ-शक्ति का प्रहार कर घटोत्कच को मार डाला। इस अमोघ-शक्ति का प्रयोग वह केवल अर्जुन पर करना चाहता था, किंतु परिस्थितिवश उसे उसका प्रयोग घटोत्कच पर करना

पड गया। वह सोचने लगा, यह सब कुछ कृष्ण की माया है, अब अर्जुन की विजय निश्चित है। थोड़ा-सा दिन शेष था। अचानक कर्ण के रथ का पहिया पृथ्वी में धँस गया। सारथी प्रयास करने पर भी रथ का पहिया न निकाल सका, तब कर्ण रथ से उतरकर स्वयं पहिया निकालने लगा। तभी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को प्रहार करने के लिए आदेश दिया; क्योंकि युद्ध में धर्म-अधर्म का विचार किए बिना शत्रु को परास्त करना चाहिए। आदेश पाते ही अर्जुन ने नि:शस्त्र कर्ण का बाण-प्रहार से वध कर दिया। कर्ण की मृत्यु पर श्रीकृष्ण भी अश्रुपूर्ण नेत्रों से रथ से उतर 'कर्ण! हाय वसुसेन वीर' कहकर दौड़ पड़े।

प्रश्न-9 'कर्ण' खंडकाव्य के 'जलांजलि' नामक सप्तम सर्ग की कथा का सार लिखिए।

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण के संबंध में युधिष्ठिर और कुंती के मध्य हुए वार्तालाप को अपने शब्दों में लिखिए।**

***अथवा* ऐसा कीर्तिवान भाई पा होता कौन न धन्य।**
किंतु आज इस पृथ्वी पर, हतभाग्य न मुझ-सा अन्य।।

-उक्त पंक्तियों में व्यक्त वेदना का भाव पठित खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर सप्तम सर्ग का मार्मिक चित्रांकन कीजिए।**

उत्तर- सप्तम सर्ग में युद्ध की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर द्वारा कर्ण को जलांजलि देने की कथा का वर्णन है। कर्ण के वीरगति प्राप्त करते ही कौरव सेना का मानो प्रदीप बुझ गया। वे शक्तिहीन हो गए। सेना अस्त-व्यस्त हो गई। कर्ण के बाद शल्य सेनापति बने परंतु वे भी युधिष्ठिर द्वारा मारे गए। अंत में गदा युद्ध में भीम द्वारा दुर्योधन भी मारा गया। युद्ध की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर ने अपने भाइयों का जलदान किया, तभी कुंती की ममता उमड़ पड़ी और उसने युधिष्ठिर से कर्ण को सबसे बड़े भाई के रूप में जलदान करने का आग्रह किया। युधिष्ठिर उसके इस आग्रह पर चकित रह गए।

युधिष्ठिर द्वारा पूछने पर कुंती ने कर्ण के जन्म और उसको नदी में बहाए जाने का रहस्य प्रकट कर दिया। यह भी बताया कि वह कर्ण से मिलकर यह रहस्य उस पर स्पष्ट कर चुकी है। यह जानकर कि कर्ण उनके बड़े भाई थे, युधिष्ठिर का मन भर आया और वे बोले कि ''माँ! वे हमारे अग्रज थे। कर्ण जैसे महामहिम, दानवीर, दृढ़प्रतिज्ञ, दृढ़-चरित्र, समर-धीर, अद्वितीय तेजयुक्त भाई को पाकर कौन धन्य नहीं होता। किंतु आज हमारे जैसा हतभाग्य और कौन है?'' उन्होंने कठोर शब्दों में कुंती को इस बात के लिए दोषी ठहराया और कहा कि तुम्हारे द्वारा इस रहस्य को छिपाने के कारण ही वे जीवन भर अपमान का घूँट पीते रहे। उन्होंने बड़े आदर से कर्ण का स्मरण करते हुए जलदान किया और अपने मन की पीड़ा इस प्रकार व्यक्त की-

मानव को मानव न मिला, धरती को धृति धीर।
भूलेगा इतिहास भला, कैसे यह गहरी पीर।।

युधिष्ठिर के हृदय की इस करुण व्यंजना के साथ ही खंडकाव्य समाप्त हो जाता है।

प्रश्न-10 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर नायक कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र उद्घाटित कीजिए।**

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण के चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए और बताइए कि इन्हें जीवनभर अपने किस कृत्य के प्रति ग्लानि रही?**

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण की वीरता का सोदाहरण प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण के उत्कृष्ट व्यक्तित्व की तीन या चार चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कर्ण की दानशीलता पर प्रकाश डालते हुए उसके अन्य गुणों पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'कर्ण सच्चे दानवीर, युद्धवीर तथा प्राणवीर थे।' इस कथन की पुष्टि 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।**

उत्तर- श्री केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' नामक खंडकाव्य का नायक महाभारत का अजेय योद्धा कर्ण है। इस काव्य में कर्ण के जन्म से लेकर मृत्यु तक की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है। कर्ण की वीरता और उसके जीवन के करुण पक्ष का वर्णन करना ही कवि का लक्ष्य है। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

1. अद्वितीय दानी–कर्ण अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध था। उसने प्रण किया था कि जब तक वह अर्जुन का वध नहीं कर लेगा, तब तक जो भी याचक उससे जो कुछ माँगेगा, वह उसे देगा। उसके पिता सूर्य ने समझाया कि कपटी इंद्र को अपने कवच-कुंडल देकर अपनी शक्ति क्षीण न करो, परंतु उसने सहर्ष इंद्र को अपने कवच-कुंडल पकड़ा दिए। वह कहता है कि धरती भले ही काँप उठे, आकाश फटने लगे; किंतु कर्ण अपनी दानशीलता से कभी पीछे नहीं हट सकता—

चाहे पलट जाए पलभर में महाकाल की धारा।
वीर कर्ण का किंतु न झूठा हो सकता प्रण प्यारा।।

कवच कुंडल देकर उसने स्वयं अपनी मृत्यु बुला ली, परंतु अपनी दानशीलता नहीं छोड़ी।

2. स्नेह और ममता का भूखा– कर्ण जीवनभर अपनी माता, भाई और गुरुजनों का स्नेह न पा सका। उनसे उसे केवल लांछन और तिरस्कार ही मिला। उसका हृदय सदा माँ की ममता पाने को तरसता रहा। वह कुंती से कहता है—

यों न उपेक्षित होता मैं, यों भाग्य न मेरा सोता।
स्नेहमयी जननी ने यदि रंचक भी चाहा होता।।

3. पग-पग पर अपमानित– वीर कर्ण समाज में सूत-पुत्र के रूप में जाना गया। राजभवन में राजकुमार अर्जुन ने उसे राधेय, सूत-पुत्र कहकर अपमानित किया तथा स्वयंवर-सभा में द्रौपदी ने मत्स्य-वेध करने से रोककर उसको अपमानित किया। माता कुंती उसका इस प्रकार अपमान होते देखकर भी उसे अपना न सकी। ऐसे अपमानों से उसका हृदय प्रतिशोध की अग्नि में जल उठा। वह श्रीकृष्ण से अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहता है—

घृणा, अनादर, तिरस्क्रिया, यह मेरी करुण कहानी।
देखो, सुनो कृष्ण क्या कहता, इन आँखों का पानी।।

4. जन्म से परित्यक्त– अविवाहित कुंती ने सूर्य की उपासना के फलस्वरूप सूर्य के तेजस्वी अंश को पुत्र-रूप में प्राप्त किया था। कुंती द्वारा त्याग दिए जाने के कारण वह माता के स्नेह से तो वंचित न रहा किंतु सूत-पुत्र कहलाए जाने के कारण आजीवन लांछित होता रहा। यह जानकर कि कुंती पुत्र है, जिसको उसने लोक-समाज के लिए हृदय पर पत्थर रखकर त्याग दिया था, उसकी व्यथा और भी बढ़ गई।

5. अद्वितीय तेजवान्– कर्ण सूर्य-पुत्र है; अत: स्वभवत: तेजस्वी है। उसका कमलमुख राजकुमारों की शोभा को हरण करने वाला है। युधिष्ठिर जलांजलि सर्ग में कहते हैं—

अद्वितीय था तेज, और अनुपम था उनका ओज।
हाय कहाँ मैं पाऊँ उनका पावन चरण-सरोज।।

कुंती उसके तेजस्वी व्यक्तित्व को देखकर विस्मित और गद्‌गद हो गई थी वह अपने पुत्र की शोभा देखती ही रह जाती है। कवि ने इसका वर्णन करते हुए लिखा है—

एक सूर्य था उगा गगन में ज्योतिर्मय छविमान।
और दूसरा खड़ा सामने पहले का उपमान।।

6. करुणामय जीवन– कर्ण का संपूर्ण जीवन करुणा से पूर्ण था। जन्म होते ही उसे माता ने त्याग दिया। राजभवन में सूत-पुत्र होने के कारण उसे अपमानित होना पड़ा। द्रौपदी के द्वारा किए गए अपमान का घूँट पीना पड़ा। जीवनभर माता, भाई और गुरुजनों के स्नेह से वंचित रहना पड़ा। सगे भाईयों के विरुद्ध हथियार उठाने पड़े। अजेय-योद्धा होते हुए भी वह अन्यायपूर्वक मारा गया। इस प्रकार पूरे काव्य में वीर कर्ण के जीवन का करुण पक्ष ही उभारा गया है।

7. विवेकी और कृतज्ञ– कृष्ण ने कर्ण को पांडवों का पक्ष लेने के लिए बहुत समझाया, किंतु उसने उपकारी मित्र दुर्योधन से छल करना उचित नहीं समझा। वह दुर्योधन के उपकार को न भूलकर आजीवन उसके साथ रहता है। वह कृष्ण से कहता है—

मैं कृतज्ञ हूँ दुर्योधन का, उपकारों से हारा।
राजपाट उसके चरणों पर, चुप धर दूँगा सारा।।

8. पश्चात्ताप से युक्त– कर्ण को द्रौपदी का भरी सभा में कराया गया अपमान सदैव कष्ट देता रहा। वह कृष्ण से कहता है—

धिक् कृतज्ञता को जिसने, ऐसा दुष्कर्म कराया।
प्रायश्चित करूँगा केशव, छोड़ नीच यह काया।।

9. अजेय योद्धा– कर्ण महान् पराक्रमी और अजेय योद्धा था। उसके रण–कौशल से सभी परिचित थे। अर्जुन के वध की उसकी प्रतिज्ञा सुनकर दुर्योधन को प्रसन्नता और पांडवों को भय उत्पन्न हुआ था। इंद्र भी कर्ण के पराक्रम के कारण उसके द्वारा अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा से चिंतित थे। कृष्ण भी कर्ण की युद्ध–कुशलता से परिचित थे; अत: अर्जुन को नि:शस्त्र कर्ण पर धर्म–विरुद्ध प्रहार करने का आदेश देते हैं। कर्ण के पराक्रम तथा शौर्य की प्रशंसा शर–शय्या पर भीष्म पितामह भी करते हैं।

10. आत्मविश्वासी– कर्ण को अपने शौर्य और पराक्रम पर अविचल आत्मविश्वास है। वह कृष्ण से कुंती से और भीष्म से बातें करते हुए आत्मविश्वासपूर्वक अर्जुन का वध करने को कहता है। उसने कृष्ण को स्पष्ट कह दिया था कि भले ही अब उसके पास कवच–कुंडल नहीं हैं, किंतु आत्मबल और आत्मविश्वास अब भी है।

11. प्रतिशोध की भावना से दग्ध– स्वाभिमानी और वीर कर्ण को कदम–कदम पर अपमान और तिरस्कार सहना पड़ा। उसने प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर द्रौपदी को निर्वस्त्र करने के लिए दु:शासन को उकसाया। राजभवन में हुए अपमान के कारण ही उसने अर्जुन का वध करने का निश्चय किया। पांडवों का भाई होने पर भी प्रतिशोध की भावना ने ही उसकी स्नेह–भावना को नहीं जगने दिया।

12. दृढ़ प्रतिज्ञ– कर्ण ने जो भी प्रण किया, उसे पूरा किया। अर्जुन का वध होने तक उसने दान का व्रत लिया था, जिसे उसने अपने कवच–कुंडल देकर भी पूर्ण किया। कुंती को चारों भाइयों की रक्षा का वचन दिया था, उसे भी उसने युद्ध के समय निभाया–

किंतु न अपना प्रण भूले थे, वीर कर्ण पलभर भी।
भीम नकुल का धर्मराज का, किया न वध पाकर भी।।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि कर्ण महाभारत के वीरों का सिरमौर है, फिर भी उसे नियतिवश अपमान, तिरस्कार और छल–प्रपंच का शिकार होना पड़ा। इस प्रकार कर्ण के जीवन का करुण पहल अत्यधिक मार्मिक है।

प्रश्न–11 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर भीष्म पितामह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– भीष्म पांडव और कौरवों के पूज्य एवं परमादरणीय पितामह थे। कौरव और पांडव दोनों ही उन्हें श्रद्धा से पितामह कहते थे। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

1. परम नीतिज्ञ– भीष्म पितामह कर्तव्यपरायण होने के साथ–साथ बड़े नीतिज्ञ भी थे। वे पूर्ण मन से कौरवों का साथ नहीं दे पा रहे थे, क्योंकि वे जानते थे कि कौरव अनीति के मार्ग पर चल रहे हैं। वे नहीं चाहते थे कि युद्ध में जीत कौरवों की हो। कर्ण को वे नीच, अर्धरथी और अभिमानी इसीलिए कहते हैं जिससे कर्ण का तेज कम हो जाए, क्योंकि वे उसकी युद्ध कुशलता और दुर्योधन के प्रति पूर्ण निष्ठा को भली–भाँति जानते थे। उनकी इस नीति का प्रभाव भी हुआ; क्योंकि कर्ण ने यह प्रतिज्ञा की कि पितामह के जीते जी वह युद्ध में शस्त्र नहीं उठाएगा।

2. शौर्य तथा पराक्रम के प्रेमी– शर–शय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह कर्ण के शौर्य और वीरता की बड़ी प्रशंसा करते हैं तथा कर्ण के प्रति कहे गए अपमानजनक शब्दों पर पश्चात्ताप करते हैं। वे वीर और पराक्रमी योद्धा का बड़ा ही सम्मान करते हैं, कर्ण की प्रशंसा वे इन शब्दों में करते हैं–

तेरे लिए फूल आदर के, खिलते मेरे मन में।
देखा तुझ सा महावीर, मैंने न कभी जीवन में।।

3. वीर शिरोमणि– भीष्म पितामह बड़े वीर और पराक्रमी योद्धा थे। महाभारत के युद्ध में उन्होंने प्रतिदिन दस हजार सैनिकों को मारने की शपथ ली थी। कौरव तथा पांडव दोनों ही उनकी वीरता के सम्मुख नतमस्तक थे।

4. न्याय एवं धर्म के समर्थक– भीष्म पितामह परिस्थितियोंवश ही कौरवों की ओर से युद्ध करते हैं। वे नहीं चाहते कि युद्ध में दुर्योधन की विजय हो। वे पांडवों से अति प्रसन्न हैं; क्योंकि पांडव सत्य, न्याय और धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं। वे अनीति तथा अन्याय से घृणा करते हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि भीष्म पितामह का चरित्र एक वीर, पराक्रमी और न्यायवादी धर्म–प्रिय योद्धा का चरित्र है।

प्रश्न–12 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– श्रीकृष्ण 'कर्ण' खंडकाव्य के एक उदात्त–चरित्र महापुरुष हैं। वे एक अवतारी पुरुष और भगवान के रूप में माने जाते हैं।

अपने अलौकिक चरित्र में उन्होंने भारतीय जन-मानस को चमत्कृत किया है तथा अपने महान एवं अनुकरणीय चरित्र से लोगों को अत्यंत प्रभावित भी किया है। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. परिस्थितियों के मर्मज्ञ– श्रीकृष्ण तो भगवान हैं। वे त्रिकालदर्शी हैं, भविष्यद्रष्टा हैं तथा परिस्थितियों को भली प्रकार समझने में सक्षम हैं। वे भली-भाँति जानते हैं कि धर्मयुद्ध में कर्ण को कोई मार नहीं सकता। तभी तो वे समय आने पर अर्जुन को कर्ण का वध करने का संकेत देते हैं। वे कहते हैं—

बाण चला दो, चूक गये तो लुटी सुकीर्ति सँजोयी।

2. पांडवों के रक्षक– श्रीकृष्ण पांडवों के परम हितैषी हैं। वे हर परिस्थिति में पांडवों की रक्षा करते हैं, क्योंकि पांडव सत्य, न्याय और धर्म के मार्ग पर चल रहे हैं, जिसकी स्थापना करने के लिए ही पृथ्वी पर उनका अवतार हुआ है। युद्ध में वे अर्जुन की रक्षा के लिए ही घटोत्कच को बुलवाते हैं और कर्ण के हाथ से उसका वध करवाकर अर्जुन का जीवन सुरक्षित करते हैं।

3. कूटनीतिज्ञ– कर्ण खंडकाव्य की प्रमुख घटनाओं में श्रीकृष्ण का विशेष हाथ है। वे पांडवों के परम हितैषी है। कृष्ण हर पल उनका ध्यान रखते हैं तथा समय-समय पर उन्हें सचेत भी करते हैं। शत्रु को नीचा दिखाना, साम, दाम, दंड, भेद की नीति द्वारा किसी भी प्रकार से उसे वश में करना वे भली प्रकार जानते हैं। कर्ण की शक्ति को जानकर ही वे जहाँ उसे साम नीति द्वारा पांडवों के पक्ष में करने का प्रयास करते हैं, वहीं दुर्योधन के अवगुणों को बताने में भेद-नीति अपनाते हैं। वे कर्ण से कहते हैं—

दुर्योधन का साथ न दो, वह रणोन्मत्त पागल है।
द्वेष, दंभ से भरा हुआ, अति कुटिल और चंचल है।।

दाम नीति का प्रयोग करते हुए वे कर्ण को प्रलोभन देते हैं—

चलो तुम्हें सम्राट बनाऊँ,अखिल विश्व का क्षण में।

कर्ण जब उनकी सभी बातों को ठुकरा देता है तो कृष्ण उसे अहंकारी भी बतलाते हैं। निश्चित ही वे सभी प्रकार की नीतियों में निष्णात हैं।

4. मायावी– कृष्ण की माया से महाभारत के सभी योद्धा परिचित है। वे महाभारत युद्ध में केवल अर्जुन के रथ के सारथी ही बने हैं और उन्होंने अस्त्र-शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा भी की, किंतु फिर भी सभी वीर योद्धा उनसे भयभीत रहते हैं। जिन बातों को बड़े-बड़े वीर प्रयत्न करके भी नहीं जान पाते, उन बातों को कृष्ण सजह रूप में ही जान लेते हैं। कर्ण भी कहता है कि कृष्ण की माया अर्जुन को तो छाया की तरह घेरे रहती है—

घेरे रहती है अर्जुन को छाया सदा तुम्हारी।

5. पराक्रम-प्रेमी– कृष्ण पराक्रमी एवं शूरवीर पुरुषों की निष्पक्ष होकर प्रशंसा करते हैं। वे कर्ण को एक अपराजेय योद्धा समझते हैं तथा उसके शौर्य की प्रशंसा करते हुए कहते हैं—

धर्मप्रिय, धृति-धर्म धुरी को तुम धारण करते रहो।
वीर, धनुर्धर धर्मभाव तुम भू-भर में भरते हो।।

अत: कृष्ण की चरित्र एक अलौकिक पुरुष, कूटनीतिज्ञ, पराक्रमी तथा अनेक सद्‌गुणों से युक्त है।

प्रश्न–13 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर प्रमुख नारी पात्र 'कुंती' का चरित्र चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'कर्ण' खंडकाव्य के आधार पर कुंती के चरित्र की किन्हीं तीन विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– कविवर केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' द्वारा रचित 'कर्ण' खंडकाव्य की कुंती प्रमुख स्त्री-पात्र है। वह महाराज पांडु की पत्नी तथा पांडवों की माता है। खंडकाव्य से उसके चरित्र की अधोलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं—

1. ममतामयी माँ– 'कर्ण' खंडकाव्य में कुंती के मातृत्व की बहुपक्षीय झाँकी देखने को मिलती है। वह एक कुँवारी माँ है, जो अपनी ममता का गला स्वयं ही घोटती है। महाभारत के युद्ध में जब वह देखती है कि भाई-भाई ही एक-दूसरे को मारने हेतु तत्पर हैं, तब वह अपने पुत्र पांडवों की रक्षा के लिए कर्ण के पास जाती है और उससे तिरस्कृत भी होती है। फिर भी कर्ण के प्रति उसका वात्सल्य भाव रोके नहीं रुकता। वह कर्ण से कहती है—

माँ कहकर झंकृत कर दो मेरे प्राणों का तार।

जलदान के अवसर पर वह युधिष्ठिर से कर्ण का जलदान करने के लिए आग्रह करती है।

2. अभिशप्त माता– खंडकाव्य के प्रारंभ में ही कुंती एक कुँवारी माँ की शापित स्थिति में सम्मुख आती है, जो सामाजिक निंदा और भय से व्याकुल है। अपने नवजात पुत्र के प्रति उसके हृदय में ममता का अजस्त्र स्रोत फूट रहा है, किंतु वह लोक-लाज के भय से विवश होकर अपने पुत्र को गंगा नदी की धारा में बहा देती है।

3. एक दु:खिया माँ– खंडकाव्य में कुंती को एक दु:खी माँ के रूप में दर्शाया गया है। उसके पुत्र पांडवों को उनका राज्यांश नहीं मिल रहा है तथा विवश होकर उनको कौरवों से युद्ध करना पड़ रहा है। कुंती इससे भयभीत तथा दु:खी है। वह कर्ण के पास जाती है और उस पर उसकी माँ होने का पूरा राज खोल देती है। कर्ण उसे ताना मारता है, दुर्योधन का साथ न छोड़ने को कहता है तथा अर्जुन का वध करने की अपनी प्रतिज्ञा को भी दोहराता है। अंतत: उदास तथा दु:खी होकर कुंती वापस लौट आती है।

4. चिंतित माँ– कौरव और पांडवों में युद्ध होने वाला है। कर्ण अर्जुन को मारने की प्रतिज्ञा कर चुका है। कुंती इस चिंता में अति व्याकुल है कि युद्ध भूमि में उसके पुत्र ही एक-दूसरे के विरुद्ध लड़ेंगे और मृत्यु को प्राप्त होंगे।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कुंती परिस्थितियों की मारी एक सच्ची माँ है, जो अपनी ममता को गहरा दफनाकर भी दफना नहीं पाती।

उसका मातृरूप कई रूपों में हमारे सामने आता है, जो भारतीय नारी की सामाजिक और पारिवारिक विवशताओं को मार्मिक अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

4. मातृभूमि के लिए (डॉ.जयशंकर त्रिपाठी)

मुजफ्फरनगर, मुरादाबाद, लखीमपुर, शाहजहाँपुर, गोरखपुर, मैनपुरी जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य की कथावस्तु/कथानक संक्षेप (कथासार) में लिखिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के प्रेरक प्रसंगों (दो प्रमुख प्रेरक-घटनाओं) का संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का कथानक एवं उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर बताइए कि चंद्रशेखर आजाद ने क्या प्रतिज्ञा की थी और उसकी पूर्ति हेतु उन्होंने क्या प्रयास किया? आपको इससे क्या प्रेरणा मिलती है?**

***अथवा* तन मन धन बलिदान था, राष्ट्र-मुक्ति के हेतु।**
बालक वह रचने लगा, नयी क्रांति के सेतु॥

– उक्त पंक्तियों में व्यक्त भाव की पुष्टि पठित खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि अंग्रेजों ने भारतवर्ष पर बहुत अत्याचार किए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर बताइए कि अंग्रेजों का शासन कैसा था?**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर आजाद के आरंभिक जीवन का परिचय दीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर आजाद के जीवन की प्रमुख घटनाओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर तत्कालीन भारत की स्थिति का वर्णन संक्षेप में कीजिए।**

उत्तर– (इस प्रश्न के उत्तर हेतु तीनों सर्गों की कथा के सारांश का अवलोकन करें।)

प्रश्न–2 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग का सारांश लिखिए।

***अथवा* 'सम्मान-हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा,**
यह प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा।'

–इन पंक्तियों में व्यक्त संकल्प की पुष्टि 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के 'संकल्प' सर्ग की कथावस्तु लिखिए।**

उत्तर– डॉ.जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का संपूर्ण कथानक तीन सर्गों में विभाजित किया गया है।

प्रस्तुत खंडकाव्य में चंद्रशेखर 'आजाद' के जीवन से संबंधित अनेक घटनाओं का वर्णन किया गया है। संक्षेप में खंडकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग (संकल्प)

स्वाधीनता से पूर्व भारतवर्ष की इस पवित्र धरती पर अंग्रेजों का साम्राज्य था। ब्रिटिश शासन के अन्याय तथा हिंसक अत्याचारों से भारत की जनता कराह रही थी। देश के सभी उद्योग नष्ट कर दिए गए थे और किसानों को साधनहीन कर दिया गया था। राजवंशी भी अंग्रेजों के अनुयायी बनकर भोग-विलास में डूब गए थे। धीरे-धीरे भारतीयों में चेतना उत्पन्न हुई और भारत की जनता अपनी जन्मभूमि की रक्षा व भारत को स्वतंत्र कराने के लिए तैयार हो गई। अनेक व्यक्तियों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। कितने ही बच्चों ने अपने जीवन का बलिदान किया। जनता तिलक और गाँधी जैसे महान् नेताओं के नेतृत्व में आगे बढ़ रही थी। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन को भी भारतीय जनता ने पूर्ण सहयोग दिया। प्रतिरोधस्वरूप ब्रिटिश शासन ने भारतीयों के विरुद्ध निर्ममतापूर्वक अपना दमन-चक्र चलाया। ब्रिटिशकाल के इसी दमन-चक्र के समय चंद्रशेखर आजाद का नाम प्रकाश में आया। चंद्रशेखर 'आजाद' का जन्म झाबरा ग्राम में हुआ था। इस गाँव में मुसलमान और भील जातियाँ रहती थीं। ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ यह बालक काशी नगरी में विद्याध्ययन के लिए गया। छात्र चंद्रशेखर आजाद का हृदय अंग्रेजों के अत्याचारों से व्याकुल हो उठता था। इसी समय लंदन में बैठे-बैठे ही मि० रौलट ने हिंदुस्तान को मिटाने के लिए 'रौलट एक्ट' बना डाला। 'रौलट एक्ट' के अनुसार राष्ट्रभक्तों पर राजद्रोह का अभियोग लगाकर दंडित किया जाता था तथा इनकी जमानत के लिए कोई भी कानून नहीं बनाया गया था। इस प्रकार की कानूनी धारा को तोड़ने का सभी ने प्रण कर लिया। रौलट एक्ट के विरोध में कई सभाएँ आयोजित की गई। ऐसी ही एक सभा में उन्होंने जनता का आह्वान किया—

सम्मान-हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा।
यह प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा।।

पंजाब में विद्रोह ने उग्र रूप धारण कर लिया था। सन् 1919 ई. के अप्रैल माह में वैशाखी का पर्व था। जनता में आक्रोश व्याप्त था। जलियाँवाला बाग की सभा में स्त्री, पुरुष व बच्चे सभी सम्मिलित थे। सभा में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भाषण हो रहे थे। इसी बीच जनरल डायर के आदेशानुसार सभा पर गोलियों की वर्षा होने लगी, फलस्वरूप अनेक नर-नारी मृत्यु की गोद में सो गए। अमृतसर का जलियाँवाला बाग रक्तरंजित हो गया। जनरल डायर को इतने में भी संतोष न हुआ। उसने कितने ही निरपराधियों को हथकड़ियाँ लगवा दी। इसके अतिरिक्त एक सौ पचास गज लंबी एक गली में से अनेक नर-नारियों को पेट के बल सरकने की यातना सहन करनी पड़ी।

प्रश्न–3 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के 'संघर्ष' वर्ग का सारांश लिखिए/वर्णन कीजिए।
***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथानक लिखिए।**

उत्तर–

द्वितीय सर्ग (संघर्ष)

आजाद सब बंधनों से मुक्त होकर एक ही बंधन में बँध गए थे, और वह एकमात्र बंधन था— राष्ट्रभक्ति का बंधन। आजाद के शौर्य को देखकर प्रकृति भी उन पर मोहित हो गई। चंद्रशेखर 'आजाद' ने युवकों में राष्ट्रीय चेतना की ज्वाला भड़का दी। जब असहयोग आंदोलन का ज्वार देश में मंद पड़ गया, तब ये सशस्त्र क्रांति की ओर मुड़ गए। इसके लिए इन्होंने पिस्तौल तथा बम का निर्माण कराया। इन वस्तुओं के लिए आजाद को धन की आवश्यकता पड़ी; अत: इन्होंने सरकारी माल तथा खजानों को लुटवा दिया। आजादी के युद्ध के लिए ड्राइवरी की आवश्यकता का अनुभव करते हुए इन्होंने मोटरगाड़ी की ड्राइवरी सीखी तथा धन के लिए एक मठाधीश के शिष्य बने। इन्होंने काकोरी में शासन का खजाना लूटा, जो एक साहसिक कदम था। इस कांड के दौरान **बिस्मिल** तथा **अशफाक** को फाँसी के फंदे पर लटका दिया गया। बख्शी को आजीवन कारावास का दंड दिया गया। पंद्रह व्यक्तियों को तीन साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। आजाद और भगत सिंह सरकारी आँखों से बच निकले। सन् 1928 ई. में 'साइमन कमीशन' भारत के झगड़ों की जांच हेतु आया। राष्ट्रीय स्वयंसेवकों ने 'साइमन कमीशन' के विरोध में आवाज उठाई, जिससे उन पर लाठियों से प्रहार किया गया। भारतीय जनता क्षुब्ध हो चुकी थी; अत: जहाँ पर भी 'साइमन कमीशन' पहुँचा, वहीं पर उसे जनता के बहिष्कार, आक्रोश तथा अवमानना का सामना करना पड़ा। लखनऊ में अंग्रेजों की लाठियों के प्रहार से जवाहरलाल भी घायल हुए। लाहौर में भी 'साइमन कमीशन' के विरोध में नारे लगाए गए। वहाँ का सारा आकाश 'साइमन कमीशन वापस जाओ' के नारों से गूँज उठा। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय काले झंडों के साथ नारे लगा रहे थे। उन पर पुलिस अफसर **स्कॉट** ने निर्ममतापूर्वक लाठियों से

प्रहार किए, जिससे घायलावस्था में ही कुछ दिन पश्चात् उनका देहावसान हो गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनते ही सारे राष्ट्र में शोक व्याप्त हो गया। इस समय पूर्वी भारत में चंद्रशेखर 'आजाद' क्रांति की ज्वाला दहका रहे थे तो पंजाब और दिल्ली में भगत सिंह।

चंद्रशेखर 'आजाद' ने दिल्ली के फिरोजशाह मेले में क्रांतिकारियों का सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार से लड़ने के लिए व्याकुल सुखदेव, बटुकेश्वर, यतीन्द्र, सरदार भगत सिंह तथा राजगुरु आदि सभी देशभक्त आए। तभी 'सोशलिस्ट गणतंत्र सैन्य' की स्थापना की गई। इसके सभी सदस्य सेनानी व्यक्ति थे। आजाद इस सेना के नायक थे। एक दिन लाहौर के पुलिस कार्यालय से एक गौरा ऑफिसर निकला, तभी सरदार भगत सिंह द्वारा गोलियों की वर्षा प्रारंभ कर दी गई। वह ऑफिसर लहूलुहान हो मृत्यु को प्राप्त हो गया। एक पुलिसकर्मी ने भगत सिंह को देख लिया, परंतु आजाद ने उसे गोली का निशाना बना दिया। अंग्रेजी शासन इस घटना से भयभीत हुआ तथा उनके द्वारा सभा में **'जनता रक्षा बिल'** लाने का प्रस्ताव रखा गया। बिट्ठलभाई पटेल सभा अध्यक्ष थे। इन्होंने स्वयं उसका विरोध किया। कुछ मास पश्चात् वह बिल संसद में रखा गया। इस अवसर पर बिट्ठलभाई पटेल ने मेरठ की घटना का ध्यान दिलाया और कहा कि यह बिल मेरठ की एक घटना के एक बिंदु पर है; तथा क्या न्यायालय में अभियोग और बिल एक साथ रखे जा सकते हैं? इस तर्क के सामने अंग्रेजी सरकार निरुत्तर हो गई। इससे सरकार की नैतिक हार हुई। 8 अप्रैल को असेंबली में बमों का धमाका हुआ। संपूर्ण हॉल धुँए से भर गया। अंग्रेज होम मेंबर जमीन पर लेट गए और अपने सर्वनाश के विषय में सोचने लगे। बमों के धमाके के साथ-साथ ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध नारे गूँज रहे थे।

भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त के शौर्यपूर्ण कार्यों से भारत का कोना-कोना निर्भीक हो गया था। वे मानवता के संत तथा शौर्य के समुद्र थे। उनके साहसपूर्ण बलिदान से भारतमाता का मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया था, लेकिन आँखें अश्रु से भीगी हुई थीं; क्योंकि दोनों वीर सेनानी स्वतंत्रता की बलिवेदी पर न्योछावर हो गए थे। अब आजाद के कंधों पर स्वतंत्रता का संपूर्ण भार आ गया था। स्वाभिमानी तथा देश के हित में लड़ने वाला वीर विजय अथवा मृत्यु दोनों में से एक का ही वरण करता है।

प्रश्न–4 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश लिखिए।

अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का वर्णन कीजिए। यह सर्ग महत्वपूर्ण क्यों हैं? स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग 'बलिदान' सर्ग का कथानक (कथावस्तु) संक्षेप में लिखिए।**

अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के मार्मिक दृश्यों का अंकन कीजिए।**

अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर 'आजाद' के 'संघर्ष' और अंतिम 'बलिदान' के दृश्य का वर्णन कीजिए।**

अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग-'बलिदान' की किस घटना ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया? कारण सहित उत्तर दीजिए।**

उत्तर– (**संकेत–** इस प्रश्न के उत्तर हेतु द्वितीय एवं तृतीय सर्ग के उत्तर का अवलोकन कीजिए।)

उत्तर–

तृतीय सर्ग (बलिदान)

प्रात:काल में चंद्रशेखर 'आजाद' अपने मित्र रुद्र के साथ चिंतामग्न बैठे हैं। वे कहते हैं कि हम कब तक गुलामखाने में बंद रहेंगे। इस पर उनके मित्र समझाते हुए कहते हैं कि अँधेरा समाप्त होगा, लेकिन तुम स्वयं अपने को बचाए रखो तथा कुछ दिन अपनी गतिविधियाँ बंद करो, तब अकस्मात् ही विस्फोट करना ठीक होगा। अंग्रेज तुम्हारे पराक्रम को देखते रह जाएँगे। इस वार्तालाप के मध्य ही सूर्य भी उदित हो आता है। सूर्य की लाली में आजाद का मुख और भी लाल हो गया। वे कहते हैं कि मैं अंग्रेजों पर शासन करके ही रहूँगा। मुझे सेना के युवकों को संगठित करना होगा। एक दिन आजाद फूलबाग की सभा में सशस्त्र क्रांति के विरुद्ध भाषण सुन रहे थे। वहीं पर खड़े विद्यार्थी जी ने उनके उत्तेजित मन को शांत किया तथा कहा—'देख आजाद! नेता की अनजानी बातों को मत सुनना।'' उन्हें भय था कि आजाद अभी सभा को भंग न कर दें। लेकिन उनका सह विचार केवल भ्रममात्र था। वे स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए शासन से अपने आपको सुरक्षित रखना चाहते थे। आजाद कहते हैं कि मैं प्रयाग में जवाहरलाल से मिलना चाहता हूँ, कानपुर में पार्टी के संकट की दशा को देखना चाहता हूँ तथा प्रयाग में इस संकट को दूर करने का उपाय सोचूँगा।

प्रयाग के उत्तरी भाग में वृक्षों के नीचे आजाद मित्रों से वार्तालाप कर रहे हैं। अल्फ्रेड पार्क के पास पुलिस की गाड़ी रुकी। आजाद ने भी मित्रों को विदा करके अपनी पिस्तौल में गोलियाँ भरीं तथा पुलिस से मोर्चा लिया। अपनी पिस्तौल की पहली

गोली से एक देशी अफसर का जबड़ा तोड़ दिया। एस० पी० अंग्रेज अफसर **नाटबावर** इस दृश्य को देखता रह गया। तभी एस० पी० ने गोली चलाने के लिए वृक्ष की ओट ली। इस समय भारत की करोड़ों जनता का वह एकांकी सिपाही ही अंग्रेज सरकार का सामना कर रहा था। गोलियों की आवाज से सारा वातावरण गूँज उठा। एक घंटे तक युद्ध चलता रहा। आजाद के पास जब अंतिम गोली शेष रह गई तो वह असमंजस में पड़ गए कि पुलिस के हाथों पकड़ा न जाऊँ। परंतु कुछ क्षण पश्चात आजाद ने गोली स्वयं की कनपटी पर दाग ली। गोली लगने पर वीर आजाद धराशाही हो गए। उनकी इस साहसिक मृत्यु में भी अंग्रेज अफसर नाटबावर को संदेह था। उसने जमीन पर गोली चलाकर यह जानना चाहा कि आजाद मृत हैं अथवा जीवित। संपूर्ण जनता आजाद की मृत्यु की घटना से अत्यंत दु:खी थी। आजाद के साहस तथा शौर्य की स्मृति आज भी जनता के मन में राष्ट्रप्रेम की भावना को प्रबल कर देती है।

प्रश्न–5 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि आजाद ने विद्यार्थी–जीवन से ही महान् साहसी होने का परिचय देना आरंभ कर दिया था।

उत्तर– 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के रचयिता डॉ. जयशंकर त्रिपाठी वर्णन करते हैं कि एक दिन चंद्रशेखर 'आजाद' ने अखबार में जलियाँवाला बाग के हत्याकांड का समाचार पढ़ा। इस समाचार को पढ़कर देशभक्त आजाद की आँखें गीली हो गईं और वे आक्रोश से भर उठे। आजाद की इस दशा को देखकर उनके एक मित्र ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हें माँ की याद आ रही है? आजाद ने उत्तर में कहा—''तूने ठीक कहा, माता की याद सताती है, भारत–जननी की।'' आजाद अपने सहपाठियों से कहते हैं कि तुम सूत्रों का रटना छोड़ो, स्वतंत्रता का पाठ पढ़ो। वे गाँधी जी के अनुयायी होने की बात कहते हैं तथा जन्मभूमि की रक्षा के लिए आत्मसमर्पण की भी प्रतिज्ञा लेते हैं। इसी उद्देश्य से चंद्रशेखर 'आजाद' ने महात्मा गाँधी द्वारा चलाए गए असहयोग आंदोलन में भाग लिया। गाँधी जी के इस अहिंसात्मक आंदोलन के दौरान भारतीय जनता ने अंग्रेजी शासन का बहिष्कार किया। असहयोग आंदोलन का प्रभाव काशी नगर तक भी जा पहुँचा, जिससे प्रभावित होकर चंद्रशेखर 'आजाद' ने विद्याध्ययन तथा सरकारी नौकरी का परित्याग कर दिया तथा देशभक्ति से नाता जोड़ लिया। युवकों ने सरकारी कार्यालयों पर धरना दिया और कॉलेजों को बंद करा दिया। युवकों की संख्या अल्प होने पर भी इनके शौर्य से ब्रिटिश–राज्य लंदन में भी आहें भरता था। अंग्रेजों द्वार प्रयुक्त की गई अश्रु–गैस तथा लाठियों की वर्षा के प्रत्युत्तर में 'भारत माता की जय' की ध्वनि से संपूर्ण वातावरण गूँज उठता था। चंद्रशेखर 'आजाद' बंदी बनाए गए तथा उन पर अभियोग चलाया गया। आजाद न्यायाधीश के सम्मुख लाए गए। मजिस्ट्रेट द्वारा नाम पूछने पर उन्होंने अपना नाम 'आजाद' बताया। चंद्रशेखर 'आजाद' के इन साहसपूर्ण उत्तरों को सुनकर मजिस्ट्रेट आश्चर्यचकित रह गया तथा उसने उनके लिए सोलह बेतों का दंड दिया। आजाद 'भारत माता की जय' के साथ सोलह बेंतों की मार को सहन कर गए। जेल से मुक्त होने के पश्चात् जनता ने उन्हें घेर लिया और उनके प्रति स्नेहभाव दर्शाया। एक सभा बुलाई गई, जिसमें बीस हजार लोग सम्मिलित थे। सभी ने आजाद को फूल–मालाओं से सम्मानित किया। उस सभा में शिवप्रसाद गुप्त तथा स्वतंत्रता–अनुरागी संपूर्णानंद जी ने भी भाग लिया। चंद्रशेखर की शौर्य–गाथा पर व्याख्यान हुए तथा उन्हें 'आजाद' नाम से सम्मानित किया गया। 'मर्यादा' समाचार पत्र में आजाद की तस्वीर छपी। काशी के सभी व्यक्ति आजाद द्वारा दिए गए व्याख्यान को पढ़ा करते थे। चंद्रशेखर अब अपनी जन्मभूमि के लिए नई क्रांति की योजना में लीन रहने लगे।

प्रश्न–6 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर 'जलियाँवाला बाग', 'काकोरी षड्यंत्र' तथा 'अल्फ्रेड पार्क' का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर 'आजाद' के जीवन की दो वीरतापूर्ण घटनाओं का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर 'आजाद' के क्रांतिकारी स्वरूप का चित्रण कीजिए।**

उत्तर– डॉ. जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य पर आधारित प्रमुख घटनाओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

जलियाँवाला बाग– जलियाँवाला बाग अमृतसर में स्थित है। 13 अप्रैल, सन् 1919 ई. को वैशाखी का मेला था और इसी मेले में क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों के दमन–चक्र तथा रौलट एक्ट का विरोध करने के लिए एक विशाल सभा का आयोजन किया था। जनरल डायर ने अपने सिपाहियों से इस भीड़ को घिरवा दिया तथा निहत्थी और निरपराध जनता पर अंधाधुंध गोलियाँ दागनी आरंभ कर दीं। इस नृशंस गोलीकांड में सैकड़ों बच्चों, बूढ़ों तथा युवकों की जानें गई। इस

हत्याकांड से अंग्रेजों के विरुद्ध भारतीय जनता के हृदय में क्रोध तथा घृणा की भावना भर गई। इस घटना को भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के इतिहास में 'जलियाँवाला बाग हत्याकांड' के नाम से जाना जाता है।

काकोरी षड्यंत्र– चंद्रशेखर 'आजाद' तथा अन्य क्रांतिकारियों को आंदोलन चलाने के लिए धन की आवश्यकता होती थी। इसीलिए वे सरकारी खजानों को लूटने की योजना बनाते थे। 'काकोरी' लखनऊ के पास एक स्टेशन है। वहीं 9 अगस्त, 1925 ई. को क्रांतिकारियों ने रेलगाड़ी रोककर सरकारी खजाने को लूटा तथा फरार हो गए। कुछ समय पश्चात् इसी षड्यंत्र में राम प्रसाद 'बिस्मिल' तथा अशफाक-उल्ला को फाँसी की सजा दी गई। चंद्रशेखर 'आजाद' तथा सरदार भगत सिंह अंग्रेजों के हाथ नहीं आ सके।

अल्फ्रेड पार्क– इलाहाबाद का अल्फ्रेड पार्क ही चंद्रशेखर 'आजाद' की 'शहीद-स्थली' है। यहीं 27 फरवरी, 1931 ई. को चंद्रशेखर 'आजाद' का पुलिस से आमना-सामना हुआ। चंद्रशेखर अकेले ही एक घंटे तक पुलिस से मोर्चा लेते रहे। उन्होंने अपनी पिस्तौल की गोलियों से एक अंग्रेज अफसर को घायल कर दिया तथा एक पुलिस अफसर का जबड़ा तोड़ दिया। पिस्तौल में एक गोली शेष रह जाने पर चंद्रशेखर ने उसे अपनी कनपटी पर दाग लिया। जिस पेड़ की ओट लेकर आजाद लड़े थे, उसकी भारतीयों द्वारा पूजा होने लगी। बाद में अंग्रेजों ने उस पेड़ को कटवा दिया। स्वतंत्रता के पश्चात् अल्फ्रेड पार्क का नाम 'चंद्रशेखर पार्क' रख दिया गया।

प्रश्न–7 'मातृभूमि के लिए' के नायक की चारित्रिक विशिष्टताएँ स्पष्ट कीजिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का नायक आप किसे मानते हैं? उसके चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* 'सम्मान हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा**
या प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा।'
–उक्त पंक्तियों के आधार पर चंद्रशेखर आजाद का चरित्र-चित्रण कीजिए।

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर आजाद की राष्ट्रनिष्ठा का निरूपण कीजिए।**

***अथवा* 'चंद्रशेखर आजाद का जीवन विराट् संघर्ष और राष्ट्रप्रेम के उदात्त पक्ष का प्रतीक था।' इन कथन पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर 'चंद्रशेखर आजाद' के स्वदेश प्रेम का चित्रांकन कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर आजाद के त्याग और बलिदान का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* '' आजाद उत्कट (महान्) देशप्रेमी थे।'' 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर चंद्रशेखर आजाद की देश-प्रेम की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* ''चंद्रशेखर आजाद उत्कृष्ठ देश-प्रेमी थे।'' इस कथन की पुष्टि 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।**

***अथवा* चंद्रशेखर आजाद को क्रांतिकारी क्यों कहा जाता है? 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर उक्त कथन की व्याख्या कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य में वर्णित नायक के चरित्र की अनुकरणीय विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर आजाद के वीरोचित गुणों (वीरता) का उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के नायक चंद्रशेखर 'आजाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

उत्तर– डॉ.जयशंकर त्रिपाठी कृत 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के नायक चंद्रशेखर 'आजाद' हैं। चंद्रशेखर प्रारंभ से ही होनहार युवक थे। इनका जन्म उस समय हुआ, जब भारतीय नेता स्वतंत्रता संग्राम के लिए सर्वस्व न्योछावर करने में लगे हुए थे। चंद्रशेखर 'आजाद' का व्यक्तित्व अतुलित गुणों का भंडार था। उनके कुछ प्रमुख गुणों का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

1. दृढ़-निश्चयी– चंद्रशेखर 'आजाद' ने भारतमाता के कष्टों को देखकर यह दृढ़-निश्चय किया कि जब तक भारतमाता आजाद नहीं होगी, तब तक मैं चैन से नहीं बैठूँगा। देश की आजादी के लिए मैं अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दूँगा। आजाद के हृदय में केवल एक ही बात थी, जिसको कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है–

इस जन्मभूमि के लिए प्राण, मैं अपने अर्पित कर दूँगा।
आजाद न होगी जब तक यह, मैं कर्म अकल्पित कर दूँगा।।

2. आकर्षक व्यक्तित्व– चंद्रशेखर 'आजाद' का आंतरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली तथा आकर्षक था, जितना इनका शरीर हृष्ट-पुष्ट तथा बलशाली था, उतना ही इनका स्वभाव मधुर था। चंद्रशेखर का व्यक्तित्व प्रारंभ से ही सर्वप्रिय था। कवि ने उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा इन शब्दों में की है–

पर बालक वह अंगार था- आँखों में उग्र उजाला था।

3. निर्भीक एवं साहसी– केवल पंद्रह वर्ष की अवस्था में ही चंद्रशेखर 'आजाद' ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेना प्रारंभ कर दिया। 'इन्कलाब जिंदाबाद' का नारा लगाने के एक अभियोग में वे मजिस्ट्रेट के सामने लाए गए। मजिस्ट्रेट द्वारा उनका तथा उनके पिता का नाम पूछे जाने पर उन्होंने निर्भीकतापूर्वक अपना नाम 'आजाद' तथा अपने पिता का नाम 'स्वाधीन' बताया। मजिस्ट्रेट 'आजाद' के निम्नलिखित शब्दों को सुनकर आश्चर्यचकित हो उठा–

कहते हैं जेलखाना जिसको, बलिदानी वीरों का घर है।
हम उसमें रहने वाले हैं, उद्देश्य मुक्ति का संगर है।।

4. सतत जागरुक क्रांतिकारी– यद्यपि आजाद महात्मा गाँधी की अहिंसक नीतियों से अधिक प्रभावित थे, तथापि जलियाँवाला बाग के हत्याकांड को देखकर तथा अंग्रेजों की अत्याचारपूर्ण हिंसक नीतियों को देखकर चंद्रशेखर 'आजाद' का विश्वास भी हिंसक क्रांति में बदल गया था। उनका कहना था–

सम्मान हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा।
यह प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा।।

वे अपने इन कार्यों को करते हुए अत्यधिक सचेत रहते थे। उन्होंने गोलियाँ चलाई, बम बनाए तथा अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा। पुलिस सदैव उनके पीछे रहती थी। वे तरह-तरह के वेश बदलकर पुलिस को चकमा देने में प्रवीण थे।

5. देशभक्त तथा परम उत्साही– चंद्रशेखर 'आजाद' ने अपने विद्यार्थी-काल में ही अंग्रेजों के अत्याचारों को देखा था। उन्होंने अपनी आँखों के सामने ही भारतवर्ष की स्वतंत्रता के दीवानों को बलिवेदी पर चढ़ते देखा था। इसलिए चंद्रशेखर 'आजाद' ने पुस्तकों का अध्ययन छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में कूदने का निश्चय किया। 'आजाद' में भारत को स्वाधीन कराने का परम उत्साह था। उन्होंने देश की आजादी के लिए अनेक कष्ट सहे। देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। युवकों के लिए उनके पास एक ही नारा था–

ऐसे ही भंग हुकूमत हो, माता की बेड़ी काट चलो।
सूत्रों का रटना छोड़ो तो, अब स्वतंत्रता का पाठ पढ़ो।।

6. अमर बलिदानी– चंद्रशेखर 'आजाद' ने जो भी संकल्प किया, उसे पूरा कर दिखाया। आजाद के शौर्य एवं पराक्रम की प्रशंसा अंग्रेज भी करते थे। उन्होंने शत्रु को कभी पीठ नहीं दिखाई। अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने पर भी आजाद ने डटकर उनका सामना किया। जीते-जी वे अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने पिस्तौल की अंतिम गोली अपने कनपटी पर दाग ली। वे इतने निडर थे कि मृत्यु की गोद में सो जाने पर भी अंग्रेज अफसर उनके समीप जाने का साहस नहीं कर सका। कवि ने इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है–

गिर पड़ा वीर, पर हिम्मत थी, आने की पास नहीं उनकी।
कहते थे जीवित होगा यह, क्या जाने गोली कब खनकी।।

प्रश्न–8 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य में वर्णित प्रेरक-प्रसंगों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए और यह भी बताइए कि उनका आप पर क्या प्रभाव पड़ा है?**
***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य में प्राप्त होने वाली प्रेरणाओं का उल्लेख कीजिए।**
***अथवा* 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के आधार पर लेखक का संदेश/उद्देश्य एवं आशय स्पष्ट कीजिए।**

अथवा **'स्वाभिमान हित देश के लड़ता है जो वीर।**
विजय, मृत्यु में एक को, लेता है आखीर॥'
–उक्त पंक्तियों में व्यक्त भाव की पुष्टि पठित खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।
अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का प्रतिपाद्य बताइए।**
अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य से हमें क्या शिक्षा एवं प्रेरणा मिलती है? तर्कसहित समझाइए।**
अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता बताइए।**
अथवा **'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य का लक्ष्य एवं निष्कर्ष स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– डॉ. जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित खंडकाव्य 'मातृभूमि के लिए' का प्रतिपाद्य विषय प्रसिद्ध क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद का जीवन-चरित्र है। आजाद का संपूर्ण जीवन मातृभूमि के लिए था। वे बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वाभिमान के भाव को हृदय में लिए क्रांतिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गए थे। उनका जीवन; जीवनपर्यन्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद की निरंकुश शक्ति से संघर्ष करते हुए व्यतीत हुआ। उन्होंने नि:स्वार्थ भाव से मातृभूमि के लिए संघर्ष करने हेतु अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं सांसारिक जीवन को त्याग दिया। उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए मर-मिटने वाले बलिदानी युवक की एक रोमांचपूर्ण कहानी है। इस प्रकार 'मातृभूमि के लिए' किए आजाद के बलिदान के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए इस खंडकाव्य का **नामकरण** 'मातृभूमि के लिए' उचित ही किया है। यह नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण है। प्रात: स्मरणीय ऐसे महान् राष्ट्रभक्त के जीवन-चरित्र को अपना प्रतिपाद्य बनाकर कवि ने देश की युवा पीढ़ी को उनके चरित्र से प्रेरणा लेने का संदेश दिया है।

कवि ने आजाद के संपूर्ण जीवन को न लेकर इस खंडकाव्य में कुछ ऐसे प्रेरक-प्रसंगों का स्थान दिया है, जिनके राष्ट्र की भावी पीढ़ी को उन उदात्त आदर्शों की प्रेरणा प्राप्त हो सके। राष्ट्र-प्रेम के एक आदर्श को कवि ने इस रूप में व्यक्त किया है—

स्वाभिमानहित देश के, लड़ता है जो वीर।
विजय, मृत्यु में एक को, लेता है आखीर॥

इस प्रकार कवि ने आजाद के चरित्र का चित्रण युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने हेतु किया है और यही इस खंडकाव्य का उद्देश्य भी है।

प्रश्न–9 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य में प्रयुक्त प्रमुख रसों एवं उसके भावपक्ष पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– डॉ. जयशंकर त्रिपाठी द्वारा रचित 'मातृभूमि के लिए' खंडकाव्य में आजाद के हृदय में मातृभूमि के लिए व्याप्त भावों की अभिव्यक्ति की गई है; इसलिए उनके चरित्र का भावपक्ष इस खंडकाव्य में अपनी उन्नत अवस्था में व्यक्त हुआ है। इस खंडकाव्य में प्रमुख रूप से वीर रस की निष्पत्ति हुई है। आजाद का संपूर्ण जीवन वीरतापूर्ण कार्यों से भरा हुआ था, इसलिए वीर रस की ही निष्पत्ति होना स्वाभाविक भी है। वीर रस के अतिरिक्त जलियाँवाला बाग के गोलीकाँड के विवरण में करुण रस की झलक भी दिखाई देती है।

5. मुक्ति-दूत (डॉ.राजेंद्र मिश्र)

आगरा, गाजीपुर, बाराबंकी, बस्ती, उन्नाव, फतेहपुर आदि जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के संबंध में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 डॉ. राजेंद्र मिश्र द्वारा रचित 'मुक्ति दूत' खंडकाव्य का कथानक संक्षेप में लिखिए।
अथवा **'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।**
अथवा **'मुक्ति-दूत' की कथावस्तु या कथासार अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर– डॉ.राजेंद्र मिश्र द्वारा रचित 'मुक्ति-दूत' नामक खंडकाव्य गाँधी जी के जीवन-दर्शन का एक पक्ष चित्रांकित करता है। इस कथानक की घटनाएँ सत्य एवं ऐतिहासिक हैं। कवि ने इसके कथानक को पाँच सर्गों में विभक्त किया है।

प्रथम सर्ग में कवि ने महात्मा गाँधी के अलौकिक एवं मानवीय स्वरूप की विवेचना की है। पराधीनता के कारण उस समय भारत की दशा अत्यधिक दयनीय थी। आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी परिस्थितियों में भारत का शोषण हो रहा था। अवतारवाद की धारणा से प्रभावित होकर कवि कहता है कि जब संसार में पाप और अत्याचार बढ़ जाता है, तब ईश्वर किसी महापुरुष के रूप में जन्म लेता है। अन्यायी रावण से मानवता को मुक्ति दिलाने के लिए राम का और अत्याचारी

कंस का विनाश करने के लिए श्रीकृष्ण का अवतार हुआ। इसी क्रम में भारत-भूमि के परित्राण के लिए काठियावाड़ प्रदेश में पोरबंदर नामक स्थान पर करमचंद के यहाँ मोहनदास के नाम से एक महान् विभूति का जन्म हुआ था।
महात्मा गाँधी के दुर्बल शरीर में महान् आत्मिक बल था। भारत को स्वतंत्र कराने के लिए उन्होंने तीस वर्षों तक भारत का जैसा नेतृत्व किया, वह भारतीय इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। इनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी।
'मुक्ति-दूत' के द्वितीय सर्ग में गाँधी जी की मनोदशा का चित्रण किया गया है। उनका हृदय यहाँ के निवासियों की दयनीय दशा को देखकर व्यथित और उनके उद्धार के लिए चिंतित था।
एक दिन गाँधी जी स्वप्न में आपनी माता को देखते हैं। माता जी उन्हें समझा रही हैं कि जो तुम्हारा थोड़ा भी भला करें, तुम उसका अधिकाधिक हित करो; गिरते को सहारा दो; केवल अपना नहीं, औरों का भी पेट भरो। माँ का स्मरण करके गाँधी जी का हृदय भर आया। उन्होंने सोचा-माँ ने सही कहा है, मैं मातृभूमि के बंधन काटूँगा। मैं कोटि-कोटि दलित भाइयों की रक्षा करूँगा।
एक बार गाँधी जी ने स्वप्न में श्री गोखले (गोपाल कृष्ण) को देखा। उन्होंने गाँधी जी को निरंतर स्वतंत्रता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और यह आशा प्रकट की कि गाँधी जी ही भारतवर्ष के मुक्ति-दूत बनेंगे—

जो बिगुल बजाया है तुमने, दक्षिण अफ्रीका में प्रियवर।
देखो उसकी गति क्षीण न हो, भारतमाता के पुत्र-प्रवर।।

तृतीय सर्ग में अंग्रेजों की दमन-नीति के प्रति गाँधी जी का विरोध व्यक्त हुआ है। देश में अंग्रेजों का शासन था और उनके अत्याचार चरम-सीमा पर थे। भारतीय बेबसी और अपमान की जिन्दगी जी रहे थे। केवल वही लोग सुखी थे, जो अंग्रेजों की चाटुकारिता करते थे। जब उनकी नीति से अंग्रेजों का हृदय नहीं बदला, तब उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध 'सविनय सत्याग्रह' के रूप में संघर्ष छेड़ दिया।
गाँधी जी ने प्रथम विश्व-युद्ध के समय देशवासियों से अंग्रेजों की सहायता करने का आह्वान किया, परंतु युद्ध में विजय पाने के बाद अंग्रेजों ने 'रॉलेट एक्ट' पास करके अपना अत्याचारी शिकंजा और अधिक कड़ा कर दिया। गाँधी जी ने अंग्रेजों के इस काले कानून का उग्र विरोध किया। उनके साथ जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, पटेल आदि नेता संघर्ष में सम्मिलित हो गए। इन्हीं दिनों जलियाँवाला बाग की अमानवीय घटना घटित हुई।
यह दृश्य देखकर गाँधी जी का हृदय दहल उठा और उनकी आँखों में खून उतर आया। इस युग-पुरुष ने क्रोध का जहर पीकर सभी को अमृतमय आशा प्रदान की और यह निश्चय कर लिया कि अंग्रेजों को अब भारत में अधिक दिनों तक नहीं रहने देंगे।
चतुर्थ सर्ग में भारत की स्वतंत्रता के लिए गाँधी जी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों का वर्णन है। जलियाँवाला बाग की नृशंस घटना हो जाने पर गाँधी जी ने अगस्त, सन् 1920 ई. में देश की जनता का **'असहयोग आंदोलन'** के लिए आह्वान किया। लोगों ने सरकारी उपाधियाँ लौटा दीं, विदेशी सामान का बहिष्कार किया। छात्रों ने विद्यालय, वकीलों ने कचहरियाँ और सरकारी कर्मचारियों ने नौकरियाँ छोड़ दी। इस आंदोलन से सरकार महान् संकट और निराशा के भँवर में फँस गयी।
असहयोग आंदोलन को देखकर अंग्रेजों को निराशा हुई। उन्होंने भारतीयों पर **'साइमन कमीशन'** थोप दिया। 'साइमन कमीशन' के आने पर गाँधी जी के नेतृत्व में सारे भारत में इसका विरोध हुआ। परिणाम-स्वरूप सरकार हिंसा पर उतर आई। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर निर्मम लाठी-प्रहार हुआ, जिसके फलस्वरूप देशभर में हिंसक क्रांति फैल गई। गाँधी जी देशवासियों को समझा-बुझाकर मुश्किल से अहिंसा के मार्ग पर ला सके।
गाँधी जी ने 79 व्यक्तियों को साथ लेकर नमक कानून तोड़ने के लिए डांडी की पैदल यात्रा की। अंग्रेजों ने गाँधी जी को बंदी बनाया तो प्रतिक्रिया स्वरूप देशभर में सत्याग्रह छिड़ गया।
बापू की एक ललकार पर देशभर में **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** आंदोलन फैल गया। सब जगह एक ही स्वर सुनाई पड़ता था—'अंग्रेजों भारत छोड़ो'। स्थान-स्थान पर सभाएँ की गई, विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलाई गई। पुल तोड़ दिए गए, रेलवे लाइनें उखाड़ दी गई। थानों में आग लगा दी गई, बैंक लुटने लगे, अंग्रेजों को शासन करना दूभर हो गया।
मुक्ति-दूत के पंचम सर्ग में स्वतंत्रता-प्राप्ति तक की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है। कारागार में गाँधी जी के अस्वस्थ होने के कारण सरकार ने उन्हें मुक्त कर दिया। इंग्लैंड के चुनावों में मजदूर दल की सरकार बनी। सन् 1947 ई. में प्रधानमंत्री

एटली ने जून, 1947 ई. से पूर्व अंग्रेजों के भारत छोड़ने की घोषणा की। भारत में हर्षोल्लास छा गया। मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान बनाने की अपनी माँग पर अड़े रहे। 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को भारत स्वतंत्र हो गया और देश की बागडोर जवाहरलाल नेहरू के हाथों में आ गई। गाँधी जी ने अनुभव किया कि उनका संघर्षपूर्ण का लक्ष्य पूर्ण हो गया; अत: वे संघर्षपूर्ण राजनीति से अलग हो गए।

खंडकाव्य के अंत में गाँधी जी भारतवर्ष के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं और इसी के साथ खंडकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रश्न–2 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' के प्रथम सर्ग के आधार पर गाँधी जी के लोकोत्तर गुणों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर– प्रथम सर्ग में कवि ने महात्मा गाँधी के अलौकिक एवं मानवीय स्वरूप की विवेचना की है। पराधीनता के कारण उस समय भारत की दशा अत्यधिक दयनीय थी। आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक सभी परिस्थितियों में भारत का शोषण हो रहा था। कवि अवतारवाद की धारणा से प्रभावित होकर कहता है कि जब संसार में पाप और अत्याचार बढ़ जाता है, तब ईश्वर किसी महापुरुष के रूप में जन्म लेता है। अन्यायी रावण से मानवता को मुक्ति दिलाने के लिए राम का और अत्याचारी कंस का विनाश करने के लिए श्रीकृष्ण का अवतार हुआ। वही ईश्वर कभी गौतम, कभी महावीर, कभी ईसा मसीह, कभी हजरत मुहम्मद, कभी गुरु गोविंद सिंह आदि महापुरुषों के रूप में अत्याचार के निवारण के लिए प्रकट होता रहता है। उसके अनेक रूप और नाम होते हैं। लोग उसे पहचान नहीं पाते; क्योंकि वह मनुष्य के समान आचरण करता है। उसके आचरण से लोगों के कष्ट दूर हो जाते हैं। उसके त्याग और बलिदान से लोग सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित होते हैं। अमेरिका में लिंकन और फ्रांस में नेपोलियन के रूप में वही दिव्य शक्ति थी। इसी क्रम में भारत-भूमि के परित्राण के लिए काठियावाड़ प्रदेश में पोरबंदर नामक स्थान पर करमचंद के यहाँ मोहनदास के नाम से एक महान् विभूति का जन्म हुआ था।

महात्मा गाँधी के दुर्बल शरीर में महान् आत्मिक बल था। उन्होंने अपने बीस वर्ष के अफ्रीका प्रवास में वहाँ के भारतीय मूल निवासियों पर होने वाले अत्याचारों का विरोध किया था। भारत लौटकर यहाँ के शोषित, दलित, दीन-हीन हरिजनों की दशा देखकर गाँधी जी व्याकुल हो उठे थे। गाँधी जी को हरिजनों और हिंदुस्तान से अगाध प्रेम था। हरिजनों का उद्धार करने और भारत को स्वतंत्र कराने के लिए उन्होंने तीस वर्षों तक भारत का जैसा नेतृत्व किया, वह भारतीय इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा। इनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही भारतवर्ष को स्वतंत्रता प्राप्त हो सकी।

प्रश्न–3 'मुक्ति-दूत' के द्वितीय सर्ग का सारांश लिखिए।
***अथवा* मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथा अपने शब्दों में लिखिए।**
***अथवा* ''मैं घृणा-द्वेष की यह आँधी, न चलने दूँगा न चलाऊँगा। या तो खुद ही मर जाऊँगा, या इसको मार भगाऊँगा।।'' 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य की उक्त पंक्तियों के आधार पर नायक की मनोदशा का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य में किसी मुक्ति का वर्णन है सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– 'मुक्ति-दूत' के द्वितीय सर्ग में गाँधी जी की मनोदशा का चित्रण किया गया है। उनका हृदय यहाँ के निवासियों की दयनीय दशा को देखकर व्यथित और उनके उद्धार के लिए चिन्तित था।

एक दिन गाँधी जी स्वप्न में अपनी माता को देखते हैं। माता जी उन्हें समझा रही हैं कि जो तुम्हारा थोड़ा भी भला करें, तुम उसका अधिकाधिक हित करो; गिरते को सहारा दो; केवल अपना नहीं, औरों का भी पेट भरो। माँ का स्मरण करके गाँधी जी का हृदय भर आया। उन्होंने सोचा— माँ ने सही कहा है, मैं मातृभूमि के बंधन काटूँगा। मैं कोटि-कोटि दलित भाइयों की रक्षा करूँगा। जब तक मेरे देश का एक बच्चा भी नंगा और भूखा रहेगा, मैं चैन से नहीं सोऊँगा। मेरे देश के निवासी अपमान भरा जीवन जी रहे हैं। मनुष्य-मनुष्य का तथा धनी-निर्धन का यह घृणित भेद मिटाना ही होगा। हरिजनों की दुर्दशा को देखकर उनका हृदय क्षोभ से जलने लगता है। हम सभी ईश्वर की संतान हैं, उनमें भेद कैसा? गुरु वशिष्ठ ने निषाद को हृदय से लगा लिया था, राम ने शबरी के जूठे बेर खाए थे। हरिजन सत्यकाम को गौतम बुद्ध ने शिक्षा दी थी। मेरा तो मत है कि हरिजन के स्पर्श से किसी मंदिर की पवित्रता नष्ट नहीं होती। ये भी अपने भाई हैं, हमें चाहिए कि हम इन्हें हृदय से लगाकर प्यार करें।

गाँधी जी ने हरिजनों को आश्रम में रहने के लिए आमंत्रित किया। इस पर कुछ लोगों ने रुष्ट होकर आश्रम के लिए चंदा देने से इनकार कर दिया। आश्रम के प्रबंधक मगनलाल ने जब गाँधी जी को बताया कि हरिजनों को आश्रम में रखकर आपने अच्छा नहीं किया, तब गाँधी जी ने कठोर स्वर में कहा—

असवर्णो की बस्ती में भी रह लूँगा उनके संग भले।
करके मजदूरी खा लूँगा, सो लूँगा सुख से वृक्ष तले॥
पर मगनलाल! मेरे जीते, अस्पृश्य न कोई हो सकता।
समता की उर्वर धरती में, कटुता के बीज न बो सकता॥

पहले देश स्वतंत्र हो जाए, फिर मुझे इस छुआछूत से ही लड़ना है। गाँधी जी के इस उत्तर से आश्रमवासियों ने अनुभव किया कि गाँधी जी असाधारण मनुष्य हैं।

एक बार गाँधी जी ने स्वप्न में श्री गोखले (गोपाल कृष्ण) को देखा। उन्होंने गाँधी जी को निरंतर स्वतंत्रता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी और यह आशा प्रकट की कि गाँधी जी ही भारतवर्ष के मुक्ति-दूत बनेंगे—

जो बिगुल बजाया है तुमने, दक्षिण अफ्रीका में प्रियवर।
देखो उसकी गति क्षीण न हो, भारतमाता के पुत्र-प्रवर॥

प्रश्न-4 'मुक्ति-दूत' काव्य के तृतीय सर्ग की कथा का सार लिखिए।
***अथवा* ' मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के आधार पर जलियाँवाला बाग की घटना का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के किस सर्ग ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया है और क्यों? संक्षेप में अपने विचार व्यक्त कीजिए।**

उत्तर- तृतीय सर्ग में अंग्रेजों की दमन-नीति के प्रति गाँधी जी का विरोध व्यक्त हुआ है। देश में अंग्रेजों का शासन था और उनके अत्याचार चरम-सीमा पर थे। भारतीय बेबसी और अपमान की जिंदगी जी रहे थे। केवल वही लोग सुखी थे, जो अंग्रेजों की चाटुकारिता करते थे। गाँधी जी भारत की दुर्दशा का कारण भली-भाँति समझते थे, इसके बाद भी उन्होंने अंग्रेजों के प्रति पहले नम्रता की नीति अपनाई। वे उनको जनता के दु:ख दर्द बताकर कुछ विनम्र बनाना चाहते थे, परंतु जब उनकी नीति से अंग्रेजों का हृदय नहीं बदला, तब उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध 'सविनय सत्याग्रह' के रूप में संघर्ष छेड़ दिया।

गाँधी जी ने प्रथम विश्व-युद्ध के समय देशवासियों से अंग्रेजों की सहायता करने का आह्वान किया, जिससे अंग्रेजों का हृदय भारतीयों के प्रति कोमल हो, परंतु युद्ध में विजय पाने के बाद अंग्रेजों ने 'रॉलेट ऐक्ट' पास करके अपना अत्याचारी शिकंजा और अधिक कड़ा कर दिया। गाँधी जी ने अंग्रेजों के इस काले कानून का उग्र विरोध किया। उनके साथ तेज बहादुर सप्रू, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, मदनमोहन मालवीय, जिन्ना, पटेल आदि नेता संघर्ष में सम्मिलित हो गए। इन्हीं दिनों जलियाँवाला बाग की अमानवीय घटना घटित हुई। वैशाखी के अवसर पर अमृतसर के इस बाग में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध प्रस्ताव पारित करने के लिए जनता एकत्र हुई थी कि जनरल डायर नामक अंग्रेज सेनानायक ने निहत्थी भारतीय जनता पर अंधाधुंध साढ़े सोलह सौ चक्र गोलियों की वर्षा कर उसे भून डाला। डायर की इस नृशंस पशुता का शिकार माताओं, विधवाओं, बिलखते बच्चों को भी होना पड़ा—

दस मिनट गोलियाँ लगातार, साढ़े सोलह सौ चक्र चलीं।
जल मरे सहस्राधिक प्राणी, लाशों से संकुल हुई गली॥
चंगेज, हलाकू, अब्दाली, नादिर, तैमूर सभी हारे।
जनरल डायर की पशुता से, पशुता भी रोई मन मारे॥

यह दृश्य देखकर गाँधी जी का हृदय दहल उठा और उनकी आँखों में खून उतर आया। इस युग-पुरुष ने क्रोध का जहर पीकर सभी को अमृतमय आशा प्रदान की और यह निश्चय कर लिया कि अंग्रेजों को अब भारत में अधिक दिनों तक नहीं रहने देंगे।

प्रश्न-5 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के चतुर्थ सर्ग की घटनाओं का सार अपने शब्दों में लिखिए।
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य का चौथा सर्ग गाँधी जी के कर्मयोग का प्रतीक है। सिद्ध कीजिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के आधार पर चतुर्थ एवं पंचम सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथावस्तु को लिखिए।**

उत्तर- चतुर्थ सर्ग में भारत की स्वतंत्रता के लिए गाँधी जी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलनों का वर्णन है। जलियाँवाला बाग की नृशंस घटना हो जाने पर गाँधी जी ने अगस्त सन् 1920 ई. में देश की जनता का 'असहयोग आंदोलन' के लिए आह्वान किया।

लोगों ने सरकारी उपाधियाँ लौटा दीं। विदेशी सामान का बहिष्कार किया। छात्रों ने विद्यालय, वकीलों ने कचहरियाँ और सरकारी कर्मचारियों ने नौकरियाँ छोड़ दीं। इस आंदोलन से सरकार महान् संकट और निराशा के भँवर में फँस गई।

असहयोग आंदोलन को देखकर अंग्रेजों को निराशा हुई। उन्होंने भारतीयों पर **'साइमन कमीशन'** थोप दिया। 'साइमन कमीशन' के आने पर गाँधी जी के नेतृत्व में सारे भारत में इसका विरोध हुआ। लाला लाजपतराय, सुभाषचंद्र बोस, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभभाई पटेल, खान अब्दुल गफ्फार खान ने गाँधी जी के स्वर में स्वर मिलाकर साइमन कमीशन का विरोध किया। परिणामस्वरूप सरकार हिंसा पर उतर आई। पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर निर्मम लाठी प्रहार हुआ, जिसके फलस्वरूप देशभर में हिंसक क्रांति फैल गई। गाँधी जी देशवासियों को समझा-बुझाकर मुश्किल से अहिंसा के मार्ग पर ला सके।

गाँधी जी ने 79 व्यक्तियों को साथ लेकर नमक कानून तोड़ने के लिए डांडी की पैदल यात्रा की। अंग्रेजों ने गाँधी जी को बंदी बनाया तो प्रतिक्रियास्वरूप देशभर में सत्याग्रह छिड़ गया। द्वितीय विश्व-युद्ध के प्रारंभ में अंग्रेजों ने समझौता करना चाहा, परंतु गाँधी जी की आजादी की माँग न मानने के कारण समझौता भंग हो गया। नमक का कानून तोड़ने, डांडी यात्रा, सविनय अवज्ञा आंदोलन व साइमन कमीशन के विरोध में गाँधी जी के अटूट साहस और नायकत्व को देखकर अंग्रेजी सरकार चौंक गई। वह स्वयं अपने द्वारा किए गए अत्याचारों के प्रति चिंतित थी।

बापू की एक ललकार पर देश भर में **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** आंदोलन फैल गया। सब जगह एक ही स्वर सुनाई पड़ता था— 'अंग्रेजों भारत छोड़ो'। स्थान-स्थान पर सभाएँ की गईं। विदेशी वस्त्रों की होलियाँ जलाई गईं। पुल तोड़ दिए गए, रेलवे लाइनें उखाड़ दी गईं, थानों में आग लगा दी गई, बैंक लुटने लगे, अंग्रेजों को शासन करना दूभर हो गया। उन्होंने दमन-चक्र चलाया तो गाँधी जी ने '21 दिन का अनशन' कर दिया। इन्हीं दिनों कारागार में गाँधी जी की पत्नी की मृत्यु हो गई। आजीवन पग-पग पर साथ देने वाली जीवन-संगिनी के वियोग से बापू की वेदना का समुद्र उमड़ पड़ा। गाँधी जी की आँखों से आँसू बहने लगे। वे इस अप्रत्याशित आघात से व्याकुल अवश्य हुए, परंतु पत्नी के स्वर्गवास ने अंग्रेजों के विरुद्ध उनके मनोबल को और अधिक दृढ़ कर दिया। कवि इसका चित्रण करता हुआ कहता है—

बूढ़े बापू की आहों से, कारा की गूँजी दीवारें।
बन अबाबील चीत्कार उठीं, थर्राई ऊँची मीनारें॥

प्रश्न-6 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के पंचम सर्ग या अंतिम सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।

उत्तर- 'मुक्ति-दूत' के पंचम सर्ग में स्वतंत्रता-प्राप्ति तक की प्रमुख घटनाओं का वर्णन है। कारागार में गाँधी जी के अस्वस्थ होने के कारण सरकार ने उन्हें मुक्त कर दिया। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद विश्व की राजनीति बदलने लगी। इंग्लैंड के चुनावों में मजदूर दल की सरकार बनी। फरवरी, सन् 1947 ई. में प्रधानमंत्री एटली ने जून 1947 ई. से पूर्व अंग्रेजों के भारत छोड़ने की घोषणा की। भारत में हर्षोल्लास छा गया। तब मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान के नाम से अपना अलग राष्ट्र बनाने की माँग की। गाँधी जी को भारत के विभाजन से महान् दु:ख हुआ। मुहम्मद अली जिन्ना पाकिस्तान बनाने की मांग पर अड़े रहे। नोआखाली और बिहार में हिंदू-मुस्लिम दंगे भड़क उठे। गाँधी जी ने लोगों को समझा-बुझाकर शांत किया। 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को भारत स्वतंत्र हो गया और देश की बागडोर जवाहरलाल नेहरू के हाथों में आ गई। गाँधी जी ने अनुभव किया कि उनका स्वतंत्रता का लक्ष्य पूर्ण हो गया; अत: वे संघर्षपूर्ण राजनीति से अलग हो गए। उन्होंने कहा—

लड़ाई मेरी हुई समाप्त, विदा ओ जीवन के जंजाल।
नया गाँधी बन तुम्हें स्वदेश करेगा प्यार जवाहरलाल॥

खंडकाव्य के अंत में गाँधी जी भारतवर्ष के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। और इसी के साथ खंडकाव्य की कथा समाप्त हो जाती है।

प्रश्न-7 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के आधार पर काव्य के नायक (प्रमुख पात्र) महात्मा गाँधी का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि गाँधी जी को मुक्ति-दूत क्यों कहा गया है? उनके चारित्रिक गुणों पर प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' के आधार पर गाँधी जी के लोकोत्तर गुणों का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य में मुक्ति-दूत कौन हैं? उनके चरित्र की तीन विशेषताएँ बताइए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के आधार पर गाँधी जी की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**
***अथवा* 'मुक्ति-दूत' खंडकाव्य के पुरुष पात्र के व्यक्तित्व की विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर- डॉ. राजेंद्र मिश्र द्वारा रचित 'मुक्ति-दूत' नामक खंडकाव्य में महात्मा गाँधी के पावन चरित्र का वर्णन किया गया है। गाँधी

जी इस खंडकाव्य के नायक हैं। प्रस्तुत काव्य के आधार पर महात्मा गाँधी के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगत होती हैं—

1. मातृभक्त– गाँधी जी माँ के प्रति अगाध, श्रद्धा और भक्ति-भावना रखते हैं। माँ को स्वप्न में देखने पर वे सोचते हैं— 'माँ जैसी कहीं नहीं ममता' और माँ की प्रेरणा से ही देश-सेवा में जुट जाते हैं। गाँधी जी ने उदारता, दया, परोपकार, सत्यता आदि गुणों को अपनी माता से सीखा था।

2. हिंदू-मुस्लिम एकता के समर्थक– गाँधी जी साम्प्रदायिक वैर-भाव के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम में हिंदू-मुस्लिम दोनों को साथ लिया था। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम एकता का अथक प्रयत्न किया। नोआखाली में हिंदू-मुस्लिमों के सांप्रदायिक दंगों के समय उन्होने प्राण हथेली पर रखकर शांति का प्रयास किया था। वे हिंदू-मुस्लिम को एक डाली पर खिले फूल समझते थे—

मुझे लगते हिंदू-मुस्लिम, एक ही डाली के दो फूल।
एक ही माटी के दो रूप, एक ही जननी के दो लाल॥

3. महान् देशभक्त– गाँधी जी महान् देशभक्त थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश को स्वतंत्र कराने और जनता की सेवा में लगा दिया। उनका हृदय देशवासियों की दुर्दशा देखकर व्यथित हो उठा था। उन्होंने जीवन की अंतिम श्वास तक देश-सेवा करने का जो प्रण किया था, उसे भली प्रकार निभाया तथा सारा सुख एवं वैभव त्यागकर अपना जीवन भारत को स्वतंत्र कराने में लगा दिया। अंत में वे अपने देश के लिए मंगल-कामना करते हैं—

रहो खुश मेरे हिंदुस्तान, तुम्हारा पथ हो मंगल-मूल।
सहा महके वन चंदन चारु, तुम्हारी अँगनाई की धूल॥

4. अलौकिक दिव्य पुरुष– कवि ने गाँधी जी को ईश्वर का अवतार बताया है जो पृथ्वी पर दु:खों का हरण करने के लिए यदा-कदा आते हैं। जिस श्रेणी में राम, कृष्ण, ईसा मसीह, पैगम्बर, बुद्ध, महावीर आदि हैं, उसी श्रेणी में कवि ने गाँधी जी को भी रखा है। भारत में अंग्रेजों के अत्याचार बढ़ जाने पर देश को स्वतंत्र कराने के लिए मानो स्वयं परमात्मा ने महात्मा गाँधी के रूप में जन्म लिया था। इस प्रकार मुक्ति-दूत के नायक महात्मा गाँधी साधारण पुरुष न होकर दिव्य पुरुष थे।

5. हरिजनोद्धारक– गाँधी जी असहाय और दलितों के सहायक थे। उनकी दुर्दशा देखकर उनका हृदय वेदना से भर जाता था। संसार में वे सभी को ईश्वर की संतान मानते थे। उनका कहना था—

जिन हाथों ने संसार गढ़ा, क्या उसने हरिजन नहीं गढ़े।
तब फिर यह कैसा छुआछूत, किस गीता में पाठ पढ़े॥

गाँधी जी साबरमती आश्रम में हरिजनों को भी रखते थे। आश्रम के प्रबंधक और दान-दाताओं द्वारा विरोध करने पर गाँधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया—

असवर्णों की बस्ती में भी, रह लूँगा उनके संग भले।
करके मजदूरी खा लूँगा, सो लूँगा सुख से वृक्ष तले॥

X X X

मैं घृणा द्वेष की यह आँधी, न चलने दूँगा, न चलाऊँगा।
या तो खुद ही मर जाऊँगा, या इसको मार भगाऊँगा॥

गाँधी जी के जीवन का मुख्य उद्देश्य हरिजनों का उद्धार करना ही था। कवि ने स्पष्ट शब्दों में कहा है—

दलितों के उद्धार हेतु ही, तुमने झंडा किया बुलंद।
तीस बरस तक रहे जूझते, अंग्रेजों से अथक अमंद॥

6. आर्थिक समृद्धि के पोषक– गाँधी जी ने भारत की दीन-हीन दशा को सुधारने के लिए स्वदेशी वस्त्रों का निर्माण एवं विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार, खादी एवं चरखे को प्रोत्साहन, सादा जीवन और उच्च विचारों की प्रेरणा, मादक द्रव्यों का त्याग आदि अनेक प्रयत्न किए। उनका कहना था—

छोटा बच्चा भी भारत का है, एक अगर नंगा भूखा।
गाँधी को चैन कहाँ होगा, वह भी सो जाएगा भूखा॥

7. मानवीय गुणों से भरपूर– गाँधी जी का चरित्र अनेक गुणों का भंडार था। उनमें सत्यता, दया, परोपकार, करुणा, अहिंसा तथा देशभक्ति के गुण कूट-कूटकर भरे थे। वे विश्व-बन्धुत्व तथा भाईचारे की भावना से ओत-प्रोत थे तथा सभी धर्मों के प्रति आदर भाव रखने वाले थे।

8. अहिंसा और करुणा की मूर्ति– गाँधी जी अहिंसा के पुजारी और करुणा की साकार मूर्ति थे। अंग्रेजों के संकट के समय भी वे उन कठोर शासकों से लाभ उठाना न्यायसंगत नहीं मानते थे। भारत की दयनीय दशा देखकर उनके हृदय में करूणा का सागर लहराने लगता था।

9. भारत के मुक्ति-दूत– महात्मा गाँधी ने भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का कुशल नेतृत्व किया। उनके तीस वर्ष के सतत प्रयासों के भारत की मुक्ति का स्वप्न पूर्ण हुआ। उनके कुशल नेतृत्व में परतंत्रता की शृंखला टूटकर छिन्न-भिन्न हो गई और भारत 15 अगस्त 1947 ई. को स्वतंत्र हो गया। अत: निश्चित ही वे सच्चे अर्थों में भारत के मुक्ति-दूत थे।

10. सम्मान और पद के निर्लोभी– गाँधी जी का त्याग एवं बलिदान एक आदर्श है। उन्होंने भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए जीवनभर अनेक यातनाएँ भोगीं और संघर्ष करते रहे। भारत के स्वाधीन होने पर जब उनका लक्ष्य पूर्ण हो गया, तब उन्होंने संघर्षपूर्ण राजनीति से सन्यास ग्रहण कर लिया।

इस प्रकार गाँधी जी स्वतंत्रता के अग्रदूत, हरिजनों के उद्धारक, देवतुल्य मानव, भारत की आर्थिक समृद्धि के पोषक, निर्लोभी एवं अहिंसा-प्रेमी थे। वे सत्य, अहिंसा, करुणा, प्रेम, उदारता, सहानुभूति, समता, देश-प्रेम आदि मानवीय गुणों के साकार रूप थे। वास्तव में वे भारत में एक अलौकिक पुरुष के रूप में अवतरित हुए।

6. ज्योति जवाहर (श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही')

प्रतापगढ़, रामपुर, गोंडा, कानपुर, ललितपुर जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के कथानक (कथा/कथावस्तु) का सार/सारांश लिखिए।

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में कितने सर्ग हैं? उनके नाम लिखिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की कथावस्तु जननायक नेहरू के विराट् व्यक्तित्व का अभ्युदय है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' के अंतिम सर्ग का कथानक लिखिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर निम्नलिखित का संक्षिप्त परिचय दीजिए–सुभाषचंद्र बोस, सम्राट् अशोक।**

***अथवा* 'जवाहरलाल के व्यक्तित्व के निर्माण में संपूर्ण भारत का योगदान रहा है।' 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर उपर्युक्त कथन को स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* '' 'भारत' का खंड-खंड अपने अखंड-दिव्यरत्नों को नायक पर न्योछावर करने को आतुर है।'' इस कथन की पुष्टि 'ज्योति-जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर कीजिए।**

***अथवा* 'ज्योति जवाहर' के आधार पर बताइए कि नेहरू के विराट् व्यक्तित्व को किन-किन व्यक्तियों/शक्तियों ने किस रूप में प्रभावित किया?**

***अथवा* नेहरू के व्यक्तित्व के निर्माण में किन शक्तियों का योगदान था? 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर– देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित **'ज्योति जवाहर'** खंडकाव्य एक भावप्रधान खंडकाव्य है। इस खंडकाव्य में राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू के जीवन की घटनाओं का उल्लेख किया गया है। इस खंडकाव्य का संक्षिप्त कथानक निम्नलिखित है—

पं. जवाहर लाल नेहरू का व्यक्तित्व सूर्य के समान तेजस्वी, चंद्रमा के समान सुंदर, हिमालय के समान स्वाभिमान से पूर्ण तथा सागर के समान गंभीर था। भारतवर्ष की इस मिट्टी में ही उनका लालन-पालन हुआ। नेहरू जी के महान् व्यक्तित्व में

संपूर्ण भारतीय संस्कृति के दर्शन होते थे। उन्होंने अनेक राज्यों के महान् पुरुषों के गुणों को अपने व्यक्तित्व में सँजोया। इन प्रांतों के सांस्कृतिक एवं सामाजिक गुणों का नेहरू के व्यक्तित्व में समावेश हुआ। कवि के अनुसार नेहरू जी के व्यक्तित्व में विभिन्न प्रांतों के गुणों का समावेश इस प्रकार हुआ—

गुजरात प्रदेश में उत्पन्न हुए **महात्मा गाँधी** से उन्होंने अहिंसा, सत्य, प्रेम तथा मानवता की पूजा का पाठ पढ़ा तथा **नरसी मेहता** की भक्तिमयी वाणी से हृदय की पवित्रता को समझा। गुजरात के ही वीर रस के कवि **पद्मनाथ** तथा **महर्षि दयानंद** की चारित्रिक विशेषताओं का भी नेहरू जी पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा।

महाराष्ट्र भी नेहरू जी को शिवा जी की तलवार देकर उनका अभिनंदन करता है। यह तलवार मातृभूमि की रक्षा का प्रतीक है। महाराष्ट्र का विश्वास है कि तलवार ही संकट के समय में देश की रक्षा कर सकती है। महाराष्ट्र नेहरू जी को **गुरु रामदास** की राष्ट्रीय चेतना, गीता के ज्ञान पर आधारित **ज्ञानेश्वर** का कर्मवाद तथा **तुकाराम** और **लोकनाथ** के गीतों का संकलन अर्पित करता है। इसी प्रकार महाराष्ट्र में उत्पन्न **लोकमान्य तिलक** का 'करो या मरो' का नारा नेहरू जी के हृदय में देश के प्रति लगन पैदा करता है। **केशव गुप्त** के ओजस्वी गीत उनके हृदय में नव-चेतना को जाग्रत करते हैं।

नेहरू जी ने **राजस्थान** के महान् पुरुषों से विपदाओं में विचलित न होने की प्रेरणा ली। उन्होंने राजस्थान से ही संघर्षों में जीना सीखा। राजस्थान की इस बंजर और ऊसर धरती ने अनेक अभावों को सहन करते हुए भी देश की मर्यादा की रक्षा की है। इस धरती में **राणा साँगा, चंदबरदाई, जयमल** आदि वीर पुरुष उत्पन्न हुए, जिनके शौर्य की छाप नेहरू जी के व्यक्तित्व पर पड़ी। राजस्थान वीर पुरुषों के लिए ही प्रसिद्ध नहीं हैं, अपितु यहाँ का स्त्री-वर्ग भी वीरता की भावना से ओत-प्रोत है। यहाँ की पन्ना धाय ने राज्यहित में अपनी कर्तव्यनिष्ठा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने एकमात्र पुत्र का भी बलिदान कर दिया। इसी प्रकार पतिव्रता नारी के महान् भारतीय आदर्श तथा अपनी आन-मान की रक्षा के लिए हजारों राजपूत क्षत्राणियों ने जौहर कर लिया। इसके अतिरिक्त योगिनी **मीरा** ने जनमानस में भक्ति की भावना को फैलाया। राजस्थान की इस वीर-भावना को देखकर सतपुड़ा राज्य भी मौन नहीं रहा है; वह भारत की अखंडता की घोषणा करता हुआ कहता है—

बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

सतपुड़ा की नर्मदा, ताप्ती, महानदी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ भी नेहरू जी के दर्शनार्थ पूरब-पश्चिम में फैली हुई थी। नेहरू जी के दर्शन के लिए दक्षिणी भारत की प्रकृति बेचैन थी। **महावीर** और **गौतम** के जीवन और उपदेशों से ही उन्होंने मानव-धर्म को सीखा। **कंबन** की 'रामायण' से 'हिंदू-धर्म' का ज्ञान प्राप्त किया तथा **रामानुजाचार्य** और **शंकराचार्य** के दार्शनिक तत्वों से आत्मज्ञान प्राप्त किया। **सतपुड़ा-संत 'अप्पा'** के अहिंसावादी विचारों ने सतपुड़ा के साहित्य, कला और संगीत पर अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी है। **कालिदास** की भावुकता, कुमारिल्ल की अद्भुत प्रतिभा, **मोढ़ा** की व्याकुलता, अंगारों की भाषा वाला **फकीर मोहन** तथा अकबर से लड़ने वाली **चाँदबीबी** जैसी अनेक विभूतियों को भी सतपुड़ा ही अपने हृदय में सँजोए हुए है। हृदयगत इन विभूतियों को समग्र विशेषताओं को वह नेहरू जी को अर्पित कर देना चाहता है। सतपुड़ा की प्रतिमाओं में भारतीय संस्कृति जीवित है। **तंजौर** और **भुवनेश्वर** की प्रतिमाएँ नेहरू जी को आकर्षित किए बिना नहीं रहती। यहीं पर **तानसेन** की वीणा के स्वर भी सुनाई देते हैं।

बंगाल प्रांत भी अपने आपको नेहरू जी पर न्योछावर कर देना चाहता है। वह कहता है—

बंगाल लगा हल्ला करने, कंगाल नहीं मैं रत्नों का।
तेरे हित अभी सँजोए हूँ, अरमान न जाने कितनों का।।

बंगाल का वैभवशाली अतीत **चंडीदास** तथा **गोविंददास** के मधुर गीतों को हृदय में सँजोए हुए है। राधा की ममता जयदेव के गीतों से मिलती है। उनके छंदों के झुरमुट में गोपियों की व्याकुलता के दर्शन होते हैं। **कृतिवास** के द्वारा अनुदित रामायण और महाभारत तथ **चैतन्य महाप्रभु** की भक्तिमयी वाणी आदि नेहरू जी के चारित्रिक विकास में सहायक बने। दौलत काजी तथा शाह जफर ने भी बंगाल में ही गजलों की रचना की। नेहरू जी को **विवेकानंद** तथा **दीनबंधु** की कर्मठता ने बहुत अधिक प्रभावित किया। नेहरू जी को बंगाल प्रांत **बंकिमचंद्र** का राष्ट्रप्रेम, **टैगोर** तथा **शरत** की अमर कला और **सुभाष** की देशभक्ति आदि सब कुछ अर्पित कर देना चाहता है। वह कहता है—

अब जो-कुछ है, सब अर्पित है, आँसू, अंगारे और' पानी।
जीवन की लाज बचा लेना, गंगा-यमुना के वरदानी।।

आसाम अपनी प्राकृतिक सुषमा को उत्साहपूर्वक नेहरू जी पर न्योछावर कर देना चाहता है। आसाम के **माधव कंदली** ने रामायण का अनुवाद किया है तथा **मनसा** नामक भक्तकवि के गीतों ने मन को शुद्धता प्रदान की है। **गुरु शंकर** ने साहित्य, कला तथा संस्कृतियों का निर्माण किया है। वैष्णव मठ की दीवारों पर निर्मित **'चरितपुथी'** ने जन-जन को मानवता के मंत्र का पाठ पढ़ाया। आसाम की घाटियों में संगीत गूँज रहा है तथा हरियाली जवाहरलाल जी के स्वागत के लिए पलकें बिछाए बैठी है। आसाम हृदय से नेहरू जी का स्वागत करना चाहता है। वह कहता है—

मेरी हर धड़कन प्यासी है, तेरे चरणों के चुंबन को।
होती तैयार खड़ी है रे, जन-मन के स्नेह समर्पण को।।

बिहार गौतम की भूमि है। इस प्रांत में करुणा के स्वर व्याप्त है। यह सत्य,अहिंसा, दया, क्षमा आदि का नंदन वन है। तीर्थकर महावीर की विभूति **वैशाली**; नेहरू जी को मानवीय गुणों के मोती अर्पित करती हुई कहती है—

फिर भी दर्शन के कुछ मोती, इस आशा से ले आई हूँ।।
मोती की लाज न जाएगी, 'मोती' के द्वारे आई हूँ।।

समुद्रगुप्त की यशोगाथा आज भी धूमिल नहीं हुई। समुद्रगुप्त के पुत्र **चंद्रगुप्त** ने भी अपनी वीरता से भारत का मस्तक झुकने नहीं दिया। कलिंग-विजय के पश्चात **अशोक** वैराग्य भावना से ओत-प्रोत हो गया। बिहार प्रांत की ये समस्त घटनाएँ नेहरू जी के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। वैदिक युग की संस्कृति के विकास में **पुष्यमित्र शुंग** का अपूर्व योगदान रहा। बिहार **पतंजलि** के चिंतन, बौद्धिक संस्कृति, साहित्य आदि को नेहरू जी के अभिनंदन में अर्पित करना चाहता है।

मंदिर के समान पवित्र **उत्तर प्रदेश**, जिसके आँगन में नेहरू जी का बाल्यकाल बीता, अपने आपको धन्य कहने लगा। मथुरा, वृंदावन, अवधपुरी, तुलसीकृत, 'श्रीरामचरितमानस' के उपदेश, सारनाथ में गौतम के उपदेश,मगहर के कबीर द्वारा जाति-पाँति खंडन के दोहे तथा बदरीनाथ व केदारनाथ के तीर्थस्थल आदि के द्वारा उत्तर प्रदेश नेहरू जी का अभिनंदन करता है। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता ने भी नेहरू जी को प्रभावित किया है।

पंजाब भी अपने गौरवमयी परंपरा के द्वारा नेहरू जी का स्वागत करता है। पंजाब स्थित जलियाँवाला बाग अपनी करुण गाथा से नेहरू जी के हृदय में नव-चेतना का संचार करता है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा की सभ्यता का इतिहास तथा गुरुनानक की वाणी आदि को लेकर पंजाब प्रांत नेहरू जी के समक्ष श्रद्धा से शीश झुकाता है।

तभी **कश्मीर** नेहरू जी पर पुष्पों की वर्षा करता है। कश्मीर का सौंदर्य नेहरू जी के हृदय को आकर्षित करता है।

कुरुक्षेत्र नेहरू जी को अर्जुन की संज्ञा देता है तथा अर्जुन का गांडीव उठवाकर दुर्योधन जैसे अत्याचारी व्यक्तियों को समाप्त करने का आदेश देता है।

दिल्ली अपने घायल इतिहास का स्मरण कराती है। दिल्ली उन्हें बाबर की भीषणता तथा शेरशाह की कट्टरता नहीं देना चाहती। वह अकबर के राज्य से प्रभावित है और हिंदु मुस्लिम एकता की नीति को नेहरू जी को समर्पित करना चाहती है। दिल्ली उन्हें **जहाँगीर** का न्याय तथा **शाहजहाँ** की कलात्मक सौगात 'ताजमहल' को अर्पित करती है। मुगलों के अंतिम बादशाह **बहादुरशाह जफर** का बलिदान नेहरू जी को भाव-विभोर कर देता है। सूने हृदयवाला **लालकिला** प्रसन्नतापूर्वक संगम के राजा जवाहरलाल पर सबकुछ अर्पित कर देना चाहता है।

वास्तव में संपूर्ण भारत ने जवाहरलाल को अपनी सभी निधियाँ अर्पित की हैं। इसलिए यह कथन भी पूर्णत: उपयुक्त ही है कि'' 'ज्योति जवाहर' के नायक के व्यक्तित्व के निर्माण में पूरे भारत का योगदान रहा है।'' जवाहरलाल के नेत्रों में भारत को देखता हुआ कवि कहता है—

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देखा नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।

प्रश्न-2 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि जवाहरलाल नेहरू के आदर्श विचार एवं आदर्श क्या थे?**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का नायक कौन है? उस (जवाहरलाल नेहरू) के चरित्र की प्रधान चार विशेषताएँ लिखिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के जननायक/चरित्र नायक/प्रधान पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू की प्रबल लोकप्रियता के कारणों पर प्रकाश डालिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर पं.जवाहरलाल नेहरू का चरित्र-चित्रण आधुनिक भारत के निर्माता एवं देश-प्रेमी के रूप में कीजिए।**

अथवा **मुझमें कोमलता है लेकिन कायरता मेरा मर्म नहीं।**
बैरी के सन्मुख झुक जाना मेरे जीवन का धर्म नहीं।।

–'ज्योति जवाहर' में व्यक्त उक्त भावों के आधार पर नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा **''ज्योति जवाहर' के नायक के चरित्र में राष्ट्रीयता एवं मानवीय चेतना का अद्‌भुत संगम है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर नेहरू जी के व्यक्तित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।**

अथवा **'सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तक की।**
हिमगिरी से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की।।'

– उक्त पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए 'ज्योति जवाहर' के नायक की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा **''अत्याचारी के चरणों पर**
झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना
जी, हिंसा नहीं अहिंसा है।''

–'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की उपर्युक्त पंक्तियों को ध्यान में रखते हुए अहिंसा के विषय में अपना मत व्यक्त कीजिए।

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के राष्ट्र-प्रेम का वर्णन कीजिए।**

अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के नायक में देश-प्रेम, विश्व-बन्धुत्व, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा राष्ट्रीय भावनात्मक एकता के समन्वित दर्शन होते हैं।'' इस कथन की पुष्टि संक्षेप में कीजिए।**

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के नायक पं.जवाहरलाल नेहरू हैं। जवाहरलाल नेहरू को प्रस्तुत खंडकाव्य में युगावतार तथा लोकनायक के रूप में चित्रित किया गया है। उनकी चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

1. देशभक्त तथा स्वतंत्रता के पुजारी– उच्चकुल में उत्पन्न होने पर भी जवाहरलाल नेहरू ने देश की स्वतंत्रता के लिए अनेक कष्टों को सहन किया। उनका जीवन वीर शिवाजी, राणा प्रताप आदि वीरों के चरित्र से प्रभावित हुआ था। वे सच्चे देशभक्तों के समान संघर्षमय जीवन व्यतीत करना जानते थे—

संघर्षों में पैदा होना, संघर्षों में जीना-मरना।
जिनके आगे बाधाओं को, हरदम पड़ता पानी भरना।।

2. महान् व्यक्तित्व– जवाहरलाल नेहरू के लिए विराट् व्यक्तित्व में सूरज का तेज, चाँद की सुघड़ता, सागर की गहराई तथा धरती का धैर्य था। वे भारत के भाग्य-निर्माताओं में से थे। भारत के राष्ट्रभक्तों की शृंखला में उनका नाम अमर है।

3. सर्वप्रिय लोकनायक– जवाहरलाल नेहरू को भारतीय जनता ने असीम प्यार दिया। कवि ने जवाहरलाल को युगावतार तथा लोकनायक के रूप में स्वीकार किया है। लोकनायक वही हो सकता है, जिसके हृदय में संपूर्ण जनता के सुख-दु:ख की अनुभूति हो। भारतवर्ष का कोई ऐसा प्रांत नहीं, जिसने जवाहरलाल नेहरू पर अपना सर्वस्व न्योछावर न किया हो। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली आदि सभी प्रांतों के कोने-कोने में लोकनायक का विराट् व्यक्तित्व व्याप्त है। नेहरू जी को युगावतार मानते हुए कवि ने इस प्रकार कहा है—

मथुरा वृंदावन अवधपुरी की, गली-गली में बात चली।
फिर नया रूप धर कर उतरा, द्वापर त्रेता का महाबली।।

4. भारतीय संस्कृति के पोषक– जवाहरलाल नेहरू के चरित्र पर भारतवर्ष के प्राचीन गौरव की छाप है। उन्होंने महावीर, गौतम तथा महात्मा गाँधी द्वारा अपनाई गई अहिंसा की नीति का पालन किया। वे गाँधी जी के स्वप्नों का भारत बनाने में ही जीवनभर तल्लीन रहे। भारतवर्ष के शंकराचार्य, रामानुजाचार्य आदि महान् दार्शनिकों की वाणी को उन्होंने ध्यानपूर्वक सुना। भारतीय साहित्यकारों कालिदास, भवभूति आदि तथा भारतवर्ष के शीर्षस्थ नेता अकबर, चाँदबीबी, सुभाषचंद्र बोस, टीपू आदि के चरित्रों का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

5. राष्ट्रोत्थान के पक्षपाती– जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत का नव-निर्माण किया। उन्होंने भारतवर्ष को स्वावलंबी राष्ट्र बनाने का भरसक प्रयास किया। पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर उन्होंने भारत का निरंतर उत्थान किया। राष्ट्रीय उत्पादन में उनकी अत्यधिक रुचि थी।

इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में जवाहरलाल नेहरू का व्यक्तित्व समग्र भारतीयता और उसके प्राकृतिक सौंदर्य को समाहित किए हुए है, जिसको कवि ने इन शब्दों में व्यक्त किया है—

सूरज से लेकर ज्योति, चाँद से लेकर सुधराई तन की।
हिमगिरि से लेकर स्वाभिमान, सागर से गहराई मन की।।

6. युद्ध-विरोधी– जवाहरलाल भी अशोक के समान युद्ध विरोधी थे। वे अहिंसा के पुजारी थे, किंतु उनकी अहिंसा की परिभाषा सर्वथा भिन्न थी। वे अत्याचार, शोषण और स्वाभिमान पर आघात होते हुए भी चुपचाप रहने को अहिंसा नहीं मानते थे। उनकी दृष्टि में यह अहिंसा नहीं, बल्कि कायरता थी। वे अत्याचारी के सामने झुक जाने को हिंसा और पापी का सिर काट देने को अहिंसा मानते थे। इसका उल्लेख कवि ने इस प्रकार किया है—

अत्याचारी के चरणों पर
झुक जाना भारी हिंसा है।
पापी का शीश कुचल देना
जी, हिंसा नहीं अहिंसा है।

7. विश्व-शांति के अग्रदूत– जवाहरलाल आजीवन विश्व-शांति की स्थापना के कार्य में लगे रहे। उनके द्वारा निर्धारित तटस्थता, निरस्त्रीकरण, पंचशील आदि की नीति शांति-स्थापना से संबंधित प्रयासों के ही उदाहरण हैं, जिनके लिए वे अंत तक प्रयास करते रहे।

8. नवराष्ट्र के निर्माणकर्ता– भारतवर्ष को स्वतंत्रता दिलाने के पश्चात् नवराष्ट्र का निर्माण करने वालों में जवाहरलाल नेहरू अग्रगण्य हैं। देश का उद्धार करने के लिए उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं को आरंभ किया। गुट-निरपेक्षता, निरस्त्रीकरण तथा विश्व-शांति की स्थापना आदि कार्यों के फलस्वरूप उनका व्यक्तित्व चमक उठा। वे जाति-पाँति के बंधनों को तोड़ने में विश्वास रखते थे। जवाहरलाल नेहरू सभी धर्मों की एकता में विश्वास रखकर देश को निरंतर प्रगतिशील बनाना चाहते थे।

अत: हम कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व एक राष्ट्रप्रेमी, मानवतावादी, युद्ध-विरोधी, सत्य एवं अहिंसा के पुजारी तथा महान् लोकनायक के रूप में उभरकर सामने आया है। उनका व्यक्तित्व संपूर्ण भारतीय संस्कृति का परिचायक है; इसीलिए कवि उनके व्यक्तित्व में ही संपूर्ण भारत की छवि पा जाता है—

जब लगा देखने मानचित्र भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देखा नयनों में भारत का चित्र उभर आया।।

प्रश्न-3 **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का कथानक देश की विभिन्नताओं के बीच अभिन्नता की एक शाश्वत कड़ी के रूप में उभरकर सामने आता है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**
***अथवा* सिद्ध कीजिए कि 'ज्योति जवाहर' राष्ट्रीय एकता की भावनाओं से ओत-प्रोत है।**
***अथवा* 'ज्योति जवाहर' राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने वाला काव्य है। सोदाहरण सिद्ध कीजिए।**
***अथवा* 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर जवाहरलाल नेहरू के भावनात्मक एकतामूलक विचारों की पुष्टि कीजिए।**

अथवा 'ज्योति जवाहर' का कथानक घटनाप्रधान न होकर भावप्रधान है।'' इस कथन का क्या अभिप्राय है?
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
अथवा 'ज्योत जवाहर' की रचना राष्ट्रीय एकता की भावना की पुष्टि हेतु की गई है।'' इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।
अथवा '' 'ज्योति जवाहर' में राष्ट्रीय एकता को महत्वपूर्ण स्थान मिला है।'' इस कथन को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना/एकता पर प्रकाश डालिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य 'भावप्रधान और सर्वथा मौलिक काव्य है' स्पष्ट कीजिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पं. नेहरू के व्यक्तित्व में भारतीय संस्कृति अपनी भावात्मक एकता के साथ मुख हो उठी है।
अथवा 'बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं।
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।'
–'ज्योति जवाहर' से उद्‌धृत उक्त पंक्तियों के आधार पर खंडकाव्य में वर्णित राष्ट्रीय एकता पर प्रकाश डालिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का संदेश स्पष्ट कीजिए।
अथवा 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य की प्रभावकारिता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में श्री देवी प्रसाद शुक्ल 'राही' ने लोकनायक जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व को भावात्मक एकता का प्रतीक मानते हुए प्रस्तुत खंडकाव्य का सृजन किया है। भारतवर्ष के गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के गौरव का वर्णन भी कवि ने भावात्मक एकता की दृष्टि से ही किया है। ये सभी राज्य भारतवर्ष की महिमा को ही व्यक्त करते हैं। इस भावना को व्यक्त करते हुए कवि ने लिखा है—

माथे पर टीका लगा दिया, हल्दी की घाटी ने
जो मंत्र दिया मर मिटने का, आजादी की परिपाटी ने।
बूढ़ा सतपुड़ा लगा कहने, हूँ दूर मगर अलगाव नहीं
कम हुआ आज तक उत्तर से, दक्षिण का कभी लगाव नहीं।।

स्पष्ट है कि कविवर राही ने प्रस्तुत खंडकाव्य में मुख्य रूप से नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण किया है। इस चित्रण में उन्होंने भारतवर्ष की भावात्मक एकता को मनोहारी रूप में प्रस्तुत किया है। कवि का प्रतिपाद्य विषय यही है।

इस संदर्भ में कविवर देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' ने प्रस्तुत खंडकाव्य की भूमिका में स्पष्ट रूप से लिखा है— ''जो लोग पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण का प्रश्न उठाकर जाति, भाषा, सम्प्रदाय और रीति-रिवाज की संकुचित मनोवृत्ति के आधार पर अलगाव और विघटन की बातें करते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता सदियों से अपनी अखंडता का उद्‌घोष करती हुई, समानताओं एवं विषमताओं की चट्टानों को तोड़ती हुई निरंतर आगे बढ़ती जा रही है।''

इस खंडकाव्य में कवि नेहरू के भावात्मक व्यक्तित्व का चित्रण करते हुए, भारत की राष्ट्रीय एकता पर आधारित चिरकालीन भावना को स्पष्ट करना चाहते हैं। इस प्रकार कवि ने नेहरू के व्यक्तित्व में राष्ट्रीय भावात्मक एकता तथा उनके केंद्रीय स्वरूप का समायोजन किया है। कवि को इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है।

कवि के कथनानुसार खंडकाव्य की कथा लौकिकता की भावभूमि पर अवतरित होकर राष्ट्र की उन उपलब्धियों को आत्मसात् करती हुई आगे बढ़ती है, जो विभिन्न प्रकार की भौगोलिक जलवायु, रहन-सहन, आचार-विचार और भाषा की विभिन्नताओं के बाद भी समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे हुए है तथा राष्ट्रीय एकता के प्रतीक लोकनायक पं. नेहरू के व्यक्तित्व में तिरोहित हो जाती है। 'ज्योति जवाहर' में राष्ट्रीय एकता की भावना पग-पग पर व्यक्त हुई है और खंडकाव्य का कथानक; देश की विभिन्नताओं के बीच अभिन्नता की एक शाश्वत कड़ी के रूप में उभरकर सामने आया है। इस प्रकार 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य राष्ट्रीय भावात्मक एकतामूलक खंडकाव्य है।

प्रश्न–4 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के आधार पर कलिंग युद्ध का वर्णन कीजिए।
अथवा **'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में वर्णित कलिंग युद्ध का अशोक के हृदय पर पड़े प्रभाव का निरूपण कीजिए।**

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित खंडकाव्य 'ज्योति जवाहर' के अनुसार कलिंग–युद्ध सम्राट अशोक के शासनकाल में हुआ। भारतवर्ष में कलिंग युद्ध अत्यधिक भयानक युद्धों में गिना जाता है। इस विनाशकारी युद्ध में रक्त की नदियाँ बह गईं, जिनमें सैनिक मछलियों के समान तैरते दिखाई देते थे। इस युद्ध में अस्त्र–शस्त्रों की भयंकर टंकार सुनाई पड़ती थी। चारों ओर त्राहि–त्राहि मची थी। नरमुंड कट–कटकर गिर रहे थे। न जाने कितनी माताओं की गोद सूनी हो गई और अगणित नारियों की मांग का सिंदूर पौंछ दिया गया था। असंख्य बहनें अपने भाईयों की मृत्यु देखकर छाती पीट–पीटकर रो रही थीं। इस प्रकार के भयानक दृश्य को देखकर सभी का हृदय चीत्कार कर उठा था। कलिंग युद्ध वास्तव में बड़ा भीषण युद्ध था।

जब अशोक ने कलिंग में रक्तपात होते देखा तो उसका हृदय द्रवित हो उठा और वह हिंसा का परित्याग करके अहिंसक बन गया। कलिंग–युद्ध में हुए भीषण नरसंहार को अशोक के नेत्र न देख सके। उसका वज्र जैसा हृदय पिछल उठा। वह सोचने लगा कि उसके संकेत पर कितने ही निरपराध व्यक्ति क्षणभर में मौत के मुख में चले गए। अशोक विचलित हो उठा। उसे अपना विशाल साम्राज्य भी फीका लगने लगा। इस संदर्भ में कवि ने अशोक की मनोदशा का वर्णन इस प्रकार किया है—

सोने चाँदी का आकर्षण, अब उसे घिनौना लगता था।
साम्राज्यवाद का शीशमहल, कुटिया से बौना लगता था।।

कलिंग–युद्ध के उपरांत अशोक पूर्णतया अहिंसक बन गया। इस युद्ध ने उसके हृदय को आहत कर दिया था—

जाने कैसी थी कचोट, दिन रहते जिसने जगा दिया।
हिंसा की जगह अहिंसा का, अंकुर अंतर में उगा दिया।।

अशोक ने तलवार फेंकते हुए कभी युद्ध न करने की प्रतिज्ञा ली। वह गौतम बुद्ध का अनुयायी होकर बौद्ध भिक्षुक बन गया। इस स्थिति का चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है—

जो कभी न हारा औरों से, वह आज स्वयं से हार गया।
भिक्षुक अशोक राजा अशोक, से पहले बाजी मार गया।।

प्रस्तुत खंडकाव्य में कलिंग–युद्ध का उल्लेख हिंसा और युद्ध के प्रति अशोक के वैराग्य और नेहरू के विचारों पर उस वैराग्य के प्रभाव को चित्रित करने के लिए हुआ है।

प्रश्न–5 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर– 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में कवि 'राही' ने बताया है कि भारत की वैविध्यपूर्ण संस्कृति ने किस प्रकार पं. जवाहरलाल नेहरू के महान् व्यक्तित्व का निर्माण किया और फिर किस प्रकार से नेहरू जी ने भारत का नव–निर्माण करते हुए उसे एक ज्योति पुंज के रूप में नई दिशा और पहचान दी। नेहरू जी के चरित्र और व्यक्तित्व को अतिशयता प्रदान करते हुए कवि ने भारत और नेहरू जी को एक–दूसरे के पर्याय के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा है—

जब लगा देखने मानचित्र, भारत न मिला तुमको पाया।
जब तुमको देख नयनों में, भारत का चित्र उभर आया।।

कवि ने भारत की राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विरासत का गुणगान नेहरू जी के ज्योतिस्वरूप भावात्मक व्यक्तित्व के आलोक में किया है, जिसमें उसे पूर्ण सफलता भी प्राप्त हुई है; अत: उन्हीं ज्योतिस्वरूप जवाहरलाल नेहरू के नाम पर इस खंडकाव्य का नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण ही है।

प्रश्न–6 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य में प्रमुख रसों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर– श्री देवीप्रसाद शुक्ल 'राही' द्वारा रचित 'ज्योति जवाहर' खंडकाव्य का प्रमुख रस 'शांत' है। यत्र–तत्र अन्य रसों का भी प्रयोग किया गया है, किंतु उनकी प्रस्तुति गौण ही है। उदाहरणस्वरूप– कलिंग युद्ध के विवरण में बीभत्स, अशोक की मानसिक स्थिति प्रदर्शित करने में करुण तथा लोकमान्य तिलक, शिवा जी, राणा साँगा आदि से संबंधित विवरणों में वीर आदि रसों की निष्पत्ति हुई है। वस्तुत: इस खंडकाव्य में नेहरू के व्यक्तित्व पर इन विभिन्न रसों से युक्त विवरणों का प्रभाव दिखाया गया है।

7. जय सुभाष (विनोदचन्द्र पांडेय 'विनोद')

सहारनपुर, लखनऊ, झाँसी, बाँदा, हरदोई, फैजाबाद आदि जिलों के विद्यार्थियों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न-1 'जय सुभाष' खंडकाव्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालिए।
***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य की कथा संक्षेप में लिखिए।**
***अथवा* '' 'जय सुभाष' का कथानक राष्ट्रभक्ति से पूर्ण है।'' सोदाहरण समझाइए।**
***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य का कथानक स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य हमें राष्ट्रीयता की प्रेरणा देता है। कथन की पुष्टि कीजिए।**

उत्तर- प्रस्तुत खंडकाव्य नेताजी सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व और आदर्श गुणों का परिचय प्रदान करने वाली एक सुंदर रचना है। इस काव्य का संपूर्ण कथानक सात सर्गों में विभक्त है। इसका सर्गवार सारांश इस प्रकार है—

सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई. को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। इनके पिता का नाम 'जानकीनाथ' बोस और माता का नाम 'प्रभावती देवी' था।

बड़े होने पर सुभाष ने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय दिया। इन्होंने अपने परिश्रम एवं लगन से सभी शैक्षिक परीक्षाओं में उत्तम अंक प्राप्त किए। प्रेसीडेंसी कॉलेज में पढ़ते समय ऑटेन नामक अंग्रेज प्रोफेसर द्वारा भारतीयों की निंदा सुनकर इन्होंने उसके गाल पर एक तमाचा मारकर स्वाभिमान, देशभक्त एवं साहस का अद्‌भुत उदाहरण दिया। इन्होंने बी.ए. की परीक्षा तथा विदेश जाकर आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। महात्मा गाँधी और देशबंधु चितरंजनदास से प्रभावित होकर सरकार द्वारा प्रदत्त आई.सी.एस. के उच्च पद को त्याग दिया और स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हो गए।

द्वितीय खंडकाव्य के सर्ग में सुभाष के भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने का वर्णन है। सन् 1921 ई. में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन व्यापक रूप से चल रहा था। उन्हीं दिनों देशबंधु जी ने एक नेशनल कॉलेज की स्थापना की, जिसका प्रधानाचार्य उन्होंने सुभाष को नियुक्त कर दिया। सुभाष ने छात्रों में देशप्रेम और स्वतंत्रता की भावना जाग्रत की और राष्ट्र-भक्त स्वयंसेवकों की एक सेना तैयार की। ये पं. मोतीलाल नेहरू द्वारा स्थापित 'स्वराज पार्टी' के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने दल के कई प्रतिनिधियों को कौंसिल में प्रवेश कराया। इन्होंने कलकत्ता महापालिका का खूब विकास किया। सरकार ने इन्हें अकारण ही अलीपुर जेल में डाल दिया। इनका अधिकांश जीवन कारागार में व्यतीत हुआ।

खंडकाव्य के **तीसरे सर्ग** की कथा सन् 1928 से आरंभ होती है। सन् 1928 ई. में कलकत्ता के कांग्रेस के 46 वें अधिवेशन में पं. मोतीलाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया गया। इसी समय लोगों को सुभाष की संगठन-कुशलता का परिचय मिला। इसके बाद सुभाष को कलकत्ता नगर का मेयर निर्वाचित किया गया। इन्होंने पुन: सभाओं में ओजस्वी भाषण दिए। जिनको सुनकर इन्हें सिवनी, भुवाली, अलीपुर और मांडले जेल में भेजकर यातनाएँ दी गई। जिससे इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। इन्हें स्वास्थ्य-लाभ के लिए पश्चिमी देशों में भेजा गया। इन्होंने वहाँ 'द इंडियन स्ट्रगल' नामक पुस्तक लिखी। भारत लौटने पर अगले वर्ष हीरापुर के कांग्रेस अधिवेशन में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाकर सम्मानित किया गया।

चतुर्थ सर्ग में हीरापुर अधिवेशन से लेकर 'फारवर्ड ब्लॉक' की स्थापना तक का वर्णन है। ताप्ती नदी के तट पर बिट्ठल नगर में कांग्रेस का इक्यावनवाँ अधिवेशन हुआ। इन्हें अधिवेशन का अध्यक्ष बनाकर सम्मानित किया गया। इससे आजादी का आंदोलन और अधिक तीव्र हो उठा।

इसके बाद त्रिपुरा में कांग्रेस का अगला अधिवेशन हुआ। इसमें कांग्रेस अध्यक्ष के चयन में दो नेताओं में मतभेद हो गया। उस समय कांग्रेस को विघटन से बचाने के लिए सुभाष ने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर 'फॉरवर्ड ब्लॉक' (अग्रगामी दल) की स्थापना की। अब सुभाष सबकी श्रद्धा और आशा के केंद्र बनकर सबके प्रिय 'नेता जी' बन गए थे। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अपनी मातृभूमि को मुक्त कराने के लिए सुभाषचन्द्र बोस अंग्रेज सरकार की यातनाओं को निरंतर सहन करते रहे।

पंचम सर्ग में सुभाष के छद्‌मवेश में घर से भाग जाने की कथा का वर्णन है। सुभाष जब घर में नजरबंद थे, तब सरकार ने इनकी समस्त गतिविधियों पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा था। 15 जनवरी, 1941 ई. को जाड़े की अर्द्ध-रात्रि में दाढ़ी बढ़ाए हुए, ये एक मौलवी के वेश में पुलिस की आँखों में धूल झोंककर निकल गए और फ्रंटियर मेल से पेशावर पहुंच गए और वहाँ से बर्लिन। बर्लिन में इन्होंने 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना की। दूर रहकर स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व करना कठिन जानकर ये पनडुब्बी द्वारा टोकियो पहुँचे। जापानियों ने इन्हें पूरा सहयोग दिया। सहगल, शाहनवाज, ढिल्लन और

लक्ष्मीबाई ने वीरता से इस सेना का नेतृत्व किया। सुभाष ने '**दिल्ली चलो**' का नारा हर दिशा में गुंजित कर दिया। 'आजाद हिंद फौज' का हर सैनिक स्वतंत्रता-संग्राम में जाने को उत्सुक था।

षष्ठ सर्ग में '**आजाद हिंद फौज**' के भारत पर आक्रमण तथा प्राप्त विजय का वर्णन है। सुभाष ने 'आजाद हिंद फौज' के वीरों को '**दिल्ली चलो**' और '**जय हिन्द**' के नारे दिए। इन्होंने '**तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।**'' कहकर युवकों का आह्वान किया। आजाद हिंद सेना ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए और उनके शिविरों पर चढ़ाई करके कई मोर्चों पर उनको अविस्मरणीय करारी हार दी।

सप्तम सर्ग में द्वितीय विश्व-युद्ध में जर्मनी तथा जापान की पराजय की चर्चा की गई है। संसार में सुख-दु:ख और जय-पराजय का चक्र चलता रहता है। अंग्रेजों का पलड़ा धीरे-धीरे भारी होने लगा। आजाद हिंद फौज की भी जय के बाद पराजय होने लगी। अगस्त 1945 ई. में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर अमेरिका द्वारा अणुबम गिरा दिया गया। जापान ने मानवता की रक्षा के लिए जनहित में आत्मसमर्पण कर दिया। 18 अगस्त, 1945 ई. को ताइहोक में इनका विमान आग लगने से दुर्घटनाग्रस्त हो गया और सुभाष भी नहीं बच सके। जब तक सूर्य, चंद्र और तारे रहेंगे, भारत के घर-घर में सुभाष अपने यश के रूप में अमर रहेंगे। उनकी यशोगाथा नवयुवकों को त्याग, देशप्रेम और बलिदान की प्रेरणा देती रहेगी।

प्रश्न-2 'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर सुभाषचंद्र बोस के प्रारंभिक जीवन (विद्यार्थी जीवन व बाल जीवन) पर प्रकाश डालिए।

***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर– सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 ई. को कटक (उड़ीसा) में हुआ था। इनके पिता का नाम 'जानकीनाथ बोस' तथा माता का नाम 'प्रभावती देवी' था। इनकी माता जी अत्यंत विदुषी धार्मिक महिला थीं। इन्होंने बचपन में अपनी माता जी से राम, कृष्ण, अर्जुन, बुद्ध, महावीर, शिवाजी, प्रताप आदि की कथाएँ सुनी थीं। बालक सुभाष पर उन्हीं के शील और शौर्य का प्रभाव पड़ा।

बड़े होने पर सुभाष ने अपनी तीव्र बुद्धि का परिचय दिया। इन्होंने अपने परिश्रम एवं लगन से सभी शैक्षिक परीक्षाओं में उत्तम अंक प्राप्त किए। विद्यालय में अपने गुरु बेनीमाधव जी के प्रभाव से, इनमें दीन-हीनों और दु:खी-दरिद्रों के प्रति प्रेम, करुणा एवं सेवाभाव जाग्रत हुआ। इन्होंने अपनी अल्प आयु में ही जाजपुर ग्राम में भयंकर बीमारी फैलने पर रोगियों की सेवा-सुश्रुषा की। प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करके इन्होंने कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया तथा सुरेशचंद्र बनर्जी से आजीवन अविवाहित रहने की प्रेरणा प्राप्त की। कलकत्ता में महर्षि विवेकानंद का ओजस्वी भाषण सुनकर सत्य की खोज में मथुरा, हरिद्वार, वृंदावन, काशी आदि तीर्थों एवं हिमालय की कंदराओं में भ्रमण किया, परंतु कहीं भी इन्हें शांति न मिली। इन्होंने पुन: पढ़ाई प्रारंभ कर दी। प्रेसीडेंसी कॉलेज में ऑटेन नामक अंग्रेज प्रोफेसर द्वारा, भारतीयों की निंदा सुनकर देशापमान को सहन नहीं कर सकने के कारण इन्होंने उसके गाल पर एक तमाचा मारकर स्वाभाविमान, देशभक्ति तथा साहस का अद्‌भुत उदाहरण दिया। इस अपराध के लिए इन्हें कॉलेज से निकाल दिया गया। अन्य कॉलेज में प्रवेश पाकर इन्होंने बी.ए. की परीक्षा तथा विदेश जाकर आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वदेशा लौटने पर इन्होंने देश की दयनीय दशा देखी। महात्मा गाँधी और देशबंधु चितरंजनदास से प्रभावित होकर सरकार द्वारा प्रदत्त आई.सी. एस. के उच्च पद को त्याग दिया और स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित हो गए।

प्रश्न-3 'जय सुभाष' के द्वितीय सर्ग का सारांश (कथानक, कथावस्तु, कथासार) अपने शब्दों में लिखिए।

***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में सुभाष के योगदान का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– खंडकाव्य के इस सर्ग में सुभाष के भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लेने का वर्णन है। भारतवर्ष में अंग्रेजों के अत्याचार और अन्याय को देखकर भारतमाता को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए सुभाष ने अपना जीवन देश को अर्पित कर देने का निश्चय किया। सन् 1921 ई. में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन व्यापक रूप से चल रहा था। छात्रों ने विद्यालयों का एवं वकीलों ने न्यायालयों का बहिष्कार करके आंदोलन को तीव्र बनाया। बंगाल में देशबंधु चितरंजन दास आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हीं दिनों देशबंधु जी ने एक नेशनल कालेज की स्थापना की, जिसका प्रधानाचार्य उन्होंने सुभाष को नियुक्त कर दिया। सुभाष ने छात्रों में देशप्रेम और स्वतंत्रता की भावना जाग्रत की और राष्ट्र-भक्त स्वयंसेवकों की एक सेना तैयार की। इस सेना ने बंगाल के घर-घर में स्वतंत्रता का संदेश गुँजा दिया। इस सेना के भय से अंग्रेजी सत्ता डोल उठी, जिसके परिणामस्वरूप सरकार ने देशबंधु और सुभाष को जेल में बंद कर दिया। जेल में जाकर उनका साहस व शक्ति और बढ़ गए। जब ये जेल से मुक्त हुए, तब बंगाल भीषण बाढ़ से ग्रसत था। सुभाष ने तन-मन-धन से बाढ़-पीड़ितों की सहायता की। ये पं. मोतीलाल नेहरू द्वारा स्थापित 'स्वराज पार्टी' के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने दल के कई प्रतिनिधियों को कौंसिल में प्रवेश कराया। कलकत्ता महापालिका के चुनाव में सुभाष बहुमत से जीते।

सुभाष को अधिकारी नियुक्त किया गया। इन्होंने 3000 रुपये निर्धारित वेतन के बजाय केवल आधा वेतन लेकर महापालिका का खूब विकास किया। सरकार ने इनकी बढ़ती लोकप्रियता से चिढ़कर इन्हें अकारण ही अलीपुर जेल में डाल दिया। वहाँ से बरहामपुर और मांडले जेल में भेजकर इन्हें बड़ी यातनाएँ दी गई। जिस कारण इनका स्वास्थ्य खराब हो गया। दृढ़ स्वर से जनता की माँग के कारण ये जेल से बाहर छोड़ दिए गए। कारागार से छूटते ही इन्होंने पुन: संघर्ष आरंभ कर दिया। इनका अधिकांश जीवन कारागार में ही व्यतीत हुआ।

प्रश्न–4 'जय सुभाष' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का सारांश (कथानक, कथावस्तु, कथासार) लिखिए।

***अथवा* 'जय सुभाष' के आधार पर कलकत्ता में आयोजित 1928 ई. के कांग्रेस अधिवेशन का वर्णन कीजिए तथा बताइए कि इस अवसर पर सुभाष की क्या भूमिका रही?**

उत्तर– सन् 1928 ई. में कलकत्ता के कांग्रेस के 46वें अधिवेशन में पं. मोतीलाल नेहरू को अध्यक्ष बनाया गया। उनके सम्मान में अड़तालीस घोड़ों के रथ में शोभा–यात्रा निकाली गई। जिसमें स्वयंसेवकों के दल का नेतृत्व स्वयं सुभाष कर रहे थे। इसी समय लोगों को सुभाष की संगठन–कुशलता का परिचय मिला। पं. मोतीलाल नेहरू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इनके उत्साह, कार्यकुशलता, देशप्रेम और कर्मठता की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

इसके बाद सुभाष को कलकत्ता नगर का मेयर निर्वाचित किया गया। इनके कार्यकाल में ही स्वतंत्रता–सेनानियों का एक जुलूस निकला, जिसका नेतृत्व स्वयं सुभाष कर रहे थे। इस जुलूस पर पुलिस ने लाठीचार्ज करके सुभाष को लाठियों से बहुत पीटा और नौ माह के लिए इन्हें अलीपुर जेल में डाल दिया। जेल से छूटने पर इन्होंने पुन: सभाओं में ओजस्वी भाषण दिए, जिनको सुनकर देशभक्त युवकों का खून खौल उठा, तब इन्हें सिवनी जेल में डाल दिया गया। वहाँ से भुवाली, अलीपुर और मांडले जेल में भेजकर यातनाएँ दी गईं। जिससे इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। इन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए पश्चिमी देशों में भेजा गया। वहाँ जाकर इन्होंने यूरोप के वैभव को देखा ओर भारत से उसकी तुलना की। इन्होंने अपने देश की दशा और जनता के आंदोलन का यथार्थ चित्र पश्चिमी देशों के सम्मुख रखा। वहाँ से पिता की बीमारी का समाचार सुनकर भारत आए, परंतु पिता के अंतिम दर्शन न पा सके। महान् शोक के कारण, स्वास्थ्य लाभ के लिए इन्हें पुन: यूरोप जाना पड़ा। इन्होंने वहाँ ' द इंडियन स्ट्रगल' नामक पुस्तक लिखकर देशप्रेम की भावना और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का सजीव वर्णन किया। ये विदेशों में रहकर स्वदेश का सम्मान बढ़ाते रहे। सन् 1936 ई. में स्वदेश वापस आने पर इन्हें पुन: जेल भेज दिया गया। जेल में स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण इन्हें स्वास्थ्य लाभ के लिए एक बार फिर यूरोप भेजा गया। कुछ समय बाद पं. जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लखनऊ में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में सभी नेताओं और जनता ने सुभाष के त्याग और बलिदानकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। भारत लौटने पर अगले वर्ष हीरापुर के कांग्रेस अधिवेशन में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाकर सम्मानित किया गया।

प्रश्न–5 'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर इसके चतुर्थ सर्ग का सारांश (कथानक, कथावस्तु) लिखिए।

उत्तर– इस सर्ग में हीरापुर अधिवेशन से लेकर 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना तक का वर्णन है। ताप्ती नदी के तट पर बिट्ठल नगर में कांग्रेस का इक्यावनवाँ अधिवेशन हुआ। इक्यावन पताकाओं से सुसज्जित, इक्यावन द्वारों से, इक्यावन बैलों के रथ में बैठाकर सुभाष का भव्य स्वागत किया गया और इन्हें अधिवेशन का अध्यक्ष बनाकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष पद से इनके ओजस्वी भाषण को सुनकर नवयुवकों में देशप्रेम, एकता और बलिदान की भावना जाग उठी। इससे आजादी का आंदोलन और अधिक तीव्र हो उठा।

इसके बाद त्रिपुरा में कांग्रेस का अगला अधिवेशन हुआ। इसमें कांग्रेस के दो नेताओं पट्टाभि सीतारमैया और सुभाष में चुनाव हुआ, जिसमें सुभाष विजयी हुए। गाँधी जी क्योंकि पट्टाभि सीतारमैया का समर्थन कर रहे थे, इसीलिए उन्होंने पट्टाभि सीतारमैया की हार को अपनी हार समझा। उस समय कांग्रेस को विघटन से बचाने के लिए सुभाष ने कांग्रेस से त्यागपत्र देकर 'फॉरवर्ड ब्लॉक'(अग्रगामी दल) की स्थापना की एवं सारे देश में घूम–घूमकर स्वतंत्रता की ज्योत जगाई। अब सुभाष सबकी श्रद्धा और आशा के केंद्र बनकर सबके प्रिय 'नेता जी' बन गए थे। कलकत्ता में में 'ब्लैक हॉल' संस्मारक; जिसके बारे में कहा जाता था कि यहाँ अनेक अंग्रेजों को सन् 1857 ई. में भारतीयों द्वारा जिंदा जला दिया गया था; को हटाने के लिए आंदोलन करते समय सरकार ने इन्हें फिर जेल में डाल दिया। इन्होंने जेल में भूख हड़ताल की। सरकार को इनके जेल में रहते ही संस्मारक हटाना पड़ा। जनता के प्रबल आग्रह करने पर इन्हें जेल से छोड़कर घर में नजरबंद कर दिया गया। निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि अपनी मातृभूमि को मुक्त कराने के लिए सुभाषचंद्र बोस अंग्रेज सरकार की यातनाओं को निरंतर सहन करते रहे।

प्रश्न–6 'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर बताइए कि सुभाषचंद्र बोस किन परिस्थितियों में देश छोड़कर विदेश गए? वहाँ जाकर उनके द्वारा भारत की स्वतंत्रता के लिए किए गए प्रयत्नों का वर्णन कीजिए।

***अथवा* 'जय सुभाष' खंडकाव्य के पाँचवें सर्ग का सारांश लिखिए।**

(**संकेत–** द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ सर्ग से परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए पाँचवें सर्ग का सारांश लिखिए।)

उत्तर– इस सर्ग में सुभाष के छद्मवेश में घर से भाग जाने की कथा का वर्णन है। सुभाष जब घर में नजरबंद थे, तब सरकार ने इनकी समस्त गतिविधियों पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा था। गुप्तचरों की कड़ी नजर और पुलिस का पहरा रहने पर भी सुभाष 15 जनवरी, 1941 ई. को जाड़े की अर्द्ध–रात्रि में दाढ़ी बढ़ाए हुए, एक मौलवी के वेश में पुलिस की आँखों में धूल झोंककर निकल गए और फ्रंटियर मेल से पेशावर पहुँच गए। वहाँ से उत्तमचंद नाम के व्यक्ति के प्रयास से बर्लिन पहुँच गए। पेशावर से काबुल तक की इनकी यह यात्रा अति भयानक थी। इन्हें अनेक कष्ट सहते हुए अनेक छद्मवेश धारण करने पड़े। बर्लिन में इन्होंने 'आजाद हिंद फौज' की स्थापना की। दूर रहकर स्वतंत्रता–संग्राम का नेतृत्व करना कठिन जानकर ये पनडुब्बी द्वारा टोकियो पहुँचे। जापानियों ने इन्हें पूरा सहयोग दिया। वहाँ से रासबिहारी के साथ ये सिंगापुर आए। इनकी सेना में विदेशों में रहने वाले अनेक भारतीय भी सम्मिलित हो गए। इन्होंने तन–मन–धन से सुभाष को पूरा सहयोग दिया। इन्होंने गाँधी जी, नेहरू, आजाद और बोस के नाम से चार ब्रिगेड तैयार किए। जिनमें पुरुषों के साथ–साथ स्त्रियाँ भी सम्मिलित थीं। सहगल, शाहनवाज, ढिल्लन और लक्ष्मीबाई ने वीरता से इस सेना का नेतृत्व किया। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख और ईसाई सभी धर्मावलम्बी एकजुट होकर स्वतंत्रता–संग्राम के लिए तत्पर हो गए। सुभाष ने 'दिल्ली चलो' का नारा हर दिशा में गुंजित कर दिया। 'आजाद हिंद फौज' का हर सैनिक स्वतंत्रता संग्राम में जाने को उत्सुक था।

प्रश्न–7 'जय सुभाष' खंडकाव्य के षष्ठ सर्ग का सारांश लिखिए।

उत्तर– षष्ठ सर्ग में 'आजाद हिंद फौज' के भारत पर आक्रमण तथ प्राप्त विजय का वर्णन है। सुभाष ने 'आजाद हिंद फौज' के वीरों को '**दिल्ली चलो**' और '**जय हिंद**' के नारे दिए। इन्होंने ''**तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।**'' कहकर युवकों का आह्वान किया। इस प्रकार उन्होंने अपनी सेना के वीरों में देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान देने देने की प्रबल भावना भर दी। सेना के वीर इनके ओजपूर्ण भाषणों को सुनकर शत्रु की विशाल सैन्य–शक्ति की परवाह न करके, विजय प्राप्त करते हुए 18 मार्च, 1944 ई. को कोहिमा तक पहुँच गए। भयंकर गोलाबारी करके इन्होंने इम्फाल नगर को घेरकर शत्रु को पीछे भगा दिया। अराकान पर्वत–शिखर पर भी भारतीय तिरंगा लहराने लगा। आजाद हिंद सेना ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए और उनके शिविरों पर चढ़ाई करके कई मोर्चों पर उनको अविस्मरणीय करारी हार दी।

प्रश्न–8 'जय सुभाष' खंडकाव्य के सप्तम (अंतिम) सर्ग की कथा लिखिए।

उत्तर– सप्तम सर्ग में द्वितीय विश्व–युद्ध में जर्मनी तथा जापान की पराजय की चर्चा की गई है। संसार में सुख–दु:ख, जय–पराजय का चक्र चलता रहता है। अंग्रेजों का पलड़ा धीरे–धीरे भारी होने तथा आजाद हिंद फौज की भी जय के बाद पराजय होने लगी। अंग्रेजों ने बर्मा (अब म्यांमार) में आकर अपना स्वत्व स्थापित कर लिया। अगस्त 1945 ई. में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी नगरों पर अमेरिका द्वारा अणुबम गिराकर सर्वनाश कर दिया गया। जापान ने मानवता की रक्षा के लिए जनहित में अमेरिका के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। सुभाष ने स्थिति अनुकूल न जानकर 'आजाद हिंद फौज' के आत्मसमर्पण करने का भी निर्णय लिया। उन्होंने सेना के वीरों को बधाई देते हुए पुन: आकर उचित समय पर स्वतंत्रता का बीड़ा उठाने का आश्वासन दिया। वे विमान द्वारा टोकियो में जापान के प्रधानमंत्री हिरोहितो से मिलने जाना चाहते थे। 18 अगस्त, 1945 ई. को ताइहोक में विमान आग लगने से दुर्घटनाग्रस्त हो गया और सुभाष भी नहीं बच सके। इस दु:खद समाचार को सुनकर हर मनुष्य रो पड़ा। भारत में बहुतों के मन में अब तक यही धारणा है कि सुभाष आज भी जीवित हैं। जब तक सूर्य, चंद्र और तारे रहेंगे, भारत के घर–घर में सुभाष अपने यश के रूप में अमर रहेंगे। उनकी यशोगाथा नवयुवकों को त्याग, देशप्रेम और बलिदान की प्रेरणा देती रहेगी।

प्रश्न–9 'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर नायक (प्रमुख पात्र) नेता जी सुभाषचंद्र बोस का चरित्र-चित्रण कीजिए।
अथवा **'सुभाष में अनेक गुणों का समावेश था।'' 'जय सुभाष' के आधार पर खंडकाव्य के नायक की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

अथवा **'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर सुभाषचंद्र बोस की चार विशेषताओं पर प्रकाश डालिए, जो आपको अधिकाधिक प्रभावित करती हैं।**

अथवा **'जय सुभाष' खंडकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि सुभाषचंद्र त्याग, अदम्य साहस और नेतृत्व क्षमता के प्रतीक हैं।**

अथवा **'जय सुभाष' खंडकाव्य के प्रमुख पात्र की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर– श्री विनोद चंद्र पांडेय 'विनोद' द्वारा रचित 'जय सुभाष' नामक खंडकाव्य स्वतंत्रता–संग्राम के महान् सेनानी सुभाषचंद्र बोस के त्याग, देशभक्ति एवं बलिदानपूर्ण जीवन की गाथा प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत काव्य का उद्देश्य सुभाषचंद्र बोस के व्यक्तित्व एवं गुणों को उजागर करना है। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ही प्रस्तुत खंडकाव्य के नायक हैं। इनके चारित्रिक गुण इस प्रकार हैं—

1. समाजसेवी, अनुपम त्यागी एवं कष्ट-सहिष्णु– सुभाष मानवमात्र के सेवक थे। इन्होंने बंगाल में बाढ़ आने पर बाढ़–

पीड़ितों की अपूर्व सहायता की। जाजपुर में महामारी फैलने पर इन्होंने रोगियों की सेवा की। देश की स्वतंत्रता के लिए आह्वान होने पर इन्होंने आई.सी.एस. जैसे उच्च पद को छोड़कर महान् त्याग का परिचय दिया। इन्होंने देश को स्वतंत्र कराने के लिए जैसी कठोर यातनाएँ सही, वे अवर्णनीय हैं। इनकी मानव-सेवा की भावना के विषय में पांडेय जी ने लिखा है—

दु:खी जनों का कष्ट कभी वह, नहीं देख सकते थे।
दोस्तों की सेवा करने में, वह न कभी थकते थे।।

2. स्वाभिमानी, साहसी और निर्भीक– सुभाष में स्वाभिमान और निर्भीकता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। ये किसी भी तरह अपने देश का अपमान नहीं सह सकते थे। छात्रावस्था में प्रोफेसर ऑटेन द्वारा भारतीयों की निंदा सुनकर इन्होंने ऑटेन को तमाचा जड़कर अपने स्वाभिमान का परिचय दिया था। इन्होंने आई.सी.एस. का गौरवपूर्ण पद भी इसलिए त्याग दिया था कि अंग्रेजों की नौकरी करना इनके स्वाभिमान के अनुकूल नहीं था—

स्वाभिमान का परिचय सबको, हो निर्भीक दिया था।
ले देशापमान का बदला, उत्तम कार्य किया था।।

3. महान् देशभक्त और स्वतंत्रता-प्रेमी– सुभाष देश की स्वाधीनता के अद्वितीय आराधक थे। इन्होंने गाँधी जी और देशबंधु चितरंजनदास के आह्वान पर राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपनी युवावस्था अर्पित कर दी—

की सुभाष ने राष्ट्र-प्रेम हित अर्पित मस्त जवानी।
मुक्ति युद्ध के बने शीघ्र ही वे महान् सेनानी।।

उनके हृदय में आजादी की ज्वाला निरंतर जलती रही। अनेक बार जेल-याजनाएँ सहने पर भी इन्होंने देश-सेवा का व्रत नहीं छोड़ा। अनेक बार अपने प्राणों को खतरे में डाला, शोषक अंग्रेजों से युद्ध किए और अंत में बलिदान हो गए। इन्होंने अपने ओजस्वी भाषणों और कार्य-कलापों से समस्त देशवासियों के हृदय में स्वतंत्रता की अग्नि प्रज्वलित कर दी।

4. कुशाग्र, बुद्धि एवं प्रखर प्रतिभाशाली– सुभाष बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के और प्रतिभाशाली थे। इन्होंने मैट्रिक और इंटर की परीक्षाएँ प्रथम स्थान प्राप्त करके उत्तीर्ण की थी। विदेश जाकर इन्होंने आई.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उस समय किसी भारतीय के लिए यह परीक्षा उत्तीर्ण करना अत्यंत गौरव की बात थी। आगे चलकर कलकत्ता अधिवेशन में इनकी प्रबंध-कुशलता, आजाद हिंद फौज और फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना एवं पुलिस की आँखों में धूल झोंककर कड़ी निगरानी से निकल भागना इनकी विलक्षण प्रतिभा को सूचित करते हैं।

5. स्वतंत्रता के जन्मदाता– भारतवर्ष को स्वतंत्र कराने में सुभाषचंद्र बोस का योगदान स्तुत्य है। अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध छेड़कर इन्होंने उन्हें भयाक्रांत कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप वे भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए विवश हो गए थे—

मुक्त हुई उनके प्रयत्न से, अपनी भारतमाता।
दिन पंद्रह अगस्त का अब भी, उनकी याद दिलाता।।

6. युवा-आंदोलन के प्रवर्तक– सुभाष युवा-आंदोलन के प्रवर्तक तथा नवयुवकों के प्रेरणास्रोत थे। इन्होंने पूरे देश की युवक संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोकर संगठित युवा-आंदोलन के सूत्रपात का प्रशंसनीय कार्य किया था। इन्हीं के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप भारत में नवजवान सभा की स्थापना हो सकी थी—

नवयुवकों के भी प्रयाण की, आई है शुभ बेला।
हो सकता है नहीं कभी भी, तरुणों की अवहेला।।

7. जनता के प्रिय नेता– सुभाष सच्चे अर्थों में जनता के प्रिय नेता थे। अपने महान् गुणों एवं अनुपम देश-भक्ति के कारण वे करोड़ों देशवासियों के श्रद्धापात्र बन गए थे—

वह थे कोटि-कोटि हृदयों के, एक महान् विजेता।
मातृभूमि के रत्न अलौकिक, जन-जन के प्रियनेता।।

इनकी लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि इन्होंने 'हीरापुर अधिवेशन' में गाँधी जी द्वारा समर्थित 'पट्टाभि सीतारमैया' को चुनाव में पराजित कर दिया था। जिस मनोयोग और निष्ठ से इन्होंने स्वतंत्रता-संग्राम का संचालन किया, उससे ये जनता के प्रिय नेता बन गए—

वह हो गए समस्त देश की, श्रद्धा के अधिकारी।
लेने लगे प्रेरणा उनसे, बाल-वृद्ध-नर-नारी।।

8. उत्साह की प्रतिमूर्ति– वीरता, उत्साह तथा साहस सुभाष के चरित्र के मुख्य गुण थे। उनके इन गुणों को देखकर जहाँ सामान्य जन प्राय: चकित रह जाते थे, वहीं अंग्रेज प्राय: भयभीत हो जाते थे। अंग्रेजी शासन इन्हें प्राय: कैद कर देता था,

लेकिन ये इससे हतोत्साहित नहीं होते थे। एक बार अंग्रेजों द्वारा घर में ही नजरबंद कर दिए जाने पर ये अपनी बुद्धि, चतुरता तथा योजनाबद्धता द्वारा अंग्रेज सैनिकों की आँखों में धूल झोंककर भाग निकले और वेश बदलकर काबुल, जर्मनी तथा जापान पहुँच गए। विदेश में रहकर इन्होंने भारतीय युवकों को उत्साहित किया और आजाद हिंद फौज का गठन किया। इनके भाषण उत्साह से परिपूरित होते थे। इनके उत्साह का ही प्रतिफल था कि आजाद हिंद फौज को अंग्रेजी सेनाओं के विरुद्ध युद्ध में अनेक स्थानों पर सफलता प्राप्त हुई थी।

9. महान् सेनानी एवं योद्धा– सुभाष महान् सेनानी और अद्‌भुत योद्धा थे। 'आजाद हिंद फौज' का संगठन और कुशल नेतृत्व करके उन्होंने एक श्रेष्ठ सेनापति होने की अपनी क्षमता सिद्ध कर दी थी। अंग्रेजों की विशाल सेना के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करके उन्होंने अपने अदम्य साहस व बुद्धिमत्ता द्वारा उन्हें कई स्थानों पर पराजित किया तथा अनेक स्थानों पर भारतीय तिरंगा फहराकर अपने को महान् विजेता सिद्ध कर दिया—

सेनानी सुभाष ने भीषण, रण-दुंदुभी बजाई।
पाने हेतु स्वराज्य उन्होंने, छेड़ी विकट लड़ाई।।

10. महान् साहित्य सेवा– श्री सुभाष ने अत्यधिक विपरीत परिस्थितियों में 'द इंडियरन स्ट्रगल' पुस्तक लिखकर अपनी साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया था। इनके भाषण भी साहित्य की अमूल्य निधि हैं—

लिख इंडियन स्ट्रगल पुस्तक, ख्याति उन्होंने पाई।
प्रकट किए इसमें सुभाष ने, भाव प्रेरणादाई।।

11. ओजस्वी वक्ता– सुभाषचंद्र बोस की वाणी बड़ी ओजपूर्ण थी। वे अपने ओजस्वी भाषण द्वारा जनता से देशप्रेम, बलिदान और त्याग का मंत्र फूँक देते थे। "**तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।**" की पुकार पर सहस्रों देशभक्त उनकी सेना में तन-मन-धन से सम्मिलित हो गए। उनकी ओजस्वी वाणी सुनकर, वीर पुरुष प्राण हथेली पर रखकर स्वतंत्रता-संग्राम में कूद पड़े थे—

लगी गूँजने बंगभूमि में, उनकी प्रेरक वाणी।
मंत्र मुग्ध होते थे सुनकर, उसको सारे प्राणी।।

उन्होंने अनेक सभाओं में एवं आजाद हिंद फौज के सम्मुख जो भाषण दिए, वे अत्यंत ओजस्वी और प्रेरणादायक थे।

इनके अतिरिक्त नेताजी में अन्य अनेक आदर्श गुण थे, जिनके आधार पर उनके महान् व्यक्तित्व और महान् चरित्र का परिचय मिलता है। इन्होंने जो उच्च आदर्श उपस्थित किया है, वह युग-युग के संसार के अनेक व्यक्तियों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। इनके जीवन से मनुष्य कष्ट-सहन की शक्ति, त्याग-भावना एवं राष्ट्रीयता की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। इनके आदर्श जीवन से भारत के नवयुवकों को स्वतंत्रता-प्रेम और त्याग की प्रेरणा मिलती रहेगी—

वीर सुभाष अनंतकाल तक, शुभ आदर्श रहेंगे।
युग-युग तक भारत के वासी, उनकी कथा कहेंगे।।

8. तुमुल (श्यामनारायण पांडेय)

बदायूँ, वाराणसी, जालौन, इटावा, बिजनौर, अल्मोड़ा जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न–1 'तुमुल' खंडकाव्य की कथा/कथावस्तु/कथानक संक्षेप में लिखिए।
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।**
***अथवा* " 'तुमुल' खंडकाव्य का कथानक सरल रेखा की तरह लक्ष्योन्मुख है।" 'तुमुल' खंडकाव्य के विषय में इस कथन को स्पष्ट कीजिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के किसी एक सर्ग का शीर्षक लिखकर उसका सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य का जो सर्ग आपको बहुत रुचिकर लगा हो, उसकी कथा संक्षेप में लिखिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के कथा-संगठन पर प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तर– **कथा-संगठन**

कवि श्यामनारायण पांडेय द्वारा रचित 'तुमुल' खंडकाव्य का संपूर्ण कथानक पंद्रह सर्गों में विभाजित है। प्रस्तुत खंडकाव्य की कथा लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध से संबंधित है। खंडकाव्य का कथा-संगठन अत्यंत सशक्त, गतिशील, रोचक और ओजपूर्ण

है। कथानक संक्षिप्त, और संवादप्रधान है, फिर भी उसमें काव्यत्व सर्वत्र और अपनी पूर्णता के साथ विद्यमान है। संवादों में निहित आदर्शवादिता, धर्म, कर्तव्यपरायणता और शालीनता का कहीं भी इसमें उल्लंघन नहीं हुआ है। यही कारण है कि ओजस्विता से परिपूर्ण सुसंबद्ध संवादों ने कथानक की रोचकता में अतिशय वृद्धि की है। कथासूत्र कहीं भी टूटता, शिथिल होता अथवा लुप्त होता दृष्टिगत नहीं होता, जिस कारण उसकी गतिशीलता में एक अनोखी लय दृष्टिगत होती है, जो लेखक के कथा संगठन की प्रवीणता को प्रमाणित करती है। खंडकाव्य की कथा संक्षेप में सर्गानुसार इस प्रकार है—

प्रथम सर्ग (ईश-स्तवन)

कवि ने प्रस्तुत खंडकाव्य के प्रथम सर्ग में ईश्वर की स्तुति की है और उसकी सर्वव्यापकता का वर्णन किया है। वस्तुत: यह सर्ग मंगलाचरण के रूप में ही प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय सर्ग (दशरथ-पुत्रों का जन्म एवं बाल्यकाल)

इस सर्ग में कवि ने राजा दशरथ के चारों पुत्रों के जन्म का वर्णन किया है। ये चारों पुत्र— राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न— इक्ष्वाकु वंश की मर्यादा को बढ़ाने वाले हैं। बाल्यकाल में चारों पुत्र अपनी लीलाओं से राजमहल की शोभा बढ़ाते रहते हैं। इक्ष्वाकु वंश के राजा दशरथ की यश-सुरभि भारतवर्ष के कोने-कोने में व्याप्त थी। कर्त्तव्यपरायणता, दानवीरता तथा युद्धविद्या में राजा दशरथ की कोई भी समता नहीं कर सकता था। युद्ध में महाराजा दशरथ सदैव विजयी होते थे। राजा दशरथ नीतिज्ञ, सच्चरित्र तथ सुख-शांति में विश्वास करने वाले थे।

प्रश्न-2 'तुमुल' खंडकाव्य के तृतीय सर्ग का कथानक लिखिए।

उत्तर– **तृतीय सर्ग (मेघनाद)**

कवि ने तृतीय सर्ग में मेघनाद के पराक्रम का वर्णन किया है। मेघनाद ने अपनी युवावस्था में इंद्र के पुत्र जयंत को भी पराजित किया था। धरती पर रहने वाले सभी राजा मेघनाद के नाम से कंपित हो जाते थे। मेघनाद का तेज सूर्य के समान था।

प्रश्न-3 'तुमुल' खंडकाव्य में मकराक्ष-वध के परिणामस्वरूप शोकग्रस्त रावण की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर– **चतुर्थ सर्ग (मकराक्ष-वध)**

इस सर्ग में मकराक्ष के वध तथा रावण की चिंता का वर्णन किया गया है। श्री रामचंद्र जी के तीखे वाणों से सारे राक्षस भागने लगे। रावण मकराक्ष को याद करके चिंतामग्न हो गया। उसका मुख पीला पड़ गया तथा आँखों में अश्रुधारा बह निकली। मकराक्ष के वध के पश्चात् रावण ने मेघनाद को युद्ध क्षेत्र में भेजने की योजना बनाई; क्योंकि रावण मेघनाद को भी अपने समान ही महाबली समझता है।

पंचम सर्ग (रावण का आदेश)

प्रस्तुत सर्ग में रावण द्वारा मेघनाद की अतुलित वीरता का वर्णन किया गया है। मेघनाद की अजेय शक्ति के सम्मुख वह मकराक्ष की मृत्यु को भी भूल गया है। रावण को अत्यधिक चिंतित देखकर मेघनाद ने उसके चरणों का स्पर्श किया। रावण ने बड़ी कठिनता से मेघनाद के सम्मुख अपने मन की व्यथा इस प्रकार प्रकट की— ''हे पुत्र! तुम्हारे होते हुए संपूर्ण राज्य में युद्ध के भय से हलचल मच गई है। हमें युद्ध से किसी भी प्रकार भयभीत नहीं होना है। राम से बदला न लेने में हमारी कायरता है, इसलिए मेरा आदेश है कि तुम युद्ध में लक्ष्मण को मृत्यु की गोद में सुला दो।'' रावण ने मेघनाद के शौर्य की प्रशंसा करते हुए उसे युद्ध में लड़ने के लिए भेजा। रावण को पूरा विश्वास था कि मेघनाद मकराक्ष के वध का बदला भी लेगा और क्षणभर में शत्रुओं को परास्त भी कर देगा।

प्रश्न-4 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर 'मेघनाद की प्रतिज्ञा' सर्ग का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के षष्ठ सर्ग का कथानक/कथावस्तु लिखिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य में वर्णित 'मेघनाद की प्रतिज्ञा' का सोदाहरण वर्णन कीजिए।**

षष्ठ सर्ग (मेघनाद-प्रतिज्ञा)

उत्तर– मेघनाद के गर्जन से रावण का स्वर्ण-महल भी हिलने लगा। मेघनाद ने ज्यों-ज्यों गवोक्ति की, त्यों-त्यों रावण का वक्षस्थल गर्व से फूलने लगा। रावण के सम्मुख मेघनाद ने प्रतिज्ञा की—''हे पिता! मेरे होते हुए आप कभी शोक न करेंगे। यदि मैं आपका कष्ट हरण न कर सकूँ तो मैं कभी धनुष को हाथ नहीं लगाऊँगा। मैं राम के सम्मुख भी लड़ूँगा और सभी के सिर काट दूँगा। लक्ष्मण की शक्ति को भी मैं देख लूँगा। मैं अधिक न कहकर केवल यह कहता हूँ कि संग्राम में मेरी अवश्य विजय होगी।'' मेघनाद ने कहा— ''यदि शत्रु आकाश में भी वास करने लगेंगे अथवा पाताल में जाकर भी छिपेंगे तो भी उनके प्राणों की रक्षा नहीं हो सकेगी। है पिता! यदि मैं संग्राम में विजयी नहीं हुआ तो भविष्य में युद्ध का नाम भी नहीं लूँगा।''

प्रश्न-5 'तुमुल' खंडकाव्य में वर्णित 'मेघनाद का अभियान' सर्ग का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर 'मेघनाद का अभियान' सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर–

सप्तम सर्ग (मेघनाद का अभियान)

मेघनाद रावण के सम्मुख प्रतिज्ञा करके जब युद्धक्षेत्र की ओर चलने लगा तो देवलोक के सभी देवता काँपने लगे। मेघनाद का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसकी हुंकार से बड़े-बड़े धैर्यशाली शूरवीरों का साहस छूटने लगा। बड़े-बड़े सेनापति मेघनाद के क्रोध का कारण पूछने लगे। मेघनाद ने युद्ध का रथ सजवाया तथा युद्ध के बाजे बजाने का आदेश दिया। इसके उपरांत यज्ञ आदि करके तथा युद्ध के रथ पर बैठकर मेघनाद शत्रुओं से लोहा लेने चल पड़ा। मेघनाद की शक्ति का अनुमान करके देवता विचार करने लगे कि मेघनाद के सम्मुख राम के प्राण अब कैसे बच सकेंगे। मेघनाद के युद्ध-कौशल के विषय में सभी कहते हैं कि जब वह वाणों की वर्षा करता है तो पृथ्वी भी काँप उठती है और सूर्य तथा चंद्रमा भी अपने धैर्य को त्याग देते हैं।

अष्टम सर्ग (युद्धासन्न सौमित्र)

राम की आज्ञा लेकर लक्ष्मण भी युद्ध करने के लिए तैयार हो गए। युद्धातुर लक्ष्मण को देखकर हनुमान आदि वीर भी युद्ध करने के लिए तत्पर हो गए। लक्ष्मण ने क्षणभर में ही मेघनाद के सम्मुख मोर्चा ले लिया। दोनों वीरों में घमासान युद्ध हुआ। दोनों वीरों में से कौन जीतेगा, इसका अनुमान नहीं किया जा सकता था। स्वयं लक्ष्मण ने भी मेघनाद की वीरता की प्रशंसा की। लक्ष्मण ने कहा कि तुझे अपने सामने देखकर युद्ध करने की इच्छा ही नहीं होती। मुझे यही चिंता है कि मैं अपने बाणों से तेरी छाती को छलनी कैसे बनाऊँ। अर्थात् मैं ऐसा करना नहीं चाहता हूँ। मेघनाद ने लक्ष्मण की बात को ध्यानपूर्वक सुना। यद्यपि वह लक्ष्मण की ज्ञान की गरिमा को समझता है, तथापि उसे शत्रु समझकर उसकी मधुर वाणी के जाल में उलझना नहीं चाहता और युद्ध करने की ठानता है।

प्रश्न–6 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध का वर्णन कीजिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर नवम सर्ग 'लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध' तथा 'लक्ष्मण की मूर्च्छा' का सारांश लिखिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध एवं उसके परिणाम पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर–

नवम सर्ग

(लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध तथा लक्ष्मण की मूर्च्छा)

मेघनाद ने लक्ष्मण से कहा कि जो तुमने कहा है, मैं उसे सत्य ही मानता हूँ। तुम नीतिज्ञ तथा सर्वज्ञ हो। तुम्हारी दशा देखकर मैं भी तुमसे युद्ध करना नहीं चाहता, फिर भी मैं आज विवश हूँ; क्योंकि मैं आज अपने पिता से यह प्रतिज्ञा करके आया हूँ कि युद्ध में समस्त शत्रुओं का संहार करूँगा। तुम्हारी इच्छा लड़ने की हो या न हो, फिर भी तुम मेरी प्रतिज्ञा को सफल बनाने में मेरी सहायता करो। मैं बिना लड़े यहाँ से नहीं जाऊँगा, इसलिए युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। मेघनाद की चुनौती को सुनकर लक्ष्मण अत्यधिक कुपित हो गए। लक्ष्मण के क्रोध को देखकर संपूर्ण संसार थर्राने लगा। लक्ष्मण ने मेघनाद से कहा—''अरे अधम! मैंने तुमसे अपने मन का भाव न जाने क्यों कह दिया। यह सत्य है कि मधुर वाणी से दुष्टजन कभी नहीं सुधरते, जैसे दूध पीने पर सर्प अपना विष नहीं त्यागते।'' लक्ष्मण ने कहा कि मैं युद्ध के लिए तैयार हूँ। इनता कहते ही लक्ष्मण मेघनाद पर बाणों से प्रहार करने लगे। लक्ष्मण के भीषण प्रहारों को देखकर शत्रु-सेना के पैर उखड़ गए। मेघनाद अपने सैनिकों के साहस को बढ़ाता रहा। मेघनाद ने अपने सैनिकों से कहा—''मेरे युद्ध-कौशल को भी देखो! मैं क्षणभर में इन शत्रुओं को परास्त कर दूँगा। मैंने पिता के सम्मुख जो प्रतिज्ञा की है, उसे पूरा करूँगा।'' राक्षस-सेना में फिर से साहस का संचार हुआ। मेघनाद ने भीषण युद्ध किया। मेघनाद तथा लक्ष्मण के भयंकर युद्ध को सभी सैनिक देख रहे थे। लक्ष्मण द्वारा छोड़े गए बाणों को मेघनाद ने नष्ट कर दिया। दोनों पराक्रमी वीर सिंह के समान लड़ रहे थे। दोनों का शरीर रक्त से लथपथ था। मेघनाद ने जब यह देखा कि उसके चलाए गए बाण से लक्ष्मण कुछ दुर्बल हो गए हैं तो उसने लक्ष्मण पर शक्ति चला दी। क्षणभर में ही लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए। धरती पर मूर्च्छित पड़े लक्ष्मण को देखकर मेघनाद सिंह गर्जना करके विजय के गर्व में उन्मत्त होकर लंका की ओर चला गया।

प्रश्न–7 'तुमुल' खंडकाव्य के 'हनुमान द्वारा उपदेश' सर्ग का सारांश लिखिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य में हनुमान द्वारा दिए गए उपदेश का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के दशम सर्ग का कथानक लिखिए।**

उत्तर–

दशम सर्ग (हनुमान द्वारा उपदेश)

लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर वानर सेना अत्यधिक व्याकुल हो गई। उस समय हनुमान सबको उपदेश देने लगे। हनुमान जी कहते हैं कि इस समय अधिक चिंता मत करो। हमारी आस्था भगवान राम में है, जिसके रक्षक राम हैं उसका संसार में कुछ नहीं बिगड़ सकता। तुम्हारी व्याकुल दशा को देखकर शत्रु तुम्हारा उपहास करेगा। हनुमान के उपदेश का सभी पर प्रभाव पड़ा और वे सभी शोकरहित हो गए। राम अपनी कुटी में बैठे हुए थे। अकस्मात् ही उनका मन कुछ चिंतित-सा होने लगा।

प्रश्न–8 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर राम के भ्रातृप्रेम का वर्णन कीजिए।

उत्तर– **एकादश सर्ग (उन्मत्त राम)**

राम ने सोचा कि आज व्यर्थ ही मन में व्यथा क्यों जन्म ले रही है। मैंने ऐसा कौन–सा पाप किया है, जो मेरा मन सशंकित है और मेरे पैर काँप रहे हैं। उसी समय अंगद, हनुमान, सुग्रीव आदि मूर्च्छित लक्ष्मण को लिए राम के पास आए। लक्ष्मण की दशा देखकर राम के नेत्रों में अश्रुधारा बहने लगी।

प्रश्न–9 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर 'राम-विलाप और सौमित्र का उपचार' सर्ग की कथा संक्षेप में लिखिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के 'राम-विलाप और सौमित्र का उपचार' सर्ग का सारांश लिखिए और समझाइए कि सर्वाधिक मार्मिक स्थल आपको कौन–सा लगा?**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के किसी मार्मिक स्थल का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– **द्वादश सर्ग (राम-विलाप और सौमित्र का उपचार)**

लक्ष्मण की दशा को देखकर राम विलाप करने लगे। उन्होंने कहा—''हे लक्ष्मण! तुम्हारी इस दशा से मैं अत्यंत दु:खी हूँ। हे धनुर्धर! तुम धनुष हाथ में लेकर फिर उठो। मैं तुम्हारे बिना नहीं जी सकता। एक बार तुम अपने नेत्रों को अवश्य खोलो।'' राम की कारुणिक दशा को देखकर जांबवान ने हनुमान को वैद्य के पास जाने का आदेश दिया। हनुमान क्षणभर में सुषेण वैद्य को वहाँ ले आए। सुषेण वैद्य ने कहा कि संजीवनी बूटी के बिना लक्ष्मण की चिकित्सा नहीं हो सकती। इस बूटी को लाने के लिए भी हनुमान ने ही प्रस्थान किया। संजीवनी बूटी की पहचान न होने से हनुमान पूरे पर्वत को ही उखाड़कर ले आए। संजीवनी बूटी के उपयोग से लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट गई और वानर सेना में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

प्रश्न–10 विभीषण ने मेघनाद के वध के लिए राम को कौन–सी मंत्रणा दी? 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के 'विभीषण की मंत्रणा' सर्ग का सारांश लिखिए।**

उत्तर– **त्रयोदश सर्ग (विभीषण की मंत्रणा)**

राम–लक्ष्मण के साथ रीछ व वानर भी बैठे हुए थे, तभी रामभक्त विभीषण ने यह सूचना दी कि मेघनाद यज्ञ में तल्लीन है। यदि उसका यज्ञ पूरा हो गया तो किसी प्रकार भी राम की जीत नहीं हो सकती। इसलिए लक्ष्मण को यज्ञ करते हुए मेघनाद पर तुरंत आक्रमण कर देना चाहिए। विभीषण की बात मानकर राम ने अपनी सेना को आक्रमण करने का आदेश दिया। राम का चरण–स्पर्श करके लक्ष्मण ने युद्ध में मेघनाद का वध करने की प्रतिज्ञा ली।

प्रश्न–11 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर मेघनाद-वध का सारांश लिखिए।

***अथवा* मेघनाद वध करने के लिए विभीषण ने राम–दल को कौन–सी मंत्रणा दी और उसका क्या परिणाम हुआ?**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के चतुर्दश सर्ग के युद्ध–वर्णन पर प्रकाश डालिए।**

उत्तर– **चतुर्दश सर्ग (मख-विध्वंस और मेघनाद-वध)**

लक्ष्मण अपने दल–बल के साथ उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ मेघनाद यज्ञ कर रहा था। लक्ष्मण ने मेघनाद पर बाणों की वर्षा प्रारंभ कर दी। मेघनाद के शरीर से इतना रक्त बहा कि यज्ञ की अग्नि भी बुझने लगी। रीछ और वानरों के हाथों से यज्ञ के पुरोहित, यजमान आदि सभी मारे गए, केवल मेघनाद ही शेष रह गया। लक्ष्मण को बाणों की वर्षा करते देखकर मेघनाद क्रोध से कहने लगा कि इस प्रकार छल–कपट से युद्ध करना वीरता का लक्षण नहीं है। मेरे सामने एक बार युद्ध में पराजित होने पर तुमने जो यह घृणित कार्य किया है, वह सर्वथा निंदनीय है। मेघनाद ने लक्ष्मण से कहा कि तुम्हारी इस जीत में भी हार है। इससे रघुवंश पर जो कलंक लगा है,उसे कभी नहीं धोया जा सकता। मेघनाद की बात सुनकर लक्ष्मण थोड़ी देर के लिए रुक गए, परंतु विभीषण के संकेत पर पुन: मेघनाद पर बाणों की वर्षा करने लगे। लक्ष्मण के आक्रमणों से मेघनाद यज्ञ–भूमि में ही मारा गया। मेघनाद के मारे जाने पर देवता भी स्वर्गलोक से पुष्पों की वर्षा करने लगे।

प्रश्न–12 'तुमुल' खंडकाव्य के अंतिम सर्ग का कथानक लिखिए।

उत्तर– **पंचदश सर्ग (राम की वंदना)**

मेघनाद के शव को यज्ञ–भूमि में ही छोड़कर वानर सेना राम की ओर चली। विभीषण ने युद्ध में लक्ष्मण की विजय का समाचार राम को दिया। राम ने लक्ष्मण से कहा कि मैं जानता था कि केवल लक्ष्मण ही मेघनाद को पराजित कर सकते हैं। लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा कि हे भाई राम! जिस पर आपकी कृपा हो जाती है, वह तो जग–विजेता हो जाता है।

प्रश्न–13 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर नायक लक्ष्मण का चरित्र–चित्रण कीजिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य का नायक कौन है? उसके चरित्र की (तीन मुख्य) विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'तुमुल' नामक खंडकाव्य में जिस पात्र ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया हो, उसकी चारित्रिक विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के प्रमुख नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के नायक और प्रतिनायक के नाम बताइए तथा उनके चरित्र की दो-दो विशेषताएँ भी लिखिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य का कथानायक लक्ष्मण है। उनके चरित्र-चित्रण का विश्लेषण कीजिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य का नायक आप किसे मानते हैं? उसके चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य में अपने प्रिय पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* ''सच है सुधामय भारती से**
खल सुधरते हैं नहीं।।''

–'तुमुल' खंडकाव्य से उदाहरण देते हुए कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर– कवि श्यामनारायण पांडेय कृत 'तुमुल' खंडकाव्य के नायक 'लक्ष्मण' और प्रतिनायक मेघनाद हैं। लक्ष्मण में एक श्रेष्ठ नायक के अनेक गुण विद्यमान हैं। खंडकाव्य का संपूर्ण कथानक उनके चारों ओर ही केंद्रित है। लक्ष्मण की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार है—

1. शीलवान्– लक्ष्मण का बाह्य शरीर जितना आकर्षक तथा सुंदर है, उतना ही उनका अंत:करण भी सरल, शुद्ध तथा कोमल है। लक्ष्मण में उदारता, कोमलता तथा स्वाभाविकता के गुण विद्यमान है। वे अपने भाई राम के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं। उन पर राम की भी असीम कृपा रहती है। वे राम के भक्त, अनुचर एवं सखा है। उनके चरित्र में कृत्रिमता नहीं है। यदि उदारता का गुण उनमें है तो यह गुण उनकी प्रत्येक अवस्था में परिलक्षित होता है। मेघनाद को युद्धस्थल में देखकर लक्ष्मण के हृदय में जो दया या कोमलता का भाव उत्पन्न होता है, वह उनका जन्मजात गुण है।

2. मानवीय गुणों का भंडार– लक्ष्मण मानवीय गुणों के भंडार हैं। कवि के शब्दों में—

निशदिन क्षमा में क्षिति बसी, गंभीरता में सिंधु था।
था धीरता में अद्रि, यश में खेलता शरदिंदु था।

वस्तुत: लक्ष्मण अनेक गुणों से विभूषित हैं। नायक होने के लिए आवश्यक सभी गुण उनमें पूर्णतया विद्यमान है।

3. सौंदर्य के आगार– लक्ष्मण का व्यक्तित्व अत्यंत आकर्षक है। वे रघुकुल की शोभा बढ़ाने वाले तथा अपनी उपस्थिति से सर्वत्र निराली छटा बिखेरने वाले मनोहर राजकुमार हैं। शैशवकाल में वे ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो समुद्र-मंथन से निकले एक रत्न हो। इस संदर्भ में कवि ने लिखा है—

माता सुमित्रा को मिला था, एक लाल अमूल्य ही।

लक्ष्मण के सौंदर्य को सब देखते ही रह जाते हैं। वे जब बोलते हैं तो अत्यंत मधुर तथा कर्णप्रिय संगीत कानों में घोल देते हैं। कवि ने उनके सौंदर्य की प्रशंसा इस प्रकार की है—

थी बोल में सुंदर सुधा, उर में दया का वास था।
था तेज में सूरज, हँसी में चाँद का उपहास था।

लक्ष्मण सचमुच ही सौंदर्य अथवा क्रांति के प्रतीक हैं। स्वयं मेघनाद भी उनके रूप पर विमोहित हो जाता है। वह उन्हें 'लावण्यधारी ब्रह्माचारी' कहकर उनके सौंदर्य की प्रशंसा करता है।

4. शक्ति के पुंज– लक्ष्मण शीलवान्, उदार, दयालु और आज्ञाकारी हैं, तथापि उनमें पराक्रम, शक्ति, साहस, उत्साह तथा वीरता की भावना भी कूट-कूटकर भरी हुई है। लक्ष्मण धीर, वीर तथा साहसी योद्धा हैं। युद्धक्षेत्र में शत्रु को ललकारने, भीषण युद्ध करने तथा विजय-पताका फहराने में उनके शौर्य को देखा जा सकता है।

शौर्य तथा शक्ति का गुण भी लक्ष्मण को बाल्यकाल से ही प्राप्त हुआ है। लक्ष्मण अपने युद्ध-कौशल तथा वीरता को युद्धक्षेत्र में ही प्रदर्शित करते हैं। वे रणोन्मत्त होकर शत्रु को परास्त करने में ही अपना कर्तव्य मानते हैं। कवि ने लिखा भी है—

सौमित्रि को घननाद का रव, अल्प भी न सहा गया।
निज शत्रु को देखे बिना, उनसे न तनिक रहा गया।।

युद्ध में शत्रु के मनोभावों को भली-भाँति पहचानने में लक्ष्मण अत्यंत कुशल है। वे युद्ध में मेघनाद की गर्वोक्ति को सुनकर इस प्रकार कहते हैं—

सच है सुधामय भारती से, खल सुधरते हैं नहीं।
क्या क्षीर पाने पर फणी, विष त्याग देते हैं कहीं?

लक्ष्मण के शौर्य तथा पराक्रम को देखकर स्वयं राम इस प्रकार कहते हैं—

मैं जानता था मार सकते हो तुम्हीं घननाद को।

प्रश्न–14 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर 'राम' के चरित्र पर प्रकाश डालिए।
अथवा **'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर लक्ष्मण के प्रति राम के भ्रातृस्नेह का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– 'तुमुल' खंडकाव्य कथा का आधार यद्यपि राम–रावण युद्ध ही है, तथापि इसमें राम के चरित्र पर बहुत अधिक प्रकाश नहीं डाला गया है। वे युद्ध के प्रणेता अवश्य हैं, किंतु विजयेच्छा के साधक उनके अनुज लक्ष्मण है। खंडकाव्य के 15 सर्गों में से केवल तीन सर्गों में उनके चरित्र–चित्रण का प्रयास लेखक द्वारा किया गया है। खंडकाव्य में हम उनके चरित्र का मूल्यांकन निम्नांकित बिंदुओं के अंतर्गत कर सकते हैं—

1. अद्वितीय भ्रातृ वत्सल– राम जैसा भ्रातृ वत्सल भाई संसार में कोई दूसरा नहीं है। अपनी इसी भ्रातृ वत्सलता के कारण वे भाई के अमंगल की बात के मस्तिष्क में आने मात्र से व्याकुल हो उठते हैं—

बैठे कुशासन पर कुटी में,
राम पर उन्मन हुए।
होने लगे अपशकुन एका–
एक चिंतित–मन हुए॥

वे लक्ष्मण के बिना एकपल भी जीवित नहीं रह सकते; क्योंकि लक्ष्मण बचपन से ही उनके भक्त हैं। उनके तो प्राण ही लक्ष्मण में बसते हैं—

मैं जी न सकता तुम बिना,
तुम बाल भक्त अनन्य हो।
X X X
हा हंत! बंधु–विहीन कैसे
अवध जाऊँगा अहो।
माता सुमित्रा को बदन कैसे
दिखाऊँगा कहो॥

अपने इसी भ्रातृ–प्रेम के कारण वे लक्ष्मण के रणधीर होने पर भी उसे एक बालक से अधिक नहीं मानते और सब प्रकार से उसकी रक्षा का दायित्व उठाना अपना कर्तव्य मानते हैं। यही कारण है कि वे लक्ष्मण को युद्ध में भेजते समय सभी योद्धाओं से विनय करते हैं कि वे सभी युद्ध में लक्ष्मण के साथ रहें और उसे अकेला न छोड़ें—

सब लोग मेरे बंधु के ही,
साथ रहना युद्ध में।
रणरक्ष, पर हे बल, दायाँ,
हाथ रहना युद्ध में॥

2. अधीर– राम को अन्य काव्यों में भले ही धीर–वीर के रूप में चित्रित किया गया है, किंतु कवि श्यामनारायण पांडेय ने उनके अधीर रूप का चित्रण ही यहाँ किया है। वे सदैव युद्ध में लक्ष्मण की विजय और कुशलता के प्रति शंकित और व्याकुल रहते हैं। उनकी अधीरता को कवि ने स्वयं राम के मुख से इस रूप में व्यक्त किया है—

जाता क्यों न धरा है धीर,
नयनों से क्यों झरता नीर।
होता जाता दृश्य उदास,
कैसा आता है उच्छ्वास॥

उनकी अधीरता को उस समय चरम पर पहुँच जाती है, जब वे अनुज लक्ष्मण को मूर्च्छित अवस्था में देखकर स्वयं धरती पर गिर पड़ते हैं और विलाप करने लगते हैं—

रघुवर देश बन्धु का हाल,
गिरे धरातल पर तत्काल।
लगे विलपने हुए अधीर,
बहे दृगों में झर–झर नीर॥

3. अनीति के पोषक– 'तुमुल' खंडकाव्य में कवि श्यामनारायण पांडेय ने राम को अनीति के पोषक के रूप में चित्रित किया है। नीति कहती है कि युद्ध के रूप में निहत्थे पर और छिपकर वार नहीं करना चाहिए और राम ने नीति के विरुद्ध यही सब किया। उन्होंने यज्ञ करते मेघनाद का वध करने की आज्ञा लक्ष्मण को दे दी और अपने मन में यह भी नहीं सोचा

कि उनके इस कृत्य से रघुवंश पर लगे कलंक को किसी प्रकार धोया न जा सकेगा। मेघनाद ने अपने इस दुष्कृत्य की इन शब्दों में भर्त्सना की—

इस कार्य से रघुवंश में जो,
कालिमा है लग रही।
उसको न घन भी धो सकेगा।
भार नत होगी मही॥

4. अति सामान्यजन– राम को एक सामान्यजन के रूप में प्रस्तुत खंडकाव्य में निरूपित किया गया है। अपने भाई लक्ष्मण को मूर्च्छित देखकर वे साधारण मनुष्य की भाँति फूट-फूटकर विलाप करने लगते हैं और स्वयं को असहाय अनुभव करने लगते हैं—

हा, क्या कहूँ, कैसे जगाऊँ,
प्रार्थना किसकी करूँ।
मुँह तक, कलेजा आ रहा है,
क्या करूँ, कैसे मरूँ॥

5. वीराग्रणा– राम वीरों में अग्रणी वीर हैं। कवि ने स्वयं उनके लिए वीराग्रणी शब्द का प्रयोग किया है—

वीराग्रणी रघुनाथ के जो,
प्राण का आधार है।

जो सच्चा वीर होता है, वही दूसरों की वीरता का सम्मान करता है और उसे उसकी वीरता का श्रेय भी देता है। यही गुण राम में है। लक्ष्मण ने मेघनाद को मारकर युद्ध जीता है, इसका पूर्ण श्रेय वह उन्हें देते हुए कहते हैं कि तुमने जो कठिन लड़ाई लड़ी है, उसके बाद तो मेरे लड़ने के लिए अब कुछ रह ही नहीं गया है, अर्थात् तुमने तो एक प्रकार से मेरा कार्य ही समाप्त कर दिया है। इस लड़ाई को तुम्हारे अलावा और कोई नहीं लड़ सकता था—

तुमने विजय पाई, तुम्हारी,
मैं बड़ाई क्या करूँ।
तुमने लड़ाई की कठिन, अब
मैं लड़ाई क्या करूँ॥
मैं जानता था मार सकते हो
तुम्हीं घननाद को।

6. सर्वज्ञ– कवि पांडेय ने राम को यद्यपि साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है, तथापि 'राम की वंदना' सर्ग में उन्होंने उनके अवतारी रूप की उपासना की है और सर्वज्ञ बताया है। उन्होंने साधारण मनुष्य के रूप में जो आचरण किया वह सब उनकी लीला थी, अन्यथा उन्हें 'संपूर्ण वृत्तांत पहले से ज्ञात था, फिर भी वे अनजान बने रहे—

भगवान के पद छू सभी ने,
प्रति से वंदन किया।
मंगल समझकर राम ने भी,
अमित अभिनंदन किया॥
सब जानते भी राम बोले,
युद्ध का क्या वृत्त है।
कोई मुझे जल्दी बता दे,
व्यग्र होता चित्त है॥

7. भावुक हृदय– राम यद्यपि सर्वज्ञ है, फिर भी स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते और भावनाओं में बह जाते हैं। लक्ष्मण मेघनाद को मारकर युद्ध जीत आए हैं और यह विजय उन्हें सजह ही प्राप्त हो गई है, विभीषण के मुख से यह समाचार सुनकर भगवान राम भावुक हो उठते हैं। वे पहले लक्ष्मण की पीठ ठोकते हैं और फिर सिर पर आशीर्वाद का हाथ फेरते हैं। इसके पश्चात् लक्ष्मण का मुख अपलक देखते हुए उनकी आँखों में आँसू निकल आते हैं और इस भावावेश में वे अपने मुख से कुछ भी नहीं कह पाते—

सौमित्रि-मुख की ओर अपलक,
देखते ही रह गए।
बोले, मगर पहले हृदय के,
भाव दृग से बह गए।।

इस प्रकार कवि ने राम के चरित्र-चित्रण में नवीन और प्राचीन दोनों ही दृष्टियों का समावेश करते हुए उनके चरित्र की अविवादिता से रक्षा करते हुए जहाँ उन्हें एक साधारण मनुष्य के रूप में चित्रित किया है; वहीं उनके दिव्य, अलौकिक अवतारी रूप की वंदना करके उनके ईश्वरत्व को भी स्वीकार किया है।

प्रश्न–15 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर मेघनाद का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के प्रतिनायक मेघनाद का चरित्र-चित्रण कीजिए।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर सिद्ध कीजिए कि मेघनाद का चरित्र सर्वोत्कृष्ट है।**
***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के आधार पर मेघनाद की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।**

उत्तर– कवि श्यामनारायण पांडेय विरचित 'तुमुल' खंडकाव्य में 'मेघनाद' को प्रतिनायक के रूप में चित्रित किया गया है। मेघनाद तेजस्वी, पराक्रमी तथा वीर योद्धा है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

1. यज्ञनिष्ठ एवं शील-संपन्न– मेघनाद राक्षस-वंश से संबंधित है, फिर भी वह यज्ञ-अनुष्ठान आदि कर्मों को करने वाला है। वह युद्ध से पूर्व यज्ञ करता है। यज्ञ-वेदी पर लक्ष्मण के बाणों से घायल होने पर भी वह यज्ञ को अधूरा नहीं छोड़ता। वह क्षणभर में ही विभीषण द्वारा उत्साहित लक्ष्मण के आक्रमण के रहस्य को जान लेता है, फिर भी वह अपने शील स्वभाव के कारण लक्ष्मण के कृत्य की ओर संकेत करता हुआ कहता है—

सम्मुख समर में हारने पर, यह नया संग्राम है।
योधा न कर सकता कभी, इतना घृणास्पद काम है।

2. पितृभक्त तथा विवेकी वीर– मेघनाद अपने पिता रावण के प्रति पूर्ण भक्ति रखता है। वह अपने पिता को चिंतामग्न देखकर स्वयं भी व्याकुल हो जाता है। अपने पिता को धैर्य प्रदान करने के लिए वह गर्वोक्ति करता है। वह कहता है कि मैं सिंह के समान युद्ध में उठूँगा और संग्राम में विजयी होकर रहूँगा। मेघनाद परिस्थिति को समझने वाला विवेकी वीर है। लक्ष्मण द्वारा अपने व्यक्तित्व की प्रशंसा सुनकर भी वह अपने निश्चय से विचलित नहीं होता और युद्ध करने के लिए ही तत्पर रहता है। मेघनाद लक्ष्मण से कहता है—

अतएव मानूँगा नहीं, सन्नद्ध अब हो जाइए।
हे वीरवर! मेरी विनय से, बद्ध अब हो जाइए।

3. अतुल पराक्रमी– मेघनाद के पराक्रम को राम, लक्ष्मण तथा अन्य वीर भी स्वीकार करते हैं। उसने युद्ध में इंद्र को भी परास्त किया है। रावण को तो अपने पुत्र मेघनाद के पराक्रम पर अत्यधिक भरोसा है। मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने के लिए रावण केवल मेघनाद को उपयुक्त मानता है और कहता है—

हे तात, तेरी शक्तियों का अंत है मिलता नहीं।
घमासान में भी पुत्र तेरा, बाल तक हिलता नहीं।

युद्धक्षेत्र की ओर जाते हुए मेघनाद के पराक्रम के सम्मुख धरती काँप उठती है। वृक्ष अपने आप गिरने लगते हैं और बड़े-बड़े धैर्यशाली वीरों का कलेजा दहलने लगता है।

4. तेजस्वी व्यक्तित्व– मेघनाद तेजस्वी व्यक्तित्व का युवक है। उसके मुखमंडल पर ऐसा ओज है,जो बड़े-बड़े वीरों को एकटक देखने के लिए विवश कर देता है। उसके तेजस्वी रूप को देखकर सभा में बैठे हुए अन्य वीरों की दशा का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

जो वीर थे बैठे वहाँ वे, टक-टक लखने लगे।

उन्नत ललाट, अतुलित पराक्रम, सिंह-गर्जना आदि गुण मेघनाद के व्यक्तित्व को अधिक तेजस्वी बनाते हैं। युद्धस्थल में स्वयं लक्ष्मण भी मेघनाद के ऊँचे मस्तक, विशाल नेत्र और केहरी जैसी कमर को देखकर क्षणभर के लिए विस्मित हो जाते हैं।

5. परम उत्साही एवं दृढ़-प्रतिज्ञ– मेघनाद के मन में मकराक्ष की मृत्यु का बदला लेने तथा लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए उत्पन्न परम उत्साह एवं साहस को देखकर संपूर्ण पृथ्वी काँप उठती है। रावण भी अपने पुत्र के साहस को जानकर कहता है—

मम सुत षडानन से नहीं है, युद्ध में डरता कभी।

6. आत्मविश्वासी तथा अभिमानी– मेघनाद को अपने पराक्रम, शौर्य तथा युद्ध–कौशल पर पूर्ण विश्वास है कि वह युद्ध में लक्ष्मण को परास्त करेगा और वह ऐसा करके दिखाता भी है। पिता के सम्मुख भी मेघनाद का यही आत्मविश्वास झलक उठता है। उसकी गर्वोक्तियों को सुनकर तो सब भयभीत हो जाते हैं। लक्ष्मण की बात को वह ध्यानपूर्वक सुनकर व्यंग्यभरी हँसी हँसता है। ऐसा करने में वह अपने आत्मविश्वास तथा अभिमान को प्रकट करता है। कवि ने इस भाव का चित्रण इस प्रकार किया है—

जो–जो कहा उसको उन्होंने, ध्यान से तो सुन लिया।
पर गर्व से घननाद ने, सौमित्रि को लख हँस दिया।

इस प्रकार कवि ने मेघनाद के चरित्र और उसके वीर रूप का चित्रण इस प्रकार किया है कि वह काव्य की गरिमा से परिपूर्ण हो उठा है।

प्रश्न–16 'तुमुल' खंडकाव्य के प्रतिपाद्य विषय क्या है? उससे इस ग्रंथ के रचयिता के किन उद्देश्यों की पूर्ति होती है? लिखिए।

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य में लक्ष्मण–मेघनाद की वीरता और पराक्रम पर बहुत कुछ कहा गया है। आपको इनमें से किसकी वीरता अधिक प्रभावित करती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य लिखकर उसके कवि ने किस उद्देश्य की पूर्ति की है? समझाकर लिखिए।**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य के रचना संबंधी उद्देश्य क्या हैं? इसमें रचनाकार कहाँ तक सफल हुआ है?**

***अथवा* 'तुमुल' खंडकाव्य की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

***अथवा* '' 'तुमुल' खंडकाव्य अपने उद्देश्य की प्राप्ति हेतु अधिक गतिशील है,'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।**

उत्तर– 'तुमुल' खंडकाव्य का प्रतिपाद्य विषय लक्ष्मण एवं मेघनाद के युद्ध का वर्णन है। 'श्रीरामचरिमानस' के इस प्रसंग को आधार बनाकर ही कविवर श्यामनारायण पांडेय ने इस खंडकाव्य की रचना की है। उन्होंने इस खंडकाव्य के माध्यम से अन्याय एवं नृशंसता पर आधारित जीवन–पद्धति को अनुचित एवं विफल सिद्ध करते हुए न्याय, दया, प्रेम तथा सद्‌भावना से युक्त संस्कृति की उत्कृष्टता प्रमाणित की है।

इस खंडकाव्य का प्रयोजन लक्ष्मण के चरित्र की उदात्त विशेषताओं को प्रकाशित करना है। कवि को अपने इस प्रयत्न में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है। लक्ष्मण शक्ति के पुंज होते हुए भी शील, विनय एवं सदाचार की मूर्ति हैं। दूसरी ओर मेघनाद शक्तिसंपन्न तो है, किंतु उसमें अपनी शक्ति के प्रति अहंकार का भाव विद्यमान है और वह अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए इस शक्ति का अनुचित प्रयोग करता है। लक्ष्मण की प्रेरणा के स्रोत मर्यादा, सदाचार एवं विनय की पूर्ति श्रीराम हैं। मेघनाद की प्रेरणा का स्रोत अहंकारी, क्रोधी एवं वासनाओं से युक्त व्यक्तित्ववाला रावण है। कवि ने इन दोनों शक्तियों का द्वंद्व; लक्ष्मण एवं मेघनाद के द्वंद्व के रूप में दिखलाया है और खंडकाव्य में यह स्पष्ट किया है कि तामसी और अत्याचारी शक्तियाँ चाहे जितनी भी प्रबल क्यों न हो, उन पर सदाचार की शक्ति ही सदा विजय प्राप्त करती है।

इस खंडकाव्य का उद्देश्य छात्र–छात्राओं एवं देश की युवा पीढ़ी को लक्ष्मण के त्याग, धैर्य, वीरता, साहस और सदाचार पर आधारित सद्‌गुणों को विकसित करने के लिए उत्साहित करना है।

प्रश्न–17 'तुमुल' खंडकाव्य के शीर्षक की सार्थकता/नामकरण के औचित्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'तुमुल' शब्द के शाब्दिक अर्थ पर दृष्टि डालने पर ज्ञात होता है कि तुमुल के अनेक अर्थ हैं— भीषण, क्रोधी, उत्तेजित, व्याकुल, होहल्ला, हंगामा, अव्यवस्थित द्वंद्वयुद्ध, अथवा रण–संकुल। ये सभी अर्थ एक प्रकार से युद्ध अथवा उसके वातावरण के द्योतक हैं। 'तुमुल' खंडकाव्य का भी मुख्य विषय लक्ष्मण–मेघनाद के मध्य हुए युद्ध का वर्णन करना रहा है। स्वयं कवि ने इस काव्य की भूमिका में लिखा है—''लक्ष्मण–मेघनाद का द्वंद्वयुद्ध वर्णन ही इसका मूल–प्रयोजन है और इसी ओर यह विशेष गति से अग्रसर होता है।'' इस युद्ध में **भीषणता** है तो लक्ष्मण और मेघनाद दोनों क्रोधी स्वभाव के हैं। दोनों में युद्ध के लिए **उत्तेजना** अपने चरम पर है तो युद्ध के कारण सर्वत्र **व्याकुलता, होहल्ला** और **हंगामा** व्याप्त है। दोनों में छिड़े द्वंद्वयुद्ध में **अव्यवस्था** है ही। इस प्रकार इस खंडकाव्य में तुमुल शब्द के समस्त अर्थ समाहित है; अत: खंडकाव्य की इन विशेषताओं के द्योतन के लिए 'तुमुल' के अतिरिक्त और कोई उपयुक्त शब्द नहीं हो सकता।

'तुमुल' शीर्षक में एक अच्छे शीर्षक के संक्षिप्त, सार्थक, विषयवस्तु का द्योतक आदि सभी गुण समाहित है; अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त और सार्थक है।

9. अग्रपूजा (पं.रामबहोरी शुक्ल)

मथुरा, आजमगढ़, इलाहाबाद आदि जिलों के लिए निर्धारित खंडकाव्य। नव-निर्मित जिलों के विद्यार्थी अपने विषय-अध्यापक से अपने जिले में निर्धारित खंडकाव्य के विषय में निश्चित जानकारी प्राप्त कर लें।

प्रश्न-1 'अग्रपूजा' खंडकाव्य का सारांश लिखिए।
***अथवा* 'अग्रपूजा' का कथा-सार अपने शब्दों में लिखिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' के कथानक का सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।**

उत्तर- श्री रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' नामक खंडकाव्य का कथानक श्रीमद् भागवत और महाभारत से लिया गया है। इसमें भारतीय जनजीवन को प्रभावित करने वाले महापुरुष श्रीकृष्ण के पावन चरित्र पर विविध दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला गया है। युधिष्ठिर ने अपने राजसूय यज्ञ में श्रीकृष्ण को सर्वश्रेष्ठ मानकर उनकी पूजा की थी, इसी आधार पर खंडकाव्य का नामकरण हुआ। संपूर्ण काव्य का कथानक छ: सर्गों में विभक्त है। उनका सारांश इस प्रकार है—

'अग्रपूजा' खंडकाव्य का प्रथम सर्ग 'पूर्वाभास' है। इस सर्ग की कथा का प्रारंभ दुर्योधन द्वारा समस्त पांडवों का विनाश करने के लिए लाक्षागृह में आग लगवाने से होता है। दुर्योधन को पूर्ण विश्वास हो गया कि पांडव जलकर भस्म हो गए, परंतु पांडवों ने उस स्थान से जीवित निकलकर दुर्योधन की चाल को विफल कर दिया। वे वेश बदलकर घूमते हुए द्रौपदी के स्वयंवर-मंडप में पहुँचे और अर्जुन ने आसानी से मत्स्य-वेध करके स्वयंवर की शर्त पूर्ण की। कुंती की इच्छा और व्यास जी के अनुमोदन पर द्रौपदी का विवाह पाँचों भाइयों से कर दिया गया।

दुर्योधन पांडवों को जीवित देखकर ईर्ष्या की अग्नि से जलने लगा। धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण और विदुर से परामर्श करके सत्य-न्याय की रक्षा के लिए पांडवों को आधा राज्य देने हेतु सहमत हो गए। दुर्योधन, कर्ण, दु:शासन और शकुनि मिलकर सोचने लगे कि पांडवों से सदा-सदा के लिए कैसे मुक्ति मिले।

'अग्रपूजा' खंडकाव्य का दूसरा सर्ग 'सभारंभ' है। सर्ग का प्रारंभ श्रीकृष्ण को साथ लेकर पांडवों के खांडव वन पहुँचने से होता है। वह विकराल वन था। श्रीकृष्ण ने विश्वकर्मा से उस वन-प्रदेश में पांडवों के लिए इंद्रपुरी जैसे भव्य नगर का निर्माण कराया। इस क्षेत्र का नाम इंद्रप्रस्थ रखा गया। हस्तिनापुर से आए हुए अनेक नागरिक ओर व्यापारी वहाँ बस गए। व्यास भी वहाँ आए। युधिष्ठिर को भली-भाँति प्रतिष्ठित करने के बाद व्यास और कृष्ण इंद्रप्रस्थ से चले गए।

युधिष्ठिर का राज्य समृद्धि की ओर बढ़ चला। उनके शासन की कीर्ति सर्वत्र (सुरलोक और पितृलोक तक) प्रसारित हो गई।

'अग्रपूजा' खंडकाव्य का तीसरा सर्ग 'आयोजन' है। सर्ग की आरंभिक कथा के अनुसार पांडवों ने सोचा कि नारी (द्रौपदी) कहीं उनके पारस्परिक संघर्ष का कारण न बने; अत: नारद जी की सलाह से उन्होंने द्रौपदी को एक-एक वर्ष तक अलग-अलग अपने साथ रखने का निश्चय किया। साथ ही यह भी तय किया गया कि जब द्रौपदी किसी अन्य पति के साथ हो और दूसरा कोई भाई वहाँ पहुँचकर उन्हें देख लेता है तो वह बारह-वर्षों तक वन में रहेगा। एक ब्राह्मण की गायों को चोरों से छुड़ाने के लिए अर्जुन शस्त्रागार से शस्त्र लेने जाते हैं। वहाँ वे युधिष्ठिर व द्रौपदी को बैठे हुए देख लेते हैं। अत: इन नियम भंग के कारण अर्जुन बारह वर्षो के लिए वन को चले गए।

अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए अर्जुन द्वारका पहुँचे। वहाँ श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करके वह इन्द्रप्रस्थ लौटे। युधिष्ठिर का राज्य सुख और शांति से चल रहा था। एक दिन देवर्षि नारद इंद्रप्रस्थ नगरी में आए। उन्होंने पांडु का संदेश देते हुए युधिष्ठिर को बताया कि यदि वे राजसूय यज्ञ करें तो उन्हें इंद्रलोक में निवास मिल जाएगा। आयु पूर्ण हो जाने पर युधिष्ठिर भी वहाँ जाएँगे। युधिष्ठिर ने सलाह के लिए श्रीकृष्ण को द्वारिका से बुलवाया और राजसूय यज्ञ की बात बताई। श्रीकृष्ण ने सलाह दी कि जब तक जरासंध का वध न होगा, राजसूय यज्ञ संपन्न नहीं हो सकता। जरासंध को सम्मुख युद्ध में जीत पाना संभव नहीं था। श्रीकृष्ण ने जरासंध को तीनों का परिचय दिया और किसी से भी मल्लयुद्ध करने के लिए ललकारा। जरासंध ने भीम से मल्लयुद्ध करना स्वीकार कर लिया। श्रीकृष्ण के संकेत पर भीम ने उसकी एक टाँग को पैर से दबाकर दूसरी टाँग ऊपर को उठाते हुए बीच से चीर दिया। उसके पुत्र सहदेव को वहाँ का राजा बनाया। युधिष्ठिर ने चारों भाइयों को दिग्विजय करने के लिए चारों दिशाओं में भेजा। इस प्रकार अब संपूर्ण भारत युधिष्ठिर के ध्वज के नीचे आ गया और युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ की योजनाबद्ध तैयारी प्रारंभ कर दी।

'अग्रपूजा' खंडकाव्य का चतुर्थ सर्ग 'प्रस्थान' है। इस सर्ग में राजसूय यज्ञ से पूर्व की तैयारियों का वर्णन किया गया है। राजसूय यज्ञ के लिए चारों ओर से राजागण आए। श्रीकृष्ण को बुलाने के लिए अर्जुन स्वयं द्वारका गए। उन्होंने प्रार्थना की कि आप चलकर यज्ञ को पूर्ण कराइए और पांडवों के मान-सम्मान की रक्षा कीजिए। श्रीकृष्ण ने सोचा कि इंद्रप्रस्थ में एकत्र राजाओं में कुछ ऐसे भी हैं, जो मिलकर गड़बड़ी कर सकते हैं; अत: वे अपनी विशाल सेना लेकर इंद्रप्रस्थ पहुँच

गए। युधिष्ठिर ने नगर के बाहर बड़े सम्मान के साथ उनका स्वागत किया। श्रीकृष्ण के प्रभाव और स्वागत-समारोह को देखकर रुक्मी और शिशुपाल ईर्ष्या से तिलमिला उठे।

'अग्रपूजा' खंडकाव्य का पंचम सर्ग 'अग्रपूजा' है। राजसूय यज्ञ प्रारंभ होने से पूर्व सभी राजाओं ने अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया। युधिष्ठिर ने यज्ञ की सुचारू व्यवस्था के लिए पहले से ही स्वजनों को सभी काम बाँट दिए थे। श्रीकृष्ण ने स्वेच्छा से ही ब्राह्मणों के चरण धोने का कार्य अपने ऊपर ले लिया। जब भीष्म ने गंभीर वाणी में सभासदों से पूछा, कृपया बताएँ कि अग्रपूजा का अधिकारी कौन है? सहदेव ने तुरंत कहा कि यहाँ श्रीकृष्ण ही परम-पूज्य और प्रथम पूज्य हैं। भीष्म ने सहदेव का समर्थन किया। सभी लोगों ने उनका एक साथ अनुमोदन किया। केवल शिशुपाल ने श्रीकृष्ण के चरित्र पर दोषारोपण करते हुए इस बात का विरोध किया। अंततः सहदेव ने कहा कि मैं श्रीकृष्ण को सम्मानित करने जा रहा हूँ, जिसमें भी सामर्थ्य हो वह मुझे रोक लें। शिशुपाल तुरंत क्रोधातुर होकर श्रीकृष्ण पर आक्रमण करने दौड़ा। श्रीकृष्ण मुस्कराते रहे और तब वह श्रीकृष्ण के प्रति नाना प्रकार के अपशब्द कहने लगा। श्रीकृष्ण ने उसे सावधान किया और कहा कि फूफी को वचन देने के कारण ही मैं तुझे क्षमा करता जा रहा हूँ। फिर भी शिशुपाल न माना और उनकी कटु निंदा करता रहा, अंततः श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट दिया।

पंचम सर्ग 'उपसंहार' में उल्लिखित शिशुपाल और कृष्ण के विवाद का यज्ञ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यज्ञ निर्विघ्न चलता रहा। व्यास, धौम्य आदि सोलह तत्वज्ञानी ऋषियों ने यज्ञ-कार्य संपन्न किया। युधिष्ठिर ने उन्हें दान-दक्षिणा देकर उनका यथोचित सत्कार किया। तत्वज्ञानी ऋषियों ने भी युधिष्ठिर को हार्दिक आशीर्वाद दिया, जिसे युधिष्ठिर ने विनम्र भाव से शिरोधार्य किया।

प्रश्न-2 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग 'पूर्वाभास' का सारांश लिखिए।

उत्तर- दुर्योधन के समस्त पांडवों का विनाश करने के लिए लाक्षागृह में आग लगवा दी। उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि पांडव जलकर भस्म हो गए, परंतु पांडवों ने उस स्थान से जीवित निकलकर दुर्योधन की चाल को विफल कर दिया। वे वेश बदलकर घूमते हुए द्रौपदी के स्वयंवर-मंडप में पहुँचे और अर्जुन ने आसानी से मत्स्य-वेध करके स्वयंवर की शर्त पूर्ण की। राजाओं ने ब्राह्मण वेशधारी अर्जुन पर आक्रमण कर दिया, किंतु अर्जुन और भीम ने अपने पराक्रम से उन्हें परास्त कर दिया। बलराम और श्रीकृष्ण भी उस स्वयंवर में उपस्थित थे। उन्होंने छिपे हुए वेश में भी पांडवों को पहचान लिया और रात में उनके निवास-स्थल पर उनसे मिलने हेतु गए। राजा द्रुपद को जब अपने पुत्र से पांडवों की वास्तविकता ज्ञात हुई तो द्रुपद ने उन्हें राजभवन में आमंत्रित किया और कुंती की इच्छा और व्यास जी के अनुमोदन पर द्रौपदी का विवाह पाँचों भाइयों से कर दिया गया।

इधर दुर्योधन पांडवों को जीवित देखकर ईर्ष्या की अग्नि में जलने लगा। शकुनि उसे और भी उकसाने लगा। वह कर्ण को लेकर धृतराष्ट्र के पास पहुँचा और पांडवों के विनाश की अपनी इच्छा पर चर्चा की। धृतराष्ट्र ने उसे अपने भाई पांडवों के साथ प्रेमपूर्वक रहने की सलाह दी। लेकिन वह नहीं माना। कर्ण ने उसे पांडवों को युद्ध करके जीत लेने हेतु प्रेरित किया। लेकिन उसने कर्ण की सलाह भी नहीं मानी। अंततः धृतराष्ट्र चिंतित होकर भीष्म, द्रोण और विदुर से परामर्श करके सत्य-न्याय की रक्षा के लिए पांडवों को आधा राज्य देने हेतु सहमत हो गए। विदुर कुंती, द्रौपदी सहित पांडवों को साथ लेकर हस्तिनापुर आए। जनता ने उनका भव्य स्वागत किया। धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिर का राज्याभिषेक कर उनसे खांडव वन को पुनः बसाने के लिए कहा। श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र से पांडवों को आशीर्वाद देने के लिए कहा। धृतराष्ट्र ने खेद प्रकट करते हुए प्रसन्न मन से उन्हें विदा कर दिया। दुर्योधन, कर्ण, दुःशासन और शकुनि मिलकर सोचने लगे कि पांडवों से सदा-सदा के लिए कैसे मुक्ति मिले।

प्रश्न-3 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के सभारंभ सर्ग (द्वितीय सर्ग) का सारांश लिखिए।

उत्तर- श्रीकृष्ण को साथ लेकर पांडव खांडव वन पहुँचे। वह विकराल वन था। श्रीकृष्ण ने विश्वकर्मा से उस वन-प्रदेश में पांडवों के लिए इंद्रपुरी जैसे भव्य नगर का निर्माण कराया। नगर रक्षा के लिए शतघ्नी शक्ति, शस्त्रागार, सैनिक गृह आदि निर्मित किए गए। सर्वत्र सुरम्य उद्यान और लंबे-चौड़े भव्य मार्ग थे। वहाँ निर्मल जल से परिपूर्ण नदियाँ और कमल से सुशोभित सरोवर थे। इस क्षेत्र का नाम इंद्रप्रस्थ रखा गया। हस्तिनापुर से आए हुए अनेक नागरिक और व्यापारी वहाँ बस गए। व्यास भी वहाँ आए। युधिष्ठिर को भली-भाँति प्रतिष्ठित करने के बाद व्यास और कृष्ण इंद्रप्रस्थ से चले गए। श्रीकृष्ण जैसा हितैषी पाकर उनके उपकरों से पांडव अपने आपको धन्य मानते थे। युधिष्ठिर ने सत्य, न्याय और प्रेम के आधार पर आदर्श शासन किया। उन्होंने रामराज्य को आदर्श मानकर प्रजा के लिए पृथ्वी पर स्वर्ग उतार लाने जैसे कार्य किए। युधिष्ठिर का राज्य समृद्धि की ओर बढ़ चला। उनके शासन की कीर्ति सर्वत्र (सुरलोक और पितृलोक तक) प्रसारित हो गई।

प्रश्न-4 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के आयोजन सर्ग (तृतीय सर्ग) का कथासार (कथावस्तु, कथानक) अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा **'अग्रपूजा' के आधार पर जरासंध वध का वर्णन कीजिए।**

उत्तर– संसार में धन, धरती और स्त्री के कारण संघर्ष होते आए हैं। कौरव धन और धरती के पीछे ही पागल थे। पांडवों ने सोचा कि नारी (द्रौपदी) कहीं उनके पारस्परिक संघर्ष का कारण न बने; अत: नारद जी की सलाह से उन्होंने द्रौपदी को एक-एक वर्ष तक अलग-अलग अपने साथ रखने का निश्चय किया। साथ ही यह भी तय कर लिया गया कि जब द्रौपदी किसी पति के साथ हो और कोई दूसरा भाई वहाँ पहुंचकर उन्हें देख ले तो वह बारह वर्षों तक वन में रहेगा।

एक दिन चोरों ने एक ब्राह्मण की गायें चुरा ली। वह राजभवन में न्याय और सहायता के लिए पहुँचा। अर्जुन उसकी रक्षा के लिए शस्त्रागार में शस्त्र लेने गए तो वहाँ उन्होंने द्रौपदी को युधिष्ठिर के साथ देख लिया। उन्होंने चोरों से गायें छुड़ाकर ब्राह्मण को दे दीं और नियम-भंग के कारण बारह वर्षों के लिए वन को चले गए।

अनेक स्थानों पर भ्रमण करते हुए अर्जुन द्वारका पहुँचे। वहाँ श्रीकृष्ण की बहन सुभद्रा से विवाह करके वह इंद्रप्रस्थ लौटे। श्रीकृष्ण भी अपनी बहन के लिए बहुत सारा दहेज लेकर इंद्रप्रस्थ आए और बहुत दिनों तक रुके। श्रीकृष्ण और अर्जुन ने मिलकर अग्निदेव के हित हेतु खांडव वन का दाह किया। अग्निदेव ने प्रसन्न होकर अर्जुन को कपिध्वज नामक रथ, वरुण ने गांडीव धनुष और दो अक्षय तूणीर उपहार में दिए। श्रीकृष्ण को अग्निदेव ने कौमोदकी गदा और सुदर्शन-चक्र प्रदान किए। यहीं अग्नि की लपटों से व्याकुल मय नामक राक्षस ने सहायता के लिए आर्त पुकार की। अर्जुन ने उसे बचा लिया और उसने कृतज्ञतापूर्वक कृष्ण के कहने पर युधिष्ठिर के लिए एक अलौकिक सभा भवन का निर्माण किया। मय दानव ने अर्जुन को 'देवदत्त शंख' और भीम को एक भारी गदा भेंट की।

युधिष्ठिर का राज्य सुख और शांति से चल रहा था। एक दिन देवर्षि नारद इंद्रप्रस्थ नगरी में आए। उन्होंने पांडु का संदेश देते हुए युधिष्ठिर को बताया कि यदि वे राजसूय यज्ञ करें तो उन्हें इंद्रलोक में निवास मिल जाएगा। आयु पूर्ण हो जाने पर युधिष्ठिर भी वहाँ जाएंगे। युधिष्ठिर ने नारद के द्वारा संदेश भेजकर सलाह के लिए श्रीकृष्ण को द्वारका से बुलवाया और राजसूय यज्ञ की बात बताई। श्रीकृष्ण ने सलाह दी कि जब तक जरासंध का वध न होगा, राजसूय यज्ञ संपन्न नहीं हो सकता। इसीलिए उन्होंने अर्जुन और भीम को साथ लेकर मगध की राजधानी गिरिव्रज की ओर प्रस्थान किया और ब्रह्मचारी वेश में नगर में प्रवेश किया। जरासंध ने रुद्रयज्ञ में बलि देने के लिए दो हजार राजाओं को बंदी बना रखा था। श्रीकृष्ण का विचार था कि जरासंध को मारने पर यज्ञ का मार्ग भी साफ हो जाएगा और राजाओं की मुक्ति भी हो जाएगी, किंतु जरासंध को सम्मुख युद्ध में जीत पाना संभव नहीं था। श्रीकृष्ण ने जरासंध को तीनों का परिचय दिया और किसी से भी मल्लयुद्ध करने के लिए ललकारा। जरासंध ने भीम को ही अपने जोड़ का समझकर उससे मल्लयुद्ध करना स्वीकार कर लिया। तेरह दिन के युद्ध के बाद जरासंध के थक जाने पर भीम ने टाँग पकड़कर घुमा-घुमाकर उसे पृथ्वी पर पटकना शुरु कर दिया। श्रीकृष्ण के संकेत पर भीम ने उसकी एक टाँग को पैर से दबाकर दूसरी टाँग ऊपर को उठाते हुए बीच से चीर दिया। इसके बाद उन्होंने समस्त बंदी राजाओं को मुक्त कर दिया और जरासंध के पुत्र सहदेव को वहाँ का राजा बनाया, जिसने युधिष्ठिर की अधीनता स्वीकार कर ली। इंद्रप्रस्थ लौटकर श्रीकृष्ण युधिष्ठिर से विदा लेकर द्वारका चले गए। युधिष्ठिर ने चारों भाइयों को दिग्विजय करने के लिए चारों दिशाओं में भेजा। चारों भाइयों ने सभी राजाओं को जीतकर युधिष्ठिर के अधीन कर दिया। इस प्रकार अब संपूर्ण भारत युधिष्ठिर के ध्वज के नीचे आ गया।

युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ की योजनाबद्ध तैयारी प्रारंभ कर दी। एक भव्य विशाल यज्ञशाला बनाई गई। सभी दिशाओं में निमंत्रण-पत्र भेजे गए। कौरवों सहित अनेकानेक राजा यज्ञ में भाग लेने के लिए इंद्रप्रस्थ में एकत्र होने लगे। सबका यथोचित सत्कार करके उपयुक्त आवासों में ठहराया गया। वहाँ देव, मनुज और दानव सभी स्वभाव के लोग आमंत्रित एवं एकत्रित हुए।

प्रश्न–5 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के 'प्रस्थान' सर्ग (चतुर्थ सर्ग) का सारांश लिखिए।

उत्तर– राजसूय यज्ञ के लिए चारों ओर से राजागण आए। श्रीकृष्ण को बुलाने के लिए अर्जुन स्वयं द्वारका गए। उन्होंने प्रार्थना की कि आप चलकर यज्ञ को पूर्ण कराइए और पांडवों के मान-सम्मान की रक्षा कीजिए। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को विदा कर बलराम, उद्धव और दरबारी जनों से विचार-विमर्श किया। उन्होंने सोचा कि इंद्रप्रस्थ में एकत्र राजाओं में कुछ ऐसे भी हैं, जो ऊपरी मन से तो अधीनता स्वीकार कर चुके हैं, पर मन में उनके विरोधी हैं। ये लोग मिलकर कुछ गड़बड़ी अवश्य कर सकते हैं; अत: निश्चय हुआ कि वे पूरी साज-सज्जा और सैन्य बल के साथ तैयार होकर जाएँगे। श्रीकृष्ण अपनी विशाल सेना लेकर इंद्रप्रस्थ पहुँच गए। युधिष्ठिर ने नगर के बाहर ही बड़े सम्मान के साथ उनका स्वागत किया और स्वयं श्रीकृष्ण का रथ हाँकते हुए उन्हें नगर में प्रवेश कराया। विशाल जन-समुदाय श्रीकृष्ण की शोभा-यात्रा को देखने के लिए उमड़ पडा। नगरवासी अपार श्रद्धा और प्रेम से श्रीकृष्ण का गुणगान कर रहे थे। श्रीकृष्ण भव्य स्वागत के बाद युधिष्ठिर के महल में ठहराए गए। श्रीकृष्ण के प्रभाव और स्वागत-समारोह को देखकर रुक्मी और शिशुपाल ईर्ष्या से तिलमिला उठे। वे पहले से ही श्रीकृष्ण से द्वेष रखते थे। वे रातभर इसी वैर-भाव और द्वेष की आग में जलते रहे और क्षणभर भी सो न सके।

प्रश्न–6 'अग्रपूजा' के आधार पर शिशुपाल वध का वर्णन संक्षेप में दीजिए।
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के 'अग्रपूजा' सर्ग (पंचम सर्ग) का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।**
***अथवा* सभा में शिशुपाल से भीष्म ने क्या कहा, इस पर विशेष प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के पंचम सर्ग (राजसूय यज्ञ) का सारांश लिखिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य में सबसे अधिक प्रभावित करने वाली घटना का सकारण उल्लेख कीजिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के आधार पर शिशुपाल वध के संदर्भ में श्रीकृष्ण की सहनशीलता का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर– यज्ञ प्रारंभ होने से पूर्व सभी राजाओं ने अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लिया। युधिष्ठिर ने यज्ञ की सुचारू व्यवस्था के लिए पहले से ही स्वजनों को सभी काम बाँट दिए थे। श्रीकृष्ण ने स्वेच्छा से ही ब्राह्मणों के चरण धोने का कार्य अपने ऊपर ले लिया। यज्ञ कार्य करने आए ब्राह्मणों के चरण श्रीकृष्ण ने धोए। जब यज्ञशाला में बलराम और सात्यकि के साथ श्रीकृष्ण पधारे तो सभी लोगों ने उठकर उनका सम्मान किया। केवल शिशुपाल ही उनके आगमन को अनदेखा सा करते हुए जान-बूझकर बैठा रहा। सबकी आँखें श्रीकृष्ण पर टिकी रह गई। तभी भीष्म ने गंभीर वाणी में सभासदों से पूछा, कृपया बताएँ कि सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति कौन है, जिसे सर्वप्रथम पूजा जाए; अर्थात् अग्रपूजा का अधिकारी कौन है? सहदेव ने तुरंत कहा कि यहाँ श्रीकृष्ण ही परम-पूज्य और प्रथम पूज्य हैं। भीष्म ने सहदेव का समर्थन किया और सभी ने उनका एक साथ अनुमोदन किया। केवल शिशुपाल ने श्रीकृष्ण के चरित्र पर दोषारोपण करते हुए इस बात का विरोध किया। भीम को क्रोध आया, पर भीष्म ने भीम को रोक दिया। भीष्म बड़े संयम और शांत भाव से शिशुपाल के तर्कों का उत्तर देते हुए बोले कि ''स्वार्थ की हानि और ईर्ष्या के वशीभूत होने पर मानव अंधा हो जाता है। उसे गुण भी दोष और यश की सुगंध दुर्गन्ध प्रतीत होती है। उन्होंने कहा कि मनुष्यता की महिमा पूर्ण रूप में कृष्ण में ही दिखाई पड़ती है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये पूर्णरूपेण डूबे हुए हैं। इनका संपूर्ण जीवन ही योग-भोग के जनक सदृश है। इनके समान रूप में जन्म लेने वाला ही इन्हें जान सकता है। सीमित दृष्टि और द्वेष बुद्धि रखने वाला व्यक्ति इन्हें नहीं जान सकता। ये पुष्प की पंखुड़ियों से भी कोमल हैं; दया, प्रेम, करुणा के भंडार हैं तथा शील, सज्जनता, विनय और प्रेम के प्रत्यक्ष शरीर हैं ये अनीति को मिटाते हैं तथा धर्म-मर्यादा की स्थापना करते हैं।''इस तरह से भीष्म ने श्रीकृष्ण के गुणों का वर्णन किया, फिर भी शिशुपाल अनर्गल ही बकता रहा। अंतत: सहदेव ने कहा कि मैं श्रीकृष्ण को सम्मानित करने जा रहा हूँ, जिसमें भी सामर्थ्य हो वह मुझे रोक ले। यह कहकर सहदेव ने सर्वप्रथम श्रीकृष्ण के चरण धोए और फिर अन्य सभी पूज्यों के पाद-प्रक्षालन किए। शिशुपाल तुरंत क्रोधातुर होकर श्रीकृष्ण पर आक्रमण करने दौड़ा। श्रीकृष्ण मुस्कराते रहे। शिशुपाल को चारों ओर कृष्ण-ही-कृष्ण दिखाई दे रहे थे। वह इधर-उधर दौड़कर श्रीकृष्ण को घूँसे मारने की चेष्टा करता हुआ हाँफने लगा और श्रीकृष्ण के प्रति नाना प्रकार के अपशब्द कहने लगा। श्रीकृष्ण ने उसे सावधान किया और कहा कि फूफी को वचन देने के कारण मैं तुझे क्षमा करता जा रहा हूँ। फिर भी शिशुपाल न माना और उनकी कटु निंदा करता रहा, अंतत: श्रीकृष्ण ने सुदर्शन-चक्र से उसका सिर काट दिया। युधिष्ठिर ने शिशुपाल के पुत्र को उसके बाद चेदि राज्य का राजा घोषित कर दिया।

प्रश्न–7 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के उपसंहार सर्ग (षष्ठ सर्ग) का सारांश (कथासार) अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– पंचम सर्ग में उल्लिखित शिशुपाल और कृष्ण के विवाद का यज्ञ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और यज्ञ निर्विघ्न चलता रहा। व्यास, धौम्य आदि सोलह तत्वज्ञानी ऋषियों ने यज्ञ-कार्य संपन्न किया। युधिष्ठिर ने उन्हें दान-दक्षिणा देकर उनका यथोचित सत्कार किया। उन्होंने बलराम और श्रीकृष्ण के प्रति अपना आभार प्रकट किया। सभी राजा उनके सौम्य स्वभाव और सत्कार से संतुष्ट हुए और उन्होंने युधिष्ठिर को अपना अधिपति मानते हुए उनकी आज्ञा-पालन करने का वचन दिया। तत्वज्ञानी ऋषियों ने भी युधिष्ठिर को हार्दिक आशीर्वाद दिया, जिसे युधिष्ठिर ने विनम्र भाव से शिरोधार्य किया।

प्रश्न–8 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के आधार पर उसके नायक श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के पात्रों में जिस पात्र ने आपको सबसे अधिक प्रभावित किया हो अथवा सर्वश्रेष्ठ पात्र के चरित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' के किसी प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के आधार पर श्रीकृष्ण की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।**
***अथवा* 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के नायक के गुणों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।**

उत्तर– श्री रामबहोरी शुक्ल द्वारा रचित 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। संपूर्ण काव्य में श्रीकृष्ण ही प्रमुख पात्र के

रूप में उभरकर आए हैं। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सर्वप्रथम श्रीकृष्ण की ही पूजा होती है। वे ही समस्त घटनाओं के सूत्रधार भी हैं। हमें उनके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं—

1. लीलाधारी दिव्य पुरुष– कवि ने मंगलाचरण में श्रीकृष्ण के विष्णु-रूप का स्मरण किया है। विश्वकर्मा से भयानक खांडव वन में अलौकिक नगर का निर्माण करवा देने तथा शिशुपाल को अनेक रूपों में दिखाई देने के कारण वे पाठकों को अलौकिक पुरुष के रूप में प्रतीत होते हैं।

2. अनुपम सौंदर्यशाली– श्रीकृष्ण अलौकिक महापुरुष और अनुपम सौंदर्यशाली थे। इंद्रप्रस्थ जाते समय सभी नगरवासी उनके सौंदर्य को देखने के लिए दौड़ पड़े थे। इंद्रप्रस्थ की नारियाँ उनकी मधुर मुस्कान पर मुग्ध होकर न्योछावर हो जाती हैं—

देखा सुना न पढ़ा कहीं भी, ऐसा अनुपम रूप अमंद।
ऐसी मधु मुस्कान न देखी, हैं गोविंद सदृश गोविन्द॥

3. शिष्ट एवं विनया– श्रीकृष्ण सदा बड़ों के प्रति नम्र भाव रखते हैं। वे कुंती आदि पूज्यजनों के सम्मुख शिष्टाचार और नम्रता का व्यवहार करते हैं। स्वयं अलौकिक शक्तिसंपन्न होते हुए भी वे विनम्रता से युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में ब्राह्मणों के चरण धोने का कार्य स्वेच्छा से ग्रहण करते हैं।

4. धर्म एवं मर्यादापरक– श्रीकृष्ण राजसूय यज्ञ में ब्राह्मणों के चरण धोते हैं एवं यज्ञ में मर्यादा की रक्षा के कारण ही शिशुपाल के निंदाजनक शब्दों को शांत-भाव से क्षमा करते हैं। वे आदर्श मानव है। भीष्म के शब्दों में—

शील, सुजनता, विनय, प्रेम के केशव हैं प्रत्यक्ष शरीर।
मिटा अनीति, धर्म मर्यादा स्थापन करते हैं यदुवीर॥

5. पांडवों के परम हितैषी– श्रीकृष्ण पांडवों के परम हितैषी हैं। वे उनके सभी कार्यों में पूर्ण सहयोग देते हैं। द्रौपदी के स्वयंवर में पांडवों को पहचानकर वे उनसे आत्मीयता से मिलने जाते हैं। वे पांडवों के लिए इंद्रपुरी सदृश नगर का निर्माण करवाते हैं और उनके राजसूय यज्ञ की सफलता के लिए जरासंध को मारने की योजना बनाते हैं। राजसूय यज्ञ में किसी विरोधी राजा के विघ्न डालने की आशंका से वे ससैन्य यज्ञ में पहुँचते हैं। इन बातों से स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण पांडवों के शुभचिंतक हैं।

6. धैर्यवान् एवं शक्तिसंपन्न– श्रीकृष्ण परमवीर थे, यही कारण है कि वे केवल अर्जुन और भीम को साथ लेकर जरासंध का वध करने पहुँच जाते हैं। शिशुपाल की अशिष्ठता और नीचता को भी वे बहुत देर तक सहन करते हैं। भीष्म के समझाने पर भी जब वह दुर्वचन कहने से नहीं माना तो उन्होंने उसे दंड देने का निश्चय कर लिया और सुदर्शन-चक्र से उसका वध कर दिया।

7. अनासक्त योगी– श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में भोग और योग का सुंदर समन्वय है। वे सांसारिक होते हुए भी संसार से निर्लिप्त हैं। जल में कमल-पत्र की भाँति वे मनुष्यों के सभी कार्यों को अनासक्त रहकर पूर्ण करते हैं। सबके पूजनीय होने के कारण ही उन्हें अग्रपूजा के लिए चुना जाता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कृष्ण अत्यंत शिष्ट और विनम्र हैं। वे पांडवों के परम हितचिंतक और अनुपम सौंदर्यवान हैं। वे धर्म एवं मर्यादा के पालक और अलौकिक शक्तिसंपन्न है। उनके बारे में स्वयं भीष्म कहते हैं— ''श्रीकृष्ण महामानव हैं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे रहने वाले हैं। संसार में रहकर भी वे अनासक्त और कर्मयोगी हैं। उनमें रूप, शील एवं शक्ति का अनुपम भंडार हैं। योग तथा भोग से पूर्ण इनका व्यक्तित्व अनूठा उदाहरण है। ये सज्जनता, विनम्रता, प्रेम तथा उदारता के पुंज हैं। इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व अत्यंत आदर्शपूर्ण एवं महान् है।''

प्रश्न–9 'अग्रपूजा' के आधार पर युधिष्ठिर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

***अथवा* 'अग्रपूजा' के आधार पर युधिष्ठिर के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।**

***अथवा* 'अग्रपूजा' में जिस पात्र के चारित्रिक गुणों ने आपको प्रभावित किया है, उस पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।**

उत्तर– युधिष्ठिर पांडवों में सबसे बड़े थे। इंद्रप्रस्थ में उनका ही राज्याभिषेक किया जाता है। सभी राजा उनकी अधीनता को स्वीकार करते हैं तथा वे ही राजसूय यज्ञ संपन्न कराते हैं। इस प्रकार युधिष्ठिर 'अग्रपूजा' काव्य के प्रमुख पात्र हैं। उनका चरित्र मानव-आदर्शों की स्थापना करने वाला है, जिसकी मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. आदर्श शासक– महाराज युधिष्ठिर एक आदर्श शासक के रूप में हमारे सामने आते हैं। वे राम-राज्य को आदर्श मानकर प्रजा को सुखी-संपन्न बनाने का प्रयत्न करते हैं—

था प्रयत्न उनका यह निशदिन, लाएँ भू पर स्वर्ग उतार।

वे भारत के सभी राजाओं को जीतकर शक्तिशाली भारत राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

2. विनम्र स्वभाव– युधिष्ठिर विनम्र स्वभाव के हैं। इंद्रप्रस्थ में गुरु द्रोणाचार्य के प्रवेश करते ही वे विनय भाव से उनके चरणों में गिर पड़ते है। राजसूय यज्ञ के समय श्रीकृष्ण के आने पर वे अपना रथ स्वयं हाँककर उन्हें नगर में प्रवेश कराते हैं। यज्ञ के समाप्त होने पर वे तत्वज्ञानी ऋषियों को पर्याप्त दान-दक्षिणा देते हैं और उनके आशीर्वाद को विनय-भाव से स्वीकार करते हैं।

3. उदारहृदय– युधिष्ठिर अत्यंत उदार हैं। वे राज्य के लिए दुर्योधन से झगड़ा नहीं करते और खांडव वन में भाग को ही राज्य के रूप में प्रसन्नता से स्वीकार कर लेते हैं। वे किसी राजा के राज्य को अपने राज्य में नहीं मिलाते। उन्होंने शिशुपाल और जरासंध का वध होने पर भी उनके राज्य को उनके पुत्रों को सौंप दिया। वे राजसूय यज्ञ में उदारतापूर्वक ब्राह्मणों को दान-दक्षिणा देते हैं।

4. धार्मिक तथा सत्य-प्रेमी– युधिष्ठिर धर्मिक और सत्यप्रेमी हैं। वे प्रत्येक कार्य को धर्म और न्याय के अनुसार करते हैं और सदैव सत्य के पथ पर चलते हैं। उनके संबंध में स्वयं नारद जी इस प्रकार कहते हैं—

बोल उठे गद्‌गद वाणी से-धर्मराज, जीवन तव धन्य।
धरणी में सत्कर्म-निरत जन नहीं दीखता तुम-सा।।

राजसूय यज्ञ को संपन्न करके वे अपने पिता की इच्छा को पूर्ण करते हैं।

इस प्रकार युधिष्ठिर परम विनीत, धर्मात्मा, सत्य-प्रेमी, उदारहृदय एवं सुयोग्य शासक हैं।

प्रश्न–10 'अग्रपूजा' खंडकाव्य के आधार पर शिशुपाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर– शिशुपाल भी 'अग्रपूजा' खंडकाव्य का एक प्रमुख चरित्र है। वह चेदि राज्य का स्वामी है। प्रस्तुत खंडकाव्य में उसकी भूमिका खलनायक की है। वह हमें ईर्ष्यालु, क्रोधी, अविनीत और अशिष्ट व्यक्ति के रूप में दृष्टिगोचर होता है। शिशुपाल का चरित्र-चित्रण इस प्रकार किया जा सकता है—

1. ईर्ष्यालु व्यक्ति– शिशुपाल स्वभाव से बहुत ईर्ष्यालु व्यक्ति है। इंद्रप्रस्थ में श्रीकृष्ण का अधिक सम्मान होना उसे काँटे की तरह चुभ रहा था। इसी कारण ईर्ष्या की आग में जलते हुए वह अकारण ही श्रीकृष्ण के प्रति जहर उगलता हुआ अपशब्दों का प्रयोग करता है—

आज यहाँ हैं ज्ञानी योगी, पंडित, ऋषि, नृप, अनुपन वीर।
फिर भी अग्र अर्चना होगी,उसकी जो गोपाल अहीर।।

शिशुपाल ईर्ष्यावश श्रीकृष्ण को नाचने-कूदने वाला, छलिया और अशिष्ट भी बतलाता है।

2. अशिष्ट– शिशुपाल की वाणी में दूसरों के प्रति शिष्टता का अभाव है। वह जहाँ एक ओर अग्रपूजा के लिए श्रीकृष्ण का नाम प्रस्तावित करने को सहदेव का लड़कपन बताता है, वहाँ दूसरी ओर भीष्म की बुद्धि को भी मारी गई कहता है—

लगता सठिया गए भीष्म हैं, मारी गई बुद्धि भरपूर।
तभी अनर्गल बातें करते, करो यहाँ से इनको दूर।।

3. श्रीकृष्ण का शत्रु– शिशुपाल और श्रीकृष्ण के बीच पुरानी शत्रुता है। शिशुपाल रुक्मी की बहन रुक्मिणी से विवाह करना चाहता था, किंतु रुक्मिणी श्रीकृष्ण को हृदय से पति-रूप में वरण कर चुकी थी। इसलिए श्रीकृष्ण रुक्मिणी का हरण कर द्वारका ले आए और वहाँ उन्होंने उससे विवाह कर लिया। इस घटना से शिशुपाल श्रीकृष्ण को अपना शत्रु मानने लगा।

4. क्रोधी और अभिमानी– शिशुपाल में क्रोध और अभिमान का भाव कूट-कूटकर भरा था। वह भरी सभा में सीना तानकर श्रीकृष्ण की ओर हाथापाई के लिए बढ़ता है और उन्हें भला-बुरा कहकर ललकारता है—

वह बोला मायावी, छलिया, इंद्रजाल अब करके बंद।
आ सम्मुख तू बच न सकेगा, करके ये सारे छल छंद।।

उसके अभिमानी स्वभाव के कारण ही उस पर भीष्म के उपदेश और सहदेव की सूझ-बूझ का कोई प्रभाव नहीं होता।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शिशुपाल का चरित्र एक खलनायक के रूप में अनेक दोषों से भरा है।